‘SUBHADRA KUMARI CHAUHAN KE SAHITYA KA ALOCHNATAMAK ADHYAYAN’

A Thesis submitted in Partial Fulfilment of the Requirement
For the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi

April, 2023

Researcher

MADHURA KERKETTA

15HHPH09

Head of Department

PROF. GAJENDRA KUMAR PATHAK

Supervisor

PROF. M. SHYAM RAO

Department of Hindi, School of Humanities

University of Hyderabad

Hyderabad - 500046

Telangana

India

‘सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन’

हैदराबाद विश्वविद्यालय की पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

अप्रैल, 2023

शोधार्थी

मधुरा केरकेट्टा

15HHPH09

विभागाध्यक्ष — **प्रो. गजेन्द्र कुमार पाठक**

शोध-निर्देशक — **प्रो. एम. श्याम राव**

हिंदी विभाग, मानविकी संकाय

हैदराबाद विश्वविद्यालय

हैदराबाद - 500046

तेलंगाना

भारत

DECLARATION

I **MADHURA KERKETTA** (Registration no. **15HHPH09**) hereby declare that the thesis entitled **'SUBHADRA KUMARI CHAUHAN KE SAHITYA KA ALOCHNATMAK ADHAYAYAN' (सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन)** submitted by me under the guidance and supervision of Professor **M. SHYAM RAO** is a bonafide plagiarism free research work. I also declare that it has not been submitted previously in part or in full to this or any other University or institution for the award of any degree or diploma. I hereby agree that my thesis can be deposited in shodhganga / Inflibnet.

Signature of Supervisor

Prof. M. SHYAM RAO

Signature of the Student

MADHURA KERKETTA

Reg. No. 15HHPH09

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **'SUBHADRA KUMARI CHAUHAN KE SAHITYA KA ALOCHNATMAK ADHYAYAN' (सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन)** submitted by **MADHURA KERKETTA** bearing Reg. No. **15HHPH09** in partial fulfilment of the requirements for the award of **DOCTOR OF PHILOSOPHY** in **HINDI** is a bonafide work carried out by her under my supervision and guidance.

As for as I know, this thesis is free from plagiarism and has not been submitted previously in part or in full to this or any other University or institution for award of any degree or diploma.

Further, the student has the following publications before submission of the thesis for adjudication and has produced evidence for the same in the form of acceptance letter or the reprint in the relevant area of his research:

A. Published research paper in the following publications :

1. 'MUKTIBODH KI ALOCHNA DRISHTI AUR SUBHDRA KUMARI CHAUHAAN KE SAHITYA KA PUNARMULYANKAN'. (SHODH DRISHTI, ISSN NO. 0976-6650, VOL.8, NO.8, YEAR-8) AUGUST, 2017.
2. 'SUBHADRA KUMARI CHAUHAAN KE RACHNAKARM KA ALOCHNATMAK MULYANKAN'. (SAMYAK BHARAT, ISSN NO. 2277-2553, VOL-12, YEAR-12) OCTOBER, 2017.

B. Research Paper presented in the following conferences :

1. JHANSI KI RANI LAKSHMIBAI AUR HINDI PRATIBANDHIT SAHITYA, (INTERNATIONAL), DEPARTMENT OF HINDI, UNIVERSITY OF HYDERABAD AND CSDS, NEW DELHI, 15, 16, 17 NOVEMBER 2021.

2. SUBHADRA KUAMRI CHAUHAN KI KAVITAON MEN PARYAVRNIYA CHETNA, (INTERNATIONAL), MATA KRISHNAVANTI MAHAVIDYALAYA PADAMPUR, GINA DEVI SHODH SANSTHAN BHIVANI HARIYANA AUR INDO-EUROPEAN LITERARY DISCOURSE KE SANYUKT TATAVADHAN MEIN AYOJIT- 25 DECEMBER 2021.

Further the student has passed the following courses towards fulfilment of coursework requirement for Ph. D :-

Course Code	Name	Credit	Result
1. 801	Critical Approaches to Research	4	Pass
2. 802	Research Paper	4	Pass
3. 826	The Ideological Background of Hindi Literature	4	Pass
4. 827	Practical Review of the Texts	4	Pass

The student has also passed M. Phil degree of this university. She studied the following courses in this programme.

Course Code	Name	Grade	Credit	Result
1 HN701	Research Methodology	D	4	Pass
2. HN722	Sociology of literature	B	4	Pass
3. HN722	Philosophy of history of literature	A	4	Pass
4. HN726	Sahitya mediya aur sanskrauti	B+	4	Pass
5. HH750	Dissertation	A	16	Pass

Therefore, the student has been exempted from repeating Research Methodology course (as recommended by the Research Advisory Committee) in her Ph. D programme.

Supervisor	**Head of Department**	**Dean of the School**
Dept. of Hindi	**Dept. of Hindi**	**School of Humanities**

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

भूमिका पृष्ठ संख्या : i -vii

प्रथम अध्याय : पृष्ठ संख्या :1-75

सुभद्रा कुमारी चौहान : जीवन परिचय एवं रचना-कर्म

1.1 सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन परिचय

1.1.1 जन्म

1.1.2 परिवार

1.1.3 बाल्यकाल व परिवेश

1.1.4 शिक्षा

1.1.5 दाम्पत्य जीवन

1.1.6 मातृत्व

1.1.7 राजनीतिक कार्यकर्त्ता

1.1.8 जीवन दर्शन

1.1.9 मृत्यु

1.2 सुभद्रा कुमारी चौहान का रचना-कर्म

1.2.1 कविता संग्रह

1.2.1.1 मुकुल

1.2.1.2 झाँसी की रानी

1.2.2 कहानी संग्रह

1.2.2.1 बिखरे मोती

1.2.2.2 उन्मादिनी

1.2.2.3 सीधे सादे चित्र

1.2.3 प्रकाशित निबंध

1.2.4 संकलन-सम्पादन

1.2.5 पत्र साहित्य

1.2.6 अप्रकाशित साहित्य

1.2.7 प्रतिबंधित साहित्य

1.2.8 सुभद्रा कुमारी चौहान केन्द्रित साहित्य

1.2.8.1 मिला तेज से तेज (जीवनी) – सुधा चौहान

1.2.8.2 सुभद्रा कुमारी चौहान – राजेश शर्मा

1.2.8.3 जनमनमयी सुभद्राकुमारी चौहान – राजेन्द्र उपाध्याय

1.2.9 पुरस्कार और सम्मान

दूसरा अध्याय : पृष्ठ संख्या : 76 -115

हिंदी साहित्य के इतिहास एवं हिंदी आलोचना में सुभद्रा कुमारी चौहान की उपस्थिति

2.1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल

2.2 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

2.3 बच्चन सिंह

2.4 सुमन राजे

2.5 मुक्तिबोध

2.6 शमशेर बहादुर सिंह

2.7 गोपाल राय

2.8 रामविलास शर्मा

तीसरा अध्याय : पृष्ठ संख्या : 116 -167

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना का स्वरूप

3.1 सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का स्वरूप

3.1.1 सामाजिक परिवेश

3.1.2 स्त्री-चेतना

3.1.2.1 स्त्री सम्बन्धी समस्याएँ

3.1.2.2 विवाह सम्बन्धी समस्याएँ

3.2 सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति का स्वरूप

3.2.1 भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता

3.2.2 प्रेम संवेदना

3.2.3 पर्यावरणीय चेतना

3.2.4 साहित्य व भाषा का सम्मान

3.3 राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति का स्वरूप

3.3.1 राजनीतिक परिस्थिति

3.3.2 समसामयिक राजनीतिक घटनाएँ एवं राष्ट्रीय आन्दोलन

3.3.2.1 प्रथम स्वाधीनता संग्राम

3.3.2.2 नागपुर का झंडा आन्दोलन

3.3.2.3 जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड

3.3.3 स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका

3.3.4 ऐतिहासिक स्वतंत्रता सेनानियों का गौरवगान

3.4 आर्थिक चेतना की अभिव्यक्ति का स्वरूप

3.4.1 आर्थिक विषमता

3.4.2 आर्थिक आत्मनिर्भरता

चतुर्थ अध्याय : **पृष्ठ संख्या : 168-198**

सुभद्रा कुमारी चौहान का आलोचना-कर्म

4.1 स्त्री लेखन सम्बन्धी विचार

4.1.1 समकालीन स्त्री-रचनाशीलता की प्रासंगिकता

4.1.2 समकालीन स्त्री रचनाकारों की पड़ताल

4.1.3 स्त्री लेखन का महत्व-निरूपण

4.2 बाल साहित्य सम्बन्धी विचार

4.3 स्वाधीनता की चेतना

4.4 राजनीतिक विचार

4.5 अग्रसर धर्म

पंचम अध्याय : **पृष्ठ संख्या : 199 -255**

सुभद्रा कुमारी चौहान के बाल साहित्य का स्वरूप

5.1 हिंदी बाल साहित्य का स्वरूप एवं संवेदना

5.1.1 बाल साहित्य की प्रकृति

5.1.2 बाल साहित्य का वर्गीकरण

5.1.3 बाल साहित्य का महत्त्व

5.2 बाल साहित्य और सुभद्रा कुमारी चौहान

5.2.1 वात्सल्य प्रेम

5.2.2 देश-प्रेम

5.2.3 मनोरंजन एवं नैतिक मूल्य

5.2.4 शिक्षा की महत्ता

5.2.5 प्रकृति प्रेम

5.2.6 पशु-पक्षी एवं अन्य जीव प्रेम

5.3 सुभद्रा कुमारी चौहान के बाल साहित्य का कला पक्ष

5.3.1 भाषा शैली

5.3.2 संगीतात्मकता

5.3.3 रस

5.3.4 अलंकार

>उपसंहार **पृष्ठ संख्या : 256 – 260**

>संदर्भ सूची **पृष्ठ संख्या : 261 – 270**

>शोध आलेख **पृष्ठ संख्या : 271 - 282**

> शोध प्रपत्र **पृष्ठ संख्या : 283 – 284**

भूमिका

भूमिका

हिंदी साहित्य का इतिहास सैकड़ों वर्षों का रहा है। इसमें भी खड़ी बोली हिंदी का साहित्य भी लगभग डेढ़ सौ वर्षों से ज्यादा का हो चुका है। इस विकास यात्रा के विभिन्न पड़ाव रहे हैं, जिसका विश्लेषण हिंदी साहित्य के इतिहास सम्बन्धी पुस्तकों में मिलता है। विभिन्न पड़ावों में विभिन्न रचनाकारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की है। इन रचनाकारों ने हिंदी साहित्य को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन महत्वपूर्ण नामों में से एक नाम सुभद्रा कुमारी चौहान का है। सुभद्रा कुमारी चौहान का रचनाकाल आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण काल है। जहाँ कविता के क्षेत्र में खड़ी बोली हिंदी और ब्रज भाषा का विवाद अभी-अभी समाप्त होता प्रतीत हो रहा था वहीं खड़ी बोली हिंदी साहित्य का दौर द्विवेदी युग से दूसरे युग में प्रवेश कर रहा था। कविता का शिल्प और भाषा के स्तर पर रूप स्थिर होने की प्रक्रिया अभी जारी थी। वहीं गद्य लेखन के क्षेत्र में प्रेमचंद का आगमन एक बड़ी परिघटना थी। गद्य की भाषा के रूप में खड़ी बोली भारतेंदु काल से ही स्वीकृत हो चुकी थी किन्तु अभी विषयों के स्तर पर परिपक्वता नहीं आई थी। बहुत सारे कथाकार एवं कहानीकार पूरी निष्ठा के साथ इस कार्य में योगदान दे रहे थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी और रामचन्द्र शुक्ल जैसे सम्पादक, आलोचक भी हिंदी साहित्य के विकास को करीब से देख रहे थे और उसका विश्लेषण भी कर रहे थे। सब मिलाकर हिंदी साहित्य भविष्योन्मुखी हो रहा था या भविष्य की तरफ जाने के लिए तैयारी कर रहा था। ऐसे समय में सुभद्रा कुमारी चौहान एक कवयित्री एवं कहानीकार के रूप में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करती प्रतीत होती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी साहित्य की एक प्रमुख रचनाकार हैं। महादेवी वर्मा से पूर्व आधुनिक हिंदी साहित्य में इतनी मजबूत उपस्थिति किसी और महिला रचनाकार ने दर्ज नहीं की थी। अतएव उनके समग्र साहित्य का मूल्यांकन आवश्यक है। सुभद्रा कुमारी चौहान के रचनाकर्म के मूल्यांकन के प्रति हिंदी साहित्य में व्याप्त उदासी भी इस शोध कार्य के केंद्र में है। शमशेर बहादुर

सिंह, मुक्तिबोध द्वारा लिखे गये आलेखों के अतिरिक्त कोई महत्वपूर्ण पहल नहीं दिखाई पड़ती है। विभिन्न विद्वानों द्वारा यदा-कदा लिखे गये आलेखों के अतिरिक्त कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया। इसलिए इस शोध कार्य में सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य पर गंभीरता से विचार करने का प्रयास किया जाएगा।

सुभद्रा कुमारी चौहान (1904-1948) का जीवनकाल और रचनाकाल सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से हलचलों से भरा था। एक तरफ विभिन्न सुधारवादी आन्दोलन चल रहे थे तो दूसरी तरफ स्वाधीनता आन्दोलन भी जोर पकड़ रहा था। स्वाधीनता की भावना तत्कालीन समाज की केंद्रीय भावना बन गयी थी। महिला सुधार के विभिन्न प्रयास हो रहे थे। स्वाधीनता आन्दोलन में गाँधी जी का प्रवेश एवं उनकी उपस्थिति, हिंदी साहित्य को भी प्रभावित कर रहा था। समाज और साहित्य के बीच एक मजबूत रिश्ता कायम हो रहा था।

हिंदी साहित्य जगत में भी बहुत सारी घटनाएँ घटित हो रही थीं। एक तरफ महात्मा गाँधी का प्रवेश साहित्य को प्रभावित कर रहा था तो दूसरी तरफ हिंदी साहित्य द्विवेदी युग से निकलकर स्वच्छंदतावाद एवं छायावाद की ओर अग्रसर हो रहा था। स्वच्छंदतावाद और छायावाद एक ही समय में साहित्यिक आन्दोलन के तौर पर मौजूद थे। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पन्त, महादेवी वर्मा के साथ साथ रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी, हरिवंशराय बच्चन भी साहित्य रचना कर रहे थे। मैथलीशरण गुप्त की भी कई महत्वपूर्ण रचनाएँ इस दौर में सामने आती हैं। प्रेमचन्द भी अपनी रचनाएँ कर रहे थे। साहित्यकार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी साहित्य जगत को पुष्ट कर रहे थे।

राष्ट्रीय भावधारा के प्रमुख कवि में से एक सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। राष्ट्रीय कविता में मैथलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, और रामधारी सिंह दिनकर सबकी अपनी अलग विशेषताएं हैं और उनमें पारस्परिक फर्क भी है। सुभद्रा कुमारी चौहान की विशेषताओं को समझने के लिए इस फर्क पर गौर करना भी जरुरी है।

कुल मिलाकर यह समय साहित्यिक तथा सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से हलचलों से भी भरा था और चुनौतीपूर्ण भी था। इस परिप्रेक्ष्य में सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य पर विचार करने का प्रयास इस शोध कार्य के अंतर्गत किया जाएगा। हिंदी साहित्य में सुभद्रा कुमारी चौहान की उपस्थिति के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उनके समकालीन महत्त्व पर भी विचार करने की कोशिश की जाएगी। कोई भी रचनाकार अपने समय का एक जीवित दस्तावेज होता है, इसलिए उनके महत्त्व पर विचार करना हिंदी साहित्य के विकास के लिए आवश्यक प्रतीत होता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय है – "सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन", यह शोध कार्य प्रो. एम. श्याम राव के निर्देशन में किया गया है। इस शोध कार्य के माध्यम से सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में समाज की तत्कालीन समस्याओं को रेखांकित किया गया है तथा सुभद्रा कुमारी चौहान की देश-सेविका के रूप में योगदान को चिह्नित किया गया है। वे हिंदी की महत्त्वपूर्ण साहित्यकार होने के साथ-साथ राजनीतिक कार्यकर्त्ता भी थीं। इस दृष्टि से उनकी रचनाओं में स्वानुभूति का परिदृश्य मालूम पड़ता है। सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के माध्यम से उनके व्यक्तित्व एवं विचारों से अवगत होने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही शोध प्रबंध में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक परिवेश एवं आर्थिक स्वरूप का समग्र अध्ययन का प्रयत्न किया गया है। सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा की प्रख्यात कवयित्री हैं उन्होंने कविता, कहानी, निबन्ध, बाल गीत, लेख, सम्पादन आदि कार्यों में भी अपना योगदान दिया है।

अध्ययन की सुविधा से यह शोध प्रबंध पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय - "सुभद्रा कुमारी चौहान : जीवन परिचय एवं रचना-कर्म" है। प्रस्तुत अध्याय को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से अन्य उप-अध्यायों में भी बाँटा गया है। इस अध्याय के अंतर्गत पहले भाग में सुभद्रा कुमारी के जीवन परिचय पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। दूसरे भाग में सुभद्रा कुमारी चौहान के रचना-कर्म का विवेचन किया गया है। सुभद्रा कुमारी चौहान का

व्यक्तिगत जीवन जैसा रहा ठीक वैसा ही उनका रचना कर्म भी देखा जा सकता है। अतः उनकी रचनाओं की विविधता को इस अध्याय में स्वरूप देने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय -"हिंदी साहित्य के इतिहास एवं हिंदी आलोचना में सुभद्रा कुमारी चौहान की उपस्थिति" है। यह अध्याय भी कई उप-अध्याय में विभाजित है। इस अध्याय में हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन में सुभद्रा कुमारी चौहान की उपस्थिति के प्रश्न को रेखांकित किया गया है, हिंदी के प्रमुख इतिहासकारों एवं आलोचकों जैसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, बच्चन सिंह, सुमन राजे, मुक्तिबोध, शमशेर आदि के मतानुसार सुभद्रा कुमारी चौहान की अपेक्षित उपस्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

तृतीय अध्याय - "सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना का स्वरूप" इस अध्याय के अंतर्गत सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के आधार पर अभिव्यक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं पर विस्तार से विचार किया गया है। बाल विवाह, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, वेश्या समस्या, अवैध प्रेम की समस्या जैसी गंभीर सामाजिक समस्याओं पर सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के माध्यम से विवेचन किया गया हैं। उनकी कविताओं एवं कहानियों के माध्यम से राजनीतिक समस्याओं एवं उनके राजनीतिक विचारों से भी अवगत होने का प्रयास है। पराधीन राष्ट्र में स्वतन्त्रता सेनानियों के लिए चुनौती का विषय है। अतः इस अध्याय में तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन के स्वरूप को स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है।

चतुर्थ अध्याय – "सुभद्रा कुमारी चौहान का आलोचना-कर्म" है, इस अध्याय के अंतर्गत सुभद्रा कुमारी चौहान के आलोचनात्मक वैचारकी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय में सुभद्रा कुमारी चौहान के महिला सम्बन्धी विचार, बाल साहित्य सम्बन्धी विचार स्वाधीनता की चेतना एवं राजनीतिक विचारों की पड़ताल की गई है; इस अध्याय में उनके आलोचनात्मक दृष्टिकोण को विस्तार दिया गया है।

पंचम अध्याय - "सुभद्रा कुमारी चौहान के बाल साहित्य का स्वरूप" है। प्रस्तुत अध्याय में बाल साहित्य के स्वरूप एवं संवेदनाओं को रेखांकित किया गया है। जिसके अंतर्गत बाल साहित्य की प्रकृति, वर्गीकरण एवं बाल साहित्य के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। सुभद्रा कुमारी चौहान बाल लेखन के द्वारा एक ममतामयी ह्रदय एवं व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती हैं। अतः उनके बाल कविता एवं कहानियों के माध्यम से बाल चेतना के महत्वपूर्ण बिन्दुओं से हम अवगत हो सकते हैं, सुभद्रा कुमारी चौहान इस दिशा में महिलाओं को बाल साहित्य लेखन कार्यों की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं। इस अध्याय में प्रमुख रूप से सुभद्रा कुमारी चौहान के रचनाओं में अभिव्यक्त बाल मनोविज्ञान एवं कला पक्ष को विवेचित करने का प्रयास किया गया है।

इस शोध प्रबंध के अंत में उपसंहार है, जो शोध प्रबंध का अंतिम रूप है।

शोध विषय सम्बन्धी अन्य शोध कार्यों का विवरण :

हैदराबाद विश्वविद्यालय में सुभद्रा कुमारी चौहान के समग्र साहित्य पर आधारित यह पहला सम्भवतः पहला शोध कार्य होगा। इसके अतिरिक्त लखनऊ विश्वविद्यालय में शोधार्थी विस्मिता सिंह ने डॉ. प्रेम सुमन शर्मा के शोध निर्देशन में 'सुभद्रा कुमारी चौहान के समग्र साहित्य का अनुशीलन' विषय पर पीएच. डी. हेतु शोध कार्य किया है। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में शोधार्थी राजवीर सिंह सिवाच ने शोध निर्देशक सिंघल बैजनाथ के निर्देशन में 'सुभद्रा कुमारी चौहान कृतित्व के आयाम' विषय पर एम. फिल का शोध कार्य किया है। यह शोध कार्य 2016 ई. में संपन्न हुआ है।

कृतज्ञता :

इस शोध प्रबंध के लिए मैं सर्वप्रथम अपने परम आदरणीय शोध निर्देशक प्रो. एम. श्याम राव का धन्यवाद करती हूँ , जिनके धैर्यपूर्ण मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन के बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता। मैं सर के दिशा निर्देश एवं उनके सहयोग के लिए आजीवन आभारी रहूँगी। हिंदी विभाग के

विभागाध्यक्ष प्रो. गजेन्द्र कुमार पाठक का मैं हार्दिक धन्यवाद करती हूँ। शोध कार्य में उनका योगदान अविस्मर्णीय है ।उनके मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के बगैर यह कार्य अपूर्ण होता । शोध सलाहकार समिति के सदस्य डॉ. भीम सिंह एवं प्रो. सच्चिदानंद चतुर्वेदी का मैं आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे विषय चयन से लेकर शोध कार्य को अंतिम रूप देने में मेरा मार्गदर्शन किया है। इस शोध कार्य के लिए विभाग के सभी गुरुजनों का मैं शुक्रिया अदा करती हूँ।

हैदराबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग कार्यालय के सभी कर्मियों एवं लाइब्रेरी के सभी कर्मियों का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय समय पर शोध प्रबंध के महत्वपूर्ण कार्य में मदद की। तीनमूर्ति पुस्तकालय के कर्मचारियों का धन्यवाद जिन्होंने आधार ग्रंथों की स्कैन कॉपी उपलब्ध करायी।

इस शोध प्रबंध की भाषागत अशुद्धियों को दूर करने में मदाम की अहम् भूमिका रही है, टंकण के सहयोग एवं शोध प्रबंध के आवश्यक मार्गदर्शन के लिए शुक्रगुजार हूँ।

पीएच.डी कार्य के सफर में मेरा साथ देने वाले हैदराबाद विश्वविद्यालय के साथी संदीप, विशाल, आशुतोष, चिन्मयी, बर्नाली, जिनित, पूजा, सुशीला, नीता, कृष्णा, राजीव, जितेन्द्र, कैलाश का आभार जो मेरी हर परेशानियों का सहारा बने, खुशियों के भागीदार रहे, सभी समस्याओं को अपना समझकर हल निकालते रहे।

अकादमिक कार्यों में मेरे हर प्रयास को सराहने एवं प्रोत्साहन के लिए मैं सहपाठियों, सहकर्मियों का धन्यवाद जिन्होंने बार-बार मुझे डॉ. बनने के लिए प्रेरित किया है। किड़ो मैम, सिजरेन मैम, दोस्त प्रीति बिनीता, अन्ना, डेजी, ज्योति, नूतन, चिल्ली, पी.के., उषा दी, शेफाली प्रीति, छाया, गरिमा, आयुषी, खुशबू, नितिन तुम लोगों के साथ, सहयोग एवं प्यार से यह कार्य संपन्न हो पाया है। तुम लोगों के होने से मेरी हिम्मत बढ़ जाती है, शुक्रिया।

मैं उनका भी धन्यवाद करती हूँ जो प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध कार्य में सहयोग करते रहे मैं उन प्रत्येक के लिए सदैव ऋणी रहूँगी।

इस शोध कार्य के अंतिम पड़ाव में मैं शोध कार्य की प्रक्रिया से अनभिज्ञ अपने माँ – बाबा की शुक्रगुजार हूँ जिन्होंने मुझे सिर्फ और सिर्फ पढ़ाई की ओर मन ध्यान लगाने का अवसर प्रदान किया, घर परिवार की हर चिंता से दूर रखा। इस कार्य को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण माना एवं सफलतापूर्वक संपन्न करने लिए लगातार प्रोत्साहित करते रहे। मैं उनके इस प्यार और आशीर्वाद के लिए तहे दिल से धन्यवाद देती हूँ। मैं अपनी बड़ी बहनों मिकी वन्दना,किरण और अन्य सदस्य जीजा, मेघा, डॉली जो शायद मेरे इस शोध कार्य के पूर्ण होने का बेसब्री से इंतिजार करते रहे। इस शोध कार्य को मैं उनके सहयोग और भरोसा के बिना अधूरा पाती हूँ। इन्होंने मुझे एक छोटे शहर सिमडेगा से बाहर निकलकर बड़े शहरों में जाकर पढ़ने की हिम्मत दी। सिमडेगा से हैदराबाद तक का यह सफर मैं अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य को समर्पित करती हूँ। अंततः मातृभूमि एवं समाज का जोहार शुक्रिया, जो मेरी चेतना को गढ़ने का काम करते रहे जिसके प्रति मैं सदा ऋणी रहूँगी।

आभार

दिनांक :

मधुरा केरकेट्टा

हिंदी विभाग

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद।

प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय

सुभद्रा कुमारी चौहान : जीवन परिचय एवं रचना-कर्म

1.1सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन परिचय :

1.1.1 जन्म :

हिंदी साहित्य की यशश्वी रचनाकार और भारतीय स्वाधीनता संग्राम की प्रमुख सत्याग्राही महिला सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 ई. को उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद में निहालपुर नामक गाँव में हुआ था।

1.1.2 परिवार :

सुभद्रा कुमारी चौहान के पिता ठाकुर रामनाथ सिंह और माता श्रीमती धिराजकुंवर थी, इनकी माता सिंहनी परिवार से थीं। इस ब्राह्मण परिवार में ठाकुर रामनाथ सिंह और धिराजकुंवर की आठवीं संतान सुभद्रा कुमारी चौहान थीं। सुभद्रा कुल आठ भाई बहनों में सबसे छोटी थीं। उनके आठ भाई-बहन इस प्रकार हैं – रामऔतार, रामप्रसाद, महादेवी (बिट्टी), राजबहादुर (रज्जू), राजदेवी (रानी), सुन्दर, कमला और सुभद्रा।

सुभद्रा कुमारी चौहान के दादा जी ठाकुर महिपाल सिंह मानिकपुर के पास के लोहंदा गाँव के संपन्न जमींदार थे। सन 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में कुछ भागते हुए अंग्रेजों को शरण नहीं देने के फलस्वरूप उन्हें अपनी जमींदारी गँवानी पड़ी थी। फलतः उनके दादा जी

ठाकुर महिपाल सिंह को वहाँ से विस्थापित होना पड़ा । फलस्वरूप परिवार के बड़े पुत्र रामनाथ सिंह कृषि और व्यापार से धनार्जन करके परिवार का पालन पोषण करने लगे । उनका परिवार भरा पूरा सुशिक्षित और सम्पन्न था जहाँ पिता रामनाथ सिंह कीर्तन और हिंदी साहित्य के अनुरागी भी थे । इनके परिवार की महिलाएँ कुशल गृहिणी होने के साथ-साथ धार्मिक विचारों से पूर्ण थीं । इन सबका प्रभाव परिवार के बच्चों पर पड़ा ।

1.1.3 बाल्यकाल व परिवेश :

सुभद्रा कुमारी चौहान का परिवार अन्य सामान्य हिन्दू परिवारों की तरह रुढ़िवादी, सनातनी और मध्यमवर्गीय परिवार था । परिवार का परिवेश सामन्ती मूल्यों से छूट कर सामान्य मनुष्य के परिवेश की ओर बढ़ तो रहा था किन्तु पूरी तरह से रूढ़ियों और परम्पराओं के बन्धनों से मुक्त नहीं हो पाया था । तत्कालीन समाज ऐसा था कि पति को पत्नी का स्वामी माना जाता था । स्त्रियों को पति या जेठ के सामने बोलने तक की अनुमति नहीं होती थी । लड़कियों और बहुओं का छत पर जाना मना था । छोटी लड़कियों से भी पर्दा करवाया जाता था । लड़कियां बाहर खेल-कूद भी नहीं सकती थीं । उनके जीवन की एक घटना है जब सुभद्रा और उनकी बहनें बाहर खेलती हुई भाई रामप्रसाद सिंह द्वारा पकड़ ली गई । उन्हें आपस में सिर लड़ा-लड़ाकर इसकी सजा भुगतनी पड़ी थी ।

दूसरी घटना इस प्रकार हुई जिसमें घर की कुछ स्त्रियों ने कान छिदवा लिए थे, रामप्रसाद सिंह का मानना था कि बाहर के मर्द से कान छिदवा लिये हैं, पराये मर्द से छुआ जाने पर भैया रामप्रसाद सिंह का गुस्सा बढ़ता गया । इस घटना से परिवार में बहुत हंगामा हुआ था सुधा चौहान के अनुसार – "रामप्रसाद सिंह का गुस्सा था कि अब बहनों से भी

ज्यादा अपनी पत्नी पर बढ़ता जा रहा था। उनका कहना था कि जब इसे पराये मर्द ने छू लिया तो अब ये मेरे किस काम की।"[1] इस प्रकार की वर्जनाएं और बंधन समाज में व्याप्त थे। सुभद्रा कुमारी चौहान की माता ने भी इन बन्धनों को स्वीकार किया था।

समाज में नारी के लिए वर्जनाएं और बंधन तो थे ही परन्तु परिवार में नारी पर नारी के बंधन भी कुछ अधिक कठोर थे। परिवार की बूढ़ी स्त्रियाँ, लड़के लड़कियों में फर्क किया करती थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान की दादी जी, 'लड़कों को घी खाने में देती थीं, पर लड़कियों को नहीं।'[2] इस प्रकार के भेदभाव उनके परिवार तथा तत्कालीन समाज में व्याप्त थे।

बाल्यकाल में सुभद्रा कुमारी चौहान को एक ऐसा परिवेश मिला जहाँ स्त्रियों को घर की देहरी से बाहर जाने की अनुमति प्रायः नहीं थी। उनका राजपूत परिवार इन बन्धनों से युक्त था पर उनकी स्वाभाविक निर्भीकता इन बन्धनों से कभी बाधित नहीं हुई। कठोर पर्दा होने के बावजूद सुभद्रा की माता धिराजकुंवर में आत्मविश्वास और बहादुरी कूट-कूट कर भरी हुई थी। इतना बंधन होने पर भी वे डरपोक नहीं थीं। वे सौन्दर्य के साथ-साथ निर्भीकता की प्रतिमा ही थीं। परिवार पर आए बाह्य एवं आन्तरिक कष्टों से वे सदैव संघर्ष करती थीं। घर पर विषैले जीव-जंतु जैसे साँप आदि निकल आने पर सुभद्रा और उनकी माँ धिराजकुंवर एवं उनकी बहनें निर्भय होकर उसे मार डालती थीं। एक बार राष्ट्रीय आन्दोलन के समय इलाहाबाद में बड़ा शासकीय आतंक छाया हुआ था। सभी चिंतित थे। सुभद्रा की माता धिराजकुंवर भी चिंतित थी। उनकी चिंता इस बात को लेकर थी कि बिना हथियार के उनके बच्चे पुलिस का सामना किस प्रकार करेंगे। उन्होंने अपने लड़कों से पूछा –"सुनती हूँ लड़ाई होने वाली है। तुम लोगों के पास हथियार तो है नहीं, निहत्थे कैसे लड़ोगे ?"[3] जब पुत्रों ने

---

[1] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 36

[2] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 22

[3] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 35

समझाया कि जरूरत होगी तो हथियार मिल जायेंगे, तभी वे आश्वस्त हुईं। यह घटना उनकी बहादुरी और आत्मविश्वास को ही प्रकट करता है। यह भी कहना उचित होगा कि ये सारे गुण सुभद्रा कुमारी चौहान को अपने परिवार से विरासत में मिले थे। निश्चय ही सुभद्रा उस समय परिपक्व नहीं हुई थी लेकिन उन्होंने अपनी माता के निर्भीक स्वभाव और आत्मसम्मान की भावना का मान रखा था। उन्होंने अपने देशप्रेमी भाईयों के संस्कार को अपने मन और मस्तिष्क में आत्मसात कर लिया था। सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व पर उनके परिवार में घटित घटनाओं का प्रभाव बचपन से ही पड़ा था, जिनसे हम उनके व्यक्तित्व को सहज ही समझ सकते हैं।

तत्कालीन समाज और परिवार में पुरुष के अन्याय को बिना किसी विरोध के सह लेना स्त्री का धर्म माना जाता था। पति परमेश्वर है, बचपन से यही ज्ञान स्त्री को सिखाया जाता था लेकिन सुभद्रा कुमारी चौहान बचपन से ही संवेदनशील स्वभाव की थीं। उनके मन में एक संघर्षशील और स्वाभिमानी नारी की छवि विद्यमान थी। वे नारी को स्वछंद तो नहीं किन्तु स्वतंत्र एवं आत्मनिष्ठ जरुर देखना चाहती थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान स्वाभिमानी थीं उनके लिए इन बन्धनों को चुपचाप स्वीकार कर लेना कठिन था। सुभद्रा कुमारी चौहान के मन और मस्तिष्क पर परिवार की इन अवस्थाओं ने गहरा प्रभाव डाला। यह प्रभाव बचपन में उनकी क्रीड़ाओं के माध्यम से देखा जा सकता है। उनके द्वारा खेले जाने वाले खेल के बारे सुधा चौहान इस प्रकार लिखती हैं – "घर में ही पाँच-छः लड़कियाँ थीं, फिर कभी-कभी पड़ोस की लड़कियाँ भी आ जाती थीं। शाम को खूब जोरों का खेल जमता था, कभी धमा-चौकड़ी होती तो कभी ज्यादा गंभीर तरह के खेल होते। महिला समिति की सभा होती थी, लड़कियां स्त्री सुधार पर, पर्दे के विरोध में और शिक्षा प्रसार पर जोर-शोर से भाषण देतीं। आपस में कोई

सभापति बन जाती, कोई मंत्री कोई वक्ता।"[1] यही कारण है कि सुभद्रा कुमारी चौहान जीवन में स्त्रियों का पक्ष लेकर लड़ती रहीं। इसका स्वाभाविक प्रभाव उनके साहित्य पड़ता है। इस पृष्ठभूमि के कारण ही उनकी कविताओं में और कहानियों में स्त्री के प्रति सहानुभूति और पक्षधरता दिखाई पड़ती है।

सुभद्रा कुमारी चौहान अपने माता-पिता की सातवीं संतान थी, परिवार के सभी बच्चों में सबसे अधिक शरारती होने के साथ ही सबकी चहेती भी थीं। जो बात पसंद न आये उसके खिलाफ विद्रोह करने में उन्हें देर नहीं लगती थी। एक बार उनकी माँ एक कुम्हार स्त्री के साथ दूर से खड़ी होकर बातें कर रही थीं, तो सुभद्रा कुमारी चौहान ने झट से टोक दिया, 'दीदी, धरती के भी टुकड़े कर लो'[2] यह सुनने में सामान्य सा वाक्य है लेकिन यह वाक्य बालिका सुभद्रा ने कहा था। इस वाक्य के पीछे की मानवीयता और संवेदना अद्भुत है। वह भी एक ऐसे सामन्ती समाज और परिवार में जहाँ इसी व्यवहार को स्वाभाविक समझा था। जाति के आधार पर व्यवहार करना असल में हमारी धरती के ही टुकड़े करने के समान है, यह आज भी कितने लोगों को समझ आता है ? यह सुभद्रा कुमारी चौहान के एक मानवतावादी साहित्यकार के बनने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

बालिका सुभद्रा के लिए बचपन से ही मनुष्य-मनुष्य में कोई फर्क नहीं था। गरीबों के प्रति उनके मन में सहज सहानुभूति थी। बाल्यकाल में भी सुभद्रा कुमारी चौहान घर के छोटे मोटे काम नौकरों से न करवाकर स्वयं कर लेती थीं। कड़ाके की सर्दी में नौकरों को अपनी एकमात्र रजाई दे देना, स्वयं एक धोती ओढ़कर सो जाना उनके लिए बड़ी बात नहीं थी। नौकरों को डांटना फटकारना सुभद्रा कुमारी चौहान को बचपन से पसंद नहीं था। एक बार सुभद्रा कुमारी चौहान के बड़े भाई ने नौकरानी को डांटा और मारने के लिए हाथ उठाया

[1] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 39
[2] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 37

क्योंकि कड़ाके की सर्दी के कारण वह उनके कमरे में जल्दी नहीं पहुँच पाई थी। तब सुभद्रा कुमारी चौहान तुरन्त बोल उठी –'गरीब को मारते हो, जिन्दगी भर तुम्हारा हाथ दुखेगा।'[1] जो लोग मौसम की परवाह न करते हुए दूसरों की सेवा में तत्पर रहते हैं, वह पिटाई के नहीं हमारे प्यार के हकदार हैं, ऐसा सुभद्रा कुमारी चौहान का मानना था। उनका साहित्य भी आगे चल कर उनके सोच को प्रमाणित करता है।

इस प्रकार गलत का विरोध करना सुभद्रा कुमारी चौहान को बचपन से आता था। सामन्ती रूढ़िबद्ध परिवार की सारी विषमताओं से सुभद्रा कुमारी चौहान परिचित थीं। इन सारी पारिवारिक घटनाओं ने उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया था। इसी दृष्टि से उनका संघर्ष और साहित्य बहुमुखी होता गया।

1.1.4 शिक्षा :

सुभद्रा कुमारी चौहान का विद्यार्थी जीवन इलाहाबाद में ही गुजरा। उनके परिवार में एक ओर ठाकुर रामप्रसाद सिंह जैसे कठोर रुढ़िवादी व्यक्ति थे दूसरी ओर ठाकुर रामऔतार सिंह और रामप्रसाद सिंह जैसे प्रगतिशील विचारों के व्यक्ति भी थे। जो अपने परिवार की स्त्रियों को शिक्षित बनाना चाहते थे। वैसे तो सुभद्रा कुमारी चौहान के भाई ठाकुर रामऔतार सिंह की मृत्यु जल्दी हो गई थी लेकिन उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान की बड़ी बहन महादेवी(बिट्टी) से स्त्री शिक्षा का आरम्भ कर दिया था। उनके बाद छोटे भाई राजबहादुर सिंह ने परिवारों की स्त्रियों को शिक्षित करने का जिम्मा उठाया। उनके प्रयासों के कारण ही सुभद्रा कुमारी चौहान तथा उनकी विधवा बहन रानी और सुभद्रा कुमारी चौहान की छोटी बहन

[1] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 22

कमला स्कूल में प्रवेश कर सकीं। यह बात अलग है कि स्कूल जाते समय उनके इक्के पर पर्दा लगा रहता था। उनका पारिवारिक संस्कार उनके माता-पिता की छत्रछाया में हो रही थी परन्तु स्कूल के संस्कार से विपरीत घर के वातावरण में उन्हें कठोर अनुशासन में रहना पड़ता था।

सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रारंभिक शिक्षा प्रयाग के क्रास्थवेंट स्कूल में हुई। सुभद्रा कुमारी चौहान 5-6 वर्ष की आयु में ही कविता की तुकबंदी करने लगी थीं। यही कारण था कि वे स्कूल में शीघ्र ही अध्यापिकाओं की प्रिय हो गईं। यहीं उनकी मुलाकात महादेवी वर्मा से हुई और बहुत जल्द दोनों में मैत्री हो गई। उस समय बालिका सुभद्रा कुमारी सातवीं और महादेवी वर्मा पांचवीं कक्षा की छात्राएँ थीं। सुभद्रा और महादेवी वर्मा दोनों सहेलियों का रुझान बचपन से ही कविता लिखने की ओर था इसलिए मित्रता होना स्वाभाविक था। जीवन के अंत तक यह मैत्री इन दोनों कवयित्रियों के बीच बनी रही। दोनों ने एक दूसरे की कीर्ति से सुख पाया। सुभद्रा कुमारी चौहान की पढ़ाई नवीं कक्षा के बाद छूट गई। उस समय इन दोनों के लिए शिक्षा का आधार स्कूल था पर हिंदी साहित्य के लिए यहाँ दोनों प्रतिभा संपन्न सहेलियों का मिलना एक बड़ी बात थी।

1.1.5 दाम्पत्य जीवन :

सुभद्रा कुमारी चौहान का समय सामाजिक रूढ़ियों का समय था जिसमें स्त्री की स्वाधीनता को प्राय: उपेक्षित कर दिया जाता था। स्त्री की शिक्षा महज खानापूर्ति हुआ करती थी। सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ भी यही हुआ था जब वे आठवीं कक्षा में पढ़ रही थीं तब उनकी सगाई ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हो गई। उस समय उनकी स्कूल की अध्यापिका ने

उनके भाई से कहा था कि “आप इसका विवाह न करें विवाह करके आप देश की अपार क्षति करेंगे, क्योंकि यह एक ऐतिहासिक लड़की होगी ।”[1] उनकी अध्यापिका ने सुभद्रा कुमारी चौहान के भीतर छिपी हुई प्रतिभा को पहचान लिया था लेकिन फिर भी सुभद्रा कुमारी चौहान का विवाह जल्द ही कर दिया गया ।

सुभद्रा कुमारी चौहान का विवाह ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ 20 फरवरी सन् 1919 ई. को संपन्न हुआ । सुभद्रा कुमारी चौहान विवाह के पश्चात् जबलपुर में रहने लगीं । सगाई और विवाह के बीच उनकी माँ का देहांत हो गया । सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी माँ से अधिक जुड़ी हुई थीं, इस कारण उन्हें गहरा आघात लगा । पिता की मृत्यु इसके तीन वर्ष पूर्व ही हो चुकी थी । सुभद्रा कुमारी चौहान और लक्ष्मण सिंह का विवाह उन दिनों के होने वाले विवाहों की तुलना में बिल्कुल भिन्न था । उनकी पुत्री सुधा जी के शब्दों में - “अपने समय को देखते हुए यह शादी बहुत क्रांतिकारी शादी थी...न लेन देन की बात हुई, न बहू ने पर्दा किया और न कड़ाई से छुआछूत का पालन हुआ ।”[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान का विवाह उस समय को देखते हुए एक क्रांतिकारी विवाह था । जब ठाकुर लक्ष्मण सिंह सुभद्रा कुमारी चौहान को विदा करा के इलाहाबाद से खंडवा ले जा रहे थे, तब उन्होंने इटारसी स्टेशन पर सुभद्रा कुमारी चौहान को साथ लेकर प्लेटफार्म के दो-तीन चक्कर लगाये । यह देखकर उनके बड़े भाई जो पहले से ही इस विवाह से असंतुष्ट थे और अधिक क्रुद्ध हो गये । उन्होंने घर पहुँचते ही हुक्म दिया कि बहू बिना घूँघट के घर में प्रवेश नहीं पा सकेगी । इस प्रसंग को टालने के लिए अपने स्वभाव के प्रतिकूल सुभद्रा कुमारी चौहान ने घूँघट निकाल लिया था । उनकी इस तरह की प्रतिक्रिया पर सुधा जी लिखती हैं कि “रूढ़ियों से यह टकराव जो ससुराल की दहलीज से शुरू हुआ वह आजीवन चलता रहा ।

[1] उद्धरित, सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सविता भरतिया, पृ. सं. - 16

[2] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 68

उनका ये कभी-कभी का झुकना बेंत का लचीलापन था, जो उसे आंधी में टूट जाने से बचाता है, पर अपनी जगह दृढ़ता से खड़ा रखता है।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान स्वयं आजीवन अविवाहित रहकर देश सेवा करना चाहती थीं किन्तु इस दृष्टि से वे भाग्यशाली रहीं कि वैवाहिक जीवन में उन्हें पति का साथ मिला। उनके पति के मन में भी देश और समाज के प्रति प्रेम था, वे स्वयं सुलझे हुए विचारों के व्यक्ति थे। पति लक्ष्मण सिंह ने सुभद्रा कुमारी चौहान को स्वयं अपनी इच्छानुसार देश और समाज की सेवा करने का मार्ग चुनने दिया था और एक सच्चा साथी बनकर उनका साथ दिया था। इसलिए शादी के डेढ़ वर्ष होते ही वह सत्याग्रह में शामिल हो गई थीं। इस संदर्भ में पं. माखनलाल चतुर्वेदी का कथन है कि "लक्ष्मण का व्यक्तित्व इतना ऊँचा था कि सुभद्रा के विकास में किसी तरह की बाधा आ ही नहीं सकती थी। वह बिल्कुल स्वतंत्र था, बिल्कुल रिवोल्यूशनरी। सुभद्रा ने कविता में नाम कमाया, राष्ट्रीय आन्दोलन में काम किया, अगर उसके व्यक्तित्व में लक्ष्मण का व्यक्तित्व न मिल गया होता...ठीक जैसे दूध पानी में घुल-मिल जाता है।"[2]

देश सेवा के इस मार्ग में विवाह के बाद वे एक वर्ष तक 'थियोसोफिकल स्कूल' में पढ़ती रहीं। देश में तब असहयोग आन्दोलन का वातावरण बनने लगा था। इसी समय माखनलाल चतुर्वेदी ने जबलपुर से 'कर्मवीर' का प्रकाशन आरंभ किया था। इसके बाद ही सुभद्रा कुमारी चौहान को माखनलाल चतुर्वेदी जैसे महान कवि और राष्ट्रीय व्यक्तित्व का सानिध्य प्राप्त हुआ। उनके सानिध्य से ही इस वातावरण में उनके अंदर की लेखन की प्रतिभा भी जागृत होने लगी और 'कर्मवीर' उनकी प्रतिभा का कर्मक्षेत्र बन गया। इसी का परिणाम था कि महात्मा गाँधी द्वारा असहयोग आन्दोलन की पुकार ने उन्हें देशप्रेम की भावनाओं से

[1] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. -70

[2] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 89

भर कर कर्मक्षेत्र में उतार दिया । उन्होंने अपनी स्कूल की पढ़ाई का त्याग कर दिया और जबलपुर आ गयीं ।

उनका प्रारंभिक जीवन ही राष्ट्रीय भावनाओं के परिवेश में पल्लवित हुआ और यहीं से उनका संघर्ष प्रारंभ हुआ । विवाह के पश्चात् दोनों पति-पत्नी देश की सेवा में जुट गए । आगे उन्होंने जीवन के कई महत्वपूर्ण वर्ष जेलों में गुजारे । गृहस्थी और नन्हें बच्चों का जीवन संवारते हुए उन्होंने समाज और राजनीति की सेवा की । देश के लिए अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटीं और समाज की जिम्मेदारी संभालते हुए उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ की बलि चढ़ा दी । उनके पति ठाकुर लक्ष्मण सिंह की प्रेरणा और प्रगतिशील विचारों ने सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व के विकास की भूमिका में बड़ा योगदान दिया है ।

1.1.6 मातृत्व :

सुभद्रा कुमारी चौहान एक स्नेही और ममतामयी माँ थीं । सुभद्रा कुमारी चौहान को छ: संतान हुए । सबसे बड़ी पुत्री सुधा चौहान थीं । जिसका विवाह प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय के साथ 1945 ई. में हुआ था । सुधा से छोटे अजय, विजय, अशोक और एक पुत्र और फिर पुत्री ममता थे । अशोक से छोटे पुत्र का देहांत एक वर्ष की आयु में हो गया था । सुभद्रा कुमारी चौहान को इसका गहरा आघात लगा । संतान की मृत्यु पर उन्होंने ‘पुत्र वियोग’ शीर्षक लम्बी कविता लिखी जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

“शीत न लग जाए, इस भय से

नहीं गोद से जिसे उतारा

छोड़ काम दौड़कर आई

माँ कहकर जिस समय पुकारा।

थपकी दे-दे जिसे सुलाया

जिसके लिए लोरियाँ गाईं

जिसके मुख पर जरा मलिनता

देख आँख में रात बिताई।

जिसके लिए भूल अपनापन

पत्थर को भी देव बनाया

कहीं नारियल, दूध, बताशा

कहीं चढ़ाकर शीश नवाया।"[1]

यह कविता उनकी सरल संवेदना और ममता को व्यक्त करती है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने देश के लिए कार्य करते हुए कभी भी अपने परिवार की उपेक्षा नहीं की। बच्चों के प्रति उनकी ममता और स्नेह अपार था। सुधा चौहान ने लिखा है, "मुझे लगता है कि हमारी माँ का मातृत्व औरों से कुछ अधिक विकसित, अधिक उदार था।"[2] वास्तव में उनका यही प्रेम और ममता उदात्त होकर राष्ट्रप्रेम में बदल गया। उन्होंने पूरे राष्ट्र को अपने परिवार सा बना लिया।

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान रचनावली भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 180

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान, सुधा चौहान, पृ. सं. - 6

1.1.7 राजनीतिक कार्यकर्त्ता :

सुभद्रा कुमारी चौहान का तत्कालीन समय स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम और देश की आजादी से पूर्व का समय था, सुभद्रा कुमारी चौहान अपने समय की माँग पर खरी उतरती हैं। कहा जाता है उनके जीवन का श्रृंगार राष्ट्र सेवा थी। उनके अंदर नारी-सुलभ कोमलता और तेजस्विता दोनों प्रवृत्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनके व्यक्तित्व को इस रूप में देखा जाता है – "गृहिणीत्व से मण्डित राष्ट्र सेविका का उनका ऋजु व्यक्तित्व था।"[1] सुभद्राजी अपने पति के साथ पारिवारिक जीवन छोड़कर देश की अटूट सेवा में लग गईं। पूरे देश को अपना परिवार मानने वालीं और पूरे देश की समस्या को अपने घर की समस्या मानने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान ने जीवन और साहित्य को एक तरह से बरता। इसी वजह से उनके साहित्य में राष्ट्र-प्रेम और मातृत्व की पुकार समान भाव से दिखाई पड़ते हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन गाँधी जी के आदर्शों पर आधारित रही है। वे गांधी जी की भक्त थीं। इसलिए उनको गाँधीजी की अनुगामिनी कहा जाता है। जब वे थियोसिफिकल स्कूल की छात्रा थीं तब देश में असहयोग आन्दोलन छिड़ गया। आगे की पढ़ाई छोड़कर देश सेवा करने निकल गईं। दोनों पति-पत्नी मिलकर तिलक स्वराज्य फण्ड के लिए गाँव-गाँव घूमते और घर-घर जाकर पैसा जमा कर रहे थे। मार्च 1923 ई. को जबलपुर में झंडा-सत्याग्रह शुरू हुआ। यह झंडा-सत्याग्रह का केंद्र नागपुर स्थानान्तरित हुआ। पंडित सुन्दरलाल और नाथूराम मोदी के साथ सुभद्रा कुमारी चौहान ने झंडा-जुलूस निकला। जबलपुर से सुभद्रा कुमारी चौहान और उनके पति के नेतृत्व में स्वयं सेवकों का एक जत्था नागपुर भेज दिया गया। उस समय सत्याग्रहियों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। सुभद्रा कुमारी चौहान सत्याग्रह करते हुए अंत में गिरफ्तार हुईं। इस प्रकार वे हिंदुस्तान की पहली

---

[1] सुभद्रा-साहित्य और राष्ट्रीय कविता, कमलाकान्त पाठक, पृ. सं. - 24

सत्याग्रही बनीं। 1931-32 ई. के सत्याग्रह आन्दोलन में वे अपने बच्चों के बहुत छोटे होने के कारण जेल नहीं गईं, लेकिन इस सत्याग्रह में उनके पति जेल गए। 1940 ई. में सत्याग्रह करने के कारण सुभद्रा कुमारी चौहान गिरफ्तार हुईं इसके बाद अगस्त आन्दोलन में वे फिर से जेल गयीं। वे कांग्रेस की कार्यकर्त्ता थीं उन्होंने पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कांग्रेस के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया। उनकी मनोवृत्ति त्याग, सेवा, समर्पण, शांति, अहिंसा व करुणा की थी। वे देश के लिए पूरे मन से सहयोग देती रहीं।

सुभद्रा कुमारी चौहान का स्वभाव ही ऐसा था कि वे देश की सेवा, उसकी उन्नति और रक्षा उनके जीवन का लक्ष्य था। सुभद्रा कुमारी चौहान त्याग और बलिदान की मूर्ति थीं। सुभद्रा ने अपना तन मन धन सब कुछ अपने देश के लिए लगा दिया "समय की गति को पहचान कर अपने या अपनी पार्टी के स्वार्थ के लिए काम करने की 'राजनीतिक' सूझ-बूझ उनके पास नहीं थी। राजनीतिक कार्यकर्त्ता होने के नाते यह उनकी बहुत बड़ी कमजोरी थी और जन-हितैषी कार्यकर्त्ता के रूप में यही उनकी सबसे बड़ी ताकत थी।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान को छल – प्रपंच बिल्कुल नहीं आता था वे इसके विपरीत थीं इसलिए वे छल की राजनीति से हमेशा दूर रहीं। जैनेन्द्र कुमार उनकी राजनीतिक गतिविधियों के विषय में लिखते हैं कि "राजनीति से उसने जितना लिया नहीं जितना अपने को दिया।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान नागपुर स्थित मध्यप्रदेश विधानसभा की सदस्य दो बार रहीं। वे महिलाओं के लिए सुरक्षित स्थान पर दोनों बार जबलपुर से निर्विरोध निर्वाचित हुईं। उन्होंने विधानसभा में तलाक बिल पेश किया था। वे जांत-पांत को एक ढकोसला मानती थी। वे स्वयं अछूतों के साथ बराबरी का बर्ताव करती थीं। अन्याय और अत्याचार के खिलाफ वे

---

[1] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 292

[2] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. - 282

हमेशा आवाज उठाती थीं। वे विधानसभा में अछूत-समस्या पर भी बहस की थी। वे इस समितियों की स्थायी सदस्य भी रहीं।

1.1.8 जीवन दर्शन :

सुभद्रा कुमारी चौहान के पास जीवन को देखने का अपना अलग और विशिष्ट दृष्टिकोण था। वे अपने सुख-दुःख में हमेशा सकारात्मक रवैया अपनाती रहीं। उनका स्वभाव ऐसा था कि उन्हें कभी किसी ने उदास या निराश नहीं देखा। 'मेरा जीवन' शीर्षक कविता में वे लिखती हैं –

"सुख भरे सुनहले बादल

रहते हैं मुझको घेरे।

विश्वास, प्रेम, साहस हैं

जीवन के साथी मेरे।"[1]

जीवन की सभी समस्याओं को सुभद्रा कुमारी चौहान हँसते-हँसते पार कर जाती थीं इसलिए ऐसे ही विचार काव्य में भी अभिव्यंजित होते हैं –

"मैं अब तक जान पाई

कैसी होती है पीड़ा ?

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 138

हँस-हँस जीवन में कैसे

करती है चिंता क्रीड़ा ?"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान अपने जीवन में प्रेम को सर्वाधिक महत्त्व देती थीं। उनका मानना था कि प्यार ही है जो जीवन और हमारी दुनिया को खूबसूरत बना सकता है। प्रेम उनके जीवन का सबसे बड़ा दर्शन है, प्रेम के महत्त्व को अपनी कविता में स्पष्ट करती हुईं वे लिखती हैं,

"मैंने सदा किया है सब से

मधुर प्रेम का ही व्यवहार

विनिमय में पाया सदैव ही

कोमल अन्तस्तल का प्यार।"[2]

उनका स्पष्ट मानना था कि प्रेम का प्रतिदान प्रेम ही होता है। इसलिए वे कहती हैं कि जीवन में उन्होंने हमेशा सबसे प्यार किया और उसके बदले में उन्हें लोगों का बहुत प्यार मिला। अर्थात् अगर हम इस समाज को समरसतापूर्ण बनाना चाहते हैं तो हमें लोगों से प्यार करना सीखना पड़ेगा, एक - दूसरे का सम्मान करना सीखना पड़ेगा। इसलिए उन्होंने 'मधुर प्रेम व्यवहार' को सर्वाधिक महत्त्व दिया।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 137

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 146-147

वे सिर्फ प्रेम करना जानती थीं, अपनी रचनाओं में वे दुनिया को प्रेम की परिभाषा के माध्यम से व्याख्यायित करती हैं। दूसरे अर्थ में कहा जा सकता है कि उनका जीवन ही प्रेम का पर्याय की तरह प्रतीत होता है। वे लिखती हैं –

"मैं हूँ प्रेममयी जग दिखता

मुझे प्रेम का पारावार

भरा प्रेम से मेरा जीवन

लुटा रहा है निर्मल प्यार।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी वर्मा की बचपन की सहेली थीं। किन्तु दोनों के जीवन को देखने के दृष्टिकोण में बहुत अंतर था। महादेवी के लिए जीवन की सार्थकता उसकी दुखमयता में अधिक थी, 'नीर भरी दुःख की बदरी' जबकि इसके विपरीत सुभद्रा कुमारी चौहान की दृष्टि बहुत ही व्यापक और स्वतंत्र थी, इसलिए वे स्वयं अपनी कविता 'मेरा जीवन' में इस प्रकार लिखती हैं -

"मैंने हँसना सिखा है,

मैं नहीं जानती रोना

बरसा करता पल-पल पर

मेरे जीवन में सोना।"[2]

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 147

[2] पथ के साथी, महादेवी वर्मा, पृ. सं. - 45

उपर्युक्त पंक्तियों को सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन का सार कहा जा सकता है। उनके व्यक्तित्व का अंदाजा इसी से लगा सकते हैं। वे जुझारू प्रवृत्ति की थीं, वे हर मुसीबत से हंस-हंस कर जूझना चाहती थीं। जीवन को वे हंसकर जीना चाहती थीं, वे जीवन के प्रति अपने विचार को कविता में इस प्रकार अभिव्यक्त करती हैं –

"मैं न कभी रोई जीवन में

रोता दिखा न यह संसार

मृदुल प्रेम के ही गिरते हैं

आँखों से मोती दो-चार।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान जीवन के प्रत्येक पल को जीना जानती थीं इसलिए बचपन से लेकर मृत्यु तक उन्होंने जब भी, जो भी निश्चय किया उसे पूरा किया। वे परिस्थितियों के सामने झुकीं नहीं बल्कि परिस्थितियों को उन्होंने अपने सामने झुकाया। सुधा चौहान लिखती हैं, "माँ जीवन भर बहादुर बनी रही, और जो भी काम उन्होंने किया उसमें विजय मिली।"[2]

1.1.9 मृत्यु :

सुभद्रा कुमारी चौहान ने परिवार, समाज, राजनीति, साहित्य और मानवीय संबंधों में अद्भुत सामंजस्य बनाया है। अंत में 15 फरवरी 1948 ई. को बसंत पंचमी के दिन तीन-चार मुर्गी के बच्चों को बचाने की कोशिश में उनकी कार एक पेड़ से टकरा गई और उस कार

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 147
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान, सुधा चौहान, पृ. सं. - 3

दुर्घटना में सुभद्रा कुमारी चौहान का देहांत हो गया । जबलपुर से नागपुर की इस कार-यात्रा की दुर्घटना में सुभद्रा कुमारी चौहान का पार्थिव शरीर तो समाप्त हुआ लेकिन उन्होंने अपने अडिग राष्ट्रप्रेम, सेवा, समर्पण और अपने प्रगतिशील विचारों से हिंदी साहित्य में जो स्थान बनाया था, वह हमेशा अक्षुण्ण रहेगा । दुर्घटना की पृष्ठभूमि में मुर्गी के चूजों का जो सच है, वह उनके व्यक्तित्व की महानता को दर्शाता है । उनकी विदाई में उनकी ही लिखी कविता की पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं –

"जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारत वासी

यह तेरा बलिदान जगायेगा स्वतंत्रता अविनाशी ।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन और साहित्य में कोई अंतर दिखाई नहीं पड़ता । यह किसी भी साहित्यकार और उस भाषा के साहित्य के लिए एक बड़ी उपलब्धि सरीखा है ।

1.2 सुभद्रा कुमारी चौहान का रचना कर्म :

सुभद्रा कुमारी चौहान ने रचनात्मक भूमिका को बखूबी निभाते हुए हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है । कविताओं और कहानियों के रूप में उनका रचना कर्म दिखाई पड़ता है । सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्यिक सृजन कर्म की शुरुआत कविता से हुई । तत्पश्चात उन्होंने कथा साहित्य में अपना योगदान दिया । इसके अतिरिक्त संकलन, सम्पादन, बालगीत, लेख आदि में भी उनकी विशेष रूचि दिखाई पड़ती है । उनके कविता-संग्रह 'नक्षत्र', 'कविता कौमुदी', 'त्रिधारा' नामक शीर्षक से प्रकाशित हैं । सुभद्रा

[1] मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. - 75

कुमारी चौहान के तीन कविता संग्रह प्रकाशित हुए लेकिन बाद में उन तीनों का समेकित संस्करण ‘मुकुल तथा अन्य कविताएँ’ नाम से आया है जिसका प्रथम प्रकाशित संस्करण 1930 ई. है। ‘त्रिधारा’ में 13 कविताएँ संकलित हैं और मुकुल कविता संग्रह में 19 कविताएँ संग्रहित हैं। ‘झाँसी की रानी’ एक लम्बी कविता है जो स्वतंत्र रूप से प्रकाशित हुई थी। सुभद्रा कुमारी चौहान के कविता-संग्रह के बाद, कहानी-संग्रह क्रमशः इस प्रकार प्रकाशित हुए हैं –

‘बिखरे मोती’(1932), ‘उन्मादिनी’(1934) और ‘सीधे सादे चित्र’(1947)।

सुभद्रा कुमारी चौहान के रचनाकार की खास बात यह भी है कि उन्होंने बच्चों पर कविताएँ लिखीं। हिंदी साहित्य में बाल-साहित्य की कमी को भी उन्होंने पूरा किया है। अपने बच्चों के लिए जहाँ से भी मिलता, वहाँ से ढूंढ़-ढूंढ़ कर कहानी-कविता की पुस्तकें लाती थीं और उन्हें पढ़-पढ़कर सुनाती थीं। ‘सभा का खेल’, ‘कदम्ब का पेड़’ और ‘कोयल’ शीर्षक से उनकी बाल कविताओं का प्रकाशन हुआ। उनकी ‘कदम्ब का पेड़’ कविता केवल काव्य-दृष्टि से ही नहीं बल्कि भाव-दृष्टि से भी अद्वितीय है। बच्चों के मन की बहुत गहरी समझ सुभद्रा कुमारी चौहान को थी। उन्होंने बच्चों के लिए ‘कोयल’ ‘रामायण की कथा’, ‘पानी और धूप’, ‘खिलौनेवाला’, ‘कुट्टी’, ‘पतंग’, ‘बांसुरी वाला’, ‘मुन्ना का प्यार’, ‘अजय की पाठशाला’, ‘सभा का खेल’, ‘नटखट विजय’ आदि कविताएँ लिखीं। अजय की पाठशाला कविता अक्टूबर 1933ई. में ‘अजय का पाठशाला जाना’ शीर्षक से छपी थीं। सभी कविताओं में बाल मन की और उनकी क्रीड़ाओं की गहरी समझ तथा सरल अभिव्यक्ति है। सुभद्रा कुमारी चौहान की अधिकांश बाल-कविताएँ ‘बाल-सखा’ पत्रिका में छपी थीं।

सुभद्रा कुमारी चौहान की पहली कविता ‘नीम’ शीर्षक कविता को माना जाता है जो जून-जुलाई 1913 ई. के मर्यादा पत्रिका में छपी थी। सुभद्रा कुमारी चौहान ने बचपन से ही

कविता लिखना शुरू कर दिया था। कविता लेखन के प्रति उनमें ऐसी लगन थी कि आरंभिक शिक्षा के दौरान वे गणित की कॉपी तक में कविताएँ लिखती थीं। बचपन से ही वे तुकबन्दी किया करती थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान की माता उन्हें गोगा का डर दिखाया करती थी किन्तु बालिका सुभद्रा को वह कभी दिखाई नहीं दिया। वैसे ही भगवान का नाम भी उन्होंने सुना था। अपने डर को उन्होंने इस प्रकार तुकबन्दी में परिवर्तित किया –

"हम बिन व्याकुल हैं सब लोगा

तुम हो इस देश के गोगा।"[1]

इस तुकबंदी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इतनी छोटी उम्र में भी उनके मन मस्तिष्क में देश छाया हुआ था। बचपन की इस तुकबन्दी के अलावा हिंदी साहित्य जगत में उनकी प्रथम रचना 'नीम' भी देखने योग्य है –

"सब दुखहरन सुखकर परम है नीम: जब देखूं तुझे

तुहि जानकर अति लाभकारी हर्ष होता है मुझे।

जब तक देश में तुम सर्वदा फूलो फरो

निज वायु शीतल से पथिक जन का ह्रदय शीतल करो।

तु रोगमुक्त अनेक जन को सदा करती रहे

इस भांति से उपकार तू हरेक का करती रहे।"[2]

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, सविता भरतिया, पृ. सं. - 63

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, सविता भरतिया, पृ. सं. - 64

हिंदी साहित्य में यह वह समय था जब द्विवेदी युग में प्रकृति-चित्रण विषयक कविताओं का चलन था। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'नीम' कविता से प्रकृति-चित्रण जैसी विशेषताएँ ही दृष्टिगोचर होती हैं। नीम के बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ उसके आयुर्वेदिक गुणों का भी इस कविता में उल्लेख है।

1.2.1 कविता संग्रह :

1.2.1.1 मुकुल :

'मुकुल' सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं का संकलन है। इससे पहले उनकी कविताओं का कोई संग्रह नहीं प्रकाशित नहीं हुआ था। उन्होंने स्वयं 'मुकुल' कविता-संग्रह की प्रस्तावना में लिखा है, "मेरे पास अपनी कविताओं का न तो कोई संग्रह था और न मुझे ठीक यही याद था कि मेरी कौन कविता कब, कहाँ छपी है।"[1] यहाँ लेखिका के इस बड़प्पन की ओर सहज ही ध्यान आकृष्ट होता है कि उन्होंने महज प्रकाशन के लिए कविताएँ नहीं लिखीं। सुभद्रा कुमारी चौहान 'मुकुल' के संदर्भ में इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखती हैं कि "मैंने कभी यह इच्छा प्रगट नहीं की कि मेरी कविताएँ इकट्ठी की जाएँ और उनकी पुस्तक तैयार हो। यह बात तो कभी मैंने सोची भी नहीं थी कि कभी कोई इन्हें यह रूप देगा और न यह समझ कर मैंने कोई कविता ही कभी लिखी है। किन्तु अनेक बार जो बात सोची समझी नहीं जाती, वही सामने आती है। इन कविताओं के संबंध में भी यही हुआ।"[2]

[1] मुकुल, सुभद्राकुमारी चौहान, पृ. सं. - 6
[2] उपरोक्त, पृ. सं. 5-6

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं को विषयवस्तु या प्रवृत्ति के आधार पर देखा जाए तो मुख्यतः राष्ट्रीय भावना की कविताएँ, वात्सल्य भाव की कविताएँ, जीवन-दर्शन विषयक कविताएँ और प्रणय-भाव या श्रृंगार की कविताएँ देखने को मिलती हैं । राष्ट्रीय भावना की कविताओं में 'वीरों का कैसा हो बसंत', 'सेनानी का स्वागत', 'झाँसी की रानी की समाधि पर', 'जलियांवाले बाग में बसंत' 'झाँसी की रानी' 'मातृ मंदिर में' आदि प्रमुख हैं । जीवन दर्शन विषयक कविताओं में 'मेरा बचपन', 'मेरा जीवन', 'मेरा गीत', 'मेरी कविता' आदि प्रमुख हैं।

हिंदी साहित्य की राष्ट्रीय भावधारा के अंतर्गत कविता करने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान अपने समय की एकमात्र कवयित्री हैं । इस काव्यधारा में वे अपनी साहित्यिक व्यक्तित्व के कारण बड़े आदर के साथ पढ़ी और स्मरण की जाती हैं । वे अपनी एकमात्र कविता 'झाँसी की रानी' से हिंदी के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कवियों में अपना स्थान बना चुकी थीं। इसका दुष्परिणाम ही है कि उनका आकलन उनकी केवल राष्ट्रीय रचनाओं के आधार पर किया जाता है, जबकि सुभद्रा कुमारी चौहान ने अन्य विषयों पर भी रचनाएँ की हैं । उन्होंने नारी के विभिन्न रूपों को अपने समय से अलग और नए दृष्टिकोणों से देखा है।

यह वह समय था जब महात्मा गाँधी की प्रेरणा स्वरूप देश की अनेक स्त्रियाँ और पुरुष एक साथ राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे थे। विदेशी सत्ता से मुक्त होने के लिए भारतवासी बड़ा से बड़ा बलिदान देने को तत्पर थे। सुभद्रा कुमारी चौहान एक सच्ची देश प्रेमिका और सक्रिय कार्यकर्त्ता थीं। उनके राष्ट्रीय कविताओं का मुख्य स्वर स्वतंत्रता और बलिदान था। सुभद्रा कुमारी चौहान एक कवि और कार्यकर्त्ता के तौर पर यह स्पष्ट तौर पर महसूस करती थीं कि देश की स्वतंत्रता के लिए लिए त्याग और बलिदान की आवश्यकता है। इसी मूल मन्त्र से 'राखी' और 'राखी की चुनौती' कविता में उस वीर भाई

का आह्वान करती हैं जो भारत माँ के लिए लोहे की बड़ी राखी पहनने को अर्थात् जेल जाने के लिए भी सहर्ष तैयार हो –

“आते हो भाई ? पुनः पूछती हूँ-

कि माता के बंधन की है लाज तुमको?

-तो बंदी बनो, देखो बंधन है कैसा,

चुनौती यह राखी की है आज तुमको ।”[1]

‘चलते समय’ शीर्षक कविता में श्रृंगार पक्ष देखने योग्य है। ‘स्वागत-साज’ कविता में जिस प्रिय के लिए प्रिया स्वागत में सजी थी उसके चले जाने की बेला भी आ गई है और प्रेम के इस विरह में केवल बिछड़ने का दुःख ही नहीं, साथ के समय में की गई भूलों का पछतावा भी है-

“तुम मुझे पूछते हो जाऊं?

मैं क्या जवाब दूँ तुम्हीं कहो !

‘जा’...कहते रूकती है जबान

किस मुँह से तुमसे कहूँ रहो !

मैं सदा रूठती ही आई,

प्रिय तुम्हें न मैंने पहचाना।

[1] मुकुल, सुभद्राकुमारी चौहान, पृ. सं. - 90

वह मान बाण-सा चुभता है,

अब देख तुम्हारा यह जाना ।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान की वात्सल्य भाव की कविताओं के अंतर्गत 'बालिका का परिचय', 'मेरा नया बचपन' और 'इसका रोना' आदि कविताएँ महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी वात्सल्य भाव की कविताओं की सबसे खास बात यह है कि कवयित्री ने अपने निजी अनुभवों के आधार पर कविताएँ लिखी हैं। संतान प्राप्ति के आनंद को सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस प्रकार व्यक्त किया है –

"यह मेरी गोदी की शोभा

सुख सुहाग की है लाली

शाही शान भिखारिन की है

मनोकामना-मतवाली है ।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान का वात्सल्य भाव विशिष्ट प्रकार का था। सुभद्रा कुमारी चौहान का मातृत्व परिपक्व और व्यापक हो चुका था। इसलिए बच्चे को रोते हुए देख कर जहाँ पिता को चिढ़ आती है, वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान गौरवान्वित होती हैं –

"तुमको सुनकर चिढ़ जाती है

मुझको है अभिमान ।"[3]

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग- 1, संपादक रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 48
[2] मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. - 42
[3] मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. - 42

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में वात्सल्य भावना कूट-कूट कर भरा हुआ है। वात्सल्य-प्रेम की अनुभूति में नारी का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपना महत्त्व खो बैठता है। संतान के रूप में जीवन की पूर्णता की अनुभूति उसे होती है। उनका बीता बचपन बेटी के रूप में धारण करके उनके सामने सजीव हो उठता है। इसलिए वे लिखती हैं –

"पाया मैंने बचपन फिर से

बचपन बेटी धन आया।

उसकी मंजुल मूर्ति देखकर

मुझमें नवजीवन आया।"[1]

1.2.1.2 झाँसी की रानी :

स्वतंत्रता की सबसे अधिक मर्मस्पर्शी कहानी झाँसी की रानी, रानी लक्ष्मीबाई की थी। उन पर लिखी गई कविता, सुभद्रा कुमारी चौहान की सर्वश्रेठ कविता है। यह कविता राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति करने वाली सर्वश्रेष्ठ कविताओं में शामिल की जाती है। इसी वजह से उनकी इस कविता की पंक्तियाँ आज बच्चे-बच्चे के जुबान पर हैं -

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,

बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,

[1] मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. - 41

गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन सत्तावन में

वह तलवार पुरानी थी।

बुन्देले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो

झाँसी वाली रानी थी।"[1]

सभा मंचों से इस कविता पाठ के मात्र से श्रोताओं में उत्साह का संचार होने लगता था। देशव्यापी क्रांति को तीव्रता प्रदान करने के लिए बच्चे-बच्चियाँ भी सुभद्रा कुमारी चौहान की इस कविता का उद्घोष करते हैं। इसके माध्यम से सुभद्रा कुमारी चौहान ने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक कारणों की सफल अभिव्यक्ति इस प्रकार दी है-

"अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकत फिरंगी की माया,

व्यापारी बन दया चाहता था जब वह भारत आया,

डलहौजी ने पैर पसारे आब तो पलट गई काया,

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 81

राजा नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।"[1]

सन 1857 ई. की क्रांति के बीच झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का जो ओजस्वी व्यक्तित्व उमड़ कर इनकी कविता में आया है वह किसी भी देश और देशवासियों के लिए गौरव का कारण बन सकता है–

"मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,

अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,

हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी ।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान की लम्बी 'झाँसी की रानी' एक अमर कविता है । यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि जो लोकप्रियता इस कविता 'झाँसी की रानी' को मिली वैसी किसी आधुनिक कविता को नहीं मिली । उनके जीवन काल में ही यह कविता लोकप्रिय हो चुकी थी । सैकड़ों लोगों ने इसे छापा और बेचा भी । यही एक अमर कविता थी जो छपकर मेलों में बिकती थी । लोक छन्द और लोक कथा शैली में रची गई यह कविता रेकॉर्ड होकर जन-जन तक पहुँची । "कर्मवीर के 10 जुलाई, 1937 अंक में पृष्ठ 31 पर 'बेलगाँव की चिठ्ठी' शीर्षक से यह समाचार छपा कि 'खूब लड़ी मर्दानी' की रेकार्डिंग हो रही है ।"[3]

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में विविधता दिखाई देती है । 'झाँसी की रानी' जैसी ओजपूर्ण कविता लिखने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान ने प्रेम की मादकता की मीठी और

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 82

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 87

[3] उद्धरित, सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 22

मोहक कविताएँ लिखी हैं । हाँलाकि इसकी चर्चा कम हुई है । प्रणय भाव या श्रृंगार की कविताओं में ‘प्रेम श्रृंखला’, ‘अपराधी है कौन’, ‘दंड का भागी बनता कौन’, ‘मनुहार’, ‘स्वागत-साज’, ‘करूण कहानी’, ‘प्रथम दर्शन’, ‘साथ’ ‘तुम’ आदि कविताएँ प्रमुख हैं । वात्सल्य और तेज की कविताओं के इतर ‘स्वागत-साज’ कविता में प्रियतम के स्वागत में प्रिया सजने को आतुर है । वह प्रिय के लिए फूलों और कलियों सी खिल उठना चाहती है सुंदर दिखना चाहती है । यह भावना कविता में इस प्रकार अभिव्यक्त है –

“हे प्रसून-दल ! अपना वैभव

बिखरा दो मेरे ऊपर

मुझ-सी मोहक और न कोई

कहीं दिखाई न दे भू पर ।”[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में लोकगाथा की प्राचीन शैली और परम्परा विद्यमान है । उनकी कविताओं में तत्कालीन युग और घटनाएँ मुखर हो उठती हैं । सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा सरल और कोमल ही मात्र ही नहीं बल्कि हर किसी की जुबान पर चढ़ जाने वाली भाषा है ।

1.2.2 कहानी संग्रह :

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 148

सुभद्रा कुमारी चौहान का पहला कहानी संग्रह ‘बिखरे मोती’ 1932 ई. में आया । दूसरा कथा-संग्रह ‘उन्मादिनी’ 1934 ई. में आया । तीसरी कहानी संग्रह ‘सीधे-सादे चित्र’ 1947 में प्रकाशित हुई । सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल 46 कहानियाँ लिखी हैं । 1943 ई. में ‘सीधे-सादे चित्र’ शीर्षक से सुभद्रा कुमारी चौहान की सभी कहानियों को संकलित किया गया है, जो हंस प्रकाशन इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था । सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों की पृष्ठभूमि में सामाजिक और उनकी राजनीतिक सक्रियता विद्यमान है । गांधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन के आह्वान पर सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी पढ़ाई छोड़ कर आन्दोलन में सक्रिय रहीं, जिसके कारण उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा । राजनीतिक गतिविधियों के कारण कई बार उन्हें लम्बे समय तक गृहस्थी छोड़ कर जेल में रहना पड़ा । उनकी यह वेदना, वीरता और साहस कविताओं व विशेषकर कहानियों में दिखता है ।

सुभद्रा कुमारी चौहान के रचनाकाल में हिंदी गद्य लेखन के प्रेमचंद, जैनेन्द्र और महादेवी वर्मा जैसे रचनाकार भिन्न-भिन्न विधाओं में अपनी रचना कर रहे थे । सुभद्रा कुमारी चौहान का रचनाकार भी अपने समय के सजग रचनाकारों से प्रभावित हो रहा था। कथाकार प्रेमचंद की भांति सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियाँ भी सहज, स्वाभाविक और जीवंत मालूम पड़ती हैं । यह भी कहा जाना उचित प्रतीत होता है कि जिस परम्परा के कथाकार प्रेमचंद हैं, वही परम्परा सुभद्रा कुमारी चौहान की है ।

सुभद्रा कुमारी चौहान रचनाकाल के आरंभिक दिनों में अपनी कहानियाँ श्री पदुमलाल बक्शी के पास भेजी कि वे इनमें आवश्यक सुधार कर दें तब वे उन्हें छपवाएँगी । ‘बिखरे मोती’ के आत्मनिवेदन में सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपना संकोच प्रकट करते हुए लिखा है कि , “मुझे किसी के सामने इन्हें उपस्थित करने में संकोच ही होता था पर श्रद्धेय श्री पदुमलाल पुन्नालाल जी बक्शी के आग्रह और प्रेरणा ने मुझे प्रोत्साहन देकर उन्हें प्रकाशित

करा ही दिया, किन्तु साथ ही डरती भी हूँ कि कहीं मेरा यह प्रयत्न हास्यस्पद न सिद्ध हो।”[1] उनकी कहानियों को पढ़ कर बक्शी जी ने सुभद्रा कुमारी चौहान को सुझाव भी दिया कि वह उन कहानियों में किसी तरह का संशोधन न करें क्योंकि उनकी शैली में एक व्यक्तित्व दिखाई देता है। यह उद्धरण एक रचनाकार की विनयता को भी स्पष्ट करता है, जिससे उसका लेखन महत्त्वपूर्ण बनता है।

1.2.2.1 बिखरे मोती -1932 :

'बिखरे मोती' का प्रथम संस्करण 1932 ई. में छपकर आया। इस संग्रह की कहानियाँ एक वर्ष के भीतर लिखी गई थीं। 'बिखरे मोती' सुभद्रा कुमारी चौहान का पहली कहानी संग्रह है। इसमें 'भग्नावशेष', 'होली', 'पापी पेट', 'मंझली रानी', 'परिवर्तन', 'दृष्टिकोण', 'कदम्ब के फूल', 'किस्मत', 'मछुए की बेटी', 'एकादशी', 'आहुति', 'थाती', 'अमराई', 'अनुरोध' और 'ग्रामीण' कुल 15 कहानियाँ संकलित हैं। अधिकांश कहानियाँ नारी-समस्या पर केन्द्रित हैं। इन कहानियों की भाषा बोलचाल की भाषा खड़ी बोली हिंदी है।

इस कहानी संग्रह की एक छोटी कहानी है 'होली'। इस कहानी में शराबी और दुराचारी पति की अधर्म की कमाई से करुणा को खून की होली खेलनी पड़ती है। इस कहानी के केंद्र में सुभद्रा कुमारी चौहान ने दुःख झेलती सामान्य स्त्री को विषय वस्तु को रखा है। 'रूपा' कहानी में सुभद्रा कुमारी चौहान ने एक हत्यारिन माँ का चित्रण किया है। अपनी अनगिनत जेल की यात्रा में अपनी बेटी की हत्या के आरोप में पकड़कर लाई गई एक स्त्री को

[1] बिखरे मोती, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. - 12

उन्होंने अपनी कहानी का विषय बनाया है। वह माँ अपनी बेटी को लेकर कुँए में कूद पड़ी , बेटी मर गई माँ बच गई। माँ को हत्या के आरोप में आजीवन कारावास मिला। उस स्त्री को सभी दुत्कारते थे कि अपनी बेटी को क्यों मार डाला ? किन्तु वह स्त्री किसी को उत्तर नहीं देती थी। कहानी के अंत में पता चलता है कि उनकी बच्ची हकलाती थी। इस दोष से पीड़ित अपनी बेटी की दुर्दशा से आशंकित वह हत्यारिन स्त्री सपनी संतान की जीवन लीला समाप्त करने को तैयार हो गई थी। एक निर्धन स्त्री की वात्सल्य की विवशता को इस प्रकार कहानी में देखा जा सकता है - "इधर मैं अकेली और जरा-सी गोपा, जहाँ मेहनत मजदूरी को जाती वहीं बच्चे और कभी-कभी बड़े बड़े लोग तक गोपा के साफ़ न बोलने पर चिढ़ाया करते थे...पैसे की तंगी होने लगी इधर बच्चे गोपा को और ज्यादा चिढ़ाकर तंग करने लगे। सोचा अभी छोटी है, समझती कम है, जब बड़ी होगी तब गोपा को कितना बुरा लगेगा, मेरी गोपा दुखी हो जाया करेगी और कहीं मैं मर गई तो... फिर बहिन जी मेरे मारने के बाद गोपा की जो स्थिति होगी उसे सोचकर मैं पागल हो गई और उस दुर्दशा तक गोपा न पहुँच सके, इसलिए...।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान कहानियों के मार्फ़त स्त्री-पुरुष में मैत्री के संबंध के प्रश्न को उठाती हैं। क्या स्त्री और पुरुष में मैत्री संभव है ? इस प्रश्न को सुभद्रा कुमारी चौहान ने कई बार अपनी कहानियों में उठाया है। 'मंझली रानी' कहानी में साफ-साफ लिखती हैं कि "वो मेरे कौन थे? मैं क्या बताऊँ? वैसे देखा जाए तो ये मेरे कोई भी न होते थे। होते भी तो कैसे ? मैं ब्राह्मण वे क्षत्रिय, मैं स्त्री वे पुरुष। फिर न तो रिश्तेदार थे और न मित्र। आह ! यह क्या कह डाला मैंने ! मित्र ? भला किसी स्त्री का कोई पुरुष मित्र भी हो सका है ? और यदि हो भी तो क्या समाज इसे बर्दाश्त करेगा ? यहाँ तो किसी पुरुष का किसी स्त्री से मिलना जुलना या किसी प्रकार का व्यवहार रखना ही पाप है। और यदि किसी स्त्री किसी पुरुष से किसी प्रकार

[1] सीधे-सादे चित्र, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. - 186

का व्यवहार करती है, प्रेम से बातचीत करती है तो वह स्त्री भ्रष्टा है, चरित्रहीन है, नहीं तो पर-पुरुष से मिलने-जुलने का और मतलब ही क्या हो सकता है ?"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान उस भारतीय समाज की कहानी भी व्यक्त करती हैं जहाँ आठ-नौ वर्ष की लड़की से भी पर्दा करवाया जाता था। 'थाती' कहानी के माध्यम से वे इस समस्या को सामने लाती हैं। 'थाती' की अल्हड़ बालिका अपने पति के अतिरिक्त किसी से भी बोलने बतियाने के अधिकार से वंचित है। ससुराल में विवाहिता स्त्री की स्थिति और विधवा विवाह की दुर्दशा सुभद्रा कुमारी चौहान की कई कहानियों का विषय है। इसके अलावा उनकी कहानी कल्याणी में विधवा विवाह की समस्या को रेखांकित किया गया है। जहाँ कल्याणी के पास विवाह न करने का एक तर्क है कि वह दूसरी स्त्री के अधिकारों का हनन करना नहीं चाहती है। स्त्री होकर वह स्त्री के कष्टों का कारण नहीं बनना चाहती है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की एक प्रमुख कहानी है 'दृष्टिकोण' यह कहानी स्त्री पुरुष संबंधों की पड़ताल करता है। समाज किस तरह से स्त्री और पुरुष के चरित्र के संबंध अलग-अलग दृष्टिकोण रखता है। इस कहानी में अबला और असहाय विधवा बिट्टन गर्भवती हो जाती है और उसे कोई सहारा नहीं देता। उसकी बहन निर्मला जब यह दुस्साहस करती है तब उसे उसके ही घर वालों से बातें सुननी पड़ती है। उसका पति ही उसका स्वामी होने लगता है। निर्मला झगड़ती है और कहती है, जब तुम अपने चरित्रहीन पुरुष मित्रों की आवभगत कर सकते हो तो मैं असहाय बिट्टन को आसरा क्यों नहीं दे सकती। क्या इस घर पर मेरा कोई अधिकार नहीं ? प्रश्न के बदले वह पति से थप्पड़ भी खाती है। कहानी के अंत में निर्मला का दृष्टिकोण बदल जाता है जो इस प्रकार रेखांकित है – "वह बहुत बच बच कर घर का काम कर रही थी। उसके चेहरे पर कोई विशेष परिवर्तन न था, न तो यही प्रकट होता था कि खुश है

[1] सीधे-सादे चित्र, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. 20

और न यह कि नाराज है। हाँ उसमें एक परिवर्तन था कि अब उसके व्यवहार में हुकूमत की झलक न थी। वह अपने को उन्हीं दो-तीन नौकरों में से एक समझती थी, जो घर के काम करने के लिए होते हैं मगर जिनका कोई अधिकार नहीं होता।"[1]

1.2.2.2 उन्मादिनी -1934 :

सुभद्रा कुमारी चौहान का दूसरा कहानी संग्रह 'उन्मादिनी' है। यह 1934 ई. में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल नौ कहानियाँ हैं जिसका क्रम इस प्रकार है – 'उन्मादिनी', 'असमंजस', 'अभियुक्त', 'सोने की कंठी', 'नारी-हृदय', 'पवित्र ईर्ष्या', 'अंगूठी की खोज', 'चढ़ा दिमाग' एवं 'वेश्या की लड़की'। इन कहानियों का मुख्य स्वर पारिवारिक सामाजिक परिदृश्य है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की इस कहानी-संग्रह में सती और वेश्या की ज़िन्दगी से सम्बंधित प्रश्न भी उभरकर सामने आता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानी 'वेश्या की लड़की' में इस प्रश्न को मार्मिकता से स्पष्ट किया गया है। पूरी कहानी में स्त्री के सतीत्व को प्राथमिकता दी गई है। कहानी की नायिका छाया अपनी माँ से इसलिए संबंध तोड़ती है कि उसकी माँ मन्दिर में गाती है। अपने प्रेमविवाह के बाद छाया अपने पति के चरणों पर प्राण लुटाने के सारे यत्न करती है। उसके पति ने भी अपने माता-पिता और परिवार को छोड़ कर एक क्रान्तिकारी कदम उठाया था लेकिन धीरे-धीरे समाज की मान्यताएँ सामने आने लगती हैं कि वेश्या की लड़की सती नहीं हो सकती है। उसकी रगों में बहता वेश्या का खून उसे पतिता ही बनायेगा। कहानी में लेखिका प्रश्न उठाती है कि समाज द्वारा निर्धारित चारित्रिक

[1] सीधे-सादे चित्र, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. - 43

परिभाषाओं से स्त्री कब तक पहचानी जायेगी ? छाया स्वयं को मिटाकर इस प्रश्न का उत्तर देती है कि वेश्या की लड़की भी सीता सावित्री हो सकती है । कहानी के अंत में छाया के बलिदान से केवल एक हृदय परिवर्तन होता है उसके पति प्रमोद का जो उसकी आत्महत्या के बाद अपना मानसिक संतुलन खो देता है ।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में स्त्री-पुरुष में मैत्री के संबंध को देख सकते हैं । क्या स्त्री और पुरुष में मैत्री संभव है ? इस सवाल को सुभद्रा कुमारी चौहान ने कहानियों में व्यक्त किया है । यह सम्बन्ध हमारे समाज में स्वीकार्य है अथवा नहीं यह निर्णय सुभद्रा कुमारी चौहान पाठकों पर छोड़ देती हैं उनकी यह समस्या 'पवित्र ईर्ष्या' शीर्षक कहानी में परिलक्षित है । उन्होंने इस कहानी में राखी बंद भाई के माध्यम से स्त्री-पुरुष की मैत्री सम्बन्ध की समस्या को दिखलाया है ।

1.2.2.3 सीधे सादे चित्र - 1947 :

'सीधे सादे चित्र' शीर्षक कहानी संग्रह सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा और अंतिम कहानी संग्रह है । इसमें कुल 14 कहानियाँ हैं । 'रूपा', 'कल्याणी', 'कैलाशी', 'नानी', 'बिआल्हा', 'दो साथी', 'प्रोफ़ेसर मित्रा', 'दुराचारी' और 'मंगला', इन आठ कहानियों की कथावस्तु नारी केन्द्रित हैं । इन कहानियों में पारिवारिक और सामाजिक समस्याएं हैं । इनके अतिरिक्त 'राही', 'तांगेवाला', 'हींगवाला' व 'गुलाब सिंह' कहानियाँ देश प्रेम पर आधारित हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान की नायिकाएं विद्रोह करती हुई नहीं दिखती हैं । अगर कहीं विद्रोह करती भी हैं तो वह गांधीवादी शैली में मौन और मूक रूप से । उनके प्रतिरोध का स्वर

मुखर नहीं है। गाँधीवादी सत्याग्रह और प्रतिरोध एवं उनके नैतिक अनुशासन और संवेदना ही सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों को संतुलित और प्रभावित करते प्रतीत होते हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान कहानियों के केंद्र में स्त्रियाँ विशेष रूप से हैं। अपने आस पास बिखरे अनगिनत पात्रों में विशेषकर स्त्री शोषण, पर्दे की समस्या, स्त्री-पुरुष मैत्री संबंध, पढ़ी लिखी स्त्री का दुराचारी समझा जाना, विधवा विवाह, वेश्या प्रश्न, देश प्रेम, कन्याओं का स्वयं वर चुनना, और वात्सल्य भाव से सराबोर पात्र सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में हैं। उनकी कर्म भूमि जबलपुर उनकी अधिकांश कहानियों का घटना केंद्र है। उनकी जबलपुर जेल यात्रा ने भी उन्हें कहानियों के कई पात्र दिए हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान में कहानियों में अपने स्वभाव की तरह सरल सहज भाषा का प्रयोग किया है। घटना प्रधान और वर्णात्मक शैली में सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी कहानियों को प्रस्तुत कर देती हैं। पात्रों को वे सशक्त रूप में पेश नहीं करती हैं बल्कि सहज और वास्तविक रूप में प्रस्तुत करती हैं। यही उनकी कथा साहित्य की प्रवृत्ति है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल 46 कहानियाँ लिखी हैं और वे अपनी कहानी कला की दृष्टि से एक अति लोकप्रिय कथाकार के रूप में हिंदी जगत में सुप्रतिष्ठित हैं।

1.2.3 प्रकाशित निबन्ध :

सुभद्रा कुमारी चौहान के प्रकाशित निबंध स्त्रियों के साहित्य सृजन को बल देती हैं। उनका मानना है कि स्त्रियों में भावुकता पुरुषों की अपेक्षा अधिक होती है। स्त्रियाँ जब साहित्य की रचना करेंगी तब साहित्य और निखर कर सामने आएगा सुभद्रा कुमारी चौहान कहती भी हैं, “साहित्य में जिस प्रकार कवि का स्थान ऊँचा है उस प्रकार कवियों में भी मेरा

विश्वास है, स्त्री कवियों का स्थान पुरुष कवियों की अपेक्षा ऊँचा रहेगा। कविता प्राय: भाव प्रधान रहती है – और स्त्रियों के समान भावुकता पुरुषों में नहीं मिल सकती।"[1] इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्री कवयित्रियों को प्रोत्साहन देती हैं, स्वधीनता के दौर में भी वह सुभद्रा कुमारी चौहान ही थीं जो हर महिला को लिखने की ओर प्रेरित करती थीं। बचपन में सुभद्रा कुमारी चौहान स्वयं किसी भी विषय पर कविता लिख देती थीं। ऐसे ही सातवीं कक्षा की महादेवी वर्मा को सुभद्रा कुमारी चौहान ने ही कविता लिखते हुए पकड़ा था और प्रोत्साहित भी किया था।

नारी हृदय की उच्चता को सुभद्रा कुमारी चौहान इस प्रकार स्पष्ट करती हैं, "नारी हृदय की तुलना हम वायु मापक यंत्र (barometer) से कर सकते हैं जिसमें छोटे से छोटा परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगता है। स्त्री हृदय की कोमल वृत्तियाँ अत्यधिक सजग और सजीव रहती हैं। उनकी हृदय वीणा का प्रत्येक तार इतना कसा और खिंचा रहता है कि वह वातावरण के सूक्ष्मातिसूक्ष्म आघात से निनादित हो उठता है। शरीर और मनोविज्ञान के पंडितों का कहना है कि स्त्रियों का शरीर, रचना और मन पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक परिष्कृत है।"[2]

स्त्री ही है जिसके अंदर प्रेम कूट कूटकर भरा है वह इस संसार में हर किसी से प्रेम करना जानती है। एक नारी हृदय में सबसे अधिक ममता दया करूणा जैसे अच्छे गुण होते हैं वह संसार को अपने प्रेम से बांध कर रखती है, उसकी ममता से ही एक बच्चे का भविष्य उज्जवल होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान भी उसी नारी हृदय के प्रेम को स्पष्ट करती हुई लिखती हैं, "प्रेम और बलिदान मनुष्य को पशु की श्रेणी के उठाकर देवत्व के पद पर पहुँचाते

[1] सुभद्राकुमारी चौहान ग्रंथावली भाग -2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 46
[2] सुभद्राकुमारी चौहान ग्रंथावली भाग -2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 46

हैं। पारस वह है जो लोहे को भी सोना बना देता है- और वह हमको मिलेगा विशेष मात्रा में स्त्रियों के अंदर।"[1]

सदियों से स्त्रियों ने बलिदान दिया है लेकिन स्त्री की शक्तियों के पीछे उनकी गुलामी का इतिहास भी रहा है उसके अस्तित्व की कहानी रही है उसकी अस्मिता का प्रश्न रहा है सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्री की महानता और शक्ति का बखान भी करती हैं और सवाल करती हुई कहती हैं, "स्त्रियों के समान प्रेम और बलिदान किसने किया है। इतिहास इसका साक्षी है, वे दिन और रात प्रत्येक घड़ी पल-पल जीवन भर बलिदान करती हैं – मुस्कुराते हुए। संसार में बड़े से बड़े कर्मयोगी, योद्धा, विद्वान और कवि ने स्त्रियों की स्फूर्तिदायिनी शक्ति को मुक्त कंठ से स्वीकार किया है।"[2]

इतिहास में स्त्रियों की शक्ति की महानता को पुरुषों ने भी स्वीकार किया है। स्त्रियों की प्रेरणा से ही पुरुषों ने भारतीय साहित्य में अविस्मरणीय काम किये हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्रियों की प्रेरक छवि को स्वीकारते हुए कहती हैं, "विश्व विजयी नेपोलियन सदा अपने माता का गुणगान करता रहा। अमर ब्रिटिश कवि द्रांते अपनी प्रेयसी का आभारी है। तुलसीदास की रामभक्ति की प्रेरिका उनकी पत्नी थी। लंका की विजयकामना सीताजी के कारण रामचंद्र जी के मन में हुई थी और वह राधिका का ही निष्काम प्रेम था, जिसने गीता का तत्व श्रीकृष्ण को सिखलाया था।"[3]

सुभद्रा कुमारी चौहान यह भी मानती हैं कि स्त्री देवी है उसके अंदर ऐसी शक्तियाँ हैं जो उसे पुरुष से अलग और खास बनाती है, एक औरत जननी के रूप में इस संसार में महत्त्व रखती हैं। वास्तव में यह पूरा संसार यदि स्वर्ग बना हुआ है तो वह सिर्फ स्त्रियों की वजह से है

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं 46
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं 46
[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 46

। यदि स्त्रियाँ न हो तो यह संसार शमशान से कम नहीं होगा इसे सुभद्रा कुमारी चौहान इस प्रकार स्पष्ट करती हैं, “समस्त मानव जाति स्त्रियों की गोद में पली है और उसकी ऊँगली के सहारे खड़ा होना और चलना सीखा है। पुरुषों ने ही यह घोषित कर रखा है कि स्त्रियाँ वास्तव में देवी है, जिन्होंने इस मृत्युलोक को स्वर्ग बना रखा है।”[1] सुभद्रा कुमारी चौहान का यह भाषण नर्मदा' पावस अंक, वर्ष-9 , अंक-2, 2002 में प्रकाशित हुआ था।

सुभद्रा कुमारी चौहान का दूसरा प्रकाशित निबन्ध का शीर्षक है – 'अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के बनारस अधिवेशन में महिला साहित्य सम्मेलन की अध्यक्ष पद से दिया गया भाषण (21अक्तूबर, 1939)'[2]

उपर्युक्त शीर्षक निबन्ध में सुभद्रा कुमारी चौहान ने महिलाओं से आग्रह किया कि वे बाल साहित्य लिखें। वे महिलाओं की लेखनी को सर्वश्रेष्ठ मानती हैं। वे महिलाओं की भावनाओं को शब्द देने की बात करती हैं। महिलाएं अब अपनी लेखनी के माध्यम से संवाद कर सकती हैं इस सम्बन्ध में उन्होंने बनारस में महिला साहित्य सम्मलेन के अध्यक्षीय भाषण में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा, “अभी तक स्त्रियों में शिक्षा का अभाव था। इसलिए पुरुषों को ही स्त्रियों की मनोभावनाओं, उनके हृदय के उद्वेगों, उनके प्रेम और विरह, उनकी आकाँक्षाओं और भय को वाणी देनी पड़ी है। इसमें संदेह नहीं है कि यह कार्य उन्होंने आशातीत सफलता के साथ किया है। किन्तु अब स्त्रियाँ इस योग्य हो चली हैं कि वे अपने हृदय के गीतों को अपने ही शब्दों में गा सकें। अब हमें अपनी मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए पुरुष की लेखनी की आवश्यकता नहीं रह गई है।”[3]

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं 46
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 47
[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 47

लेखनी में सुभद्रा कुमारी चौहान महिलाओं को पुरुषों से श्रेष्ठ मानती थीं उन्होंने मंच से कहा था कि "मैं मानती हूँ कि कवि में स्त्री पुरुष का भेद नहीं है। कविता का सम्बन्ध हृदय से है जो स्त्री पुरुष के भेद से परे है। फिर भी स्त्री के हृदय में विशेषताएं हैं। जिनका अनुभव करने के लिए पुरुषों को विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा।"[1]

आगे वे कहती हैं, "स्त्री की स्वभाव सिद्ध कोमलता पुरुषों के लिए यदि अप्राप्य नहीं तो दुष्प्राप्य अवश्य है ठीक वैसे ही जैसे कि पुरुष सुलभ प्रखर भावनाएँ स्त्रियों के लिए दुष्प्राप्य हैं। स्त्रियों के प्रेम और उत्सर्ग की पराकाष्ठा को व्यक्त करने के लिए पुरुष कवि को भी स्त्री की ही वाणी में बोलना पड़ता है।"[2] स्त्रियों का स्वभाव कोमलता का होता है वे पुरुष कवियों से भी उसी कोमलता की कामना करती हैं। इसकी उपेक्षा होने पर वे काव्य को सार्थक नहीं मानती हैं इसलिए वे अपना विचार प्रकट करते हुए कहती हैं - "प्रेम और विरह के गीत गाने में उस राजसी प्रेमिका मीरा से कोई आगे बढ़ सका है। मीरा के पास शब्दों का बाहुल्य नहीं था, कोमलकांत पदावली नहीं थी किन्तु मीरा के पास मीरा का हृदय था और आत्मिक चरित्र था, जिसकी अमर छाप उसके गीतों पर लगी हुई है।"[3]

स्त्रियों की खूबी बतलाते हुए उनका मानना हैं कि प्रेमपूर्ण हृदय के अलावा स्त्रियाँ बाल मन को अधिक अच्छे से समझ सकती हैं। स्त्री ही बच्चों के हाव भाव को बिना शब्द के समझ सकती है। इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान महिलाओं के लिए बाल क्रीड़ा के क्षेत्र में लेखन को बढ़ावा देती हैं और उसे महिलाओं का अधिकार क्षेत्र मानती हैं। वे अपने शब्दों में इस प्रकार कहती हैं - "प्रेम के अतिरिक्त एक और क्षेत्र है जिसे स्त्रियों का अधिकार क्षेत्र कहा जा सकता है वह बाल क्रीड़ा का। नन्हें - नन्हें बच्चे स्त्रियों के ही चरणों में रेंगकर चढ़ते हैं

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 47
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 47
[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 47

उन्हीं के सहारे खड़े होते हैं वे अपनी बोली माताओं से ही सीखते हैं। माताओं और बच्चों का इतना नैसर्गिक और प्रगाढ़ संसर्ग रहता है कि बच्चों के मन को माता ही सबसे अच्छा विश्लेषण कर सकती है। माता अपने बच्चे के मन की बात अपने मन से समझ जाती है, उसे समझने के लिए सार्थक शब्दों की आवश्यकता नहीं।"[1]

इसी प्रकार वे साहित्य लेखन में बाल साहित्य लेखन की ओर महिलाओं को प्रोत्साहित करती हुई कहती हैं कि "अबोध और तुतलाते बालक के पास सार्थक शब्द कहाँ? परन्तु बच्चे की ऐसी कौन-सी मनोभावना और आवश्यकता है जिसको माता नहीं ताड़ लेती और नहीं समझ लेती। बच्चे सबको प्यारे और सुंदर लगते हैं। परन्तु माता अपने बच्चे के प्यार और सुन्दरता की खूबियों को जितना पहचानती है उतना कोई दूसरा व्यक्ति नहीं पहचान सकता है ? इसलिए मेरी तो धारणा है कि माताएँ यदि शिशु साहित्य पर लिखने लगें तो उससे हमारे साहित्य की सुन्दरता बढ़ जावे।"[2]

हिंदी साहित्य में बाल रचनाएँ प्रारम्भ से ही पुरुष लिखते आए हैं लेकिन सुभद्रा कुमारी चौहान स्वानुभूति की अभिव्यक्ति को महत्व देती हुई महिलाओं को बाल साहित्य लिखने हेतु कहती हैं। वे अपना भाव इस प्रकार व्यक्त करती हैं, "निस्संदेह पुरुषों ने बाल साहित्य पर बहुत कुछ लिखा है परन्तु उनके द्वारा रचना को प्रधानता मिली है। जिस दिन स्त्रियाँ इस साहित्य में सृजन करने लग जावेंगी उस दिन अनुभूति को भी वाणी मिलेगी और तभी वह साहित्य सम्पूर्ण हो सकेगा।"[3]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्वयं बच्चों के लिए रचनाएँ लिखी हैं। उनके समकालीन लेखिकाओं ने भी इस क्षेत्र में लिखना शुरू किया। अब जब बाल साहित्य महिलाओं द्वारा

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 47-48
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं.- 48
[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 48

लिखा जा रहा है तो इस संदर्भ में उनकी प्रतिक्रिया इस प्रकार है – "अभी तक स्त्रियों ने गृहस्थी और गृह को सुंदर बनाया। अब वे समाज, साहित्य और राजनीति में भी पदार्पण कर रही है...।"[1] वे स्वयं इस उक्ति की पर्याय रही हैं। इसलिए वे ऐसा चाहती थीं कि महिलाएँ गृहस्थ जीवन से बाहर भी अपना योगदान दें। उनकी यह सदिच्छा आज भी विचारणीय है।

वे तत्कालीन साहित्य लेखन में महादेवी वर्मा को प्रमुख मानती हैं। महादेवी जी उनकी बचपन की सहेली थीं, वे दोनों सहेली हमेशा एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते थे। इसलिए उनके इस वक्तव्य में भी उनका प्यार उभर कर सामने आया है - "आजकल गीति काव्य का युग है। इसके प्रवर्तकों में महादेवी वर्मा को प्रमुख स्थान प्राप्त है। महादेवी की आध्यात्मिक प्रेमाभिव्यंजना हमारे वर्तमान साहित्य की एक विशेषता है। यह एक ऐसी विशेषता है जो उन गीतों को अपने माधुर्य और विचार सूक्ष्मता के कारण किसी भी भाषा के साहित्य के लिए गौरव की वस्तु बन सकती है। साहित्य के पंडित महादेवी के गीतों में रहस्यवाद देखते हैं। परन्तु वास्तव में वे गीत इतने स्पष्ट हैं कि जितने कि उनमें गुंथे हुए तारे, संध्या, रजनी, इंद्र, धनुष, कलिका, पुष्प, प्रभात और चन्द्रमा।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी जी के काव्यों की प्रशंसक थीं। वे अपने वक्तव्य में महादेवी जी का उदहारण पेश करती हैं। उन्हें अनुकरणीय मानती हैं। उनके काव्य की विशेषताओं के पुल बाँधते हुए वे कहती हैं कि "हिंदी भाषा को गीतों द्वारा माँजकर महादेवी ने उसमें अत्यधिक कोमलता और मधुरता उत्पन्न कर दी है। उसी प्रकार महादेवी द्वारा प्रचलित छंद आज हिंदी में अधिकांश कवियों द्वारा अपनाया जा रहा है। गीति काव्य महादेवी जी के गीतों के अन्दर जैसे अपनी पूर्णता में छलक सा उठा है – 'जाने किस जीवन की सुधि ले/

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 48

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 48

लहराती आती मधु बयार।/ एक बार आओ इस पथ में / मलय अनिल बना दे चिर चंचल /बीन भी हूँ मैं तुम्हारी /रागिनी भी हूँ/ शून्य मंदिर में बनूँगी/ आज मैं प्रतिमा तुम्हारी'।"[1]

हिंदी काव्य परम्परा की श्रेणी में सूरदास, मीराबाई आदि के बाद सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी वर्मा का स्थान मानती हैं। वे कहती हैं, "आदि गीतों में सम्पूर्ण स्त्री हृदय का जो कि प्रेम का प्रतीक है उज्जवल चित्र खिंच गया है। सूर और मीरा के बाद प्रेम की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति, भावों की कोमलता और भाषा की सरलता महादेवी में उसी तीव्रता से संगीतमय हो उठी है।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्रियों की तरक्की से प्रसन्न होती थीं। इसलिए वे हर्षपूर्वक विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने वाली महिलाओं का नाम लेती हैं। उनकी मेहनत और सराहनीय कदम को प्रोत्साहित करती हैं। तभी वे इस प्रकार लिखती हैं, "हर्ष का विषय है स्त्रियाँ चित्रकला की ओर भी बढ़ रही हैं। स्वयं महादेवी ने अपने सांध्य गीत में चित्रकला की और भी बढ़ रही हैं। स्वयं महादेवी अपने सांध्यगीत में चित्रकला का प्रशंसनीय आरम्भ किया है। श्रीमती तोरन देवी लली, प्रियंवदा देवी, राजकुमारी चौहान, तारा देवी पांडेय, रामेश्वरी देवी, चकोरी, रामेश्वरी गोयल, राजेश्वरी नलिनी, रत्न कुमारी, हीरा देवी चतुर्वेदी, होमवती, सूर्यदेवी दीक्षित, गोपाल देवी, कमला कुमारी, राज देवी, शकुंतला श्रीवास्तव, शकुंतला देवी खेर, विष्णु कुमारी मंजू आदि ने भी हमारे साहित्य की अभिवृद्धि की है और कर रही हैं।"[3]

सुभद्रा कुमारी चौहान एक कुशल नेत्री थी साथ ही साथ उनका हृदय इस मायने में भी संवेदनशील था कि एक ओर वे साहित्य लेखन में महिलाओं को आगे आने के लिए आमंत्रण देती हैं तो दूसरी ओर गद्य रचना करने वाली महिला रचनाकारों की मृत्यु पर वे दुःख

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 48-49

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 49

[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 49

प्रकट करती हैं। उनके साहित्यिक योगदान को रेखांकित करती हैं। वे दिवंगत लेखिकाओं का नमन करते हुए कहती हैं - "गद्य में भी स्त्रियाँ पिछड़ी नहीं हैं दिनेश नंदिनी चोरइया के गद्य गीत हमारे वर्तमान नवीन साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। रामेश्वरी गोयल ने भी गद्य गीत प्रारंभ किये थे परन्तु उनकी मर्म भेदी भावनाएँ उनके आकस्मिक निधन के कारण पूर्णता को प्राप्त नहीं हो सकीं जिसका हमें खेद है। गोयल के समान रामेश्वरी चकोरी की अकाल मृत्यु ने हमें एक प्रतिभा संपन्न कवयित्री से वंचित कर दिया।"[1]

उनके समकालीन जो महिला लेखिकाएं लिख रही थीं उनको चिह्नित करते हुए कहती हैं कि "उपन्यास और कहानियों के क्षेत्र में भी स्त्रियों ने अपनी लेखनी उठाई है और वे सफल हुई हैं। उषा देवी मित्रा, शिवरानी देवी, निर्मला मित्रा, सुशीला डागा, होमवती आदि इस क्षेत्र में प्रमुख हैं। इसी प्रकार साहित्य के अन्य क्षेत्रों में भी स्त्रियों ने सफलतापूर्वक पुस्तकें लिखीं हैं।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान अपने इस भाषण में साहित्य एवं अन्य क्षेत्र के लिए अग्रसित सभी महिलाओं का मनोबल बढ़ाती हैं। वे उनके नाम और उपलब्धियों को इस प्रकार चिह्नित करती हैं - "श्रीमती चंद्रावती लखनपाल, गोपाल देवी, ज्योतिर्मयी ठाकुर आदि की चिकित्सा स्वास्थ्य पाक विज्ञान तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें प्रसिद्ध हैं। श्रीमती शन्नो देवी, सीता देवी आदि देवियाँ प्रशंसनीय ढंग से पत्रों का सम्पादन कर रही हैं। खेद है कि समयाभाव के कारण मैं ऐसी बहुत सी बहनों का नामोल्लेख नहीं कर सकी हूँ, जो कि साहित्य की सेवा में संलग्न हैं। मैं इस कमी के लिए उनसे हृदय से क्षमा माँगती हूँ।"[3] वे प्रत्येक का नामोल्लेख करना चाहती थीं, इसलिए अंत में खेद प्रकट करती हैं।

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 49

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 49-50

[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 50

“सर्वत्र स्त्रियों में सर्वांगीण जाग्रति के शुभ लक्षण दिखाई दे रहे हैं और वे सरस्वती की आराधना में तत्पर हैं। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हमारी उत्तरोत्तर उन्नति हो तथा हम हिंदी के साहित्य को सम्पूर्ण करने में समर्थ होवें।”[1] अंत में वे सभी की उन्नति के लिए प्रार्थना करती हैं। स्त्रियों की सर्वांगीण विकास से ही वे हिंदी साहित्य का विकास मानती थीं।

तीसरे प्रकाशित निबन्ध में सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में जो स्वधीनता की चेतना है वह उनकी कर्मों की वजह से है और उनका तेजस्वी रूप कथन में भी स्पष्ट है। सुभद्रा कुमारी चौहान एम.एल.ए रही और राष्ट्रीय आंदोलनों में उन्होंने अपने वक्तव्य के माध्यम से लोगों को जगाने का प्रयास किया। सुभद्रा कुमारी चौहान के भाषण में महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों में भी स्वाधीनता की चेतना जगाने की ललक थी। उनके भाषणों को कर्मवीर पत्रिका में प्रकाशित किया गया है।

22 सितम्बर 1937 ई. को कांस्टिटयुएन्ट एसेम्बली में एम. एल. ए के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान ने जो भाषण दिया था वह कर्मवीर पत्रिका में ‘फेडरेशन की बेड़ियाँ ज़ेवर नहीं हैं’ शीर्षक से 2 अक्तुबर पृ. 8 में छपा था। सुभद्रा कुमारी चौहान ने विधान निर्माण समिति का प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाने पर अपने भाषण में उसका समर्थन करते हुए कहती हैं कि “विद्वान् डॉक्टरों ने आनरेबल और आनरेरी डॉक्टरों ने उसके पक्ष में और खिलाफ में भाषण दिए हैं। कानून के बनाने वाले और शासन को चलाने वाले विद्वानों ने अपना इस विषय का ज्ञान हमें समझाने में खर्च किया है। ऐसी हालत में मुझे तो शक होता है कि मैं इस बहस मुबाहसे में किसी प्रकार की सहायता पहुँचा सकूँगी या नहीं। इतिहास की रूपरेखा और शासन विधान के बारे में सदियों का अनुभव निचोड़ कर हमें रास्ता दिखाने के लिए रौशनी तैयार की गई है। हम जल्दी जल्दी में कहीं ठोकर खाकर गिर न पड़ें, उसके लिए सावधान भी किया गया है।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 50

परन्तु अभी तक प्रस्ताव के विरुद्ध जितनी बातें कही गई हैं वे बहुत कुछ आतार्किक और काल्पनिक ही जान पड़ती है।"[1] इसप्रकार उन्होंने विधान निर्माण समिति का प्रस्ताव पर अपना समर्थन दिया और उसपर सतर्कता बरतने की पहल की।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस दौर की स्पष्ट चर्चा की थी। - "सारा मुल्क और उसकी कौमें कांग्रेस के जरिये अपना आत्मनिर्णय का अधिकार माँग रही हैं जिसके लिए पिछले महायुद्ध के समय बहुत शोर गुल मचाया गया था। स्वर्गीय लोकमान्य तिलक ने हमें सिखलाया है कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसको लेकर रहेंगे। महात्मा गाँधी ने उसी अधिकार के लिए हमें गोलियों की बौछार के बीच हँसते-हँसते बलिदान होना सिखलाया है। हमने अपना ध्येय पूरी आजादी तय किया है और उसको हासिल करने के लिए हमने जैसा कि पिछले सत्रह सालों के राष्ट्रीय युद्ध से जाहिर है- बलिदान हो जाने की अपनी उत्कट भावना भी दिखा दी है।"[2] सुभद्राकुमारी चौहान का यह भाषण उनकी राष्ट्रीय आन्दोलन ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की समझदारी भी स्पष्ट होती है।

आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने स्वार्थ की चिंता नहीं की। अपना सबकुछ छोड़कर जेल जाने की तैयार हो गए, लाठियाँ खाईं, गोलियों से नहीं डरे, कुर्की सहे। इतना सब करने पर भी हिंदुस्तान के हाथ कुछ हासिल नहीं हो पाया था। इस सुधार के रास्ते चलते हुए 'गवर्मेन्ट ऑफ इण्डिया एक्ट' ही था जो स्वतंत्रता सेनानियों के पक्ष था सुभद्रा कुमारी चौहान इस चाल को भलीभांति पहचान रही थीं। इसके अलावा हर चीज ब्रिटिश शासन की सह बढ़ा रही थी। ब्रिटिश सत्ता का पुरजोर विरोध विरोध करती हुई सुभद्रा कुमारी चौहान अपने भाषण में कहती हैं – "इस बीच ब्रिटिश सरकार के कारखाने में हमारे लिए

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं, - 51

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ.सं. - 51

फेडरेशन की बेड़ियाँ तैयार की जा रही है और हमारे समझदार सलाहकार और हमारे सावधान सलाहकार हमें यह सलाह देते हैं कि उसे पहन लो, पहनकर एक बार देखो तो सही, कौन जाने एक बार पहनने के बाद वह कोई जेवर ही साबित हो। ऐसे सलाहकारों को हमारा उत्तर यही है कि बस अब बहुत हो चुका। अब हम इस रुपहले फंदे में नहीं फसेंगे। अब हम ऐसा शासन विधान नहीं चाहते जिसमें 'मेड इन इंग्लैंड की छाप लगी हो।"[1]

सुधार की नीति से हताश होकर वो कहती हैं – "इस प्रस्ताव का विरोध करने वालों की दलीलों में क्रांति के मुकाबले सुधार की भावना अधिक पाई जाती है। उनको कांस्टीटयुएन्ट एसेम्बली के नतीजे का डर है उनकी तरक्की के रास्ते पर 'खबरदार रहो' 'सावधान रहो' की बड़े-बड़े अक्षरों वाली तख्तियाँ लगी हैं। लेनिन ने अपने एक सोने के महत्त्व सम्बन्धी लेख में सुधार के रास्ते को भूल भुलैया कहा है। आपने उसके अंदर प्रवेश नहीं किया कि फिर आपको बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिलता और न आप अपने निर्दिष्ट स्थान तक ही पहुँच सकते हैं।"[2]

करो या मरो 1942 आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर सुभद्रा कुमारी चौहान लिखती हैं – "हमें तो हिंदुस्तान में बताया हुआ हिन्दुस्तानों के द्वारा बनाया हुआ और हिन्दुस्तानियों के हित ही के लिए बनाया गया हो ऐसा शासन विधान चाहिए। सच बात तो यह है कि हिंदुस्तान की आत्मा विदेशी सत्ता के खिलाफ अब क्रांति कर बैठी है। सुधारवादियों की मीठी-मीठी और लुभावनी दलीलों का अब उस पर कोई असर नहीं पड़ता।"[3]

स्वतंत्रता के पश्चात् देश का बंटवारा हो गया। सांप्रदायिकता बढ़ गयी थी। हिन्दू मुस्लीम जो दोस्त थे एकजुट होकर आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे अब एक-दूसरे के दुश्मन हो

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं – 52-53

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं – 52

[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं – 53

गये। सुभद्रा कुमारी चौहान इस भेदभाव पर कहती हैं, “इस प्रस्ताव पर जो संशोधन पेश हुए हैं, उनकी मंशा सिर्फ यही मालूम होती है कि कम तादाद वाली कौमों के हकों, धर्मो और संस्कृति की रक्षा की जावे। परन्तु वे भूल जाते हैं यह तो हमारा घरू मामला है। उसे हम आपस में ही समझकर निबटा सकते हैं और निबटा भी लेंगे। हमारे कम तादाद वाले भाई इस बात का विश्वास रखें कि अब देश के राजनैतिक शासन की बागडोर कांग्रेस के हाथ में है। उनके अधिकारों के साथ लापरवाही कभी भी नहीं हो सकती। मैं अपने इन संशोधन पेश करने वाले माननीय भाईयों से निवेदन करती हूँ कि इस समय जबकि आजादी की जंग में हम अपने विरोधियों से लड़ रहे हैं। और इस जंग को जारी रखने को और भी जी-जान से तैयारी कर रहे हैं, ऐसे वक्त वे विजय के बाद मिलने वाले अधिकारों के बँटवारे के तरीकों में ही उलझ न जावें। बल्कि हमारे कंधे से कन्धा मिलाकर इस आजादी की लड़ाई में उतर आएँ और राष्ट्रीय झंडे को ऊँचा करके आगे बढ़े।”[1]

1.2.4 संकलन-संपादन :

सुभद्रा कुमारी चौहान ने कविता, कहानी एवं निबंध के अतिरिक्त संकलन संपादन का कार्य भी किया है। अपनी रचना ‘बिखरे मोती’ कहानी संग्रह का सम्पादन सुभद्रा ने स्वयं किया है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने पहले काव्य संग्रह ‘मुकुल’ का संपादन कार्य अपने भाई प्रफुल्ल के साथ मिलकर किया है। कविताओं को पुस्तक रूप देने के क्रम में वे लिखती भी हैं कि “मेरे पास अपनी कविताओं का न तो कोई संग्रह था और न मुझे ठीक ठीक यही याद था कि मेरी कौन कविता कब, कहाँ छपी है। मेरी कविताओं के प्रति प्रफुल्ल का जो

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं – 53

अंक अकपट स्नेह है, यह संग्रह उसी का परिणाम है ।"[1] इस पुस्तक के छ: संस्करण प्रकशित हुए जिसमें प्रत्येक संस्करण की भूमिकाओं में सुभद्रा कुमारी चौहान का भय और संकोच दिखाई देता है । वे प्रथम संस्करण की भूमिका में इस प्रकार लिखती हैं, "आज जब यह पुस्तक बाजार में जाने के लिए तैयार है, मुझे कुछ भय सा हो रहा है । लेकिन फिर सोचती हूँ , मुझे भय किस बात का ? कविताएँ अच्छी हों या बुरी, मेरी हैं और मुझे प्यारी भी बहुत हैं । मैं इनके बारे में कुछ कहना नहीं चाहती । चाहूँ भी तो कुछ कह नहीं सकती और इसीलिए मौन रहकर ही प्रसन्नतापूर्वक यह पुस्तक जनता के हाथों में देती हूँ ।"[2] इसी प्रकार जनता की प्रतिक्रिया से वे खुश थीं, वे लिखती हैं, "पांचवें संस्करण के समय मैंने संकोच के साथ इसमें कुछ सुधार और कुछ परिवर्तन किए थे । तब और अब के अंतर को देखते हुए मुझे डर था कि यह मेरी दस्तन्दाजी पाठकों को पसंद भी आती है कि नहीं । किन्तु 'मुकुल' के उस संस्करण का इतनी जल्दी समाप्त हो जाना ही इस बात का प्रमाण है कि आपने उसे पसंद किया है ।"[3]

उन्होंने सन 1942 में 'विवेचनात्मक गल्प-विहार' नामक हिंदी की मौलिक कहानियों का सुंदर संकलन भी किया है । इस संकलन में सुभद्रा कुमारी चौहान की 'तीन बच्चे' शीर्षक कहानी भी संकलित है । यह पुस्तक कई वर्षों तक गुजरात विश्वविद्यालय की एम. ए. के पाठ्यक्रम में शामिल रही ।

सुभद्रा कुमारी चौहान को राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लेने के दौरान कई बार जेल जाना पड़ा । जब वे जेल में होती थी तब वे डायरी लिखा करती थीं । उनकी डायरी के कुछ पृष्ठ 'बुंदेले हरबोलों के मुंह जिसने सुनी कहानी' के परिशिष्ट में प्रकाशित हुए हैं । सुभद्रा कुमारी चौहान की डायरी के ये पृष्ठ तत्कालीन जेल के वातावरण को प्रकट करते हैं कि किस प्रकार

[1] मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं.- 6
[2] मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. - 6
[3] मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं.- 8

मैट्रन सी क्लास की महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करती है तथा उनकी सहायता करने पर सुभद्रा कुमारी चौहान को भी उसके कोप का भाजन बनना पड़ता था। सुभद्रा कुमारी चौहान की इस डायरी का शीर्षक - सुभद्राजी की अधूरी वन्दिनी की डायरी हैं।

1.2.5 पत्र साहित्य :

सुभद्रा कुमारी चौहान ने समय-समय पर पत्र भी लिखे हैं। उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन के समय कई बार जेल की यात्रा की। जेल के प्रवास में उन्होंने अपने सगे सम्बन्धियों और मित्रों को पत्र लिखे हैं। यदि उन पत्रों को इकठ्ठा किया जाए तो वे हिंदी साहित्य के लिए अमूल्य निधि बन सकते हैं। उन्होंने माखनलाल चतुर्वेदी को पत्र लिखे। 'बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी' में कुछ व्यक्तिगत पत्र संग्रहीत हैं। अपनी पुत्री सुधा चौहान को लिखा गया एक पत्र इस प्रकार है –

''कल तुम्हारा जन्मदिन है बेटी

मेरा प्यार और आशीर्वाद

तुम्हारी चिट्ठी से सब घर का हाल चाल जाना, जो कुछ मतभेद हैं, जिनके कारण घर में असंतोष हैं वह तो एक न एक दिन खत्म होंगे ही। जहाँ तक हो सके घर बिना छोड़े काम चल सके तो वही करना 'तुम और अमृत' दोनों अम्माजी से कह सकते हो कि वे भले ही तुम्हें छोड़ के रह लें पर तुम उन्हें छोड़कर नहीं रह सकते। श्रीपत तुम्हें उचित सलाह देंगे---तुम्हें

रूढ़िवादिता के सामने कभी न झुकना चाहिए। इन बंधनों को तोड़ने में कष्ट तो होगा, पर पीछे आने वालों के लिए रास्ता सुगम हो जाएगा।”[1]

इस पत्र से यह निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान ममतामयी थीं। उन्होंने स्वयं रूढ़ियों के आगे सिर नहीं झुकाया था और वे यह भी नहीं चाहती थीं कि उनकी बेटी ऐसा करे। इस पत्र से यह भी पता चलता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान संयुक्त परिवार को महत्त्व देती हैं इसलिए मतभेदों के होते हुए भी वे अपनी बेटी को सास से अलग रहने की सलाह नहीं देती हैं।

दिनाँक १२-२-४६ को सुधा जी को लिखा एक पत्र में उन्होंने यह कहा था कि ‘ना जाने क्यों मेरे स्वभाव में घोर विरक्ति आती जा रही है।’[2] उनकी इस विरक्ति को उनकी कविताओं के अंतिम दौर में देखा जा सकता है।

1.2.6 अप्रकाशित साहित्य :

सुभद्रा कुमारी चौहान की लेखनी हमेशा से चलती रही उन्होंने बहुत सारी रचनाएँ लिखीं, परन्तु कुछ अपूर्ण रचनाएँ हैं। कुछ अप्रकाशित रचनाएँ ‘बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी’ के परिशिष्ट में संकलित हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की अधूरी कविताएँ और एक पुत्र वियोग पर लिखी लम्बी कविता एवं एक अधूरा उपन्यास सुधा चौहान के पास संरक्षित हैं।

[1] उद्धृत, सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना(सुधाजी से साक्षात्कार के समय देखे गये पत्र का मुख्यांश), डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 82

[2] उद्धृत, सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं - 82

कहानियों और उपन्यास में किसी का शीर्षक नहीं दिया गया है, केवल एक कहानी का त्यागपत्र शीर्षक दिया गया था। इन कहानियों और उपन्यास में एक तरफ फ़िल्मी रूमानियमत की झलक दिखाई देती है। तो दूसरी तरफ दो कहानियों में विधवा समस्या को उठाया गया है। उपन्यास में नायिका अंत में कांग्रेस की कार्यकर्त्ता बन जाती है। कहानी के कुछ अंश में सुभद्राजी के विचारों की प्रतिध्वनि स्पष्ट सुनाई देती है वे प्रेम का बंधन स्वीकार करती हैं लेकिन अपना आत्मसम्मान का हनन नहीं चाहती हैं – "अच्छी आदर्श स्त्री वे (पति) क्या बोलते रहना। पर भाई मुझसे तो यह नहीं होता। कोई मुझे दस कहेगा तो मैं एक-दो कहूँगी ही, आखिर मैं भी तो हाड़ मांस की बनी हूँ। मेरी भी, नसों में खून दौड़ रहा है। विवाह के बाद तुम्हारे घर आकर हमने अपना आत्म-सम्मान तो नहीं बेच दिया। यदि बेबात की बात पर गलियाँ मिलती रहेगी तो एक-दिन हमारी अंतरात्मा विद्रोह न कर उठेगी।"[1]

इन कहानियों के अतिरिक्त एक लेख और दो भाषण भी प्राप्त हुए हैं जो इस प्रकार हैं – अंतिम लेख - "आज मुझे अग्रसर नारी धर्म पर कुछ बातें कहनी है। अग्रसर नारी से मतलब है, नारी का जो कि पढ़ी लिखी है और पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर वर्तमान क्रांति में भाग लेती हुई आगे बढ़ रही है। उसने पर्दे छोड़ दिया है और अब वह लीला और विलास का खिलौना नहीं रह गई। इस क्रांति के युग में पुरानी रूढ़ियाँ टूटती जा रही हैं कि वे धर्मशास्त्र के द्वारा नियत किए गए हैं। किन्तु अब उनकी छान-बीन होती है और व बुद्धिगम्य होने पर ही मान्य होते हैं।

यह बात नहीं कि जो पुराना है, वह बुरा है और नया अच्छा है। परन्तु पुराने में भी खराबियां आ जाती हैं, जिनको दूर करना बहुत जरुरी है। पतिव्रत धर्म बहुत पवित्र है और

[1] उद्धृत, सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. – 83

सुंदर है जबकि वह प्रेम के सिंहासन पर विराजमान है किन्तु वही पतिव्रतधर्म वीभत्स हो जाता है, जब यह कहा जाता है कि –

"वृद्ध रोग बस जड हीना
अन्य बधिर कोटी अति दीना
ऐसेहु पतिकर किए अपमाना
नारि पाव जमपुर दुःख नाना"[1]

धर्मशास्त्र के रचनेवाले पुरुष थे, उन्होंने नारी को ऐसे शिकंजे में कसा कि उसे साँस लेने की भी जगह नहीं रह गई। वह जमपुर, समाज और आर्थिक अधीनता के कारण सब सहती है। पुरुषों के शासन में रहने की उसे आपत हो गई है। पुरुष का शासन नारी को बुरा नहीं लगता, यदि वह शासन प्रेम का हो।

पिंजड़ा खिल देने पर भी पिंजरे का पक्षी उड़ नहीं सकता। वही हालत नारी समाज की है। अधिकार दिए जाने पर भी उसे स्वीकार करने की उसकी मनोवृत्ति नहीं है। यहीं तक नहीं नारियाँ ही उसका विरोध भी करती है।(तलाक का बिल पास होने पर नारियों ने विरोध किया है।)

मैं पतिव्रत धर्म के खिलाफ नहीं हूँ पर यह वहीं उचित है जहाँ पति-पत्नी के बीच आपस में सच्चा प्रेम हो। किन्तु इसके बिना यह कितना कठोर हो जाता है, जब धर्म को साथ मानने को मजबूर किया जाता है।"[2]

---

[1] उद्धृत, सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. – 84

[2] उद्धृत, सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 84

- **सत्याग्रह के समय दिया गया भाषण** – "हिंदुस्तान की जनता की इच्छा के विरुद्ध उसे युद्ध में शामिल कर लिया और उसे युद्ध के कष्टों में घसीटा है। सेंट्रल असेम्बली और सभी असेम्बलियों में ग्रेट ब्रिटेन की इस नीति का विरोध किया गया। मध्यप्रान्तीय असेम्बली में मैंने युद्ध विरोधी प्रस्ताव का समर्थन किया था...प्रथम युद्ध में मित्र राष्ट्रों ने घोषित किया था कि भविष्य में युद्धों को बंद करने के लिए ही वे इस युद्ध में शामिल हुए थे। किन्तु उस युद्ध ने प्रतिहिंसा को जन्म दिया और उसका परिणाम सारे संसार को भोगना पड़ रहा है। हिंसा से हिंसा नहीं मिट सकती।"[1]
- **सन 1931 में दिया गया भाषण** – "माननीय प्रधानमंत्री के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए मैं खड़ी हूँ। ब्रिटिश सरकार की युद्ध नीति का विरोध सन 1937 में सभी असेम्बिलियों ने आजादी को बनाने वाली कास्टिटपुन असेम्बली की मांग की थी। आज मांग दोहराने पर सौदा कहा जा रहा है।

उस महासमर में अपनी आहुति देने से पहले हम चाहते हैं कि हम वहां स्वाधीन राष्ट्र के सम्मान के साथ लड़ें , पराधीन राष्ट्र की तरह नहीं। अंग्रेजी कहावत है –'चेरिटी बिगीन्स एट होम' –'उदारता अपने घर से ही प्रारम्भ कानी चाहिए'। पोलैंड या किसी अन्य देश की स्वाधीनता के लिए युद्ध करने से पहले हिन्दुस्तान को स्वतंत्र कर देना चाहिए।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में अनुभूति की अनुगूँज विद्यमान हैं यह अनुभूति उनकी कुछ अधूरी कविताओं में भी बिखरी रह गई हैं जिसका प्रकाशन नहीं हो पाया है। कुछ अप्रकाशित कविताएँ इस प्रकार हैं –

(1) "जा रही हूँ

---

[1] उद्धृत, सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 84

[2] उद्धृत, सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 84

जानकार ही राह काँटों से भरी अपना रही हूँ।

जा रही हूँ।

रोकने को इन दलीलों का असर मुझपर नहीं है।

विघ्न यात्राएँ बहुत सही है, मुझे डर नहीं है।"

(2) दूर हैं मंजिल अभी शक्ति का

संबल नहीं है।

दो कदम चढ़ सकूँ मैं अब और

मुझमें बल नहीं है।

(3) मांगती हूँ दान, तुमसे मांगती हूँ दान

आज पीछे छोड़ आई मान और अभिमान

मांगती हूँ दान !

(4) टूट गया वह मेरा सपना।

ऐसा कोई नहीं है जिसे कहूँ पल धरमी अपना

टूट गया वह मेरा सपना

क्षीण-जीर्ण काया दुर्बल है।

थके पैरों में शेष न बल है।

पथ है अगम, नहीं संबल है।

फिर भी आगे बढ़ूँ।

लक्ष रह गया यही जीवन का सपना

टूट गया वह मेरा सपना।

(5) किराए का प्रहरी, न जयहिंद वालों से

डटकर कभी सामना कर सकेगा।

हजारों की संख्या करोड़ों में बदलो

चलो आज जय हिन्द का नारा लगाते

चलो आज, गुमराह है, जो अभी तक

उन्हें याद उनके वतन की दिलाते

चलो आज लहू से तुला दान

करने को फिर अपना नेता बुलाए।

गुलामी की जंजीर तोड़ आगे कदम हम बढ़ाएं।

(6) 1

अपने आहत अंतर की

करूणामय कठिन कहानी।

क्यों व्यर्थ सुनाती है तू

वह दुनिया है दीवानी।

2

मत लुटा प्रचुर पीड़ा धन

समवेदन को आशा में।

बाद में ठगी जाएगी

इस झूठी अभिलाषा में।

3

उपहास हास व्यंगों से

झंझा झकोर से विचलित

क्या शांति कभी पायेगा

पलभर तेरा आहत चित

4

तू आ जग के उपवन में

मधु गंध पसंद लुटाने

साथ अनेक पग-पग पर

होंगे जाने अनजाने

5

हंसने में साक्षी बनकर

है नहीं कहीं हंस पाना।

पर दुःख में दुखित होकर

दुष्कर है आश्रू बहाना।

6

अनुताप, ताप दुःख चिंता

चुप होकर सहती जाना।

अपनी पीड़ा का कारन भर

वसुधा पर नहीं गिराना।

7

जो गिरकर ऊँचा चढ़ा और,

जो मरकर भी हो गया अमर।

है क्या उसी तानाजी की

सिर देकर जिसने किया समर।

सर किया सिंहगढ़ को बढ़कर

उस तानाजी को सुनो कथा।

जिस तरह किया उसने समर।

8

ऐ प्राणों के प्राणहृदय के हृदय

स्नेह साकार।

मुझे बता दो जग जीवन में

किसको कहते प्यार।

9

कोई मेरा प्यार सम्हाले

जीत-जीत कर भी जो हारी।

कोई मेरी हार सम्हाले

परिचित और अपरिचित सबैंके पथ।

पर फूल बिछाती आई

अनजाने राही के रास्ते पर से भी

शूल हटाती आई।

अपना और पराया कैसा कभी-

न जाना कभी न माना

मानवता के नाते सब पर अपना

स्नेह लुटाती आई।

आज विदा की बेला में अब कोई

मेरा भार सम्हाले।

10

(8-3-1942 को जेल में लिखी गई)

ये गरीब बच्चे, इनको

कौन करेगा प्यार।

आह। प्यार पाने का भी क्या है

इनको अधिकार।

11

भ्रांत बटोही

है मेरे भ्रांत बटोही। देखो इस ओर न आना

यह विकट अटपटा पथ है, ठहरो। मत पैर बढ़ाना।

है भोले पथिक। ठहर जा कुछ सोच समझकर आना

आकर फिर जा न सकोगे। निष्फल होगा पछताना।

12

रीति प्याली।

रीति होती जाती है मधुमय जीवन की प्याली।

मैं देख रही हूँ, फीकी पड़ती जाती है लाली।

13

आज है बेला विदा की आज मत

रूठो हठीले।

पोंछ दो अपने करों से आज मेरे

नयन गीले।

जानती हूँ, यह कि इतनी साधना

मेरी नहीं है।

वर मिले, इतनी बड़ी आराधना

मेरी नहीं है।

किन्तु फिर भी दे चुके हो तुम मुझे

जब प्यार इतना।

और दो अंतिम समय में देव।

बस अधिकार इतना।

मैं झुकूँ लेने चरण रज पोंछ दो

तुम नयन गीले-गीले (आज)

छोटे पुत्र की मृत्यु के उपरांत लिखी गई कविता –

मुझे याद है जिस दिन से है,

मैंने होश सम्हाला।

तेरे आदेशों को विधिवत्

मैंने प्रतिदिन पाला ॥1 ॥

खिले देख सुन्दर फूलों को

है मैंने सुख पाया।

उन्हें तोड़ कर माँ डाली का

मैंने दिल न दुखाया ॥2 ॥

फिर क्यों तोड़ दिया, रे निर्दय

एक खिलौन मेरा।

हृदय हीन। क्यों छीना मुझसे

नन्हा छौना मेरा ।।3 ।।

की भी प्रकट किसी दिन मैंने

ऐसी इच्छा कोई।

या अंचल पसार कर तेरे

आगे थी मैं रोई ।।4 ।।

अनचाहे ही दिये दया कर

तूने मुझे खिलौने।

आगे-पीछे फिरने वाले

सुंदर-सुंदर छौने ।।5 ।।

जिनको पाकर अखिल विश्व का

वैभव मैंने पाया।

या भयभीत जगत दुःख मेरे

पात न अब तक आता ।।6 ।।

तेरे सहृदय भाव से कितनी मैं

कृतज्ञ थी तेरी।

यद्यपि उन्हें पाने की भी थी

इच्छा कभी न मेरी ॥7 ॥

फिर भी मुझ पर तूने अपनी

इतनी कृपा बिखेरी

एक नहीं दो नहीं, मुझे

दे दी निधियाँ बहुतेरी ॥8 ॥

सुख में भूली थी फिर भी

काया मैंने तुझे भुलाया।

क्या अपने कृतज्ञ भावों को तुझको नहीं जताया ॥9॥

अन्तर्यामी होकर मेरे

मन की जान न पाया।

हाय। छीन ली मुझसे

नन्हीं सी वह कोमल काया ॥10॥

रे, पाषाण कहीं "माँ" का मन

तूने पाया होता।

तो अपने इस क्रूर कर्म पर

तू भी जी भर रोता ॥11॥

'जन्म-मरण होता रहता है।'

कहते हैं यह ज्ञानी

अमर-आत्मा है पर उसको

कब किसने पहचानी ॥12 ॥

मैं न आत्मा देख सकी हूँ

नहीं उसे पहिचानूं

जिसे देखती थी प्रतिदिन मैं ॥13॥

केवल उसको जानूं

मिट्टी का हां वह शरीर ही

तो था मुझको प्यारा।

क्या पा लिया विधाता

उसको करके मुझसे न्यारा ॥14 ॥

चूर हो गया आज ह्रदय यह

क्रूर कर्म से तेरे

क्या देखे तूने अक्षम्य अपराध

कहीं पर मेरे ।।15 ।।

जिससे ऐसी विषय वेदना

है मुझको पहुंचाई ।

करुना कर कहलाकर करुणा

करनी तुझे न आई ।।16 ।। **(2-12-1936)**

1.2.7 **प्रतिबंधित साहित्य :**

सुभद्रा कुमारी चौहान ने झाँसी की रानी को अपने साहित्य की नायिका बना लिया था। ऐसे में देखा जाए तो रानी लक्ष्मीबाई का फलक इतना विस्तृत है कि यह कविता, कहानी, इतिहास, संस्कृति, समाज, राष्ट्र और जीवन मूल्यों को एक साथ कई अर्थ देता है । तत्कालीन समय से लेकर अब तक सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' शीर्षक कविता जुबां पर चढ़ी हुई कविता है यह लोक में जन जन तक पहुँची हुई आवाज बन गई । लोक में व्याप्त लक्ष्मीबाई का किरदार साहित्य और इतिहास में बाद में आया इसलिए कविता कहती है – "महलों ने दी आग झोपड़ों ने ज्वाला सुलगाई थी, यह स्वतंत्रता की चिंगारी अंतरतम से आई थी ।"[1] सुभद्रा कुमारी चौहान की अमर कविता 'झाँसी की रानी' ने राष्ट्रीय जागरण का जो बिगुल फूंका वह अविस्मरणीय है, आज भी हिंदी काव्य जगत में 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' की एक एक पंक्ति राष्ट्रीय धरोहर मानी जाती है । कविता की रचियता को भले ही कम लोग जानते हों लेकिन पूरे भारत में प्रत्येक विद्यार्थी व जनमानस सुभद्रा

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 83

कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' से अवश्य परिचित है। इस कविता ने न केवल जनता को अपितु उन कवियों को भी चेताया है जो परतंत्रता के भय से दूसरे लोक की कल्पना में डूबे थे, अतीत का गौरवगान करती यह कविता वर्तमान में भी उदाहरण प्रस्तुत करती है –

"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी

बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी

गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी

चमक उठी सन संत्तावन में वह तलवार पुरानी थी

बुंदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी

खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।"[1]

झाँसी की रानी कविता में केवल राष्ट्रीयता और देशप्रेम का स्वर ही नहीं पूरा इतिहास दिखाई पड़ता है। व्यापारी बनकर आए अंग्रेजों के बढ़ते प्रताप से लेकर रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान तक का पूरा इतिहास सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस कविता में अंकित किया है –

"अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकत फिरंगी की माया

व्यापारी बन दया चाहता था जब वह भारत आया

डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 81

राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।"[1]

जब अंग्रेज एक-एक कर सारी रियायतें हड़पते चले गए और एक दिन अपनी अन्यायपूर्ण नीतियों से पूरा देश हड़प लिया उस आक्रोश को सुभद्रा कुमारी चौहान ने कविता के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है –

"छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात

कैद पेशवा था बिठूर में हुआ नागपुर का भी घात

उदैपुर, तंजोर सितारा, करनाटक की कौन बिसात

जबकि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था ब्रज-निपात

बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी।"[2]

कविता रानी लक्ष्मीबाई के रण कौशल और उनके द्वारा लड़े गए युद्ध का भी पूरा ब्यौरा प्रस्तुत करती है, जैसे आरंभिक युद्ध में विजयी होती रानी भारतीयों की आपसी फूट से पराजित हुई –

"रानी बढ़ी कालपी आई कर सौ मील निरंतर पार

घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार

यमुना तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार

विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 83

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 83-84

अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान रानी लक्ष्मीबाई के योगदान को साहित्य में प्रस्तुत कर एक सच्चे साहित्यकार के साथ-साथ राष्ट्रभक्त के रूप में अपने कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है, इसलिए आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने इस राष्ट्र कवि के बारे में लिखा है कि "राष्ट्रीय कवियों को पूरी सफलता तभी मिल सकती है, जब वे राष्ट्रीय आन्दोलन में स्वयं सम्मिलित हों और उत्साहपूर्वक जनता को मुक्ति का पथ दिखलावें।"[2] सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' कविता के द्वारा ही नेताजी सुभाषचंद्र बोस सुभद्रा कुमारी चौहान से परिचित हुए। नेताजी ने अपनी आजाद हिंदी फ़ौज में रानी लक्ष्मीबाई रेजिमेंट भी बनाई थी।

सुभद्रा कुमारी चौहान देशप्रेम की भावना को काव्यात्मक स्वर प्रदान करने वाली कवयित्री के रूप में विख्यात हैं उनकी 'झाँसी की रानी' कविता में विस्तृत इतिहास, स्मृति प्रेरणा, ओज और कृतज्ञता सब कुछ है जो इन पंक्तियों में देखा जा सकता है –

"जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी

यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी

होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी

हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी

तेरा स्मारक तू ही होगी तू खुद अमिट निशानी थी।"[3]

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 86

[2] इतिहास में अंकित सुभद्रा की स्मृतियाँ, सम्पा.जयप्रकाश मिश्रा, त्रिभुवन नाथ शुक्ल, राजीव दुबे, सत्यनारायण प्रसाद, पृ. सं. - 42

[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संकलन संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 87

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी कविता जगत की अकेली ऐसी कवयित्री हुई जिन्होंने अपनी कविता की पुकार से लाखों भारतीय युवक-युवतियों को उस युग की उदासी छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में स्वयं को समर्पित कर देने के लिए प्रेरित किया। उन्हें अमर कर देने के लिए सिर्फ 'झाँसी की रानी' शीर्षक कविता ही पर्याप्त है। सन 1930 ई. के लगभग इस कविता की धूम थी लेकिन आग उगलती और भारतीयों में नवचेतना का संचार करती उनकी यह रचना प्रतिबंधित होने से बच गई क्योंकि उस समय मध्य प्रांतीय सरकार के प्रकाशन विभाग में दो अनुवादक थे, एक मराठी में निपुण था दूसरा उर्दू में, हिंदी जानने वाला कोई नहीं था। इसी से कवयित्री और कविता बच गई और सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन काल में ही यह कविता लोकप्रियता के शीर्ष पर पहुँच गई। इस कविता की प्रसिद्धि इतनी थी कि सैकड़ों लोगों ने इसे छापा। इसे लोक छंद, लोक शैली में पिरोई यह गीत जन-जन तक पहुँचा, इसकी रिकॉर्डिंग हुई, कागजों पर छापकर यह कविता मेलों में भी बिकती थी। अनेक संपादकों ने इस कविता को संकलित किया। संकलन और संपादन के क्रम में इस कविता को प्रतिबंधित भी होना पड़ा था। सुभद्रा कुमारी चौहान का यह गीत 'देशभक्ति के गीत' पुस्तिका में 'आजादी की देवी नाम से संकलित है। इस पुस्तिका में कुछ चुने हुए देशभक्ति के गीतों का एक संकलन प्रकाशित है जिन पर ब्रिटिश सरकार ने उनके छपते ही प्रतिबंध लगा दिया था। इस संकलन में इसका संदर्भ इस प्रकार दिया गया है - 'मोहर चंद (मस्त) द्वारा सम्पादित तथा द्वादश श्रेणी प्रेस से मुद्रित, "फौजी ऐलान" पुस्तक से राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य, अवाप्ति संख्या : 880। यह पुस्तिका 31 मई, 1985 ई. को राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली से इस उम्मीद के साथ पुन: प्रकाशित किया गया कि "हमारे अतीत के इन गरिमामय गीतों से देशवासियों को एक नया स्वर मिले और जन मानस में राष्ट्र के प्रति नया उत्साह पैदा हो।"[1]

[1] देशभक्ति के गीत(ब्रिटिश राज द्वारा प्रतिबंधित साहित्य से), राष्ट्रीय अभिलेखागार, अभिलेख निदेशक डॉ. राजेश कुमार परती, नई दिल्ली : 31 मई 1985, पृ. सं. - i

सुभद्रा कुमारी चौहान की इस गीत से देशवासियों को एक नई चेतना मिली तथा अखंड एकता बनाये रखने के लिए वे कृतसंकल्प हुए।

इस संदर्भ के निष्कर्ष में यह कहना उचित ही होगा कि हिंदी साहित्य जगत रानी लक्ष्मीबाई जैसी महान व्यक्तित्व का ऋणी है इस किरदार ने लाखों लोगों के मन में ओज के बीज बोये हैं, आजादी की राह में अपनी वीरता से अंग्रेजों को घुटने टेकने पर मजबूर किया है। अपने पराक्रम से लोगों में देशप्रेम की भावना जगाई है। देश की नई पीढ़ी को स्वतंत्रता संग्राम के समय की गौरवशाली गाथा से परिचित कराने में रानी लक्ष्मीबाई का अनमोल योगदान है। उनकी ओजश्वी चेतना से पूर्ण रचनाएँ प्रतिबंधित होते हुए भी अमर हैं।

1.2.8 सुभद्रा कुमारी चौहान केन्द्रित साहित्य :

सुभद्रा कुमारी चौहान पर आधारित अनेक रचनाएँ लिखे गए हैं। उनकी लोकप्रियता और प्रसिद्धि का आकलन उन पर केन्द्रित साहित्य के आधार पर किया जा सकता है।

1.2.8.1 मिला तेज से तेज (जीवनी) – सुधा चौहान

मिला तेज से तेज – सुभद्रा कुमारी चौहान की पुत्री सुधा चौहान ने लिखा है। यह हँस प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है। यह एक जीवनी पुस्तक है। इस पुस्तक में सुभद्रा कुमारी चौहान से जुड़े सभी पहलूओं को लिखा गया है। विशेष रूप से सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तिगत जीवन के महत्वपूर्ण पड़ाव को बारीकी से सुधा जी ने लिखा है। सुधा चौहान ने सुभद्रा कुमारी चौहान के महान व्यक्तित्व को संक्षेप में समेटने का प्रयास किया है।

सुधा चौहान ने सुभद्रा कुमारी चौहान के पारिवारिक परिवेश को और तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलनों की पृष्ठभूमि में सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन को सुंदर ढंग से वर्णन किया है। राजनीतिक जीवन एवं सामाजिक जीवन वे दोनों जगह सक्रिय दिखाई देती हैं। जैसा उनका स्वभाव था वे साहित्य लेखन में भी वैसा ही रचती हैं। सहज एवं सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। कई महत्वपूर्ण घटनाओं में स्वानुभूति का भी खूबसूरत चित्रण किया गया है।

इस जीवनी में सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन के विभिन्न पड़ाव को रेखांकित करने का प्रयास स्पष्ट दिखाई पड़ता है, यदि सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व को समझना है तो यह पुस्तक किसी भी पाठक वर्ग के लिए उपयोगी है। इस पुस्तक में सुभद्रा कुमारी चौहान के रचनात्मक लेखन का अधिक जिक्र नहीं है। इसे इस पुस्तक की सीमा कहा जा सकता है अपितु सुभद्रा के रचनात्मक लेखन और उनके प्रेरक व्यक्तित्व से यह कमी नहीं खलती है। सही मायने में यह पुस्तक जीवनी के तत्वों को पूरा करने में सफल है।

1.2.8.2 सुभद्रा कुमारी चौहान – राजेश शर्मा

राजेश शर्मा द्वारा लिखा गया यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक में सुभद्रा के व्यक्तित्व को सुव्यवस्थित ढंग से उकेरा गया है। राजेश शर्मा जी ने सुभद्रा के जन्म से लेकर मृत्यु तक की सभी महत्वपूर्ण घटनाओं को अलग अलग अध्याय में बाँटा है। इससे अध्ययन में रोचकता बनी रहती है। प्रत्येक अध्याय में सुभद्रा के जीवन की स्मृतियों का चित्रण सरल भाषा में किया गया है। शब्दों का चयन सही तरीके से किया गया है।

इस पुस्तक में कम शब्दों में सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन की सशक्त अभिव्यक्ति की गई है। इस पुस्तक में सुभद्रा के व्यक्तित्व के माध्यम से पाठकों को प्रेरित करने का प्रयास है। पुस्तक के द्वारा सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन की सुन्दरता एवं महत्ता को दर्शाया गया है। कई ऐसे प्रसंग हैं जो पाठक के हृदय को छू जाते हैं। जैसे सुभद्रा के बचपन का विद्रोही स्वभाव, सुभद्रा कुमारी चौहान की जेल यात्रा, उनका मातृत्व हृदय, समाज सेविका के रूप में उनका योगदान सभी पक्ष को इस पुस्तक में देख सकते हैं। इस पुस्तक में जीवन के सभी घटनाओं को लाने का भरसक प्रयास किया गया है लेकिन इसमें भी अन्य पुस्तकों की भांति घटनाओं की एकरूपता मिलती है। नए तरीके से लिखने का प्रयास नहीं दिखाई देता है किन्तु साहित्यिक योगदान के रूप में इस पुस्तक को जीवनी माना जा सकता है।

1.2.8.3 जनमनमयी सुभद्राकुमारी चौहान – राजेन्द्र उपाध्याय :

'जनमनमयी सुभद्रा कुमारी चौहान' – यह पुस्तक राजेन्द्र उपाध्याय ने लिखा है। उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए अपनी भूमिका में लिखा है कि "सुभद्रा कुमारी चौहान ने जो रचा वही किया और जो जिया वही रचा। वे हिंदी ही नहीं अपितु बीसवीं शताब्दी के भारतीय साहित्य की सर्वाधिक यशस्वी कवयित्रियों में गिनी जाती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा की सादगी तो आज के कवियों तथा समीक्षकों के लिए एक चुनौती बनी हुई है। वे प्राचीन भारतीय ललनाओं के शौर्य की याद दिलाने वाली कर्मठ

महिला थी और उनकी अनेक कविताएँ भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान लाखों देशवासियों के होठों पर थीं और अब भी हैं"[1]।

इस जीवनी पुस्तक में उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान से जुड़े सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं को लिखा है। इस पुस्तक को दो खंड में बाँटा है। लेखक ने पहले खंड में सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व को रेखांकित किया है। दूसरे खंड में उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान की चुनिन्दा कविताओं का संकलन किया है।

पहले खंड के अंतर्गत सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन से परिचित हो सकते हैं। एक पाठक इस पुस्तक के माध्यम से व्यक्तित्व की धनी सुभद्रा कुमारी चौहान के बारे गहराई से जा सकता है। बचपन पर आधारित अध्याय में सुभद्रा के बाल्यकाल से जुड़े संस्मरण को लिखा गया है। बचपन से ही उनकी राष्ट्रीय चेतना प्रखर थी। महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान की मैत्री पर भी लेखक ने संस्मरण बतलाया है। उनका मानना है कि इन दोनों कवयित्रियों का साथ होना हिंदी साहित्य की गाढ़ी नींव के समान है।

इस पुस्तक को उपाध्याय जी ने व्यक्तित्व और कृतित्व तक ही सीमित रखा है। सुभद्रा कुमारी चौहान की अन्य महत्वपूर्ण पहलूओं को इस पुस्तक में शामिल नहीं किया है। इसलिए पाठक वर्ग भी इससे सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तिगत जीवन का ही परिचय पाते हैं। इस पहले खंड में लेखक ने इस उप-अध्याय में सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व को उकेरा है –

-विवाह

-स्वतंत्रता संग्राम

[1] जनमनमयी सुभद्रा कुमारी चौहान, राजेन्द्र उपाध्याय, पृ. सं.-1

-मुकुल का प्रकाशन

-कहानीकार सुभद्रा

-सुभद्रा का काव्य

-मातृ हृदया नारी

-राजनीतिक सामाजिक कार्यकर्ता

-तेरा स्मारक तू ही होगी

भाषा सहज एवं प्रवाहमयी है। लेखन में बोलचाल खड़ी बोली का प्रयोग है। कोई भी पाठक वर्ग इसे आसानी से पढ़कर समझ सकता है।

दूसरे खंड में उन्होंने कुछ कविताओं को रखा है। इस संकलन में भी लेखक की सीमा नजर आती है। उन्होंने कविता के संकलन का कोई ठोस तर्क नहीं बतलाया है। किताब पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे कुछ और कविताओं का संकलन इस पुस्तक में होना चाहिए। जीवनी की कसौटी में यह पुस्तक खरा नहीं उतरता है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक सुभद्रा कुमारी चौहान के लिए एक भेंट स्वरूप है।

1.2.9 पुरस्कार और सम्मान :

सुभद्रा कुमारी चौहान को उनकी कई कृतियों के लिए पुरस्कृत किया गया है। सबसे पहले अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन द्वारा सुभद्रा कुमारी चौहान को सन् 1931 ई. में 'मुकुल' (कविता संग्रह) के लिए सेकसरिया पारितोषिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था

। सन् 1932 ई. को दूसरी बार सुभद्रा कुमारी चौहान को सेकसरिया पारितोषिक पुरस्कार ‘बिखरे मोती’ (कहानी संग्रह) के लिए दिया गया। तत्कालीन समय में ये पुरस्कार प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक थे।

27 नवम्बर 1949 ई. को जबलपुर के निवासियों ने चंदा इकट्ठा करके नगरपालिका प्रांगण में सुभद्रा कुमारी चौहान की आदमकद प्रतिमा लगवाई। जिसका अनावरण सुभद्रा कुमारी चौहान की बचपन की सहेली और हिंदी की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा ने किया है। इस प्रतिमा अनावरण के समय भदंत आनंद कौसल्यापन बच्चन, डॉ. रामकुमार वर्मा और इलाचंद जोशी भी उपस्थित थे। महादेवी वर्मा ने इस अवसर पर कहा कि “नदियों का कोई स्मारक नहीं होता। दीपक की लौ को सोने से गढ़ दीजिए पर इससे क्या होगा ? हम सुभद्रा के सन्देश को दूर-दूर तक फैलाएँ और आचरण में उसके महत्त्व को मानें - यही असल स्मारक है।”[1]

6 अगस्त 1976 ई. को भारतीय डाकतार विभाग ने सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक-टिकट जारी किया है।

28 अप्रैल 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए भारतीय तटरक्षक सेना ने नए नियुक्त एक तटरक्षक जहाज को सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम दिया है।

निष्कर्षतः सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यापक व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनमोल है, उनका हिंदी के राष्ट्रीय और सामाजिक साहित्य के क्षेत्र में जो विशिष्ट योगदान है वह अविस्मर्णीय है।

---

[1] जनमनमयी सुभद्राकुमारी चौहान, राजेन्द्र उपाध्याय, पृ. सं.- 42

द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय

हिंदी साहित्य के इतिहास एवं हिंदी आलोचना में सुभद्रा कुमारी चौहान की उपस्थिति :

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य पर विचार करने के लिए हिंदी साहित्य के इतिहास एवं आलोचना में उनकी उपस्थिति पर विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान का रचनाकाल, हिंदी साहित्य के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण कालखण्ड है। हिंदी कविता एक तरफ द्विवेदी युगीन इतिवृतात्मकता से मुक्ति की राहें तलाश रही थी तो दूसरी तरफ ब्रजभाषा काव्य की माधुर्यता को पाने की कोशिश भी जारी थी। काव्य रूप और काव्य-विषय दोनों ही स्तरों पर संघर्ष, इस काल में दिखाई पड़ता है। द्विवेदी युग और छायावादी युग का द्वंद्व भी हिंदी कविता एवं कवियों को अपने तरीके से प्रभावित कर रहा था।

इसी प्रकार गद्य लेखन के क्षेत्र में भी हिंदी-कथा साहित्य प्रारंभिक अवस्था को पार कर चुका था। गद्य साहित्य विषय एवं विधा के स्तर पर प्रौढ़ता की तरफ बढ़ता दिखाई पड़ता है। प्रेमचंद, जैनेन्द्र, महादेवी वर्मा जैसे रचनाकार गद्य लेखन की भिन्न-भिन्न विधाओं में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज कर रहे थे। तात्पर्य यह है कि सुभद्रा कुमारी चौहान का रचनाकार इन सारी स्थितियों – परिस्थितियों से प्रभावित हो रहा था। एक सजग रचनाकार के ऊपर अपने समय का प्रभाव अवश्य परिलक्षित होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान का लेखन भी अपने देशकाल और वातावरण से मुक्त नहीं है बल्कि अत्यंत सार्थक तरीके से देशकाल व वातावरण से युक्त दिखाई पड़ता है।

साहित्यिक परिदृश्य के साथ-साथ सुभद्रा कुमारी चौहान का सामाजिक परिदृश्य भी चुनौतीपूर्ण था। एक तरफ अंग्रेजों की गुलामी थी तो दूसरी तरफ विभेदों से भरा हुआ उनके आस-पास का समाज था। तत्कालीन रचनाकारों के लिए इन दोनों ही चुनौतियों का सामना करना आवश्यक था। इसके अभाव में वह साहित्य-कर्म को सामाजिक-कर्म के साथ नहीं जोड़ सकते थे। सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में विद्यमान स्वतंत्रता और स्वाभिमान की चेतना इसी समझ का परिणाम मालूम पड़ता है।

अतएव इस अध्याय के अंतर्गत सर्वप्रथम हिंदी साहित्य के इतिहास में सुभद्रा कुमारी चौहान की उपस्थिति के प्रश्न पर विचार करने का प्रयास किया गया है।

2.1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य के इतिहास' में सुभद्रा कुमारी चौहान के कवि व्यक्तित्व पर ही विचार किया है। उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान को छायावाद के समानांतर चलने वाली 'स्वच्छंद - धारा' का कवि स्वीकार किया है। इस स्वच्छंद - धारा को उन्होंने काव्य खण्ड के तृतीय-उत्थान के अंतर्गत रखा है। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है – "तृतीयोत्थान की प्रवृत्तियों के इस संक्षिप्त विवरण से ब्रजभाषा काव्यपरम्परा के अतिरिक्त इस समय चलने वाली खड़ी बोली की तीन मुख्य धाराएँ स्पष्ट हुई होंगी - द्विवेदी-काल की क्रमशः विस्तृत और परिष्कृत धारा, छायावाद कही जानेवाली धारा, तथा स्वाभाविक स्वच्छंदता को लेकर चलती हुई धारा, तथा जिसके अंतर्गत राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन की लालसा व्यक्त करने वाली शाखा भी हम ले सकते हैं।"[1] इसी 'स्वाभाविक स्वच्छंदता को लेकर

[1] हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. सं. - 432

चलती हुई धारा' के अंतर्गत उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य-कर्म को स्वीकार किया है । यद्यपि उन्होंने इस काव्य-धारा, और इसके अंतर्गत आने वाले कवियों पर गहनता एवं विस्तार से विचार न कर पाने के कारण को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है, "ये धाराएँ वर्तमान काल में चल रही हैं और अभी इतिहास की सामग्री नहीं बनी हैं । इसलिये इनके भीतर की कुछ कृतियों और कुछ कवियों का थोड़ा सा विवरण देकर ही हम संतोष करेंगे ।"[1]

छायावाद के साथ-साथ 'स्वच्छंद धारा' भी रामचंद्र शुक्ल के लिए इतिहास की सामग्री नहीं थी। इसके बावजूद 'स्वच्छंद धारा' के प्रति उनकी सकारात्मक सोच दिखाई पड़ती है । जैसा कि ज्ञात है आचार्य रामचंद्र शुक्ल छायावाद को मुख्यतः अभिव्यंजना-कौशल से जोड़कर देखते थे । छायावाद के प्रति उनमें, विशेष कोई उत्साह नहीं दिखाई पड़ता । 'हिंदी का छायावाद उन्हें योरोपीय और बांग्ला कवियों के आध्यात्मिक प्रतीकवाद से प्रभावित प्रतीत होता था ।'[2] इसी के समकक्ष चलने वाले 'स्वच्छंद - धारा' को वे विशेष उत्साह से देख रहे थे । यद्यपि इतिहास लेखन की सीमा के बावजूद उन्होंने लिखा है, "सर्वश्री सियारामशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, ठाकुर गुरुभत्त सिंह उदयशंकर भट्ट इत्यादि कई कवि विस्तृत अर्थ भूमि पर स्वाभाविक स्वच्छंदता का मर्मपथ ग्रहण कर के चल रहे हैं ।"[3] सुभद्रा कुमारी चौहान को भी वे इसी काव्य-धारा के अंतर्गत स्वीकार करते हैं । छायावाद को जहाँ वे अभिव्यंजना के चमत्कार तथा बांग्ला एवं अंग्रेजी कविता के अनुकरण मात्र से जोड़कर देखते हैं, वहीं इस धारा के कवियों की विशेषता बताते हुए लिखते हैं, "वे न तो केवल नवीनता के प्रदर्शन के लिए पुराने छंदों का तिरस्कार करते हैं, न उन्हीं में एकबारगी बंधकर चलते हैं । वे प्रसंग के अनुकूल परंपरागत पुराने छंदों का व्यवहार और नए ढंग के छंदों तथा चरण व्यवस्थाओं का

---

[1] हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. सं. - 432
[2] हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. सं. - 428
[3] हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. सं. - 432

विधान भी करते हैं। व्यंजक चित्र विन्यास, लाक्षणिक वक्रता और मूर्तिमत्ता, सरस पदावली आदि का भी सहारा लेते हैं, पर इन्हीं बातों को सबकुछ नहीं समझते। एक छोटे से घेरे में इनके प्रदर्शन मात्र से वे संतुष्ट नहीं दिखाई देते हैं। उनकी कल्पना इस व्यक्त जगत और जीवन की अनंतवीथियों में हृदय को साथ लेकर विचरने के लिए आकुल दिखाई देती है।"[1] विषय, भाव, भाषा, शैली सभी स्तरों पर वे इस धारा के कवियों के प्रति आशावान दिखाई पड़ते हैं। छायावाद से स्वच्छंद होने एवं स्वच्छंदता को अपने कविताओं में विशेष महत्त्व देने के कारण ही, रामचंद्र शुक्ल ने इन्हें 'स्वच्छंद धारा' का कवि कहा है। उन्होंने लिखा है, "छायावादी कवियों के अतिरिक्त वर्तमान काल में और भी कवि हैं जिनमें से कुछ ने यत्र तत्र ही रहस्यात्मक भाव व्यक्त किए हैं। उनकी अधिक रचनाएँ छायावाद के अंतर्गत नहीं आतीं। उन सबकी अपनी अलग-अलग विशेषता है। इस कारण उनको एक ही वर्ग में नहीं रखा जा सकता। सुभीते के लिए ऐसे कवियों की समष्टि रूप से 'स्वच्छंद धारा' प्रवाहित होती है। इन कवियों में पं. माखनलाल चतुर्वेदी, श्री सियारामशरण गुप्त, पं. बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान, श्री हरिवंशराय बच्चन, श्री रामधारी सिंह दिनकर, ठाकुर गुरुभक्त सिंह और पं. उदयशंकर भट्ट।"[2]

रामचंद्र शुक्ल ने सुभद्रा कुमारी चौहान के 'त्रिधारा' और 'मुकुल' कविता-संग्रह प्रकाशित होने की सूचना भर दी है। उन पर अलग से विचार नहीं किया है। इसके बावजूद उन्होंने इस धारा के कवियों की विशेषताओं पर जो विचार किया है उसे हम सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में देख सकते हैं। रामचंद्र शुक्ल का इतिहास ग्रन्थ का लेखन इसी धारा

[1] हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. सं. - 432
[2] हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. सं. - 470

और इन्हीं कवियों की चर्चा के साथ समाप्त होता है। इससे भी हम इनके महत्त्व को समझ सकते हैं।

2.2 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के साथ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाम हिंदी साहित्य के इतिहास में सम्मान के साथ लिया जाता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सुभद्रा कुमारी चौहान को इतिहास में एक प्रमुख महिला कहानी लेखिका के रूप में वर्णित किया है। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है, "कहानियों के क्षेत्र में कई प्रभावशाली महिला लेखिकाओं ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सुभद्रा कुमारी चौहान, शिवरानी देवी, कमला देवी चौधरी और होमवती देवी ऐसी महिलाएँ हैं। इनकी कहानियों में भारतीय परिवार की समस्याएँ सामने आई हैं। यथार्थ घरेलू चित्र प्रस्तुत करने में महिलाएँ पुरुष लेखकों से अधिक सफल हुई हैं।"[1]

छायावाद के समकालीन महिला कहानी-लेखिकाओं में अन्य के साथ उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान को भी विशेष महत्त्व के साथ उद्धृत किया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि हिंदी में कहानी विधा को आगे बढ़ाने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। वह भी ऐसे समय में जब हिंदी में कहानी लेखन अभी अपना आकार ग्रहण ही कर रहा था। कहानी लेखन की प्रारंभिक अवस्था में इन लेखिकाओं के योगदान को वे बेहद महत्त्वपूर्ण मानते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद के अनुसार लेखिकाओं की कहानियों ने भारतीय परिवार की आंतरिक समस्याओं को सामने लाने का कार्य किया। एक ऐसे समय में जब प्रेमचंद जैसे कहानीकार राष्ट्रीय, राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं को प्रमुखता से अपनी कहानियों में प्रस्तुत कर

[1] हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. सं. - 254

रहे थे तब सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे कहानी लेखिकाएँ भारतीय परिवार की आंतरिक समस्याओं एवं चुनौतियों को सामने ला रही थीं। किसी भी समाज की नींव परिवार पर टिकी होती है। जिस समाज में परिवार की इकाई जितनी मजबूत और प्रगतिशील होगी, वह समाज भी उतना ही प्रभावशाली होता है। इसके लिए सिर्फ परिवार का एक सामाजिक इकाई के रूप में गुणगान जरूरी नहीं होता बल्कि उसकी समस्याओं को भी समझना आवश्यक होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे लेखिकाओं ने इस जिम्मेदारी का निर्वाह सफलतापूर्वक किया। पारिवारिक अंतर्द्वंद्वों को कहानी का विषय बनाया उसे भारतीय समाज की चिन्ताधारा के केंद्र में लाने का प्रयास किया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि महिला होने के कारण इन लेखिकाओं ने अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वाह यथार्थपरक ढंग से किया है। इसे वे इनकी सबसे बड़ी देन मानते हैं। परिवार को सबसे नजदीक से देखने एवं निर्मित करने में महिलाओं की भूमिका सबसे ज्यादा होती है। इसलिए वह घरेलू समस्याओं को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ढंग से अपनी कहानियों में वर्णित कर पाई हैं। निश्चित रूप से उनका यह योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों का विस्तार से विश्लेषण 'महिलाओं की लिखी कहानियाँ' नामक अपने एक लेख में किया है। इस लेख में वह सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों को विश्लेषित करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने लिखा है, "सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में से अधिकांश जैसा कि ऊपर कहा गया है, बहुओं को विशेषकर शिक्षित बहुओं के दुःखपूर्ण जीवन को लेकर लिखी गयी हैं। निःसंदेह वे इसकी अधिकारिणी हैं। उन्होंने किताबी ज्ञान के आधार पर या सुनी-सुनायी बातों को आश्रय करके कहानियाँ नहीं लिखीं वरन अपने अनुभवों

को ही कहानियों में रूपान्तरित किया है । निस्सन्देह उनके स्त्री-चरित्रों का चित्रण अत्यंत मार्मिक और स्वाभाविक हुआ है फिर भी जो बात अत्यंत स्पष्ट है वह यह है कि उनकी कहानियों में समाज-व्यवस्था के प्रति एक नकारात्मक घृणा ही व्यक्त होती है।"[1]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी यह मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान ने एक समर्थ कहानी लेखिका की तरह परिवार की शिक्षित बहुओं की समस्याओं को अपनी कहानियों में व्यक्त किया है। इसका कारण बताते हुए वे यह बताते हैं कि उनकी कहानियाँ सुनी-सुनायी बातों की जगह उनके अनुभव पर आधारित थीं। किताबी ज्ञान या सुनी सुनाई हुई बातों पर आधारित कहानियाँ अक्सर उपदेशों में बदल जाती हैं। इससे कहानियों की मौलिकता भी नष्ट हो जाती है। वस्तुतः वह पाठकों पर प्रभाव भी नहीं छोड़ पातीं। इसके विपरीत निजी अनुभव को कहानियों में रूपांतरित करने की कला विशेष श्रम एवं प्रतिभा की माँग करती है। ऐसी कहानियाँ मौलिक भी प्रतीत होती हैं और पाठकों को प्रभावित भी करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक मौलिक एवं प्रभावशाली कहानी लेखिका मानते हैं। इसके साथ ही वह यह भी स्पष्ट करते हैं कि उनके अत्यंत मार्मिक एवं स्वाभाविक पात्र समाज-व्यवस्था के प्रति एक नकारात्मक घृणा को ही प्रकट करते हैं। जिसे किसी कहानी लिखने वाले की असफलता ही कहा जा सकता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानियों में इस समस्या को स्पष्ट करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं, "पाठक यह तो सोचता रहता है कि समाज युवतियों के प्रति कितना निर्दय और कठोर है पर उनके चरित्र में ऐसी भीतरी शक्ति या विद्रोह-भावना नहीं पायी जाती जो समाज की इस निर्दयतापूर्ण व्यवस्था को अस्वीकार कर सके। उनकी पाठक-पाठिकाएँ इस

[1] कल्पलता, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. सं. - 76

कुचक्र से छूटने का कोई रास्ता नहीं पातीं। इन कहानियों में शायद ही कहीं चरित्र की वह मानसिक दृढ़ता मिलती हो जो स्वेच्छा-पूर्वक समाज की बलि-वेदी पर बलि होने का प्रतिवाद करे। इसके विरुद्ध उनके चरित्र अत्यंत निरुपाय-से होकर समाज की वह्नि-शिखा में अपने को होम करके चुपके से दुनिया की आँखों से ओझल हो जाते हैं। स्पष्ट ही यह दोष है।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान जितनी मार्मिकता एवं स्वाभाविकता से स्त्री पात्रों की सर्जना करती हैं, वह अन्य कहानीकारों के यहाँ दुर्लभ दिखाई पड़ता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उनके इस महत्त्व को स्पष्ट करते हुए उनके इस पात्रों की निरुपायता को उनकी कहानियों का एक बड़ा दोष मानते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह मानना है कि सिर्फ समस्याओं को मार्मिकता से प्रस्तुत करना ही किसी कहानी लिखने वाले का कार्य नहीं होता। उनके अनुसार कहानी लिखने वाले का एक महत्त्वपूर्ण कार्य आपने पात्रों के संघर्ष-तत्व को भी सामने लाना है। सुभद्रा कुमारी चौहान के पात्र निर्दयी व्यवस्था का प्रतिवाद नहीं करते बल्कि सबकुछ जानते समझते हुए भी अपने आपको उसी समाज के लिए होम करते हुए दिखाई पड़ते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों के पात्रों की इस मानसिक दुर्बलता को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उनकी कहानियों की एक बड़ी कमी के रूप में देखते हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानियों के इस दोष को उद्घाटित करते हुए, यह भी स्वीकार करते हैं कि तत्कालीन समाज में सचमुच की स्थिति भी ऐसी ही थी। इस संदर्भ में वे लिखते हैं, "परन्तु इस अवस्था के साथ जब सचमुच की परिस्थिति की तुलना करते हैं तो स्वीकार करना पड़ता है कई अधिकांश घटनाएँ ऐसी ही हो रही हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में जो बात सबसे अधिक आकर्षक जान पड़ती है

---

[1] कल्पलता, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. सं. - 76-77

वह है उनकी सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि। अपने प्रिय पात्रों के अन्तःस्थल में वे बड़ी आसानी से पहुँच जाती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान के पात्रों की सहज बुद्धि विहार की अपेक्षा निष्क्रियता की ओर अधिक झुकी हुई है।"[1]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि उनकी कहानियों के पात्रों की निरुपायता उस समय के परिस्थिति की देन है। इसलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सुभद्रा कुमारी चौहान की 'सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि' की प्रशंसा करते हैं। किसी कहानीकार का प्रथम उद्देश्य अपने पात्रों के अन्तःस्थल में प्रवेश करना होता है। तभी वह स्वाभाविक पात्रों को चित्रित करने में सफल हो सकता है। स्वाभाविक पात्रों के निर्माण के बिना कोई भी कहानी सफल कहानी नहीं बन सकती। इसलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सुभद्रा कुमारी चौहान की उस सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि की प्रशंसा करते हैं जिससे वे सहज ही अपने पात्रों के मर्म को छू लेती हैं। इसी कारण वे मार्मिक और स्वाभाविक पात्रों की सर्जना कर पाती हैं जो उनकी कहानियों को यथार्थपरक और मार्मिक बनाते हैं। इसके साथ ही आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सुभद्रा कुमारी चौहान के पात्रों की नकारात्मकता को भी उद्घाटित करते हैं। वे मानते हैं कि उनके पात्र संघर्ष करने की जगह पलायन करने को ज्यादा महत्त्व देते हैं। संघर्ष एवं जुझारूपन का अभाव उनके पात्रों को निष्क्रिय और नियतिवादी बनाता प्रतीत होता है। इसे परिस्थितिजन्य मानते हुए भी वे इस समस्या को कहानी लेखिका की एक बड़ी सीमा के रूप में स्वीकार करते हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी यह विश्वास करते हैं भारतीय समाज व्यवस्था जो ज्यादातर पुरुषों द्वारा नियंत्रित होती है, उसमें स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। अपनी इस बात को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं, "...इस बात में कोई संदेह नहीं कि स्त्री का हृदय अधिकांशतः

---

[1] कल्पलता, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. सं. – 77

नेगेटिव या नकारात्मक है। जहाँ स्त्री-शिक्षा का अभाव है, पुरुष और स्त्री की दुनिया अलग-अलग है, वहाँ तो निश्चित रूप से स्त्री में नकारात्मक चरित्र की प्रधानता होती है। और समाज स्त्री के लिए जिन भूषण रूप आदर्शों का विधान करता है उनमें एकांतनिष्ठा, ब्रीड़ा, आत्मगोपन और विनय-शीलता आदि नकारात्मक गुणों की प्रधानता होती है। इस दृष्टि से सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में भारतीय स्त्री का सच्चा चित्रण हुआ है। वे भारतीय स्त्रीत्व की सच्ची प्रतिनिधि बन सकी हैं।"[1]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों के नकारात्मक स्त्री पात्र तत्कालीन समाज की परिस्थितियों की देन हैं। जो समाज यथार्थ में स्त्री-पुरुष को अलग-अलग महत्त्व देता है, स्त्रियों को पुरुषों के बरक्स कम महत्त्व देता है। ऐसे में उस समाज पर आधारित कहानियों में भी वैसे ही पात्रों की उपस्थिति होगी। पुरुषसत्तात्मक समाज स्त्रियों से विशेष गुणों की अपेक्षा करता है। इसमें उनका मितभाषी, सहनशील, विनयशील होना ही अपेक्षित होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार समाज में स्त्रियों से जब नकारात्मक गुणों की अपेक्षा की जाती है तो उस समाज पर आधारित कहानियों में जुझारू एवं संघर्ष करती महिलाएँ को सृजित करना भी मुश्किल है। इस दृष्टि से सुभद्रा कुमारी चौहान एक समर्थ कहानी लेखिका हैं जिन्होंने स्त्रियों का यथार्थपरक एवं मार्मिक चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

इस तरह आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सुभद्रा कुमारी चौहान के लेखन की सीमा को उद्घाटित करते हुए उन्हें एक समर्थ यथार्थवादी कहानी लेखिका के रूप में स्वीकार करते हैं।

---

[1] कल्पलता, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. सं. - 77

2.3 बच्चन सिंह :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'स्वच्छंद धारा' के कवियों के बारे में लिखते हुए इस ओर ध्यान दिलाया था कि इन कवियों ने राष्ट्रीय एवं राजनीतिक विषयों से संबंधित महत्त्वपूर्ण कविताएँ भी लिखी हैं। बच्चन सिंह ने भी अपने इतिहास ग्रन्थ में मुख्यतः राष्ट्रीय भावनाओं से संबंधित कविताएँ लिखने के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है, "उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रीय भावनाओं को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भो से इस प्रकार से जोड़ा है कि कहीं जोड़ नहीं दिखाई पड़ता और न ही कहीं कवित्व का क्षरण हुआ है।"[1]

बच्चन सिंह सुभद्रा कुमारी चौहान की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सन्दर्भो की गहरी पहचान को, उनके कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता मानते हैं। उनके अनुसार इसी कारण उनकी कविताएँ सहज, प्रेरणादायक एवं मर्मस्पर्शी बन पड़ी हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान का तत्कालीन समय राष्ट्रीय आन्दोलन का समय था। गुलामी की पीड़ा से साहित्यकार से लेकर आम जन तक पीड़ित थे। पूरे समाज की आशा और आकांक्षा अंग्रेजी दासता से मुक्ति पाने से जुड़ी थी। राजनीतिक स्तर पर और साहित्यिक स्तर पर हर संभव हर तरीके से अंग्रेजों का विरोध करने का प्रयास किया जा रहा था। इसके लिए आम जन में राष्ट्रीय भावनाओं को प्रोत्साहित करना आवश्यक था। साहित्यिक स्तर पर कवियों लेखकों की सबसे बड़ी कोशिश राष्ट्रीय भावनाओं के विकास से जुड़ा था। यह उस समय के साहित्य से अपेक्षा भी थी। इसलिए बहुत सारे कवि एवं लेखक राष्ट्रीय भावनाओं से जुड़ी रचनाएँ कर रहे थे। इस बात को रेखांकित करते हुए बच्चन सिंह लिखते हैं, "जिस परिवेश में कविता लिख रही थीं, वह

[1]आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, पृ. सं. - 238

अग्निवर्षी तथा उथल-पुथल मचाने वाले कवियों का परिवेश था। बड़बोली कविताओं के शोर-शराबे में उनकी सहज-सरल पारिवारिक और राष्ट्रीय कविताएँ डूबती उतरती रहीं।"[1]

पारिवारिक विषयों पर लिखीं कविताओं और राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत कविताओं को बच्चन सिंह ने जोड़कर देखा है। उनके अनुसार पारिवारिक भावनाओं की समझ उनकी राष्ट्रीय भावनाओं की कविता को नियंत्रित करती हैं। अन्य राष्ट्रवादी कविताओं की तरह अतिरेक का शिकार नहीं होने देतीं। राष्ट्रीय आन्दोलन में सुभद्रा कुमारी चौहान की सक्रिय भागीदारी होने पर भी उनकी कविताएँ अतिवाद का शिकार नहीं होतीं। बच्चन सिंह के अनुसार, "राष्ट्रीय संग्राम में कई कवियों ने सक्रिय योगदान दिया था। उनकी कविताओं में जोश है। प्रलयाग्नि है, दीवानगी है, अराजकता है। पर सुभद्राजी राष्ट्रीय संग्राम में कूदकर भी परिवार से बंधी रहीं। इसलिए उनमें गहन मानवीय प्रेम है, संयम है, व्यवस्था है।"[2]

राष्ट्रीय भावनाओं का उद्गार एवं उसका प्रसार करने के लिए जिस संयम एवं व्यवस्था की जरूरत होती है, वह उनकी कविताओं में दिखाई पड़ता है। इसका एक कारण बच्चन सिंह ने गांधीवाद को स्वीकार किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जिन कवियों को 'स्वच्छंद धारा' के अंतर्गत वर्गीकृत करते हैं उन्हें बच्चन सिंह 'विप्लव, गांधीवाद और प्रणय की रचनाएँ' करने वाले कवि के रूप में वर्गीकृत करते हैं। उनके अनुसार, "इन कवियों में विप्लववाद के स्वर के साथ गाँधीवादी आस्था भी मिलती है। खाली क्षणों में वे प्रणय की याद भी कर लेते हैं। माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, भगवतीचरण वर्मा,

[1] हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, पृ. सं. - 404

[2] हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, पृ. सं. - 404

सुभद्राकुमारी चौहान, रामधारी सिंह 'दिनकर', नरेंद्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' आदि इसी श्रेणी के अंतर्गत आयेंगे।"[1]

बच्चन सिंह ने सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्त्व पारिवारिक कविताएँ लिखने के लिए भी स्वीकार किया है। पारिवारिक जीवन या घरेलू जीवन से संबंधित कविताएँ लिखने के बारे में उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान का विशेष रूप से उल्लेख किया है। उन्होंने 'आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास' और 'हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास' दोनों ही इतिहास ग्रंथों में सुभद्रा कुमारी चौहान की विशेषता के बारे में लिखा है। उनके महत्त्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने लिखा, "निराला की कविता 'सरोज-स्मृति' एक शोकगीत है। यदि इसे छोड़ दिया जाए तो पारिवारिक सम्बन्धों को लेकर कविता लिखने का प्रथम प्रयास सुभद्राजी ने ही किया।"[2]

इसी प्रकार वात्सल्य भाव की श्रेष्ठ कविताओं के लिए भी उन्होंने सुभद्रा चौहान की चर्चा की है। इस बारे में वे लिखते हैं, "वात्सल्य-सुख स्त्री का सबसे बड़ा सुख होता है। यों तो आधुनिक कवियों में वात्सल्य –सुख का वर्णन मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा' में भी हुआ है; किन्तु वह आयासजन्य, वृत्तात्मक और कर्कश है। सुभद्राजी का वात्सल्य स्वयं उनकी अनुभूति है। अतः उसकी ऋजुता हृदय को सीधे प्रभावित करती है।"[3] आधुनिक हिंदी साहित्य में वात्सल्य भाव की कविताओं की संख्या ज्यादा नहीं है। वस्तुतः श्रेष्ठ वात्सल्य भाव की कविता का आभाव रहा है। ऐसे में सुभद्रा कुमारी चौहान की ऐसे कविताओं पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। सुभद्रा कुमारी चौहान पर विचार करते हुए बच्चन सिंह उनके कवि-पक्ष पर ही विचार किया है। एक कवि के रूप में उन्होंने

---

[1] हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, पृ. सं. - 400-401

[2] हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, पृ. सं. - 404

[3] हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, पृ. सं. - 404

उनके महत्त्व को गंभीरता से हमारे सामने रखा है। राष्ट्रीय भावनाओं की कविता लिखने वाले कवियों में उन्हें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ढंग से याद किया है। विप्लवाद की कविताएँ लिखने के बावजूद, उनकी कविताओं में मौजूद संयम को उन्होंने सबसे बड़ी उपलब्धि माना है। उन्होंने स्पष्ट तौर पर लिखा, "उनकी राष्ट्रीय कविताओं में धूम-धड़ाका नहीं है। जो सयंम पारिवारिक कविताओं में है, वही 'झाँसी की रानी' और 'जलियांवाला बाग में बसंत' जैसे राष्ट्रीय कविताओं में भी है।"[1]

2.4 सुमन राजे :

सुमन राजे ने 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास' पुस्तक के माध्यम से हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की बड़ी कमी को दूर करने का प्रयास किया है। उन्होंने हिंदी साहित्य के इतिहास के अधूरे स्त्री-पक्ष को पूरा करने का प्रयास किया है। आधी आबादी का 'आधा इतिहास' को लिखने एवं प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जिसके बिना किसी भी भाषा और साहित्य का इतिहास पूरा नहीं माना जा सकता। सुमन राजे ने इसी क्रम में सुभद्रा कुमारी चौहान पर भी विचार किया है। जहाँ अन्य इतिहास ग्रंथों में सुभद्रा कुमारी चौहान का रचनाकर्म नामोल्लेख या मामूली टिप्पणी तक सीमित है, वहीं इस इतिहास ग्रंथ में उन्हें एक समुचित रचनाकार के रूप में देखने की कोशिश की गई है।

सुमन राजे, सुभद्रा कुमारी चौहान के कवयित्री एवं कहानी लेखिका दोनों ही रूप को महत्त्वपूर्ण मानती हैं। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है, "सुभद्रा कुमारी चौहान की हर रंग की कविता में राष्ट्रीयता एक अनिवार्य बुनावट की तरह शामिल है। वह कविता कागज से कर्म

---

[1] हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, पृ. सं. - 404

क्षेत्र तक उतरती है ।...कविता के साथ ही, उन्होंने कहानियाँ भी लिखीं । 'मुकुल' काव्य संग्रह और 'बिखरे मोती' कहानी संग्रह पर 'सेकसरिया पुरस्कार' प्राप्त कर चुकी हैं ।"[1]

अन्य विद्वानों की तरह सुमन राजे भी सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में राष्ट्रीय भावना को सर्वाधिक महत्त्व देती हैं । वह उनके जेल जाने, आजादी के आंदोलन में सक्रिय भागीदारी करने को भी उनके रचनाकर्म से जोड़ कर देखती हैं । सुमन राजे यह भी रेखांकित करती हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान एक श्रेष्ठ कवयित्री होने के साथ-साथ एक समर्थ कहानी-लेखिका भी थीं । इस उद्धरण में ध्यान देने वाली बात यह है कि जहाँ हिंदी साहित्य के अन्य इतिहास-लेखकों एवं विद्वानों ने सुभद्रा कुमारी चौहान को महज राष्ट्रीय भावना की कविताओं को उनकी क्षमता और सीमा दोनों बताने का प्रयास किया वहीं सुमन राजे राष्ट्रीय भावना को उनकी कविताओं के 'अनिवार्य बुनावट' के रूप में रेखांकित करती हैं । यह सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं को समझने एवं विचार करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण सूत्र प्रदान करता है।

सुमन राजे अपनी इस स्थापना को स्वयं स्पष्ट करती हुई, सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं की अन्य विशेषताओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास करती हैं । सुमन राजे लिखती हैं, "सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता का सबसे बड़ा गुण उसकी सहजता एवं स्त्री चेतना है । उनका और उनकी कविता का हर चुनाव स्त्री के पक्ष में है, यद्यपि उसका गंतव्य राष्ट्र प्रेम है । स्त्री जीवन के छोटे-छोटे पल किस प्रकार राष्ट्रीय स्फुरण में बदल जाते हैं, यह देखने की वस्तु है ।"[2]

---

[1] हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे पृ. सं. - 250

[2] हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे पृ. सं. - 250

सुमन राजे, सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सहजता एवं स्त्री चेतना को मानती हैं। इस दृष्टि से देखें तो सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर विचार करने की जरूरत का पता चलता है। आज के स्त्री विमर्श को अत्यधिक महत्त्व न देने वाली सुमन राजे जब सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता स्त्री-चेतना को मानती हैं, तब सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं के इस पक्ष पर विचार करना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है। सुमन राजे मानती हैं कि उनकी कविताओं का लक्ष्य एवं उसकी बुनावट राष्ट्रप्रेम पर आधारित है परन्तु वे स्त्री जीवन के कई पक्षों को छूने एवं टटोलने का प्रयास भी करती हैं। इसलिए वह इस प्रक्रिया को समझने पर जोर देती हैं कि कैसे स्त्री जीवन के मामूली पक्ष उनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति से जुड़ जाते हैं।

सुमन राजे का मानना है कि इन्हीं वजहों से उनकी कविताएँ शैली के स्तर पर भी विशिष्ट प्रतीत होती हैं। सुमन राजे के अनुसार, "राष्ट्रीय काव्य-धारा के अंतर्गत जो प्रचलित रूपक थे, सुभद्रा कुमारी चौहान ने वे नहीं लिये, अपने चुनाव स्वयं किये हैं। उन रूपकों ने एक साथ कविता के मानक भी बनाये और वीरता के भी।"[1]

अर्थात् सुभद्रा कुमारी चौहान अपने समाजिक जीवन की ही तरह अपनी कविताओं में भी सजग हैं। उन्हें अपनी रचनाकार की जिम्मेदारी का पता है। इसलिए वह तत्कालीन समाज और साहित्य में वीरता और कविता के मानकों को संभलकर निर्मित करने का प्रयास कर रही थीं। इसी संदर्भ में सुमन राजे आगे लिखती है, "सभी कवियों ने वीरों और महापुरुषों के स्तुति गान किये हैं, परन्तु कवयित्री ने चुना 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' जो एक नारी है, पत्नी है,

[1] हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे पृ. सं. - 251

रानी है, शासक है, वीर है, माँ है और अमर बलिदानी है। स्त्री की मुक्ति वे इसी रूप में देखती हैं। इसलिए झाँसी की रानी कविता कालजयी कविता बन सकी है। सुभद्रा कुमारी चौहान 'पुत्र' की भी माता थी, परन्तु अपने वात्सल्य-गीत का आधार उन्होंने 'कन्या' को बनाया है।"[1]

सुमन राजे इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास करती हैं कि जहाँ अन्य कवि वीरों और महापुरुषों के स्तुतिगान तक ही सीमित थे वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान वीर स्त्री पात्रों की सर्जना अपनी कविताओं में करने का प्रयास करती हैं। उनके अनुसार उनकी 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' कविता के सर्वाधिक प्रसिद्ध कविता होने की वजह यही है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में वीरांगनाओं के साथ सामान्य स्त्रियों के प्रति भी अनुराग दिखाई देता है। यह अनुराग उनकी कविता में पूर्वाग्रह की तरह नहीं आता बल्कि सहजता से आता है और उनकी कविता को मार्मिकता प्रदान करता है। उनके लिए स्त्री एक ही साथ वीर भी है और समान्य नारी भी है, जिसकी राष्ट्र के साथ - साथ समाज और परिवार के प्रति भी जवाबदेही असंदिग्ध है। सुमन राजे के अनुसार सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्री - मुक्ति को इसी रूप में साकार करने का प्रयास करती हैं।

"सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ कई अर्थों में विशिष्ट हैं। उनका सौन्दर्य 'अभिधा' का सौन्दर्य है, इस अर्थ में वे महादेवी वर्मा के समकालीन होते हुए भी पृथक हैं। छायावाद ने उन्हें छुआ भी नहीं हैं।"[2] सुमन राजे का मानना है कि उनकी सहजता काव्य-विषय, काव्य-शैली एवं काव्य-भाषा तीनों ही स्तरों पर दिखाई पड़ती है। तभी उनकी कविता अत्यंत सहज एवं स्वाभाविक प्रतीत होती हैं, जो अभिधा का सौंदर्यशास्त्र रचती हैं। इसी कारण सुमन राजे उनके छायावाद से प्रभावित नहीं होने को जोर देकर रेखांकित करती हैं।

---

[1] हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे पृ. सं. - 251

[2] हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे पृ. सं. - 252

सुभद्रा कुमारी चौहान के समय में चलने वाले काव्य-आन्दोलन छायावाद में अभिव्यंजना पक्ष पर विशेष जोर था। उसके कवि अभिधा की जगह लक्षणात्मक एवं व्यंजनात्मक कविताएँ लिखने पर ज्यादा विश्वास करते थे। छायावाद उनके समय का सर्वाधिक प्रभावी काव्य-आंदोलन था। इसके बावजूद वह न छायावादी पद्धति से प्रभावित होती हैं और न ही उनकी करीबी माने जाने वाली महादेवी वर्मा से। इसी कारण उनकी कविताएँ विशिष्ट होने का दर्जा पा सकी हैं।

इसी कर्म में सुमन राजे उनकी एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता को रेखांकित करते हुए लिखती हैं, "जीवन और कविता दोनों को उन्होंने समग्रता में जिया, इसीलिए उनकी 'स्त्री-स्वतंत्रता' सबको 'छोड़ने' में नहीं सबको 'अपनाने' में है।...जीवन और कविता की ऐसी पारस्परिकता बहुत कम देखी जाती है। वे अपनी कविताएँ जीवन की तरह जीती हैं, और जीवन कविता की तरह लिखती हैं।"[1]

किसी रचनाकार की यह सबसे बड़ी सफलता मानी जाती है कि वह सामाजिक और साहित्यिक दोनों ही स्तर पर सफल हो सके। सुमन राजे का मानना है कई इस दृष्टि से सुभद्रा कुमारी चौहान अत्यंत सफल सिद्ध हुईं। इसलिए राष्ट्रीय भावना की कविता हो या स्त्री चेतना की, श्रेष्ठता के स्तर को छूती हैं। सुमन राजे अप्रत्यक्ष रूप से समकालीन स्त्री पक्ष की आलोचना करते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान के सबको 'अपनाने' वाले पक्ष पर विशेष प्रकाश डालती हैं। स्त्री स्वतंत्रता को देश, समाज, परिवार सभी के संदर्भ में आवाज देने का प्रयास सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में दिखाई पड़ता है। इसे ही सुमन राजे स्त्री - मुक्ति का आदर्श भी मानती हैं। जीवन और रचना की फाँक, रचना और रचनाकार दोनों को असफल

---

[1] हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे पृ. सं. - 252

बना देता है, इसलिए जीवन और कविता का यह अटूट संबंध सुमन राजे को विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण लगता है।

सुमन राजे एक कहानीकार के रूप में भी सुभद्रा कुमारी चौहान की कथनी - करनी में फर्क नहीं होने की, विशेषता को विशेष महत्त्व देती हैं। कहानी लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान पर उनके प्रकट विचार ज्यादातर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के ही विचार हैं। यह थोड़ा आश्चर्य भरा भी है। जहाँ उन्होंने उनकी कविताओं की विशेषताओं को विषदता से उद्घाटित किया है। वहीं उनकी कहानियों की विशेषताओं पर गंभीरता से विचार नहीं किया है।

2.5 मुक्तिबोध :

हिंदी कविता एवं आलोचना के क्षेत्र में मुक्तिबोध एक महत्त्वपूर्ण नाम हैं। एक सफल कवि होने के साथ एक आलोचक होने के कर्त्तव्य-पालन का सफल प्रयास उन्होंने किया है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर उन्होंने गंभीरता से विचार करने का प्रयास किया है। हिंदी की प्रगतिशील आलोचना से उन्होंने गंभीरता से विचार करने का आग्रह भी किया है। मुक्तिबोध ने सुभद्रा कुमारी चौहान को 'जनसाधारण मानवीयता' का कवि कहा है। उनके लिए सुभद्रा कुमारी चौहान चमत्कार वर्जित एवं मौलिकतापूर्ण कविताओं की रचना करने वाली कवयित्री हैं। इस संदर्भ में मुक्तिबोध लिखते हैं, "उनके चमत्कार-वर्जित काव्य में वह मौलिकता उत्पन्न हुई, वह रस-ग्राहिणी और रस-प्रदायिनी शक्ति उत्पन्न हुई, जिसके द्वारा

उनके साहित्य के माध्यम से युग का, और युग के माध्यम से उनके साहित्य का, अध्ययन सफलतापूर्वक किया जा सकता है।"[1]

अर्थात् मुक्तिबोध के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य संसार युग को समझने का एक प्रभावी माध्यम है। इसका कारण मुक्तिबोध के अनुसार उनके काव्य का चमत्कारों से रहित होना एवं मौलिकता से पूर्ण होना है। इसी कारण वह सहज ही उनकी कविताओं में आम जन को रस प्रदान करने की शक्ति उत्पन्न हुई। इसलिए मुक्तिबोध का मानना है कि सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य संसार और उनके युग के बीच एक द्वंद्वात्मक सम्बन्ध है। सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन युग की विशेषताओं को जाना जा सकता है। साथ ही उस युग की विशेषताओं के आधार पर उनके साहित्य का अध्ययन भी किया जा सकता है। यह किसी भी बड़े साहित्यकार की विशेषता मानी जाती है कि उसका साहित्य उसके युग का प्रतिनिधित्व करता हो। इस दृष्टि से मुक्तिबोध सुभद्रा कुमारी चौहान को एक सफल साहित्यकार मानते हैं।

यह ज्ञात तथ्य है कि सुभद्रा कुमारी चौहान छायावादी काव्य-आन्दोलन के सामानांतर काव्य रचना कर रही थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान और छायावादी कविता की तुलना करते हुए मुक्तिबोध लिखते हैं, "सुभद्राजी के साहित्य तथा छायावादी साहित्य की तुलना करने पर छायावादी व्यक्तित्व तथा एक दूसरे प्रकार के व्यक्तित्व के बिम्ब हमारी आँखों में तैरने लगते हैं। छायावादी व्यक्तित्व एक विशेष प्रकार की भाव-सघनता लेकर हमारे सामने उपस्थित हुआ।

[1] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 385

उसका साधारण मनोलोक असाधारण रूप से अन्तर्मुख तथा सर्व-साधारण से बहुत दूर जा पड़ा।"[1]

मुक्तिबोध के अनुसार छायावादी काव्य अपनी असाधारण अंतर्मुखता के कारण सामान्य जन की भावनाओं एवं आकांक्षाओं को सहज एवं प्रकृत रूप में स्वर नहीं दे पाया। जनता के जीवन की तरफ जाने की जगह छायावादी काव्य ज्यादा मानसिक ही होता चला गया। "इसके विपरीत, सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य-विषय के मूल तत्व, अपने प्रकृत रूप में, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन से लिये गये, जिसके द्वारा उनका रूप-निर्माण हुआ था। सुभद्रा कुमारी चौहान इस पारिवारिक-सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन-परिधि से अधिक परिचित, निकट और उसके प्रति अधिक ईमानदार रहीं। छायावादियों के कुछ निजी गिने-चुने काव्य-विषय थे जो कि एक विशेष अर्थ में उनकी सीमा भी निर्धारित कर देते थे। वह कवियों का बंदीगृह भी हो गया था।"[2]

अर्थात् सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ छायावादी कवियों द्वारा निर्धारित क्षेत्र का अतिक्रमण कर साधारण जनता में राष्ट्रीयता की भावना का संचार कर रही थीं। उनकी कविताएँ विषयों के चुनाव एवं उसकी सहज प्रस्तुति के कारण साधारण जन की राष्ट्रीय भावनाओं का विकास करने में सफल हो रही थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान के लिए आम जन की सामाजिक, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय जीवन विशेष महत्त्व रखते हैं। यहीं से उनकी कविता उपजती थी और अंततः उन्हीं के बीच प्रसिद्ध होती थीं।

छायावादी कवियों की आत्मवादी प्रवृत्ति ने उनकी कविताओं को बिल्कुल साधारण समझे जाने वाले लोगों की आशा-आकांक्षाओं से एकीकृत नहीं होने दिया। इस संदर्भ में

---

[1] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 386

[2] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 387

मुक्तिबोध लिखते हैं, "छायावादी कवि, पारिवारिक-सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन से आक्रान्त होते हुए भी, उसे अपना न सके-उसके अंदर छिपे हुए मानव-सम्बन्धों को वे काव्य-विषय न बना सके। अपने आत्मवादी भूमिका के कारण वे शिक्षित समुदाय की प्रवृत्तियों को अवश्य संतुष्ट करते रहे और आधुनिक हिंदी-काव्य की प्रधान धारा के रूप में हमने उनको पाया। किन्तु इससे सुभद्राजी के साहित्य का महत्त्व कुछ कम नहीं होता, वरन् वह अधिक हो जाता है, क्योंकि उसके द्वारा आधुनिक हिंदी काव्य-साहित्य की एकांगिकता के कम होने के साथ-ही-साथ एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति होती है।"[1]

मुक्तिबोध का मानना है कि छायावादी कवि भी अपनी तत्कालीन परिस्थितियों से आक्रांत थे। उनकी चेतना को भी वे प्रभावित कर रहे थे। परन्तु अपनी आत्मवादी प्रवृति के कारण वे उसे आत्मसात नहीं कर पाये। सामान्य जन की भावनाओं को वे स्वर प्रदान नहीं कर पाए। मुक्तिबोध का मानना है कि छायवादी काव्य सिर्फ शिक्षित वर्गों तक ही सीमित रहा। वहीं दूसरी तरफ सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य इस एकांगिकता को तोड़ने का कार्य करता है। उनकी कविताएँ कविता के फलक को विस्तृत बनाती हैं। सामान्य जन उनकी पारिवारिक सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितियों को अपनी कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान के इस योगदान को मुक्तिबोध अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानते हैं। उनके अनुसार तत्कालीन युग के साहित्य के एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति सुभद्रा कुमारी चौहान के कविताओं के माध्यम से सम्पन्न होता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता पर विचार करते हुए ज्यादातर इतिहास लेखक एवं आलोचक उनकी पारिवारिक स्थिति को महत्त्व प्रदान करते हैं। मुक्तिबोध भी इस मत को

[1] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 387

स्वीकार करते हुए लिखते हैं, "सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य को हम उनकी पारिवारिकता से अलग नहीं कर सकते । इस पारिवारिकता ने ही उनके काव्य में एक विशेष प्रकार की ऋजुता और समीपता का गुण उत्पन्न किया, उसे अधिक मूर्त्तता प्रदान की ।"[1]

मुक्तिबोध के अनुसार उनकी कविताओं में सामीप्य का गुण उनकी पारिवारिकता से ही आया है । मुक्तिबोध यह भी मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान का जो अपने परिवार से लगाव था, उनके अंदर जो परिवार को लेकर एक कर्तव्यनिष्ठा थी, उसी कारण उनकी कविताएँ अधिक मूर्त्त रूप प्राप्त कर सकीं । इसलिए आम पाठक एवं जनता उनकी कविताओं को ठीक से समझ भी पाते थे और उससे समीपता भी महसूस करते थे । इसलिए मुक्तिबोध लिखते हैं, "आधुनिक हिंदी काव्य-साहित्य की एकरसता में सुभद्रा कुमारी चौहान की झंकार एक नवीन दृश्य उपस्थित करती है । उनकी कविता से सहज मैत्री का बोध, सामीप्य का भाव, उत्पन्न होता है ।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान के संदर्भ में मुक्तिबोध पारिवारिक भावनाओं को ही राष्ट्रीय भावनाओं का स्रोत बताते हैं । वे लिखते हैं, "सुभद्रा कुमारी चौहान की पारिवारिक भावनाएँ कर्त्तव्याभिमुख हैं । 'परिवार' शब्द यहाँ नागरिकशास्त्र के 'कुटुम्ब' का पर्यायवाची नहीं है । जो अपना-सा हो जाय, वही अपने परिवार का व्यक्ति । परिवार के व्यक्ति के प्रति अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए वे उनके द्वारा उसकी विवेक-चेतना को सुषुप्त नहीं करतीं, वरन उसे जाग्रत करके एक आदर्श की ओर उन्मुख कर देती हैं । यह आदर्श सामाजिक-राष्ट्रीय है ।"[3] मुक्तिबोध इस संदर्भ में स्पष्ट कहते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान का 'परिवार'

[1] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 388

[2] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 389

[3] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 390-391

नागरिकशास्त्र के कुटुम्ब के पर्याय नहीं है। परिवार किसे कहा जाता है या कैसा होना चाहिए, इस पक्ष तक ही सीमित नहीं है बल्कि परायों को भी परिवार का अहसास दिलाने को ज्यादा महत्त्व देता है। जो अपनों सा हो जाए, वह परिवार का हिस्सा होता है। यह परिभाषा नागरिकशास्त्र की नहीं हो सकती। मुक्तिबोध इससे भी ज्यादा इससे प्रभावित हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान पारिवारिक भावना को उत्पन्न करके उसे परिवार विशेष तक सीमित नहीं रखतीं बल्कि उसे राष्ट्रीय भावनाओं की ओर उन्मुख कर देती हैं। जब पूरा देश ही एक परिवार लगने लगेगा, तब सभी एक ही परिवार के हो जायेंगे तब एक-दूसरे के दुःख को दूर करने के लिए साथ लड़ेंगे। इस तरह वह पारिवारिक भावना को जागृत करके उसे राष्ट्रीय प्रश्न से जोड़ देती थीं। मुक्तिबोध इसे ही 'आदर्श सामाजिक राष्ट्रीय' कहते हैं। एक ऐसा आदर्श जो राष्ट्रीय हो और वह हर समाज की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता हो। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविताओं से इस आदर्श सामाजिक राष्ट्रीयता का विकास भलीभांति किया।

सुभद्रा कुमारी चौहान जब लिख रहीं थी तब बहुत सारे अन्य कवि भी राष्ट्रीय भावनाओं एवं आजादी की जरूरत को अपनी कविताओं के माध्यम से स्वर प्रदान कर रहे थे। क्रांतिकारी और विप्लवी गीतों एवं कविताओं की रचना कर रहे थे। ऐसे में सुभद्रा कुमारी चौहान के विशेष महत्त्व को स्पष्ट करते हुए मुक्तिबोध लिखते हैं, "उनका राष्ट्रीय काव्य मात्र प्रलयवादी वृथा-भावुकता पर आश्रित नहीं है। वह जीवन के प्रधान कर्त्तव्य की अभिव्यक्ति के रूप में हमारे सामने आता है। वह कर्त्तव्य की अभिव्यक्ति भावुकता से भरी हुई है। उस कर्त्तव्य को जीवन के संदर्भों से हटाकर अमूर्त्त रूप में नहीं रखा गया बल्कि उसे वास्तविक स्थितियों में मिलाकर प्रत्यक्ष कर दिया गया है।"[1]

[1] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 393

मुक्तिबोध मानते हैं राष्ट्रीय कविताएँ या विप्लवी कविताएँ कई बार शोर ज्यादा करती हैं। कोरी भावनाओं से भरी इन कविताओं में क्रांति की हुँकार ज्यादा सुनाई देती है परन्तु इनका प्रभाव अत्यंत सीमित होता है। इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी राष्ट्रीय भावनाओं की कविताओं में जीवन के प्रधान कर्तव्य के रूप में देश प्रेम को स्थापित करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार देशप्रेम या क्रांति जीवन से अलग नहीं है बल्कि हमारे जीवन का प्रधान कर्त्तव्य है। इस प्रधान कर्त्तव्य की अभिव्यक्ति भावनाओं से भरी हुई है। अर्थात् कर्त्तव्य करने की भावना, जीवन प्रसंगों से जुड़ी हुई है। हमारे जीवन की भावनाएँ हमारे जीवन प्रसंग की मूर्त्तता एवं प्रत्यक्षता से सम्बंधित होती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान इसे अमूर्त या अप्रत्यक्ष बनाने का प्रयास नहीं करतीं बल्कि उसी सहज रूप में उसे कविता में भी स्वीकार करती हैं। यही स्वाभाविकता जीवन में कर्त्तव्य की भावुकता को तय करता है। जिससे व्यक्ति एवं समाज की राष्ट्रीय भावना का सीधा संबंध होता है। इसलिए ऐसे राष्ट्रीय भावनाओं की कविताएँ कोरी भावनाओं पर आधारित हो ही नहीं सकतीं।

मुक्तिबोध सुभद्रा कुमारी चौहान को जन - साधारण मानवीयता का कवि मानते हैं। उन्होंने लिखा है, "सुभद्रा कुमारी चौहान के राष्ट्रीय काव्य का सबसे बड़ा गुण है उनकी जन-साधारण मानवीयता। यही गुण उनके राष्ट्रीय काव्य को विशेषता प्रदान करता है।"[1]

इसी संदर्भ में वे आगे लिखते हैं, "अन्य राष्ट्रीय कवियों ने उन देशभक्तिपूर्ण भाव-क्षणों की जीवन-प्रसंगों की वास्तविक भूमिका से विच्छिन्न कर, उन्हें एक आत्मसम्पूर्ण रूप देने का

[1] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 395

प्रयास किया। सुभद्रा कुमारी चौहान के राष्ट्रीय काव्य में जीवन का जो उष्मापूर्ण सम्पर्क है, उसके द्वारा ही यह 'मानवीयता' उत्पन्न हुई।"[1]

मुक्तिबोध के अनुसार अन्य राष्ट्रीय कवियों ने राष्ट्रीय भावना को आत्मसम्मान पूर्ण स्थान प्रदान तो किया पर उसका सम्बन्ध आम जन-जीवन से विच्छिन्न था। उन्होंने राष्ट्रीय भावना को एक गुरुत्वपूर्ण स्थान दिया। लोगों को यह पता चला कि राष्ट्रीयता क्या है, पर इसका विकास करने की प्रक्रिया में स्वयं को शामिल नहीं कर पा रहे थे। दूसरी तरफ सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्रीय भावना को आम जन के जीवन - प्रसंगों से जोड़ने का प्रयास किया। इस प्रक्रिया में लोगों को, परिवार को, समाज को शामिल किया। उनकी कविताओं में आया 'जीवन का उष्मापूर्ण संपर्क' इन्हीं वजहों से है और इसी कारण उनकी कविताओं में प्रकट हुई राष्ट्रीय भावना, जन साधारण की मानवीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। मुक्तिबोध के अनुसार ऐसी राष्ट्रीयता के विकास से समाज को कोई लाभ नहीं हो सकता जिसमें मानवीयता का गुण शामिल न हों। राष्ट्रीयता और मानवीयता के बीच एक पारस्परिक संबंध है, दोनों का सहज एवं ठोस विकास इसी संबंध पर निर्भर करता है। इस संदर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान एक सफल कवयित्री के रूप में दिखाई देती हैं जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से ऐसी राष्ट्रीयता का विकास करने का प्रयास किया है जो मानवीयता को महत्त्व देती है।

मुक्तिबोध इस बात से थोड़े असंतुष्ट नजर आते हैं कि प्रगतिशील आलोचना ने सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं को विशेष महत्त्व के योग्य नहीं माना। इस संदर्भ में वे लिखते हैं "प्रगतिशील आलोचकों तथा लेखकों के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में नवीन सामग्री है, आत्मसात करने के लिए। विशेषकर उनकी काव्य-शैली में जीवन-प्रसंगों की

---

[1] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 395

भूमिका तथा कुछ कविताओं के नाटकीय तत्त्व के साहित्यिक महत्त्व का आकलन आवश्यक है। साथ ही सर्वप्रधान वस्तु है, जीवन के वास्तविक धरातल पर बाह्य स्थिति-परिस्थितियों से मानसिक संवेदनात्मक प्रतिक्रिया, और उसको काव्योचित महत्त्व-प्रदान करने का कार्य, जो हिंदी के बहुत थोड़े कवियों ने किया है। प्रगतिशीलता की दृष्टि से इसका महत्त्व जितना अनुभव किया जा रहा है,उससे कहीं बहुत अधिक है।"[1]

अधिकांश प्रगतिशील आलोचकों ने सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं को रस्मी राष्ट्रीय भावनाओं की कविताएँ के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए विशेष रूप से सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर विचार भी नहीं किया गया। मुक्तिबोध मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में प्रगतिशील आलोचकों के सीखने के लिए बहुत सी चीजें हैं। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि जीवन के वास्तविक धरातल पर हमारी मानसिक संवेदनाओं के निर्माण - प्रक्रिया पर बाह्य स्थितियों एवं परिस्थितियों का प्रभाव किस रूप में पड़ता है। इस प्रक्रिया को समझना आवश्यक है, तभी कविता के निर्माण में मानसिक एवं संवेदनात्मक प्रतिक्रिया के महत्त्व को समझा जा सकता है। मुक्तिबोध के अनुसार इस पूरी प्रक्रिया को काव्य रूप में परिवर्तित करने का प्रयास सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में दिखाई पड़ता है। प्रगतिशीलता की दृष्टि से मुक्तिबोध इसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसलिए वह सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर गंभीर रूप से विचार करने का कार्य प्रस्तावित करते हैं। महज राष्ट्रीयता के मुहावरे से निकलकर प्रगतिशील आलोचना - दृष्टि से उनकी कविताओं पर विचार करने का आग्रह करते हैं। भौतिक परिस्थिति एवं मानसिक प्रतिक्रिया की इस गंभीर अन्तर्सम्बंध को इतने सहज रूप में कविता में परिवर्तित होते देख उन्हें सुखद आश्चर्य होता है। इस संदर्भ में मुक्तिबोध आग्रह एवं उम्मीद से पूर्ण होकर लिखते हैं, "आशा है, हिंदी के लेखक

[1] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 397

तथा आलोचक सुभद्रा कुमारी चौहान की अनलंकृति में सुंदर काव्य कैसे उत्पन्न हो सका, इसका अध्ययन करेंगे।"[1]

2.6 शमशेर बहादुर सिंह :

हिंदी आलोचना के अंतर्गत सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर विचार बहुत कम हुआ है। इस क्रम में शमशेर बहादुर सिंह का उनके समग्र साहित्य पर विचार करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण जान पड़ता है। शमशेर बहादुर सिंह ने सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन एवं साहित्य दोनों पक्षों पर संजीदगी से विचार किया है। उनके जीवन के विकास - क्रम के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने उनकी रचनाओं को देखने का गंभीर प्रयास किया है। शमशेर बहादुर सिंह उनकी कलात्मक उच्चता के कारण नहीं बल्कि उनकी प्रतिबद्धता के कारण उन्हें बड़ा रचनाकार स्वीकार करते हैं। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है, "...उन्होंने जीवन में लगातार संघर्ष किया है: खुलकर, मैदान में आकर ऐलानिया लड़ाई लड़ी है: उन्होंने अपनी जिदें औरों से मनवायी हैं, और फिर-फिर मनवायी हैं: जिस रास्ते को ठीक समझा है, उस पर निःशंक होकर कदम रखा है, और उसी में उत्साह और सुख अनुभव किया है और उनके पीछे-पीछे औरों ने भी। जरूर उन्होंने बहुत कुछ झेला है, तब यह मिठास उनके हाथ लगी है।...और इसी संघर्ष में उन्हें अपनी सच्ची कला के भी दर्शन हुए हैं।"[2]

शमशेर बहादुर सुभद्रा कुमारी चौहान की रचना के अंतर्गत उस तत्त्व की पहचान करने की कोशिश करते हैं, जो उन्हें सामान्य जन का प्रिय कवि बनाता है। इसके अंतर्गत वह उनकी

---

[1] मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली भाग 5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. सं. - 397

[2] शमशेर बहादुर सिंह, कुछ और गद्य रचनाएँ, सं. रंजना अरगड़े, पृ. सं. - 86-87

पारिवारिक भावना को मूल तत्त्व के रूप में महत्त्व देते हैं। इस संदर्भ में वे लिखते हैं, "... और अब जीवन को एक नवीन दिशा मिलती है, और लगता है कि अपना परिवार तो बहुत बड़ा और दूर तक फैला हुआ है। अपनी समस्या पूरे देश की समस्या के साथ बँधी हुई है। उसकी मुक्ति में ही अपनी भी निजी मुक्ति है। कितनी चिंताओं का समाधान इस भाव में है। देश-प्रेम का तो राग ही निराला है। व्यक्तिगत प्रेम की सीमा में यह बात कहाँ थी।"[1]

शमशेर बहादुर सिंह के अनुसार प्रेम का विस्तार बहुत से सवालों को हल करने में सहायक होता है। व्यक्तिगत प्रेम की सीमा को समझते हुए ही, प्रेम का विस्तार सही तरीके से किया जा सकता है। व्यक्तिगत प्रेम का अतिक्रमण ही सुभद्रा कुमारी चौहान को 'अन्य' समझे जाने वाले लोगों से जोड़ता है। परिवार की समस्या को वह राष्ट्र की समस्या से जोड़कर देखती हैं। यह परिवार भी सिर्फ अपना कहे जाना वाला परिवार नहीं है। इसका विस्तार अधिक से अधिक देशवासियों तक है। तभी तो वह इस परिवार की मुक्ति में ही निज की मुक्ति और राष्ट्र की मुक्ति को देखती हैं। जब समस्त देश ही एक परिवार हो जाएगा, सभी सदस्यों के बीच भावनात्मक लगाव होगा, तब देशप्रेम का सर्वश्रेष्ठ रूप निखरकर सामने आता है। शमशेर बहादुर सिंह के अनुसार सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में देश - प्रेम का रंग इन्हीं भावनाओं से सराबोर है। इसलिए वह सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय कवियों में शुमार की जाती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान को लोकप्रिय एवं लोक से जुड़ा साहित्यकार माना जाता है। शमशेर बहादुर भी उनके इस पक्ष को समझने का प्रयास करते हुए लिखते हैं, "सुभद्रा कुमारी चौहान अपने साथ के और कवियों से कहीं अधिक लोकप्रिय हुई हैं। इसका कारण है इनकी सहज आत्मीयता और लोक-भावनाओं का गहरा अपनाव। उनका आदर्शवाद भी मुख्यतः

---

[1] शमशेर बहादुर सिंह, कुछ और गद्य रचनाएँ, सं. रंजना अरगड़े, पृ. सं. - 87-88

राष्ट्रीय हलचलों से बँधा हुआ रहा है। इसीलिए उन्हीं तमाम रचनाओं में एक जागरण-सा है। उनमें से कई आज भी इतनी ताजा लगती है कि हमें सहज ही भूलती नहीं।"[1]

शमशेर बहादुर सिंह उनकी लोकप्रियता के पीछे सबसे बड़ी वजह उनकी आत्मीय होने एवं लोक भावनाओं की गहरी समझ रखने की उनकी क्षमता को मानते हैं। यही सहजता उन्हें जीवन और साहित्य दोनों क्षेत्र में आम जन का करीबी बनाती है। सुभद्रा कुमारी चौहान जीवन जीने की तरह ही साहित्य रचने का काम करती थीं। तत्कालीन समय की जरूरत के अनुसार वह राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से शामिल भी होती थीं। इसलिए उनकी अधिकांश कविताएँ राष्ट्रीय भावनाओं से भरी हुई हैं। अपनी कविताओं से वह जन-जागरण के कार्य को सफल तरीके से पूरा करती प्रतीत होती हैं। शमशेर बहादुर सिंह मानते हैं इसलिए उनकी सहज पर अत्यंत प्रभावित करने वाली कविताएँ आप ही लोगों के जुबान पर चढ़ी हुई हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य सहजता को साहित्यिक गुण बनाने का काम करता है। यह सहजता उनकी कविताओं और कहानियों, दोनों में विद्यमान है। वे लिखते हैं, "उनकी लोकप्रियता की तह में एक और चीज़ भी है। वह यह कि खड़ी बोली के सजीव रूप की जितनी रक्षा इन्होंने अपनी रचनाओं में की है उतनी शायद नरेंद्र और कुछ हद तक बच्चन से पहले किसी ने नहीं की। हाँ, रामनरेश त्रिपाठी और गोपालशरण सिंह ने इसका बराबर ध्यान रखा, मगर उनके यहाँ या तो बनावट अधिक आ जाती है या तक्ल्लुफ़ और भाषा उतनी खुल नहीं पाती। भाषा के प्राण बोली में है। सजीव भाषा के लिए महत्त्व शब्दों का नहीं, वाक्यों और वाक्यांशों के स्वाभाविक लहजे का है, जो कि भाव का वाहक होता है। अकेले शब्द

[1] शमशेर बहादुर सिंह, कुछ और गद्य रचनाएँ, सं. रंजना अरगड़े, पृ. सं. - 91

व्यंजना या चमत्कार पैदा कर सकते हैं, प्राणों की झंकार नहीं...जब तक कि वे बोली के अंदाज में बंधे हुए नहीं होते।"[1]

द्विवेदी युग में खड़ी बोली में कविता करना एक चुनौती की तरह माना जाता था। बहुत से विद्वानों का मत था कि ब्रज भाषा की मिठास खड़ी बोली में नहीं आ सकती। आम जनता से खड़ी बोली कविता का जुड़ाव नहीं हो सकता। द्विवेदी युग के कवियों ने खड़ी बोली हिंदी कविता की नींव रखी और खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में स्थापित किया। इसे जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ाने का काम सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे कवयित्रियों ने किया। शब्द व्यंजना, संवाद, चमत्कार आदि की जगह सुभद्रा कुमारी चौहान ने शब्द और वाक्यों के स्वाभाविक लहजों के प्रयोग को विशेष महत्त्व दिया। इसी वजह से शमशेर बहादुर सिंह मानते हैं कि खड़ी बोली के सजीव रूप की रक्षा उन्होंने गोपालशरण सिंह और रामनरेश त्रिपाठी की तुलना में ज्यादा किया है। नरेंद्र शर्मा अंचल और हरिवंशराय बच्चन के पूर्व सुभद्रा कुमारी चौहान खड़ी बोली हिंदी कविता को जनता में लोकप्रिय बनाने वाली कवयित्री थीं। उन्हें लोक और लोकभाषा की, जन और जनव्यवहार की गहरी समझ थी। इसी कारण शमशेर बहादुर सिंह उन्हें महत्त्वपूर्ण कवि मानते हैं।

किसी भी साहित्य का दो पक्ष होता है। वस्तु पक्ष और कला पक्ष इस संदर्भ में शमशेर बहादुर सिंह मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान ने कला पक्ष पर ध्यान दिया ही नहीं। उन्होंने लिखा है, "अस्ल में कला पक्ष का प्रश्न सुभद्राजी के सामने कभी नहीं उठा। कविता उनके

[1] शमशेर बहादुर सिंह, कुछ और गद्य रचनाएँ, सं. रंजना अरगड़े, पृ. सं. - 91

लिए भावों की विदग्धता भर थी। उदात्त भावों की एक तरंग। अन्यथा सीधा-साधा उपयोगी कर्मशील जीवन का प्रवाह ही उनकी वास्तविक कविता है।"[1]

शमशेर बहादुर सिंह के अनुसार जिस तरह वे जीवन के सीधे सहज रूप को महत्त्व देती थीं उसी भाव से वे कविता भी लिखती थीं। इसलिए उनकी कविताओं में कलात्मकता का निषेध का भाव दिखाई पड़ता है। कर्मशील जीवन की तरह उनकी कविताएँ जनता को सीधे संबोधित होती थीं। जीवन जीना और कविता करने को वो एक ही तरीके से देखती थीं। इसलिए शमशेर बहादुर सिंह मानते हैं कि उनका कर्मशील जीवन का निरंतर प्रवाह ही उनकी वास्तविक कविता है अर्थात् इसी कारण उनकी कविताओं में भावों की विदग्धता ज्यादा है।

शमशेर बहादुर सिंह मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन एवं साहित्य लोक ही समर्पित रहा। इस बात को मुक्तिबोध ने भी स्वीकार किया है। उनकी कविताओं-कहानियों पर शास्त्रीय ढंग से विचार नहीं किया जाना चाहिए। कविताओं में उन्होंने उन्हीं छंदों का प्रयोग किया है जो हिंदी कविता में पहले से प्रचलित थे। कहानियाँ भी उन्होंने घरों में सुनाई जाने वाले किस्से-कहानियों की तरह ही लिखा। शमशेर बहादुर सिंह ने इसलिए लिखा, "उसकी महानता लोक भावना की संपत्ति है: इसलिए नहीं, कि ऐसे संघर्ष में ही विजय की प्राप्ति है, बल्कि इसलिए कि ऐसे संघर्ष से भी उस लोक-शक्ति का धीरे-धीरे संचय होता है जो विजय प्राप्ति को निश्चित करती है।"[2]

शमशेर बहादुर सिंह मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन पर गहराई एवं गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है।

---

[1] शमशेर बहादुर सिंह, कुछ और गद्य रचनाएँ, सं. रंजना अरगड़े, पृ. सं. - 93

[2] शमशेर बहादुर सिंह, कुछ और गद्य रचनाएँ, सं. रंजना अरगड़े, पृ. सं. - 94

2.7 गोपाल राय :

'हिंदी कहानी का इतिहास' पुस्तक में गोपाल राय ने सुभद्रा कुमारी चौहान का एक कहानी-लेखिका के रूप में समुचित विश्लेषण करने का प्रयास किया है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने हिंदी साहित्य में एक कवयित्री के रूप में प्रवेश किया था और उनकी राष्ट्रीय भावनाओं की कविताओं ने उन्हें पाठकों का असीम प्रेम प्रदान किया था। उसके पश्चात् उन्होंने कहानी-लेखन प्रारंभ किया। इस संदर्भ में गोपाल राय लिखते हैं, "इस दशक से पूर्व हिंदी कहानी के परिदृश्य पर किसी महिला कहानीकार की उपस्थिति न के बराबर थी। समाज में स्त्रियों की स्थिति और नियति का अंकन पुरुष कहानीकार ही अपने अनुभव, दृष्टिकोण और संवेदना के आधार पर कर रहे थे।...इस दशक के आरम्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान ने समाज में नारी की स्थिति और नियति को अपनी कहानियों का विषय बनाया और लगभग 1946 तक वे कहानी लेखन में सक्रिय रहीं।"[1] गोपाल राय इस सन्दर्भ में यह मानते हैं कि स्त्री-प्रसंग पर पुरुषों द्वारा रचित कहानियाँ स्वभावतः प्रभावी और पूर्वाग्रह - रहित नहीं हो सकती थी। ऐसे में सुभद्रा कुमारी चौहान का हिंदी कहानी में प्रवेश निश्चित रूप से हिंदी साहित्य की एक बड़ी परिघटना थी। पहली बार इन्होंने ने ही स्त्रियों की स्थिति और उनकी समाज में नियति को प्रभावपूर्ण ढंग से अपनी कहानियों में चित्रित किया। उन्होंने स्त्रियों के जीवन के विभिन्न पक्षों को अपनी कहानियों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्यिक जीवन उनके सामाजिक जीवन के अनुभव पर आधारित था। इसलिए अपनी "...कहानियों के द्वारा वे इस आधारभूत सिद्धांत का प्रतिपादन करना चाहती हैं कि नारी का स्वतंत्र व्यक्तित्व है, उसकी भी अपनी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ हैं।

[1] हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृ. सं. - 250

जब तक इस मौलिक सिद्धांत को पुरुष समाज स्वीकार नहीं कर लेता, तब तक स्त्री-पुरुष के व्यवहारों की उचित मीमांसा नहीं हो सकती और न समाज में आदर्श व्यवस्था ही आ सकती है।"[1]

गोपाल राय के अनुसार सुभद्रा कुमारी चौहान का यह प्रयास हिंदी कहानी के इतिहास में पहली बार समुचित तरीके से किसी लेखिका के द्वारा किया जा रहा था। आज भी समाज में स्त्रियों की मौलिकता को स्वाभाविक तौर पर स्वीकृति प्राप्त नहीं है। यह जरूर है कि इसके लिए किए जाने वाले साहित्यिक एवं सामाजिक प्रयास अब बड़े पैमाने पर हो रहे हैं और इसका सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहा है। 1930 के दशक में जब सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखना शुरू किया तब स्थितियाँ ज्यादा चुनौतीपूर्ण थीं। स्त्रियों के स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं उनकी मौलिकता को स्पष्ट करना एवं उसे स्थापित करने का प्रयास, निश्चित रूप से एक साहसिक प्रयास था। इस बारे में वह सचेत तौर पर प्रयास कर रही थी। गोपाल राय ने 'उन्मादिनी' में लिखे गए उनकी भूमिका को उद्धृत करने के बाद लिखा है, "...उन्होंने यह भी लिखा कि उनकी कहानियाँ उस क्रांति का चित्रण करती हैं जिसके द्वारा स्त्री-पुरुष के उन संबंधों की नींव हिल रही है जो चिर प्रचलित रूढ़ियों पर आधारित हैं। इस क्रांति को उन्होंने शुभ लक्षण माना था।..."[2]

इसका तात्पर्य यह है कि वह सचेत रूप से अपनी कहानियों के माध्यम से ऐसा प्रयास कर रही थीं। यह निश्चित रूप से तत्कालीन परिवेश में अत्यंत प्रगतिशील प्रयास था। वह मानती हैं कि स्त्री-पुरुष के चिर प्रचलित रूढ़ियों पर आधारित संबंध को चुनौती देना, एक क्रांतिकारी प्रयास है। साथ ही समाज के लिए वह इसे हितकारी भी मानती हैं। गोपाल राय उनकी इस

---

[1] हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृ. सं. - 251

[2] हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृ. सं. - 251

चेतना को हिंदी साहित्य की प्रारंभिक कहानी-लेखिकाओं में विरल मानते हैं। इसी कारण उन्होंने अपनी पुस्तक 'हिंदी कहानी का इतिहास' में सुभद्रा कुमारी चौहान का सम्मानपूर्वक विश्लेषण करने का प्रयास किया है। इसलिए गोपाल राय महज नामोल्लेख तक सीमित नहीं हैं बल्कि उन्होंने उनकी कहानियों का विस्तार से विश्लेषण करने का प्रयास भी किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए गोपाल राय लिखते हैं, "सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों का मुख्य विषय तत्कालीन समाज में स्त्री की स्थिति और नियति है। पुरुषों द्वारा निर्मित नैतिक सहिंता में स्त्रियों और पुरुषों के लिए यौन शुचिता सम्बन्धी समान नियम नहीं हैं।"[1] एक स्त्री होना और साथ ही रचनाकार होना किसी भी समय में चुनौतीपूर्ण होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने यह चुनौती स्वीकार करने का प्रयास किया। इसलिए उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को भी तय करने की कोशिश की। उसी का परिणाम था कि उन्होंने तत्कालीन समाज में स्त्री की स्थितियों और उसकी नियति को अपनी कहानियों का मुख्य विषय बनाया। गोपाल राय रेखांकित करते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान का स्पष्ट मानना था कि स्त्री मात्र होने के कारण ही स्त्रियों को सहज ही सामाजिक गैर - बराबरी को स्वीकार करना पड़ता है। हर उम्र की स्त्रियों के लिए पुरुषशासित समाज ने अलग से नियमों का प्रावधान किया है। इन रूढ़िवादी नियमों की आलोचना करने का प्रयास उन्होंने अपनी कहानियों में किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने विवाहित स्त्रियों की स्वतंत्रता का प्रश्न भी अपनी कहानियों में उठाया है। गोपाल राय इस संदर्भ में बताते हैं, "सुभद्रा कुमारी जी की दृढ़ धारणा थी कि विवाह के बाद भी नारी का स्वतंत्र व्यक्तित्व रहता है, अतः वह अपनी रूचि के अनुकूल

[1] हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृ. सं. - 251

किसी सदाचारी पुरुष को मित्र बना सकती है। उन्होंने अपनी अनेक कहानियों में इस प्रश्न को उठाया है। सामाजिक मान्यता और व्यवस्था के अनुसार उनकी इस प्रकार की अधिकतर कहानियों की पात्रियाँ पति और समाज द्वारा लांक्षिता, तिरस्कृता और कोई कोई परित्यकता भी होती हैं, किन्तु इस उत्पीड़न को सहकर भी वे सहृदय पाठकों के मन पर अपने इस अधिकार के औचित्य की छाप छोड़ जाती हैं।"[1]

कहानी लिखने वाले की इसे सफलता ही मानी जाएगी कि वह अंततः पाठकों की सहानुभूति प्राप्त कर पाता है। तत्कालीन समाज स्त्रियों के लिए बंदिशों और कठोर नियमों वाला समाज था। ऐसे में विवाह के बाद सदाचारी व्यक्ति से मित्रता का निवेदन भी अपने आप में एक क्रांतिकारी प्रयास था। पुरुष के सदाचारी या कदाचारी होने का निर्णय अगर स्त्री स्वयं करने का प्रयास करेगी तो पुरुषतांत्रिक समाज की नींव का हिलना तय है। इसलिए उनकी पात्रियों को भी लांक्षित, तिरस्कृत और परित्यक्त होना पड़ता है। समाज की सच्चाई को ही वे साहित्य में सच्चे तरीके से दिखाने का महत्त्वपूर्ण प्रयास करती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों की एक अन्य विशेषता को स्पष्ट करते हुए गोपाल राय लिखते हैं, "सुभद्रा कुमारी चौहान ने विधवाओं के दुःख-दर्द को अपनी कहानियों का मुख्य विषय बनाया है। हिन्दू समाज की विधवाओं की मूक व्यथा अपने करुणतम रूप में 'किस्मत' में मुखर हो उठी है। बाल विधवा किशोरी अपनी सौतेली सास मुन्नी की माँ के अत्याचारों की ज्वाला में तिल तिल भस्म होने के लिए विवश है। ये भोली विधवाएँ किसी प्रवंचक के

[1] हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृ. सं. - 251-252

मायाजाल में फंसकर अपना सर्वनाश कर सकती हैं, या 'नारी ह्रदय' और एकादशी' से स्पष्ट है।"[1]

विधवाओं की समस्याओं पर आधारित लेखन हिंदी साहित्य में कई लेखकों ने किया है परन्तु सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा किया गया लेखन, शुरुआती प्रयासों में से है। उन्होंने पूरी मार्मिकता एवं संवेदनशीलता से इस विषय पर लिखा है। उनकी कहानियाँ इस बात का प्रमाण हैं। आजादी के लिए चलने वाले आंदोलनों के साथ, उस समय कई सामाजिक आंदोलन भी चल रहे थे। उनका प्रभाव साहित्य पर पड़ना अनिवार्य था। सुभद्रा कुमारी चौहान तो स्वयं इस सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों की भागीदार रही थीं। तमाम राजनीतिक नेता हिन्दू समाज में विधवाओं की समस्याओं को उठा रहे थे। विधवा-पुनर्विवाह जैसे कानून लाने का भी प्रयास किया जा रहा था। ऐसे में सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा विधवाओं की दयनीय जीवन को अपनी कहानियों का विषय बनाना उनकी प्रतिबद्धता को ही प्रदर्शित करता है।

स्त्री जीवन के विभिन्न समस्याओं को स्वर देने के साथ वह अपनी कहानियों में राष्ट्रीय भावनाओं को भी पर्याप्त जगह देती हैं। इस संदर्भ में गोपाल राय ने लिखा है, "सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों का दूसरा प्रमुख विषय राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति है।...ये कहानियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान के अनुभव पर आधारित होने के कारण पाठक के चित्र पर एक विशेष प्रकार का प्रभाव डालती हैं। इनमें स्वधीनता आंदोलन से संबंधित अनेक मार्मिक प्रसंग उपस्थित हुए हैं।"[2]

---

[1] हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृ. सं. - 252

[2] हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृ. सं. - 253

सुभद्रा कुमारी चौहान की पहचान राष्ट्रीय कवयित्री की रही है। जिन्होंने राष्ट्रीय भावनाओं की कविताओं को उत्साह और मार्मिकता से सृजित किया । सक्रिय रूप से भी वे राष्ट्रीय आंदोलनों में शामिल होती थीं । राष्ट्रीय आंदोलन से उनका भावनात्मक जुड़ाव था। इसलिए उनके जीवन से होता हुआ वह उनकी कविताओं और कहानियों में मार्मिक अभिव्यक्ति पाता है । अपनी कविताओं की तरह अपनी कहानियों में भी वह राष्ट्रीय भावना की सफल अभिव्यक्ति करती हैं। उनकी कविताएँ जैसे सिर्फ आजादी के नारों तक सीमित नहीं हैं वैसे ही उनकी कहानियाँ भी महज स्थूल वर्णन तक सीमित नहीं हैं । वह पूरी तल्लीनता से राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ी घटनाओं की मार्मिक योजना अपनी कहानियों में करती हैं । इसलिए वह यहाँ भी एक सफल कहानी लेखिका के तौर पर दिखाई पड़ती हैं।

अंततः गोपाल राय का मानना है कि एक महिला लेखिका के तौर में उनका उस समय साहित्यिक पटल पर उपस्थिति होना ही किसी उपलब्धि की तरह था। इसे स्वीकार करते हुए गोपाल राय लिखते हैं, "सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियाँ उस युग की कहानियाँ हैं जब हिंदी साहित्य में महिलाओं की भागीदारी विरल थी।"[1] जबकि सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ साहित्य में भी अपनी सक्रिय रूप से भागीदारी करती दिखाई पड़ती हैं
।

2.8 रामविलास शर्मा :

[1] हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृ. सं. - 255

हिंदी आलोचकों में रामविलास शर्मा एक महत्वपूर्ण नाम है जिन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' कविता के महत्त्व को बताया है। उनका मानना है कि "अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध जब जब भारत की जनता लड़ी तब पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी आगे बढ़ी। 1857 के स्वाधीनता संग्राम में इतिहास परंपरा में सबसे लोकप्रिय, सबसे प्रसिद्ध झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई थीं।"[1] यहाँ रामविलास शर्मा स्वाधीनता आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी को रेखांकित करते हैं। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और शौर्य के साथ-साथ रानी लक्ष्मीबाई पर लोकप्रिय कविता लिखने वाली कवयित्री का नाम लेते हुए वे लिखते हैं, "यह बात आकस्मिक नहीं है कि 20वीं सदी में गाँधीजी के आन्दोलन में सबसे लोकप्रिय कविता लक्ष्मीबाई पर लिखी गयी थी और उसे लिखने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान नाम की महिला थी – खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"[2]

रामविलास शर्मा स्वाधीनता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका के संदर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम लेते हैं। इसके अतिरिक्त सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य पर उन्होंने कोई प्रकाश नहीं डाला है।

गणपतिचंद्र गुप्त, रामकुमार वर्मा, कृष्णदत्त पालीवाल जैसे अन्य इतिहासकार और आलोचकों ने सुभद्रा कुमारी चौहान को एक ही कविता के आधार अपनी रचनाओं से स्थान दिया है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान की तमाम विशिष्टताओं के बावजूद हिंदी आलोचना और इतिहास लेखन में उनकी उपस्थिति उस रूप में दर्ज नहीं हो पाई

---

[1] स्त्री मुक्ति के प्रश्न, रामविलास शर्मा, पृ. सं. – 21-22

[2] स्त्री मुक्ति के प्रश्न, रामविलास शर्मा, पृ. सं. – 22

है, जिसकी वे अधिकारिणी हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं और कहानियों पर गंभीरता से विचार किया जाना अपेक्षित है।

तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना का स्वरूप

3.1 सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का स्वरूप :

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी साहित्य के अंतर्गत एक समाज-चेतित रचनाकार के रूप में दिखाई पड़ती हैं । अपनी समय की सामाजिक परिस्थितियों की आवश्यक आलोचना के साथ वे प्रगतिशील परम्पराओं की पहचान भी करती हैं । व्यक्ति जिस परिवेश में रहता है उसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर भी पड़ता है। सुभद्रा कुमारी चौहान पर बाल्यकाल में उनके परिवार तथा में घटित घटनाओं का प्रभाव दिखता है। सामाजिक दृष्टि से सुभद्रा कुमारी चौहान का परिवार अन्य सामान्य हिन्दू परिवारों की तरह रुढ़िवादी, सनातनी और मध्मवर्गीय परिवार था। परिवार में सामन्ती परिवेश था लेकिन धीरे-धीरे रूढ़ियों एवं परम्पराओं से मुक्त हो रहा था। सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म एक राजपूत परिवार में हुआ था। ऐतिहासिक दृष्टि से राजपूतों की देशभक्ति को सबसे अधिक महान और प्राचीन माना गया है। संघर्ष को उनकी प्रवृत्ति माना गया है। ऐसा माना जाता है कि राष्ट्रप्रेम उनके नस-नस में विद्यमान है। इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान को बाल्यकाल में राजपूताना परिवार व परिवेश मिला। इसके साथ ही सामन्ती राज व्यवस्था समाज में कायम रहा। यही कारण है कि सुभद्रा जब रचनाओं को लिख रही थीं तब उनकी लेखनी में भी ये प्रभाव दिखाई देता है।

3.1.1 सामाजिक परिवेश :

तत्कालीन समाज में पति-पत्नी का संबंध मित्रता का नहीं हो पाता था। पति का पत्नी पर स्वामित्व माना जाता था। स्त्रियों का उनके जेठ के सामने बोलने की अनुमति नहीं होती थी और ना स्त्री का कोई पुरुष मित्र हो सकता था। तत्कालीन समय में पर्दा प्रथा भी कायम थी। लड़कियाँ घर की देहरी से बाहर खेल-कूद नहीं सकती थीं। अक्सर घर की बुजुर्ग महिलाएँ इन परम्पराओं को निभाती थीं। स्वयं सुभद्रा कुमारी चौहान की माता के विषय में यह कहा जाता है कि 'वे एक बार घर के अंदर गयीं तो मरने के बाद ही घर की देहरी से निकलीं।'[1] इस दृष्टि से सुप्रसिद्ध लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान के सामाजिक परिवेश का अवलोकन किया जा सकता है।

'बिखरे मोती' कहानी संग्रह के आत्मनिवेदन में वे स्वयं इस बात की पुष्टि करते हुए लिखती हैं – "रूढ़ियों और सामाजिक बंधनों की शिलाओं पर अनेक निरपराध आत्माएँ प्रतिदिन ही चूर-चूर हो रही हैं। मैंने तो उन्हें केवल बटोरने का ही प्रयत्न किया है। मेरे इस प्रयत्न में कला का लोभ है और अन्याय के प्रति क्षोभ भी। समाज और गृहस्थी के भीतर जो घात-प्रतिघात निरंतर होते रहते हैं, उनकी यह प्रतिध्वनियाँ मात्र हैं।"[2] इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान ने सामाजिक बदिशों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। उन्होंने अपने तरीके से समाज की समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किए हैं। मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि समाज में जो जागरूकता उत्पन्न हो रही थी साथ ही साथ परिवर्तन की एक लहर फैल रही थी वही सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में प्रबल रूप में दिखाई पड़ती है। सामाजिक चेतना के इस रूप को सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के माध्यम से रेखांकित किया जा सकता है।

---

[1] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. – 33

[2] बिखरे मोती, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. – 11

सामन्ती समाज का परिदृश्य 'परिवर्तन' कहानी में इस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है – "ठाकुर खेत सिंह - इस नाम को सुनते ही लोगों के मुँह पर घृणा और प्रतिहिंसा के भाव जाग्रत हो जाते थे। किन्तु उनके सामने किसी को उनके खिलाफ चूं करने की भी हिम्मत न पड़ती। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, किसी भी रूप से कोई ठाकुर खेतसिंह के विरुद्ध एक तिनका न हिला सकता था। खुले तौर पर उनके विरुद्ध कुछ भी कह दें कोई मामूली बात न थी। दो-चार शब्द कहकर कोई ठाकुर का तो कुछ बिगाड़ न सकता परन्तु अपनी आफत अवश्य बुला लेता था।"[1] ठाकुर साहब के किसी कृत्य पर अफ़सोस जाहिर करते हुए करते हुए मैकू अहीर कहता है – "हैं तो इतने बड़े आदमी पर काम ऐसे करते हैं कि कमीन भी करते लजाएगा।"[2] इस प्रतिरोध के परिणामस्वरूप मैकू अहीर को कठोर सजा दी जाती है और प्रकारांतर से प्रतिरोध की किसी भी संभावना को खत्म कर दिया जाता है। स्त्रियों की स्थिति और अधिक गंभीर और शोचनीय थी। 'परिवर्तन' कहानी में स्त्रियों की दुर्गति का विवरण इस तरह प्रस्तुत हुआ है -"उसी दिन ठाकुर साहब के यहाँ एक कुम्हार की नवविवाहिता सुंदर बहू उड़ाकर लायी गयी थी। कुम्हार के घर हाय-हाय मची हुई थी।"[3] इस तरह की गंभीर और समाजविरोधी परम्पराम उनके तत्कालीन समय में मौजूद थी। सुभद्रा कुमारी चौहान उन परम्पराओं का रचनात्मक स्तर पर विरोध सुचिंतित ढंग से करती हुई दिखाई पड़ती हैं। कोई भी समाज क्रूर सामंती परम्पराओं को जारी रखता हुआ विकास नहीं कर सकता। जातिगत दंभ और उसके दुष्प्रभाव को वे अपनी रचनाओं में पूरी गंभीरता से अभिव्यक्त करती हैं। यह एक गंभीर समस्या है कि समाजविरोधी परपराओं का सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव स्त्रियों पर ही पड़ता है। स्त्रियों की कई प्रमुख समस्याएँ हैं जिन्हें रेखांकित करने की आवश्यकता है।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -79

[2] उपरोक्त, पृ. सं. -79

[3] उपरोक्त, पृ. सं. -80

3.1.2 स्त्री-चेतना

सुभद्रा कुमारी चौहान का समय उन्नीसवीं शताब्दी के तुरंत बाद का समय था। तब स्त्रियों को स्थिति शोचनीय थी। साहित्य में इन स्थितियों के बारे लिखा जाता था परन्तु उन समस्याओं को रेखांकित कर देने तक ही यह सीमित होता था। तत्कालीन समय में जो महिलाओं की प्रमुख समस्याएँ थी, वे इस प्रकार हैं - पर्दा प्रथा, बाल विवाह, विधवाओं की समस्याएँ, दहेज की समस्या, शिक्षा का अभाव, सती प्रथा, वेश्यावृत्ति की समस्या आदि। सुभद्रा कुमारी चौहान अपने साहित्य में इन सभी समस्याओं पर चिंतन करती हैं। उनका साहित्य नारी की प्रमुख समस्याओं को पाठकों के सामने दायित्त्वपूर्ण ढंग से मुखरित करता है।

3.1.2.1 स्त्री सम्बन्धी समस्याएँ :

समाज के मूल इकाई में स्त्री केंद्र बिंदु होती है। भारतीय समाज में इस बात को प्रमुखता से उद्घाटित किया जाता है कि भारतीय समाज में, आदिकाल में नारी के प्रति श्रद्धापूर्ण भाव थे। भारतीय संस्कृति में जननी को श्रेष्ठ मानकर उसका सम्मान किया गया है किन्तु स्त्रियों के सामाजिक स्थिति में समय के साथ परिवर्तन आता गया। नारी को पर्दा में रहने पर मजबूर किया गया और वह मुक्ति के लिए तरसती रही। स्त्रियों की अस्मिता को घर-परिवार तक ही सीमित कर दिया गया। वंदना वीथिका के शब्दों में "नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप उनकी अशिक्षा थी और उनकी परतंत्रता का प्रमुख कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव था।"[1]

[1] आजकल, संपादक – कैलाश दहिया, मार्च 2013 , पृ. सं. - 27

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में भी स्त्री की शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित किया गया है। वे स्त्री की शिक्षा को महत्त्व देती थीं, खास कर छोटी बालिकाओं के शिक्षा को प्रेरित करते हुए लिखती हैं, "मुन्नी को आखिर पढ़ने के लिए जाना ही पड़ा। साथ में जबरदस्ती रमिया को भी जाना पड़ा। पट्टी, पुस्तक घर से ही ढूंढ़कर दे दी गयी। मुन्नी का ही एक पुराना फ्राक पहिनकर रामी पहले स्कूल गयी। धीरे-धीरे दोनों में खूब मेल हो गया। अब वे स्कूल जाने से घबराती न थीं। दोनों साथ स्कूल जातीं, साथ लौटतीं और साथ-साथ पढ़ती। अब मुन्नी को भी कोई शिकायत न थी कि वह मुफ्त में पढ़ने जाती है और रमिया दिन भर मजा करती है।"[1]

स्त्री के पढ़ लिख जाने से उसके सामने विवाह की समस्या आ जाती थी – "मुन्नी के पिता मुन्नी के ब्याह की तैयारी में हैं। पर रामी की माता के सामने एक समस्या थी। वह सोच रही थी – रामी इतना पढ़ गई है। चाल-ढाल, बाल व्यवहार से वह मुझ अपढ़ की लड़की सी जान ही नहीं पड़ती। मैं इसका विवाह कैसे और कहाँ करूँगी ?"[2]

हिंदी साहित्य में साहित्यकारों ने विधवाओं की दशा को उपेक्षित नहीं किया है। देखा जाए तो साहित्यकारों ने अपनी लेखनी में विधवा समस्या को पर्याप्त महत्त्व दिया है। हमारे समाज में हमेशा से विधवाओं की समस्या अत्यंत शोचनीय रही है। सुभद्रा कुमारी चौहान जब साहित्य रचती हैं तब वे इस विषय पर गंभीरता से विचार करती हैं। उन्होंने विधवा समस्या पर कई रचनाएँ लिखी हैं। उन रचनाओं में विशेष रूप से बाल-विधवा और युवा-विधवाओं का उल्लेख मिलता है। इस पर चिंतन किया जाए तो सुभद्रा कुमारी चौहान ने बाल - विधवा समस्या पर अधिक गहराई से लेखनी की है।

[1] रूपा गुप्ता (संपा), सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग - 2, पृ. सं. - 324

[2] रूपा गुप्ता (संपा), सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग - 2, पृ. सं. -324

'एकादशी' कहानी में समाज की अंध - मान्यता को सामने लाने का प्रयास दिखाई पड़ता है। इस कहानी में दस वर्षीय बालिका का चित्रण है जो बाल -विधवा है। उसे साठ वर्षीय विधवा दादी की भांति समाज के नियमों का पालन करना पड़ता है - "अभी दो वर्ष हुए जब बालिका का विवाह हुआ था और विवाह के छः महीने बाद ही वह विधवा भी हो गयी। विधवा होते ही पुरानी प्रथा के अनुसार उसके बाल काट दिये गये थे। यही कारण था कि उसका सिर मुंडा हुआ था। उस परिवार में दो विधवाएं थीं। एक तो पुजारी की बूढ़ी माँ , दूसरी यह अभागिनी बालिका। एक का जीवन अंधकारपूर्ण भूतकाल था जिसमें कुछ सुख-स्मृतियाँ धुंधली तारिकाओं की तरह चमक रही थीं। दूसरी के जीवन में था अंधकारपूर्ण भविष्य। परन्तु संतोष इतना ही था कि वह बालिका अभी उससे अपरिचित थी। दोनों की दिनचर्या एक-सी संयमपूर्ण और कठोर थी। बेचारी बालिका न जानती थी अभी उसके जीवन में संयम और यौवन के साथ युद्ध छिड़ेगा।"[1]

बाल-विवाह बालिकाओं के बाल्यकाल में ही विधवा हो जाने की प्रमुख वजह थी। यह किसी भी समाज के लिए अभिशाप के समान था कि एक बालिका को जिस वजह से कष्टपूर्ण जीवन बिताने के लिए मजबूर होना पड़ता था, उस वजह का उसे अनुमान तक नहीं होता था। सुभद्रा कुमारी चौहान इस समस्या को संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त करती हैं। 'दृष्टिकोण' कहानी में बिट्टन नाम की बाल -विधवा थी। बाल विवाह होने के कारण ही उसके साथ भी यह समस्या उत्पन्न होती है - "बिट्टन बाल-विधवा थी। जन्म ही की दुखिया थी, इसलिए निर्मला सदा उससे प्रेम और आदर का व्यवहार करती थी। बिट्टन की करुणाजनक अवस्था से निर्मल कातर हो उठी। उसने रमाकांत जी से पूछा- फिर

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 107

उसका क्या होगा ? अब वह कहाँ जाएगी ? रमाकांत जी ने उपेक्षा से कहा – कहाँ जाएगी, मैं क्या जानूँ, जैसा किया वैसा भोगेगी!"[1]

भारतीय समाज भाग्यवाद का शिकार रहा है। रमाकांत जी का 'जैसा किया वैसा भोगेगी' कहना इसी समस्या की तरफ इंगित करता है। बिट्टन बिना दोष ही जीवन भर के कष्ट की भागी बनती है। साथ ही सुभद्रा कुमारी चौहान पुरुषों की स्त्रियों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार को भी प्रस्तुत करती हैं। रमाकांत की उपेक्षा तत्कालीन भारतीय समाज में स्त्रियों के प्रति पर्याप्त संवेदनशीलता के अभाव को भी प्रकट करता है। निर्मला एक सामाजिक रूढ़ियों के कारण अबला असहाय हो गई एक स्त्री की मदद करना चाहती है। वह अपने घर में बिट्टन को आश्रय देना चाहती है लेकिन उसके सास और पति रमाकांत इसके खिलाफ हो जाते हैं। अपनी इस इच्छा के लिए निर्मला दृढ़ता से आवाज उठाती है, वह कहती है – "जी हाँ, जितना इस घर में आपका अधिकार है, उतना ही मेरा भी है। यदि आप अपने किसी चरित्रहीन पुरुष मित्र को आदर और सम्मान के साथ ठहरा सकते हैं तो मैं भी किसी असहाय अबला को कम-से-कम आश्रय तो दे ही सकती हूँ। रमाकांत निर्मला के और भी नजदीक जाकर कठोर स्वर में बोले – मेरी इच्छा के विरुद्ध तुम यहाँ उसे आश्रय दोगी ? निर्मला ने भी उसी स्वर में उन्हें उत्तर दिया – जी हाँ, मेरी इच्छा का भी कोई मूल्य होना चाहिए ? या मेरी इच्छा सदा ही आपकी इच्छा के सामने कुचली जाया करेगी?"[2] सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में अबला-असहाय स्त्रियों के चित्र हैं तो स्वाभिमानी और दृढ़ होकर संघर्ष करने वाली स्त्रियाँ भी मौजूद हैं। अपने अधिकार को न सिर्फ़ समझने वालीं बल्कि उसे अर्जित करने के लिए संघर्ष करने को तैयार रहने वाली स्त्री –चरित्र भी उनके रचना जगत में दिखाई पड़ती हैं।

---

[1] उपरोक्त, पृ. सं. - 87

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 90

'नारी हृदय' कहानी में भी इस समस्या को पाठकों के सम्मुख रखा गया है - "खैर, आज कुछ भी समझें किन्तु ऊपर से परमात्मा देखता है कि मैं क्या हूँ ? दुराचारिणी हूँ या नहीं, पापिन हूँ या क्या ? इसका साक्षी तो ईश्वर ही है मैं अपने मुँह से अपनी सफाई क्या दूँ ? अब केवल यही प्रार्थना है कि मुझे क्षमा करना, मेरी त्रुटियों पर ध्यान न देना, कृपा कर मेरे पत्र का उत्तर भी न देना। क्योंकि अब आपका पत्र पढ़ने के लिए, शायद मैं संसार में भी न रहूँ।"[1]

उस समय के समाज की एक प्रमुख समस्या दहेज़- प्रथा की थी। इस समाजविरोधी परम्परा का भी कठोर प्रभाव स्त्रियों के जीवन पर पड़ता था। सुभद्रा कुमारी चौहान ने सीधे-सीधे दहेज प्रथा को आधार बनाकर रचनाएँ नहीं लिखी हैं परन्तु उनकी कुछ कहानियों में यह समस्या व्यंजित हुई हैं। प्रमुख रूप से 'गौरी', 'आहुति' और 'मंझली रानी' शीर्षक कहानी में यह समस्या विद्यमान है।

'गौरी' कहानी में इसी समस्या से कथा प्रारम्भ होती है। दहेजाभाव के कारण गौरी उन्नीस साल की हो जाती है। गौरी एकलौती थी। योग्य वर न मिलने के कारण गौरी के पिता उसका विवाह तय नहीं कर पा रहे थे – "योग्य पात्र का मूल्य चुकाने लायक उनके पास यथेष्ट संपत्ति न थी।"[2]

'आहुति' कहानी में कुन्तला के पिता कुन्तला का विवाह दहेज के अभाव में पंडित राधेश्याम के साथ तय कर देते हैं, जो पहले से ही दो बच्चों के पिता थे।

'मंझली रानी' कहानी में मंझले राजा कम पढ़े लिखे, विलासी थे जिससे मंझली रानी का विवाह तय हो जाता है क्योंकि दहेज की कोई माँग नहीं थी। मंझली रानी के पिता

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 170
[2] उपरोक्त, पृ. सं. – 217

इसी से प्रसन्न थे कि "दहेज के नाम से कुछ न देकर भी लड़की इतने बड़े घर में ब्याही जाती थी।"[1]

'भग्नावशेष' कहानी में यह संकेत मिलता है कि नायिका के मामा दहेज़ बचाने के लिए ही तीन बच्चों के अधेड़ व्यक्ति से कथा नायिका का विवाह तय कर देते हैं।

आज पर्दा या घूँघट प्रथा भारतीय समाज में उस तरह से विद्यमान नहीं है परन्तु सुभद्रा कुमारी चौहान के समय में यह एक गंभीर समस्या थी। पर्दा प्रथा भारत में शिक्षा के प्रभाव से धीरे-धीरे कम होता गया है। स्वयं सुभद्रा कुमारी चौहान को भी विवाह के पश्चात् पर्दा कराया जाता था। सुभद्रा कुमारी चौहान पर्दा-प्रथा की कट्टर विरोधी थीं। वे बचपन से इस प्रथा का विरोध करती थीं। बचपन में वे खेल-खेल में पर्दा-प्रथा के विरोध में भाषण दिया करती थीं। उन्होंने जबलपुर में कई महिलाओं को पर्दा-प्रथा से बाहर निकाला था।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने पर्दा-प्रथा को अपने साहित्य का विषय बनाया है। उनके साहित्य में जिस ढंग से पर्दा-प्रथा का उल्लेख है उससे उस समय के लोगों की मानसिकता को परखा जा सकता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियाँ 'मंझली रानी', 'किस्मत', 'थाती', 'ग्रामीण', 'कल्याणी' आदि में पर्दा प्रथा का वर्णन है। मंझली रानी कहानी में पर्दा करना, सामंती परिवार की प्रतिष्ठा म का विषय था। 'ग्रामीण' शीर्षक कहानी में भी पर्दा-प्रथा प्रतिष्ठा की निशानी माना जाता था – "घर में देखा कितना पर्दा है ? सब खिड़की दरवाजे पर चिकें पड़ी हैं। इनकी माँ बूढी हो गयी हैं पर क्या मजाल की कोई परछाई भी देख लें।"[2] अर्थात् जिस घर की बहू को कोई नहीं देखता था वह सबसे अधिक सभ्य और और प्रतिष्ठित माना जाता था। 'ग्रामीणा' कहानी की सोना खिड़की दरवाजे के पास कभी किसी बुरे उद्देश्य से नहीं गई लेकिन फिर भी "वह जानती थी पति नाराज होंगे,

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 69

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 132

सास झिड़कियां लगायेंगी, इसलिए वह सदा उनकी नजर बचाकर ही यह काम करती। मुहल्लेवालों को यह बात सहन न हुई। कल की आई बहू, बड़े घर की बहू, सदा खिड़की-दरवाजों से लगा रहे। अवश्य ही यह आचरणभ्रष्ट है।"[1]

इसी प्रकार 'किस्मत' कहानी की किशोरी घर में ससुर से पर्दा करती है। 'थाती' कहानी की बहू कुएँ से पानी भरने के लिए पर्दा करके जाती है। कल्याणी भी जयकृष्ण से पर्दा करती है। मालती को मायके जाते समय यह सलाह दी जाती है कि वह जैसा पर्दा करती है वैसा ही करती रहे – "वह बाबूजी से जैसा पर्दा करती है, वैसे ही करती रहे।"[2]

वेश्यावृत्ति की समस्या एक अत्यंत दीर्घकालिक और जटिल समस्या है। संसार के सभी देशों में स्त्री एक सम्मानजनक स्थिति प्राप्त कर चुकी है लेकिन नारी जहाँ जीविकोपार्जन के लिए वेश्याओं का होना समाज के लिए एक सवाल खड़ा करता है। भारत में वेश्या प्रथा के विभिन्न कारण हैं – विधवा की दशा, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बहुपत्नी विवाह, अनमेल विवाह, नारी अशिक्षा, भूख, वासना-विवशता, अत्याचार, नारी की उपेक्षा आदि सभी समस्या मूलतः आर्थिक कारणों पर ही आधारित होते हैं। वास्तव में एक अत्यंत विवादास्पद विषय है। इसे सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी अपने साहित्य का विषय बनाया है।

'वेश्या की लड़की' एवं 'देवदासी' कहानी में सुभद्रा कुमारी चौहान ने वेश्या समस्या को उठाया है। उनकी ये दोनों कहानियाँ वेश्या जीवन की समस्याओं को सामने लाती है। 'वेश्या की लड़की' शीर्षक कहानी में वेश्या की बेटी का नाम छाया है। वह अपनी माता के रास्ते नहीं चलती है। वह प्रमोद से संभ्रांत परिवार में प्रेम विवाह करती है और कुलवधू के रूप में जीवनयापन करने का स्वप्न देखती है। समाज के अंतर्विरोधी एवं विकृत नियम

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं.. – 133-134
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 236

से छाया अनजान है। कथा नायक प्रमोद छाया के रूप एवं गुणों से मुग्ध है। किन्तु प्रमोद के प्रेम का नशा शीघ्र उतर जाता है। उस पर जो लांछन लगाये जाते हैं उसे वह बर्दास्त नहीं कर पाता है। वह अपनी माता-पिता के घर तथा समाज की ओर लौट जाना चाहता है। वह स्वयं छाया को अपमानित करता है। छाया की माँ के पेशे की ओर इंगित करके उसे नीचा दिखाने की कोशिश करता है। और अंत में छाया यह सब सह नहीं पाती है और आत्महत्या कर लेती है।

इस प्रकार सुभद्रा की कहानी में जिस मंगलमय रूप को प्रस्तुत किया गया है वह अद्भुत है। वहीं सामाजिक दबाव में यह प्रयास अंत में निराशा ले आती है। समाज का घृणित रूप नारियों को प्रोत्साहन नहीं देते हैं बल्कि आत्महत्या करने पर मजबूर कर देते हैं।

'देवदासी' कहानी में मंदिरों में रहने वाली देवदासी भी अपवित्र मानी जाती है। वेश्या की जगह देवदासी शब्द कह दिया जाता है लेकिन समाज में उसका स्थान वेश्या के समान ही होता है। उसके साथ व्यभिचार होने की संभावना बराबर बनी रहती है इस प्रकार वह वेश्या की पर्याय बनकर रह जाती है। देवदासी प्रथा प्रकारांतर से स्त्रियों के दैहिक शोषण का ही एक रूप था। इसलिए आगे चलकर स्वंतत्र भारत में इस पर कानूनन प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है। सुभद्रा कुमारी चौहान अपने समय में इस प्रथा का विरोध अपनी लेखनी से करती हैं। यह उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता का ही एक प्रमाण है।

'दुनिया' कहानी में यह उल्लेख है कि स्त्री वेश्या करार दे दिया जाता है जब वह घर से बाहर अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व सामने रखने की कोशिश करती है -"रामलाल ने घृणा भरे स्वर में कहा – भाई मुझे तो उसकी शक्ल से नफरत है। उसे तो यदि गृहस्थ न कह के वेश्या कहा जाए तो ठीक होगा। पर-पुरुष से ऐसी बेशरमी से बात करती है, उनके साथ ऐसे खुलेआम फिरा करती है कि कोई वेश्या क्या करेगी। पढ़ी-लिखी औरतें क्या

हमने देखी नहीं ।"[1] यहाँ सुभद्रा कुमारी चाहुहन ने तत्कालीन समाज में पुरुषों की स्त्री समबन्धी दृष्टिकोण को चित्रित किया है। सामंती समाज स्त्री द्वारा पुरुष की बराबरी करना, पसंद नहीं कर पाता। यही कारण था कि पढ़ी लिखी स्त्री अत्यंत सरलीकृत ढंग से वेश्या कह दी जाती थी। किसी समाज में स्त्री द्वारा पुरुष से बात करना ही, चरित्रहीन होना हो जाए, यह कितनी दयनीय सोच है। ऐसे में किसी भी समाज का अपेक्षित विकास नहीं हो सकता। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध में सद्भाव के अभाव में लोकतांत्रिक समाज का निर्माण नहीं हो सकता।

'कल्याणी' कहानी में भी इस समस्या से मुखातिब हो सकते हैं, जब सुशीला की सास ने मालती से यह कहा कि - "दुलहिन। तुम्हें तो अब अच्छा लगता होगा। सहेली मिल गई है, पर वह कुलच्छनी है। तुम्हारा घर भी चौपट कर देगी। उस छूत को निकाल बाहर करो।"[2]

कई कहानियों में सुभद्रा कुमारी चौहान ने वेश्या कहकर स्त्रियों के चरित्र हनन की समस्या को प्रस्तुत किया है। चरित्र- हनन के प्रयास से, स्त्रियों को अधीन बनाए रखने हेतु हमेशा से किया जाता रहा है। सुभद्रा कुमारी चौहान का उद्देश्य सिर्फ़ स्तियों की स्थिति में सुधार करना नहीं है बल्कि एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना है। उनका मानना था कि समाज अगर स्वस्थ नहीं होगा, अपनी कमजोरियों से उबर नहीं पायेगा तो वह स्वतंत्रता के लक्ष्य को भी प्राप्त नहीं कर सकता है। इसलिए राष्ट्रीयता और सामाजिकता की भावना उनके साहित्य में साथ-साथ उपस्थित है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्त्रियों के आंतरिक अंतर्विरोधों को भी अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। इसलिए वह आभूषणप्रियता के दुष्प्रभावों को भी लक्षित करके

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 344 -345

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 236

रचनाएँ करती हैं। नारी की आभूषणों के प्रति आसक्ति प्राचीन काल से है। अपने सौन्दर्य की वृद्धि के लिए स्त्री आभूषण धारण करती है। नारी सौन्दर्य प्राप्ति के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहती है। किन्तु कभी कभी यही आभूषणप्रियता उसके पतन का कारण बन जाती है। इस संदर्भ में प्रेमचंद ने गबन उपन्यास में स्पष्ट लिखा है कि इस प्रथा के कारण ही "हमारा कितना आत्मिक, नैतिक, दैहिक, आर्थिक और धार्मिक पतन हो रहा है। इसका अनुमान भी नहीं कर सकते।"[1]

इसी प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कहानी 'सोने की कंठी' में नारी की आभूषणप्रियता को चित्रित किया है। उसके दुष्परिणाम को उद्घाटित किया है। कहानी में बिंदों के मन में गहनों के प्रति सहज आकर्षण है – "बिन्दो रूपवती थी और उसको अच्छे-अच्छे गहने-कपड़ों का शौक था। स्त्रियाँ स्वभावतः सौन्दर्य की उपासिका होती हैं; जो जितनी अधिक सुंदर होती हैं उनकी सौन्दर्यपासना उतनी ही अधिक बढ़ी-चढ़ी होती है। किन्तु सुंदरी बिंदी गहनों और कपड़ों के लिए तरसा करती थी।"[2] वह बार -बार अपने इस मनोकामना को मन में दबा लेती है। बिन्दो की राय थी कि "अच्छे कपड़े और गहने पहिनने का अधिकार उन्हीं को होना चाहिए जो सुंदर हों। कुरूप स्त्रियों का श्रृंगार तो श्रृंगार का उपहास और कला का अनादर है। रायसाहब की लड़कियों से गहने-कपड़े की प्रतियोगिता में हारकर बिन्दो हताश न होती, घर लौटते ही वह शीशे में अपना सुंदर मुँह देखकर मन-ही मन उनके प्रति कहती -गहना-कपड़ा पहिनकर भी तो उनका काला मुँह गोरा नहीं हो जाता; बड़े-बड़े दांत मोतियों सरीखे नहीं चमकते। फिर यकायक वह दीर्घ निश्वास के साथ शीशे के सामने से दूर चली जाती; मानो यह सोचती कि विश्व के सारे सौन्दर्य की वस्तुएँ केवल उसी के लिए बनाई गई थीं किन्तु निर्माता की भूल से वह उससे

---

[1] गबन, प्रेमचंद – पृ. सं. – 66

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 161

दूर रखी गई हैं ।"[1] विवाह के बाद भी उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पाती है। किन्तु पति प्रेम के कारण यह इच्छा दब जाता है। किन्तु पिता के घर आने पर उसकी यह चाह फिर से उत्पन्न हो जाती है। जब राय साहब बार-बार सोने की कंठी का लालच देते हैं तब वह अपना सतीत्व हार जाती है और राय साहब की वासना का शिकार बन जाती है – "अभी कहाँ की देरी होने लगी। कहते-कहते रायसाहब ने एक कंठी बिन्दो के गले में पहिना दी और उसे जबरन पकड़कर एक बड़े शीशे के सम्मुख खड़ा कर दिया; फिर उसकी तरफ सतृष्ण नेत्रों से देखते हुए बोले- अपनी सुन्दरता देखो, वहाँ बिन्दो है या कोई दूसरी ? बिन्दो मन्त्रमग्ध सी देखती रह गयी।वह अभी रायसाहब का किसी बात का उत्तर भी न दे पायी थी कि इस समय उन्होंने अपना बड़े-बड़े दाँतों वाला मुँह बिन्दो के सुंदर ओठों पर घर दिया। बिन्दो को जैसे बिच्छु ने डंक मार दिया। वह घबराई किन्तु कुछ वश न चला।"[2] और अंत में यह पता चलता है कि जिस सोने की कंठी के लिए उसने अपना सबकुछ गंवाया वह कंठी मुलम्मे की है। तब उसपर वज्र गिर जाता है और वह अपना सर्वस्व गँवा देती है। वह स्वयं अपनी दुर्गति का कारण बन जाती है।

आज राष्ट्रीय के साथ- साथ अंतर्राष्ट्रीय बहनापे की बात स्त्री-विमर्श के अंतर्गत की जाती है। इसके अभाव में स्त्री-चेतना का विकास संभव नहीं है। ऐसे में सौन्दर्य के कल्पित अवधारणा के आधार पर स्त्री-स्त्री में भेद करना, इस बड़े उद्देश्य में बाधक सिद्ध हो सकता है। एक स्त्री द्वारा दूसरी स्त्री का अपमान शारीरिक रूप की वजह से करना, सामंती दृष्टिकोण है। सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्रियों की समस्याओं पर विचर करते हुए, उनकी आन्तरिक समस्याओं को भी गंभीरता से उद्घाटित करती हैं।

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 161

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 166

3.1.2.2 विवाह सम्बन्धी समस्याएँ :

उन्नीसवीं सदी में बाल विवाह पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया फिर भी कालांतर में बाल-विवाह होते रहते थे । सुभद्रा कुमारी चौहान ने बाल-विवाह की समस्या को मार्मिकता के साथ 'बिआहा' कहानी में प्रस्तुत किया है । 'बिआहा' सत्य घटना पर आधारित कहानी है। कहानी की नायिका स्वयं लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। वे ट्रेन से इलाहाबाद जा रही थीं तभी उन्हें स्टेशन में 6-7 साल की एक रामप्यारी नामक बच्ची मिलती है । जो एक थाली और गिलास लेकर अपने बिआहा अर्थात् पति के घर इलाहाबाद जाना चाहती है। उसके पास इलाहाबाद जगह के नाम के अतिरिक्त कोई दूसरा पता नहीं है । उसे पति का नाम भी नहीं पता होता है । किन्तु उसके अंदर एक अदत्त विश्वास है जिससे वह कहती है बार-बार कि उसे 'अपने बिआहा के पास जाइत लाग है।'[1] कथा नायिका यात्रा पूरी करने के पश्चात् भी अपने मन में सवालों से घिरी होती है, वह सोचती है कि "वह छोटी-सी बच्ची क्या जाने बिआहे को ? ऐसा लगा कि युग-युग से कोई अज्ञात वाणी जिसे सीता और सावित्री कहते हैं, उस बच्ची के कंठ से प्रतिध्वनित हो रही थी।"[2] साथ ही वे समाज के प्रचलित इस प्रथा पर प्रश्न-चिन्ह लगाती हैं।

बालविवाह की समस्या की सबसे बुरी परिणति तब होती है जब बाल-अवस्था में ही वह विधवा हो जाए। सुभद्रा कुमारी चौहान की कई कहानियों में यह समस्या से हम रूबरू हो सकते हैं। 'किस्मत' कहानी की किशोरी, 'एकादशी' कहानी की ब्राह्मण कन्या, 'दृष्टिकोण' कहानी की पात्र बिट्टन सभी बाल - विधवा और बाल-विवाह की कुप्रथा के शिकार हैं। इस समस्या के उपरांत सुभद्रा कुमारी चौहान ने पुनर्विवाह को योग्य ठहराया है परन्तु इसे वह अपनी कहानियों में पर्याप्त रूप में अभिव्यक्त नहीं कर सकी हैं।

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 272

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 274

अन्तर्जातीय विवाह को सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी कहानी में बढ़ावा देती हैं, 'दो सखियाँ' कहानी में सुभद्रा ने इस संदर्भ में लिखा है कि "रामी मेरे पास भूमिका बाँधने का समय नहीं है। मैं तुम से विवाह करना चाहता हूँ। तुम्हें स्वीकार है ? रामी काँप उठी, उसने कहा – पर यह कैसे हो सकता है ! मैं मालिन की लड़की हूँ और आप क्षत्रिय ! – फिक्र मत करो मैं केवल तुम्हारी राय जानना चाहता हूँ।"[1] इस प्रकार दो सखियाँ कहानी एक आदर्शवादी कहानी है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नारी आदिकाल से पीड़ित शोषित रही हैं। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को मान मर्यादा की आड़ में उसे दबाया जाता था। घर की इज्जत के नाम पर या कभी उसे देवी बनाकर चारदीवारी में कैद रखा गया। इन्हीं परम्परागत समस्याओं को खत्म करने के लिए स्त्रियों ने कलम उठाई है। किसी भी समाज की उन्नति और समरसता के लिए स्त्री-पुरुष संबंधों का सहज होना आवश्यक होता है। दोनों के बीच की बराबरी की भावना ही इस उद्देश्य में सहायक हो सकता है। सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी रचनाओं के माध्यम से यह कार्य करने का प्रयास सफलतापूर्वक ढंग से करती हुई दिखाई पड़ती हैं।

3.2 सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति का स्वरूप :

साहित्य और संस्कृति का सम्बन्ध गहरा होता है। दोनों का प्रतिपाद्य मानव जीवन ही है। किन्तु फिर भी कार्य क्षेत्र की दृष्टि से दोनों में अंतर है। संस्कृति जीवन को, जाति को , समाज को, युग आदि को सम्यक रूप में देखती है। उसकी सर्वांगीण व्याख्या करती है। जबकि साहित्य जीवन के किसी एक विशिष्ट पहलू को भी अभिव्यक्त करता है। यद्यपि

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 329

संस्कृति उसका आधार है। साहित्य संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने संस्कृति की व्यापकता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि –'मैं संस्कृति को किसी जाति विशेष या देश विदेश की मौलिकता नहीं मानता। मेरे विचार से सारे संसार के मनुष्यों की एक ही सामान्य मानव संस्कृति हो सकती है।'[1] समाज-चेतित व्यक्ति या रचनाकार पूरी पृथ्वी को ही अपना घर मानते हैं और वे सम्पूर्ण मानव की मंगल की कामना करते हैं। इसी से उनकी रचनाओं में भी उनकी यह मानवतावादी दृष्टिकोण दिखाई पड़ती है। सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में भी इसे प्रमुखता से लक्ष्य किया जा सकता है।

3.2.1 भारतीय संस्कृति और सभ्यता :

भारतीय संस्कृति की अपनी विशेष पहचान और विशिष्टता है। इस देश में सामाजिक समरसता को बनाए रखने और बढ़ावा देने वाली बहुत सारी प्रथाएं, त्यौहारों के रूप में प्रचलित हैं। भारतीय संस्कृति में राखी की संस्कृति है। यह त्यौहार पूरे विश्व पटल पर मनाया जाता है लेकिन सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस संस्कृति को राष्ट्रीयता से जोड़ दिया है। उनकी 'राखी' कविता में यह भाव देखा जा सकता है। राखी के त्यौहार में भी स्वाधीनता का भाव समाहित है। वे देश के वीरों को राखी के माध्यम से चुनौती स्वीकार करने के लिए कहती हैं। राखी की चुनौती कविता में उनकी ओजस्वी वाणी समाहित है, जहाँ आज़ादी की लड़ाई में जेल गए हुए भाइयों के लिए गर्व से वे कहती हैं –

"मेरा बन्धु माँ की पुकारों को सुनकर

के तैयार हो जेल खाने गया है।

छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को

[1] अशोक के फूल, हजारी प्रसाद द्विवेदी , पृ. सं – 77

वह जालिम के घर में से लाने गया है...।"[1]

इसी प्रकार 'अमराई' कहानी में राखी के त्यौहार का वर्णन है जिसमें तत्कालीन देश-प्रेम को समाहित किया गया है – " उस दिन राखी थी। बहिनें अपने भाइयों का सदा इस अमराई में ही राखी बाँधा करती थीं। यहाँ सब लोग एकत्रित होकर त्यौहार मनाया करते थे। बहिनें भाइयों को पहिले कुछ खिलातीं, माला पहिनातीं, हाथ में नारियल देतीं और तिलक लगाकर हाथ में राखी बाँधते हुए कहतीं – 'भाई इस राखी की लाज रखना, लड़ाई के मैदान में कभी पीठ न दिखाना'।"[2]

'दृष्टिकोण' कहानी में सुभद्रा कुमारी चौहान विश्व प्रेम की भावना को अभिव्यक्त करती हैं। वे निर्मला के व्यक्तित्व के द्वारा यह सन्देश देना चाहती हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को सिर्फ अपने देश से प्रेम नहीं करना चाहिए बल्कि संसार के सभी जन के लिए मनुष्य का भाव एक जैसा होना चाहिए। कहानी में यह भाव इस प्रकार देखा जा सकता है – " निर्मला विश्व-प्रेम की उपासिका थी। संसार में सब के लिए उसके भाव समान थे। उसके ह्रदय में अपने पराये का भेद-भाव न था। स्वभाव से ही वह मिलनसार, सरल, हंसमुख और नेक थी। साधारण पढ़ी-लिखी थी। अंग्रेजी में शायद मैट्रिक पास थी। परन्तु हिंदी का अच्छा ज्ञान था। साहित्य के संसार में उसका आदर था और काव्यकुंज की वह एक मनोहारिणी कोकिला थी। निर्मला का जीवन बहुत निर्मल था। दूसरों के आचरण को सदा भलाई की ही नजर से देखती। यदि कोई उसके साथ बुराई भी करने आता तो निर्मला यही सोचती कदाचित् उद्देश्य बुरा न रहा हो, भूल से ही उसने ऐसा किया हो।"[3]

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. 89-90
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 122
[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 85

उनकी कविताओं में भी विश्व प्रेम की भावना समाहित है। उनका प्रेम पूरे संसार के लिए एक समान था। वे प्रेम की प्रतिरूप थीं वे सिर्फ अपने देश की मंगलकामना नहीं करती थीं बल्कि पूरे विश्व की सुख समृद्धि की कामना करती थीं। उनके इस पद में विश्व प्रेम का भाव व्यंजित है -

"मैं प्रसन्न थी, पर प्रसन्नता

मेरी आज निराली थी।

मैं न आज मैं थी यह कोई

विश्व-प्रेम-मतवाली थी।"[1]

3.2.2 प्रेम संवेदना :

सुभद्रा कुमारी चौहान नारी के रूप में एक साधारण नारियों की भांति अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हैं। वे अपने काव्य में बेटी, बहन, पत्नी, माता होने के साथ-साथ समाज सेविका के भाव अभिव्यक्त किए हैं। समय के साथ उनका देशप्रेम बढ़ता गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन में प्रेम दूसरा आधार स्तंभ रहा है। काव्य में यह प्रेम द्विमुखी है - बचपन से प्रेम दूसरा दाम्पत्य प्रेम।

सुभद्रा कुमारी चौहान का एक रूप प्रेमिका का रहा है। दाम्पत्य जीवन में वे स्वयं को एक प्रेमिका स्वीकार करती हैं और अपने प्रियतम पति के प्रेम पर ही कविता करती हैं। वे सहज एवं सरल शब्दों में प्रणय भावना को कविता में इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं –

"तुम मुझे पूछते हो जाऊं ?

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 61

मैं क्या जवाब दूँ तुम्हीं कहो !

'जा...' कहते रूकती है जबान

किस मुँह से तुमसे कहूँ रहो !"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में प्रेम-संवेदना का प्राधान्य है । उनकी कविता में प्रेम की गूढ़ता, प्रेमिका के प्रेम, विरह की भावना, टूटन अथवा अलगाव की अभिव्यक्ति मिलती है। प्रेम भाव का व्यक्ति के अंदर होना उसे सार्थकता एवं सम्पूर्णता का अनुभव करवाता है। प्रेम की इसी सार्थक अनुभूतिपूर्ण संवेदना को सुभद्रा कुमारी चौहान की कई कविताएँ व्यक्त करती हैं। वैयक्तिक प्रेम संवेदना को दर्शाती यह कविता इस प्रकार है -

"मैं सदा ही रूठती ही आयी

प्रिय, तुम्हें न मैंने पहचाना

वह मान बाण-सा चुभता है,

अब देख तुम्हारा जाना।"[2]

उनकी कविताओं में प्रेम प्रतीक्षा की अनेक दशाओं को वर्णित किया गया है जो व्यक्ति को संवेदित कर जाती है। एक प्रकार से प्रेमियों के मध्य समान प्रेम संवेदना हो तो यह अनुभूति सुखद होती है। किन्तु किसी एक का अलगाव इस सुखद अनुभव को पीड़ा अथवा विरह में परिवर्तित कर देता है। निम्नलिखित उद्धरण में प्रेम के इसी भाव को उकेरा गया है -

"हठीले मेरे भोले पथिक! किधर जाते हो आकस्मत्

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 46
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 46

अरे क्षण भर रुक जाओ यहाँ, सोच तो लो आगे की बात

यहाँ के घात और प्रतिघात, तुम्हारा सरस हृदय सुकुमार

सहेगा कैसे? बोलो पथिक! सदा जिसने पाया है प्यार।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान प्रेमी-पति को देवता समान मानती हैं, हमारे भारतीय सामंती समाज में अक्सर स्त्रियाँ अपने पति को परमेश्वर, स्वामी आदि स्वीकार करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान भी इस वाक्य से अछूती नहीं थीं। इसलिए वे लिखती हैं –

"देवता थे वे, हुए दर्शन, अलौकिक रूप था

देवता थे, मधुर सम्मोहन स्वरूप अनूप था

देवता थे, देखते ही बन गयी थी भक्त मैं

हो गयी उस रूप-लीला पर अटल आसक्त मैं।"[2]

प्रिय से मिलन की ख़ुशी कुछ क्षणों की सही किन्तु प्रेमिका के हृदय में अनेक रंग भर देती है। बसंत रूपी मिलन के पश्चात् प्रिय का वियोग उसके लिए पतझड़ का दर्द प्रतीत होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान भी अपनी कविता 'शिशिर समीर' में प्रियतम के प्रति ऐसी ही आशा और प्रेम संवेदना व्यक्त करती हैं –

"खूब उन्हें समझा कर कहना

मेरे दिल की बात सखी

विरह-विकल चातकी मर रही

जल-जल कर दिन रात सखी...

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 47

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 49

कहना किसी तरह वे सोचें

मिलने को तदबीर सखी।

सही नहीं जाती अब मुझसे

यह वियोग की पीर सखी ।”[1]

उपर्युक्त कविता में कवयित्री शिशिर-समीर को अपनी सखी बतला रही हैं। अपना दुःख दर्द वे प्रकृति को सहचर मानकर व्यक्त कर रही हैं –

“क्यों खुश हो ? क्या धन पाया है? क्यों इतना इठलाती हो ?

शिशिर-समीरण! सच बतला दो, किसे ढूंढने जाती हो ?

मेरी भी क्या बात सुनोगी, कह दूँ अपना हाल सखी ?

किन्तु प्रार्थना है, न पूछना, आगे और सवाल सखी !

फिरती हुई पहुँच तुम जाओ, अगर कभी उस देश सखी!

मेरे निठुर श्याम को मेरा, दे देना सन्देश सखी!”[2]

‘जाने दे’ शीर्षक कविता प्रेमी-पति अथवा प्रियतम से मिलने को आतुर प्रेमिका की दशा को व्यक्त करती है। प्रेम आत्मिक हो तो उसे भुलाना सहज नहीं होता। ऐसी संवेदना को दबाया या छुपाया नहीं जा सकता है। यह प्रेम संवेदना समाप्त नहीं किया जा सकता है इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान की इस कविता में प्रेमिका का मनुहार उकेरा गया है -

“जी भर उन्हें देख लेने दे,

जीवन सफल बनाने दे।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 59

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 58

खोल, खोल दे द्वार पुजारी !

मन की व्यथा मिटाने दे।

बहुत बड़ी आशा से आयी हूँ,

मत कर तू मुझे निराश

एक बार, बस एक बार, तू

जाने से प्रियतम के पास।"[1]

'प्रियतम से' कविता में प्रेमी की निष्ठुरता और प्रेमिका की प्रेम-संवेदना परिलक्षित हुई है –

"बहुत दिनों तक हुई परीक्षा

अब रूखा व्यवहार न हो।

अजी, बोल तो लिया करो तुम

चाहे मुझ पर प्यार न हो।

जरा जरा सी बातों पर

मत रूठो मेरे अभिमानी।

लो प्रसन्न हो जाओ

गलती मैंने अपनी सब मानी।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी प्रार्थना में भी देशप्रेम को ले आती हैं। वे कृष्ण भक्त थीं। युद्ध में जाते सैनिकों के लिए वह प्रार्थना करती हैं। अपनी प्रार्थना में वे सैनिकों के

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 57

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. 64

माध्यम से देश के सोये हुए समाज को जगाना चाहती हैं, विदाई शीर्षक कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान लिखती हैं,

> "कृष्ण मंदिर में प्यारे बन्धु
>
> पधारो निर्भयता के साथ।
>
> तुम्हारे मस्तक पर हो सदा
>
> कृष्ण का वह शुभचिंतक हाथ ।।
>
> तुम्हारी दृढ़ता से जग पड़े
>
> देश का सोया हुआ समाज।
>
> तुम्हारी भव्य मूर्ति से मिले,
>
> शक्ति वह विकट त्याग की आज ।।"[1]

'एकादशी' कहानी में एकादशी के व्रत को महत्व दिया गया है। यह व्रत जब एक छोटी बच्ची करती है तब हम समाज के इस परम्परा को सोचने पर मजबूर हो जाते हैं - "डॉक्टर साहब ने एक की जगह दो लड्डू देते हुए उससे फिर बड़े प्रेम के साथ लेने के लिए आग्रह किया। बालिका ने फिर सिर हिलाकर अस्वीकृति की सुचना दी। तब डॉक्टर साहब ने पूछा – क्यों बिटिया, मिठाई क्यों नहीं लेती ? – आज एकादशी है। आज भी कोई मिठाई खाता है ? डॉक्टर साहब हँस पड़े और बोले – यह इतने बच्चे खा रहे हैं सो ? – आदमी खा सकते हैं, औरतें नहीं खातीं। हमारी दादी कहती है कि हमें एकादश के दिन अन्न नहीं खाना चाहिए। - तो तुम एकादशी रहती है ? – क्यों नहीं ? हमारी दादी कहती है

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 114

कि हमें नेम-धरम से रहना चाहिए।"[1] लेकिन इस कहानी में इस मान्यता को तोड़ने के बजाए कहानी के अंत में डॉक्टर भी इसके पक्षपाती नजर आते हैं – "स्वर कुछ परिचित-सा था। और आँखों में एक विशेष चितवन जिससे डॉक्टर साहब कुछ चकराये। एक धुंधली-सी स्मृति उनकी आँखों के सामने आ गयी। उनके मुँह से अपने आप निकल गया -क्यों ? छलकती हुई आँखों से स्त्री ने जवाब दिया – आज एकादशी है। डॉक्टर साहब चौंक उठे। विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखते रह गये। उसी दिन से डॉक्टर मिश्रा भी शुद्धी और संगठन के पक्षपाती हो गये।"[2]

3.2.3 पर्यावरणीय चेतना :

सुभद्रा कुमारी चौहान 'शिशिर-समीर', 'मुरझाया फूल', 'फूलों के प्रति', 'वीरों का कैसा हो बसंत', 'पानी और धूप' आदिअपनी कविताओं में प्रकृति को सहजता से स्थापित करती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी कविताओं के माध्यम से ही सम्पूर्ण देश में प्रसिद्ध रही हैं। इस दृष्टि से सुभद्रा कुमारी चौहान की 'वीरों का कैसा हो बसंत?', 'जालियाँवाला बाग में बसंत', 'फूल के प्रति', 'मुरझाया फूल', 'नीम', 'कोयल', 'पानी और धूप' 'झाँसी की रानी की समाधि पर' आदि कविताओं में देशप्रेम और पर्यावरण चेतना को देखा जा सकता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं ने प्रगतिशील मूल्यों का संचार करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। सुभद्रा कुमारी चौहान प्रकृति से जुड़ी हुई कवयित्री हैं। इसलिए उनकी राष्ट्रवादी कविताओं में भी पर्यावरण सम्बन्धी चेतना का समावेश मिलता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की पहली कविता 'नीम' है, सुभद्रा कुमारी चौहान जब नौ साल

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 106-107

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 110

की थीं तब उनकी कविता ‘नीम’ उस समय की प्रसिद्ध पत्रिका ‘मर्यादा’ में ‘सुभद्रा कुँवरि’ के नाम से छपी थी। यह कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने घर के दरवाजे पर लगे नीम के पेड़ पर लिखी थी. जिसमें उन्होंने नीम के परोपकारी और गुणकारी रूप का वर्णन करने के बाद ईश्वर से प्रार्थना की है कि जब तक नभ में चंद्रमा तारे और सूरज का प्रकाश है, हे नीम तब तक तुम सर्वदा फूलो फलो। उनकी यह कविता इस प्रकार है –

“तू रोग मुक्त अनेक जन को सर्वदा करती रहै

इस भांति से उपकार तू हर एक का करती रहै

प्रार्थना हरि से करूँ हिय में सदा यह आस हो

जब तक रहें नभ चन्द्र तारे सूर्य का परकास हो

तब तक हमारे देश में तुम सर्वदा फूलो फरो

निज वायु शीतल से पथिक जन का हृदय शीतल करो।”[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान का अनुराग प्रकृति से रहा है इसलिए वे नीम के औषधीय गुणों को बतलाती हैं। 9 वर्ष की छोटी उम्र में सुभद्रा का नीम पर कविता लिखना हिंदी जगत के लिए सौभाग्य का संकेत था और साथ ही उनके प्रकृति से लगाव का सूचक भी था।

सन 1919 ई. में जालियाँवाला बाग के नृशंस हत्याकांड से कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के मन को गहरा अघात लगा। उन्होंने इस राष्ट्रीय घटना को प्रकृति तत्वों से जोड़ते हुए, देश के शहीदों को अपनी कविता ‘जलियांवाला बाग में बसंत’ में इस प्रकार नमन किया है –

[1] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. -38

"यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते...
परिमल-हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है
हा! यह प्यारा सा बाग खून से सना पड़ा है
आओ प्रिय ऋतुराज! किन्तु धीरे से आना
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।"[1]

जालियाँवाला बाग हत्याकांड में सैकड़ों भारतवासी स्वाधीनता की आशा लिये मारे गए। सुभद्रा कुमारी चौहान उन्हें अपने परिवार रूपी भारत देश का अभिन्न हिस्सा मानती हैं, जो शहीद हो गए उनकी आशा भरे हृदय के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान वायु से, ऋतुराज से आह्वान करती हैं कि वह धीरे से आए और बच्चे बूढ़े जो शहीद हुए उनके श्रद्धांजलि स्वरूप कुछ कलियाँ गिराए। सुभद्रा कुमारी चौहान के श्रद्धापूर्ण भाव को उनकी इन पंक्तियों में देखा जा सकता है –

"कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं
कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 92

तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर

शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीय कविताएँ क्रांति के जयघोष से गुंजरित हैं। भारत के इतिहास में वीर पुरुषों और घटनाओं का नाम लेकर वीरता का महत्त्व स्पष्ट करते हुए 'वीरों का कैसा हो बसंत' कविता में वे लिखती हैं –

"वीरों का कैसा हो बसंत?

आ रही हिमाचल से पुकार

है उदधि गरजता बार-बार

प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार

सब पूछ रहे हैं दिग-दिगन्त

वीरों का कैसा हो बसंत

फूली सरसों ने दिया रंग

मधु लेकर आ पहुँचा अनंग

वधु-वसुधा पुलकित अंग-अंग

हैं वीर वेश में किन्तु कंत

वीरों का कैसा हो बसंत ?"[2]

'फूल के प्रति' कविता में देश के शहीदों के प्रति श्रद्धा भाव की अभिव्यक्ति को देखा जा सकता है –

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, पृ. सं. – 92-93

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, पृ. सं. – 128

"डाल पर के मुरझाये फूल

हृदय में मत कर वृथा गुमान

नहीं है सुमन कुंज में अभी

इसी से है तेरा सम्मान

मधुप जो करते अनुनय विनय

बने तेरे चरणों के दास

नयी कलियों को खिलती देख

नहीं आवेंगे तेरे पास

सहेगा कैसे वह अपमान ?

उठेगी वृथा हृदय में शूल

भुलावा है, मत करना गर्व

डाल पर के मुरझाये फूल ।"[1]

मानव जीवन में पानी और धूप के महत्त्व को कविता के माध्यम से बताती हैं । 'पानी और धूप' में वे लिखती हैं –

"अभी अभी थी धूप बरसने

लगा कहाँ से यह पानी

किसने घड़े फोड़ बादल के

की है इतनी शैतानी

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 43

सूरज ने क्यों बंद कर लिया

अपने घर का दरवाजा

उसकी माँ ने भी क्या उसको

बुला लिया कह कर आ जा।"[1]

गर्मी की दोपहर में अपने पालतू जानवरों की फ़िक्र करते हुए अपने अंदर के अनुताप को कम करने के लिए इस तरह गर्मी का वर्णन करती हैं, उनकी काव्य संवेदना को इस प्रकार देखा जा सकता है –

"भूमि जले जैसे हो आगी

छिपै सभी घर भीतर भागी

गर्मी से व्याकुल नर-नारी

जंह बैठहिं तंह सींचहिं बारी।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान की उपरोक्त पंक्तियों से यह मुखरित होता है कि वे राष्ट्रीय आंदोलनों से प्रभावित होकर उनपर आधारित कविताएँ बड़ी सहजता से लिखती हैं और राष्ट्रीयता एवं पर्यावरणीय चेतना का सामंजस्य बैठाती हैं।

3.2.4 साहित्य व भाषा का सम्मान :

हिंदी साहित्य के अधिकांश कवि साहित्यकार अपनी मातृभूमि एवं मातृभाषा की वंदना करते दिखाई देते हैं। राष्ट्रीयता में मातृभाषा भी महत्वपूर्ण अंग है। इसलिए

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 193

[2] मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, पृ. सं. – 38

मातृभूमि के समान ही मातृभाषा का सम्मान प्रत्येक देशवासियों का कर्त्तव्य होता है। वह कभी इसकी अवहेलना नहीं कर सकता है। हिंदी साहित्य के भारतेंदु युग में मातृभाषा के प्रति आदर और सम्मान के प्रश्न को सामने लाने का प्रयत्न पर्याप्त रूप में देखा जा सकता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में द्विवेदी युगीन प्रभाव दिखाई देता है। राष्ट्रप्रेम उनमें कूट कूट कर भरा हुआ था। अतः मातृभाषा प्रेम को राष्ट्रीयता का अभिन्न अंग के रूप में देखा जाता था। उनकी लेखनी इसके प्रभाव से वंचित नहीं है। वे जानती थीं कि मातृभाषा लोगों तक अपनी बात पहुँचाने या लोगों से उनके मन की बात जानने का एक सशक्त माध्यम है। इसलिए वे मातृभाषा हिंदी की प्रबल समर्थक के रूप में दिखाई देती हैं। 'मातृमंदिर' कविता में वे मातृभाषा का गुणगान करते हुए लिखती हैं –

"जिसको तुतला-तुतला करके,
शुरू किया था पहली बार।
जिस प्यारी बोली में हमको,
मिला हमारी माँ का प्यार।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान स्वभाषा की उन्नति को स्वदेश की उन्नति मानती हैं। वे इस बात से भली भांति परिचित थीं कि विदेशी भाषा हमारी परम्पराओं एवं संस्कारों से विमुख करती हैं। मातृभाषा के महत्त्व की प्रतीति जनसाधारण को हूँ गई तो वे विदेशी भाषा और विदेशी शासन से मुक्त होंगें। उन्हें विश्वास था कि मातृभाषा हिंदी के द्वारा ही भारत में स्वतंत्रता की नई सुबह आएगी। वे लिखती भी हैं -

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, मातृमंदिर - संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 105

"मेरे लिए बड़े गौरव की,

और गर्व की है यह बात।

तेरे ही द्वारा होवेगा,

भारत में स्वातंत्र्य प्रभास।"[1]

मातृभाषा हिंदी को सुभद्रा कुमारी चौहान देश का आधार मानती हैं। देशवासियों को जोड़ने की एक कड़ी के रूप में स्वीकार करती हैं। चूँकि भारत में हिंदी बोलने वाले लोग सबसे अधिक हैं और उनके विचारों का आदान-प्रदान करने वाली एकमात्र भाषा हिंदी हो सकती है। उनका मानना था कि हिंदी के माध्यम से ही हम स्वाधीन होंगे और उजड़े क्षेत्र बसाने में साथ ही साथ उजड़े हृदय मिलाने में यह भाषा सहायक होगी। उनकी कविताओं के भाव इस प्रकार हैं –

"तू होगी आधार देश की,

पार्लमेंण्ट बन जाने में

तू होगी सुख-सार, देश के

उजड़े क्षेत्र बसाने में।

तू होगी व्यवहार, देश के बिछड़े हृदय मिलाने में।

तू होगी अधिकार, देशभर

को स्वातंत्र्य दिलाने में"[2]

---

[1]सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, मातृमंदिर - संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 107

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, मातृमंदिर - संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. –107-108

सुभद्रा कुमारी चौहान को भारत, भारतीय संस्कृति और हिंदी की अनन्य उपासिका कहा जाता है। उनकी कला इन तीनों रूप में देखा जा सकता है। इन तीन क्षेत्रों में सुभद्रा कुमारी चौहान समर्पित नजर आती हैं। उनके साहित्य की भाषा बहुत सरल और बोलचाल की भाषा है। उनकी साहित्यिक व्यक्तित्व को डॉ. रामकुमार वर्मा अपने शब्दों में इसप्रकार व्यक्त करते हैं – " सुभद्रा जी हिंदी साहित्य की कोकिला हैं जो भावना की ऊँची डाल पर बैठकर गाती हैं। उस समय हृदय-मुकुल विकसित हो उठता है।"[1] इसप्रकार वे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग की निज भाषा की उन्नति के मार्ग में आगे विस्तार देती हुई दिखाई देती हैं।

3.3 राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति का स्वरूप :

3.3.1 राजनीतिक परिस्थिति :

सुभद्रा कुमारी चौहान ने जब साहित्य के क्षेत्र में कदम रखा तब राजनीति जीवन व समाज पर कुछ इस तरह हावी हो चुकी थी कि उससे अछूता रह पाना असंभव था। अपने देश एवं राष्ट्र के लिए समर्पित हृदय उनके जीवन का एकमात्र सत्य नहीं था बल्कि देश के लाखों मानवों के सुख-दुःख से जुड़ा हुआ सत्य था। देश की गुलामी से राजनीति की समझ ही देश को आजाद करने का मार्ग प्रशस्त कर सकती है यह सत्य सुभद्रा कुमारी चौहान को भलीभांति अवगत था। वे देश में उत्पन्न परिस्थितियों से ही राजनीतिक पृष्ठभूमि का आकलन करती हैं -

आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीयता का स्वर भारतेंदु काल से आरम्भ होकर आज भी विद्यमान है। विदेशी शासन के अत्याचारों से मिली यातनाओं तथा लोकतान्त्रिक

---

[1] मुकुल, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. – 14

जनता के मन में उठने वाले क्षोभ और असंतोष का चित्रण राष्ट्रीय कविताओं की प्रमुख विशेषताएँ रही हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की कवयित्रियों में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी', 'वीरों का कैसा हो बसंत', सेनानी का स्वागत', 'जालियाँवाले बाग में बसंत', 'स्वदेश के प्रति', 'झाँसी की रानी की समाधि पर', 'सभा का खेल' आदि कविताओं में हमारे देश की सामाजिक और राष्ट्रीय भावनाएँ गहरे तौर पर निहित हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान गृहस्थी के दायित्व के साथ-साथ कविता कर्म करती रहीं और स्वाधीनता आन्दोलन में भी सक्रिय रहीं

3.3.2 समसामयिक राजनीतिक घटनाएँ एवं राष्ट्रीय आन्दोलन :

सुभद्रा कुमारी चौहान का समय राजनीतिक घटनाओं एवं राष्ट्रीय अदोलनों से घिरा हुआ रहा। कई राजनीतिक घटनाओं ने भारत देश के इतिहास में अमिट छाप छोड़ दिये। उन ऐतिहासिक घटनाओं में भारतीय जनता देश के लिए प्राण देने को तैयार थी तथा अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए जीवन के अंतिम समय तक राष्ट्रीय आन्दोलनों में शामिल हुए, देश की स्वाधीनता के लिए पीछे नहीं रहे। तात्या टोपे, बाबू कुवर सिंह, नाना साहब पेशवा, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चन्द्र बोस, रानी लक्ष्मीबाई आदि महापुरुषों की वीरता एवं चतुरता से अंग्रेज हतप्रभ थे। कई स्वतंत्रता सेनानी देश की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करते हुए अंत में फंसी पर चढ़ गए। यही कारण है कि समसामयिक परिघटनाओं एवं राष्ट्रीय आन्दोलनों पर पुनर्विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है। इस अध्याय में सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के द्वारा स्वाधीनता के आंदोलनों एवं घटनाओं का विवेचन किया जा सकेगा।

3.3.2.1 प्रथम स्वाधीनता संग्राम :

1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। भारत की स्वतंत्रता के लिए 1857ई. में अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया, जो असफल रहा। इस स्वतंत्रता संग्राम के धुरंधर सेनानियों ने राष्ट्रव्यापी संघर्ष की आधारशिला रखी जिससे हजारों भारतीय जनता ने राष्ट्र और समाज के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। इस संग्राम ने लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत की और अंग्रेजों को भयभीत कर दिया। 1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बहुत से क्रांतिकारी शहीद हो गए, अंग्रेज सरकार ने विद्रोह का दमन करने के पश्चात् कई क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानियों को मार दिया। फलस्वरूप इस स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों का जीवन संघर्ष जनता के लिए प्रेरणास्पद बन गया।

स्वधीनता के इस महान आन्दोलन से यह साबित हुआ कि यह समूचे भारत का स्वतंत्रता संग्राम था। जिसमें भारत के हर कोने से आम जनता, किसान, सामंत, बूढ़े बच्चे, महिलाओं ने भाग लिया। श्री नाथूराम खड़गावत के अनुसार "इस विप्लव में साधारण जनता ने भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से भाग लिया था"[1]

1857 ई. का प्रथम स्वाधीनता-संग्राम हो या जलियांवाला बाग़ का नरसंहार इससे जुड़े संघर्ष सुभद्रा कुमारी चौहान को हमेशा बेचैन करते हैं। उनका जीवन देखा जाए तो वे अपना सम्पूर्ण जीवन को देश के लिए होम कर देती हैं, देश की स्वाधीनता के लिए अपने दुधमुंहे बच्चे को छोड़कर उनका जेल चले जाना, लाठियाँ और गोलियाँ खाना अकल्पनीय है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कथनी और करनी में कोई भेद न था यह बात

[1] 1857 की क्रांति एवं उसके क्रांतिकारी , संपादक- एस. एल. नागोरी, कान्ता नागोरी पृ. सं. -168

उनके साहित्य में भी स्पष्ट है। उनके जैसे कई लोगों के बलिदान से देश को पराधीनता से मुक्ति मिली है। वे अपनी कविता के माध्यम से देश के बच्चे, युवक, बूढ़े यहाँ तक कि सामान्य स्त्रियों को भी स्वाधीनता की ओज से पुकारती हैं, कविता में उनका यह स्वर इस प्रकार है –

"लुटे हुए दीनों की आशा, तू दासों की उज्जवल रत्न
भारतीय स्वातन्त्र्य-प्राप्ति की तू चिरजीवी सात्विक यत्न
मरे हुए को अमर बनाने
वाली तू संजीवन मन्त्र
प्रिय स्वराज्य-संचालन का है
एकमात्र तू जीवित यंत्र"[1]

स्वतंत्रता के योद्धाओं को शारीरिक कष्ट, आर्थिक हानि, कारावास और मृत्युदंड जैसे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कई मूल्य चुकाने पड़े। किन्तु उद्देश्य की पवित्रता के कारण इन मूल्यों का मूल्य और अधिक बढ़ गया। स्वातंत्र्य पूर्व के तत्कालीन समय में यह राजनीतिक चेतना सभी देश वासियों में फैल रही थी तत्पश्चात जेल अथवा कारावास भारतियों, क्रांतिकारियों, कवियों के लिए तीर्थ स्थान हो गया। सुभद्रा कुमारी चौहान की इन पंक्तियों को इस सन्दर्भ में देख सकते हैं –

"तिलक, लाजपत, गांधी जी भी
बंदी कितनी बार हुए
जेल गए जनता ने पूजा,

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 85

संकट में अवतार हुए।

जेल हमारे मनमोहन के

प्यारे पावन का जन्म स्थान

तुझको सदा तीर्थ मानेगा

कृष्णभक्त यह हिंदुस्तान।"[1]

वास्तव में सन 1857 के विद्रोह स्वरूप राष्ट्रीयता की पहली चिंगारी फूटी थी। किन्तु जिस तीव्रता व प्रचंडता से यह आग भड़की थी उससे अधिक भीषणता से उसे कुचल दिया गया था। यह स्पष्ट हो गया कि अंग्रेज भारत को अपना उपनिवेश बनाकर तथा भारतियों को हमेशा के लिए अपना गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं। इस प्रकार भारतीय जनता में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध असंतोष की भावना बढ़ने लगी।

3.3.2.2 नागपुर का झंडा आन्दोलन :

देश-प्रेम की भावना सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य का अनिवार्य अंग है। राजनीतिक कार्यकर्त्ता के रूप में एवं साहित्य लेखन में देश प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। यह देश प्रेम झंडा आन्दोलन के दौरान प्रगाढ़ रूप में उभर कर सामने आता है। झंडा आन्दोलन का उल्लेख सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता में विशेष रूप से मिलता है। उन्होंने पं. सुन्दरलाल की प्रेरणा से झंडा आन्दोलन में भाग लिया। राष्ट्रीय झंडा और उसकी महत्ता का चित्रण 'सेनानी का स्वागत' कविता में उन्होंने किया है-

"रण-भेरी का नाद सदा को

[1] मुकुल- विदा, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. -110

क्या अब रुक जायेगा ?

जिसको ऊँचा किया वही क्या

झंडा झुक जायेगा"[1]

इस तरह झंडा आन्दोलन के मान एवं महत्त्व को बढ़ाया गया है। लाल बाहदुर शास्त्री के शब्दों में झंडा के महत्त्व को इसप्रकार निरुपित सकते हैं, "हम रहें या न रहें, लेकिन यह झंडा रहना चाहिए और मुझे विश्वास है कि यह झंडा रहेगा, हम और आप रहें या न रहें लेकिन भारत का सिर ऊँचा होगा। भारत दुनिया के देशों में एक बड़ा देश होगा और शायद दुनिया को कुछ दे भी सके।"[2]

3.3.2.3 जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड :

स्वतंत्रता संग्राम में जालियाँवाला बाग हत्याकांड देश का शोक दिवस माना गया है। रोलेक्ट एक्ट के विरोध के फलस्वरूप हजारों निहत्थे जनता पर गोली चला दिया गया। इस नरसंहार पर कवियों ने शोकित गीत लिखे, उस भूमि को शहीद स्थल माना गया है। सन 1919 में जालियांवाला बाग़ हत्याकांड में हजारों लोग मारे गए जिसमें बच्चे बूढ़े युवा सभी इकट्ठे गोलियों से भून दिये गए। इस शोकित घटना को सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी कविताओं में लिखती हैं। अंग्रेजों की अनैतिकता पर प्रकाश डालते हुए लिखती हैं –

"परिमल-हीन पराग दाग-सा बन पड़ा है

हाँ ! यह प्यारा बाग़ फूल से सना पड़ा है।"[3]

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक रूपा गुप्ता, पृ. सं. -155

[2] भारत के स्वतंत्रता सेनानी, संपादक -डॉ. जीतेश नागोरी, कान्ता नागोरी, पृ. सं. 219

[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 92

इस शाहदत भूमि पर नमन करते हुए वे लिखती हैं –

“कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खा कर
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर
यह सब करना, किन्तु बहुत धीरे -से आना
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना ।”[1]

समसामयिक राजनीतिक घटना का अद्वितीय उदाहरण सुभद्रा कुमारी चौहान की ‘जालियाँवाला बाग’ शीर्षक कविता है। रौलेट एक्ट के विरोध में नृशंस हत्या हुई जिसके फलस्वरूप भारतवासियों में राष्ट्रीय चेतना की आँधी उठ गई। वे बलिदान के लिए तत्पर हो गए। सुभद्रा कुमारी चौहान इस घटना से आहत हुई, उनके हृदय को इस घटना ने आंतरिक चोट पहुँचाई। वे किसी भी क्षण इस घटना को भूलती नहीं थीं। कविता में उनकी यह चेतना इसप्रकार द्रष्टव्य है –

“मुझे कहा कविता लिखने को,
लिखने बैठी में तत्काल
पहिले लिखा जालियां वाला,
कहा कि बस हो गए निहाल ।”[2]

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 93

[2] मुकुल – मेरी कविता, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. -82

इस घटना के पश्चात् एक दहशत सी निर्माण हो गई ।ब्रिटिश लोग भारतीय व्यक्तियों का संतोष और सुख नहीं देख पाते थे । इस घटना के बाद भारतवर्ष में अंग्रेजों के प्रति एक प्रकार की घृणा निर्मित हो गई थी । वह असंतोष और घृणा के भाव को इसप्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता में देखा जा सकता है -

"हाथ काँपता हृदय धड़कता
है मेरी भारी आवाज
अब भी चौंकता है जालियाँ-
वालेका वह गोलन्दाज"[1]

इसी सन्दर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान का कवि मन बसंत के आगमन पर जालियाँ वाला बाग की स्थिति को इस प्रकार स्पष्ट करता है –

"यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते,
काले-काले कीट भ्रमर का भ्रम उपजाते
कलियाँ भी अधखिली, मिली है कणट ककुल से
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क है अथवा झुलसे ।"[2]

स्वतंत्रता संग्राम में जालियाँवाला बाग हत्याकांड देश के मुँह पर तमाचा था । हत्याकांड की तटस्थ जांच न होने पर गाँधीजी ने प्रसिद्ध असहयोग आन्दोलन किया जिसमें विदेशी का बहिष्कार और स्वदेशी को स्वीकार किया गया । कांग्रेस ने तत्पश्चात गांधी जी को 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' की पूर्ण सत्ता प्रदान की थी । लेकिन चौरा-चौरी

---

[1] मुकुल – राखी, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. सं. – 88

[2] मुकुल, जालियाँ वाला बाग में बसंत, सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ.सं. – 80

की हिंसात्मक घटना के बाद गांधी जी ने सत्याग्रह को स्थगित कर दिया था। सन 1920 से 1947 ई. तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की बागडोर गाँधी के हाथों में रही। अंत में वे भारत को आजादी दिलाने में सफल हुए। यही कारण रहा है कि इस युग को गांधी युग भी कहा जाता है।

गांधी जी ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनों को जन-आन्दोलनों में बदल दिया। भारतीय राजनीति में गांधी जी के आगमन से पूर्व राष्ट्रीय आन्दोलन शिक्षित वर्ग एवं माध्यम वर्ग तक ही सीमित दिखाई पड़ता है। भारत की आम जनता इस आन्दोलन से अनभिज्ञ तथा दूर थी। गांधी जी ने इस आन्दोलन में मजदूरों, किसानों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए कांग्रेस का संबंध गाँव तथा नगर से जोड़ दिया। इसके बाद भारत की समस्त जनता आन्दोलन में भाग लेने लगी। इस सन्दर्भ में के. दामोदरन लिखते हैं "उनके गतिशील नेतृत्व ने राष्ट्रीय संघर्ष को एक सच्चे जन-आन्दोलन का व्यापक स्वरूप प्रदान किया।"[1]

इसप्रकार स्वाधीनता आन्दोलन एवं राजनीतिक घटनाओं का महत्त्व सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य से व्यापक रूप में प्रकट होता है।

3.3.3 स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका :

स्वतंत्रता आन्दोलनों में स्त्रियों की राजनीतिक चेतना उन्नीसवीं शताब्दी से ही देखा जा सकता है। सर्वप्रथम सन 1857 से ही महिलाओं की भागीदारी सक्रिय रूप से दिखाई देती है। महिलाओं में राजनीतिक चेतना के उदय के सम्बन्ध में डॉ. रोमिला थापर का मानना है कि "महिलाओं की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने की वर्तमान समय में प्रमुख प्रेरणा

---

[1] भारत के स्वतंत्रता सेनानी, डॉ. जीतेश नागोरी, कान्ता नागोरी, पृ. सं. – 162

स्वाधीनता के राष्ट्रीय आन्दोलन द्वारा प्राप्त हुई है। इस आन्दोलन का प्रवर्तन उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ था तथा इसके सामाजिक प्रभाव अब तक हमारे ऊपर हो रहे हैं।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान रानी लक्ष्मीबाई को प्रखर प्रेरणा स्रोत मानती हैं उनका उदाहरण देकर वे जनसामान्य को जागरूक करती हैं खास कर स्त्रियों को जागरूक करना चाहती थीं जिससे स्त्रियाँ रानी लक्ष्मीबाई की प्रेरणा से खुद को सशक्त बना सकें और स्वधीनता की लड़ाई में पीछे न रहें। उसी प्रेरणास्रोत रानी लक्ष्मीबाई का जो स्मारक लोगों के ह्रदय में है वह अमिट है उनके स्मरण में सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

"जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे छप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,
तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान स्वयं राष्ट्रीय स्वतंत्रता में सक्रिय भूमिका निभा रही थीं। वे स्त्रियों को राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रेरणा देते हुई संबोधित करती हैं –

"सबल पुरूष यदि भीरू बनें, तो
हमको दे वरदान सखी।

[1] भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं का योगदान, एस. एल. नागोरी एवं कान्ता नागोरी, पृ. सं. -12 -13

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता पृ. सं. - 87

अबलाएँ उठ पड़े देख में, करें

युद्ध घमासान सखी।"[1]

स्वाधीनता की लड़ाई में सुभद्रा कुमारी चौहान ने रानी लक्ष्मीबाई को नायिका मानती हैं। युद्ध भूमि में वे एक महिला योद्धा के योगदान को रेखांकित करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता में 'खूब लड़ी मर्दानी...' के शब्दों में रानी लक्ष्मीबाई की वीरता को चिह्नित किया गया है। इससे पहले महिलाओं की वीरता की तुलना युद्ध भूमि में न के बराबर किया गया है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता में मर्दानी शब्द के रूप में मर्द शब्द का स्त्रीलिंग रूप प्रयुक्त हुआ है। यहाँ कवयित्री ने स्त्री की वीरता और साहस को स्वीकारोक्ति प्रदान की है। चूँकि युद्ध भूमि स्त्री का क्षेत्र बिल्कुल नहीं माना जाता रहा है लेकिन स्त्री कायर या कमजोर नहीं है, वह अपने कार्य क्षेत्र में अपना योगदान बखूबी निभाती है। यहाँ रानी लक्ष्मीबाई के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के लिए तथा युद्ध क्षेत्र में अन्याय के विरुद्ध लड़ती स्त्रियों की भूमिका को स्थापित करती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सिर्फ एक महिला स्वतंत्रता सेनानी का नामोल्लेख मिलता है। उन्होंने अन्य महिलाओं की भागीदारी को स्वीकार किया है लेकिन साहित्य के अंतर्गत किसी अन्य स्त्री का नामोल्लेख नहीं हुआ है। यह कमी सुभद्रा कुमारी चौहान की लेखन में खटकती है। उनके लेखन की इस कमी को बाद के कई साहित्यकारों ने चिह्नित किया है।

हालाँकि स्वाधीनता के आन्दोलनों में महिलाओं की विशेष भूमिका रही है। समग्रता में देखा जाए तो देश के सभी क्षेत्रों की महिलायें युद्ध क्षेत्र में अपनी भागीदारी निभाती रहीं, उन दिनों घोर अशिक्षा के कारण महिलाओं में विशेष जागृति नहीं थी। फिर भी इस

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. -103

अवसर पर वे पीछे नहीं रहीं। असहयोग आन्दोलन में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और सत्याग्रह में राष्ट्रव्यापी प्रयास में महिलाओं की भागीदारी को इस तरह रेखांकित किया गया है – "रौलट बिल, जालियाँवाला बाग हत्याकांड और तुर्की में खलीफा के साथ किया गया अन्याय -इन तीनों मुद्दों पर गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन शुरू करने का आह्वान किया। इस राष्ट्रव्यापी सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महिलाओं को पहली बार एक ऐसे राष्ट्रव्यापी कार्य में भागीदारी का अवसर मिला, जो राजनीतिक और पर भी महत्वपूर्ण था और सामाजिक तौर पर भी।"[1]

इसप्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी रचनाओं में स्वाधीनता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका की पहचान गंभीरता से करती हैं एवं स्त्री-पुरुष दोनों की एकजुट भागीदारी का समर्थन करती हैं।

3.3.4 स्वतंत्रता सेनानियों का गौरवगान :

स्वाधीनता आन्दोलन के समय सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ साम्प्रदायिक सद्भावना की एक महत्वपूर्ण छाप छोड़ती हैं। गाँधी जी को वे साम्प्रदायिक सद्भाव का अग्रदूत मानती थी। 1857 ई. का प्रथम स्वाधीनता संग्राम इसी साम्प्रदायिक सद्भाव का उदाहरण मानते हुए वे लिखती हैं –

"इस स्वतन्त्रता महायज्ञ में कई वीरवर आये काम,
नाना धुन्धूपंत, ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,

1 इक्कीसवीं सदी की ओर,भारतीय स्त्रियों का मुक्ति आन्दोलन , डॉ. राजम नटराजन पिल्लै, पृ. सं. -208

भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।"[1]

स्वाधीनता संग्राम में गाँधीजी, सुभाषचन्द्र बोस आदि के नेतृत्व में न जाने कितने वीर सेनानियों ने निस्वार्थ त्याग और बलिदान किया है, आजादी के लिए अपने प्राण दिये और अनेकों यातनाएँ झेली, वे लिखती भी हैं –

"तिलक, लाजपत, गाँधीजी भी

बन्दी कितनी बार हुए

जेल गये जनता ने पूजा,

संकट में अवतार हुए "[2]

इसके अलावा सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में राणाप्रताप, शिवाजी महाराज, छत्रसाल आदि राष्ट्र नायकों का चित्रण मिलता है जिनके त्याग बलिदान और वीर भावना से हमें प्रेरणा मिलती है।

इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय भावना का काव्य देशप्रेम, त्याग, बलिदान, आत्मसमर्पण और युगानुकूल हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की ओजस्वी कविता सर्वदा जन जन को प्रेरणा और प्रोत्साहन देती रहेगी।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में महापुरुषों का प्रशस्तिगान कविताओं की अपेक्षा कम हुआ है। पापी पेट और तांगेवाला कहानी में इस तरह का उल्लेख है। पापी पेट कहानी के पात्र कुंदनलाल के हृदय का द्वन्द में है। तांगेवाला कहानी में सन 1947 के क्रांतिवीरों अहमदशाह और तात्या टोपे का आदरपूर्वक स्मरण किया जाता है। तथा इन्हीं का इतिहास पढ़कर उसने सरकारी नौकरी को ठोकर मारी तथा किसी अंग्रेज को तांगा में न

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग – 1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. 115

[2] उपरोक्त, पृ. सं. 87-88

बैठाने की कसम खाते हुए देखा जा सकता है – “पर तांगे पर भी किसी साले फिरंगी को बैठकर तांगा न हाँकूंगा ।”[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में ऐतिहासिक पात्रों का महत्त्व निरूपित हुआ है । विशेष रूप से राष्ट्रीय आन्दोलनों के जननायकों की प्रेरणादायक गाथाएँ इतिहास में अंकित होने के साथ-साथ भारत के विभिन्न भाषाओं में साहित्यिक विधा के रूप में लिखा गया । स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित इन ढेरों रचनाओं का सिर्फ तत्कालीन महत्व नहीं है बल्कि उन रचनाओं में निहित स्वाधीनता की चेतना के महत्त्व को आज भी भुलाया या बिसराया नहीं जा सकता है । ये रचनाएँ भी स्वतंत्रता के बीज की भांति मनुष्य के मस्तिष्क में स्मृति बनकर रह गई हैं जो आज भी स्वतंत्रता के महत्व को उकेरती हैं । ‘वीरों का कैसा हो बसन्त’ कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान इतिहास को याद करते हुए लिखती हैं -

“कह दे अतीत अब मौन त्याग,
लंके, तुझ में क्यों लगी आग?
ऐ कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग,
बतला अपने अनुभव अनन्त,
वीरों का कैसा हो बसन्त ?”[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान को भारतीय इतिहास का गहरा ज्ञान था । लार्ड डलहौजी ने छल कपट व धूर्तता से कैसे एक-एक राज्य हड़पा इसका वर्णन सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी कविता में बड़े सटीक ढंग से करती हैं –

“अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट फिरंगी की माया,

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 231
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग – 1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. 129

व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,

डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,

राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया…

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,

कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,

उदैपुर, तंजौर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,

जब कि सिन्ध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी था वज्र-निपात,

बंगाले, मद्रास आदि की भी तो यही कहानी थी।"[1]

इस कविता में देश का इतिहास, संस्कृति और भूगोल सभी विद्यमान हैं। देश की माटी से उपजी हुई कविता है इसलिए जनता की जुबान पर चढ़ी हुई कविता है। यह हमारे देश की अत्यंत प्रसिद्ध रचना में से एक है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने भारत के अतीत की अर्थवत्ता के माध्यम से तत्कालीन समय में राष्ट्रीय चेतना की भावना को विकसित करने का प्रयास किया। सुभद्रा कुमारी चौहान स्वयं स्वतंत्रता – सेनानी थीं। जीवन में उन्होंने अपने कर्मों के उदहारण से इस भावना का विकास किया और रचनात्मक स्तर पर अपनी लेखनी से विकसित किया।

3.4 आर्थिक चेतना की अभिव्यक्ति का स्वरूप :

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य की पड़ताल करें तो उनके साहित्य में आर्थिक चेतना के तत्व दिखाई पड़ते हैं। इस उप-अध्याय में सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के माध्यम से आर्थिक विषमता और आर्थिक आत्मनिर्भरता को रेखांकित करने का प्रयत्न है।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग – 1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. 83-84

3.4.1 आर्थिक विषमता :

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में आर्थिक विषमता की जड़ों को चिह्नित किया जा सकता है । यह विषमता समाज में घर कर गई थी । यही स्थिति स्त्रियों के पक्ष में अधिक बुरी थी । समाज में आर्थिक आत्मनिर्भरता के विपरीत सोच वाले व्यक्ति भी होते हैं, जैसे – 'ग्रामीणा' कहानी में पंडित रामधन तिवारी अपनी पुत्री को नौकरी कराना नहीं चाहता था – "जब सोना साथ साल की हुई तो घर में एक मास्टर लगातार तिवारीजी ने सोना को हिंदी पढ़वाना प्रारंभ किया और थोड़े ही समय में सोना ने रामायण, महाभारत इत्यादि धार्मिक पुस्तकें पढ़ना सीख लिया । गाँव के सभी लोगों ने सोना की कुशाग्र बुद्धि की तारीफ की । इसके आगे, अधिक पढ़ाकर तिवारीजी को कन्या से कुछ नौकरी तो करवानी न थी; इसलिए सोना का पढ़ना बन्द करवा दिया गया ।"[1]

'पापी पेट' कहानी में आर्थिक मजबूरी इतनी है कि पेट के लिए निहत्थे लाठी-चार्ज के शिकार हो जाते हैं । इसपर राय साहब कुंदनलाल जी के द्वारा आत्मचिंतन भी किया जाता है कि – "न जाने कितने निरपराधों के सिर फूटे होंगें ? दिमाग ने कहा, फूटने दो । जब तक सरकार की नौकरी करते हो तब तक तुम्हें उसकी आज्ञा का पालन करना ही पड़ेगा और यदि आज्ञा का पालन नहीं कर सकते हो तो ईमानदारी इसी में है कि नौकरी छोड़ दो । माना कि आखिर ये लोग स्वराज्य के लिए झगड़ रहे हैं । उनका काम परमार्थ का है; सभी के भले के लिए है, पर किया क्या जाए ? नौकरी छोड़ दी जाए तो इस पापी पेट के लिए भी तो कुछ चाहिए ? हमारे मन में क्या देश-प्रेम नहीं है ? पर खाली पेट देश-प्रेम नहीं हो सकता । आज नौकरी छोड़ दें, तो क्या स्वराज्य वाले मुझे 600 दे देंगे ? हमारे पीछे भी तो गृहस्थी लगी है, बाल बच्चों का पेट तो पालना ही होगा ।"[2]

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग - 2, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 128

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग - 2, रूपा गुप्ता (संपा), पृ. सं. - 66

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में आर्थिक विषमताओं के विविध रूप देखने को मिलते हैं। 'आहुति' कहानी के राधेश्याम जी पत्नी की मृत्यु के बाद विरक्त हो गए थे, वे अपने काम में गरीबों की मदद कर इस रूप में करते थे, -"जीवन से उन्हें वैराग्य-सा हो गया था। आने-जाने वालों को वे संसार की असारता और नश्वरता पर लेक्चर दिया करते। कचहरी जाते, वहाँ भी जी न लगता। जिस लोगों से पचास रुपया फ़ीस लेनी होती उनका काम पच्चीस में ही कर देते। गरीबों के मुकद्दमें में वे बिना फ़ीस के ही खड़े हो जाते। सोचते, रुपये के पीछे, हाय-हाय करके करना ही क्या है ? किसी तरह जीवन की ढकेल ले जाना है। तात्पर्य है कि जीवन में उन्हें कोई रूचि ही न रह गयी थी।"[1] इस प्रकार राधेशयाम जी का जीवन निराशा से भरा हुआ था, वे अपना फ़ीस गरीबों में खर्च कर देते थे।

'रूपा' कहानी में लेखिका एक माता की आर्थिक मजबूरी का चित्रण करती हैं। बेटी के इलाज के पैसे जोड़ने के लिए एक पिता लड़ाई पर चला जाता है। कहानी की पात्र रूपा मेहनत मजदूरी से पैसा कमाती है लेकिन ईलाज नहीं करा पाती है। वह अपनी आर्थिक सच्चाई लेखिका को इस प्रकार बतलाती है - "बहनजी ! मेरी गोपा इसी तरह थी जैसी आपकी ममता है। आपने बम्बई जाकर सैकड़ों रूपये खर्च करके ममता का मुँह ठीक करवा लिया है, पर मेरे पास रुपया कहाँ से आता। गोपा का बाप कहता था -खूब रुपया कमाकर अपनी गोपा को बम्बई ले जाकर आपरेशन कर देंगे, तब सब ठीक हो जाएगा। और इसलिए, खूब रुपया कमाने के लिए वह लड़ाई पर चला गया। तब से उसकी कोई खबर नहीं मिली। इधर मैं अकेली गोपा जरा-सी, जहाँ मेहनत-मजदूरी की जाती वहीं बच्चे और कभी बड़े-बड़े लोग तक गोपा को साफ़ न बोलने पर चिढ़ाया करते। लड़की

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग - 2, रूपा गुप्ता (संपा), पृ. सं. – 111-112

चिढ़ती, दिन भर रोती और मैं किसका मुँह पकड़ती। बिना मेहनत मजदूरी के काम न चलता और जहाँ जाती वहीं यह बात होती।"[1]

3.4.2 आर्थिक आत्मनिर्भरता :

हमारे समाज में शिक्षा के परिणामस्वरूप महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं। समाज में निम्न वर्ग की महिलाएँ खास कर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ कृषि और कुटीर उद्योगों में सहायता प्रदान करती हैं। साथ ही साथ शिक्षा के प्रभाव के कारण यह परिवेश भी देखा जा सकता है कि मध्यवर्गीय महिलाएँ तथा उच्च वर्ग की महिलाएँ भी नौकरी कर रही हैं और परिवार को आर्थिक सहयोग देती हैं। फलस्वरूप शिक्षा तथा सरकारी नौकरी प्रतिष्ठा का सूचक समझा जाने लगा है। आर्थिक सुदृढ़ता शिक्षा के माध्यम से ही महिलाओं में आता गया है। समाज के पुरुषों में आर्थिक चेतना तो होती है लेकिन महिलाओं में यह आर्थिक आत्मनिर्भरता शिक्षा के माध्यम से पाया जाता है।

इस दृष्टि से सुभद्रा की कहानी 'दो सखियाँ' में आर्थिक आत्मनिर्भरता की बात इस प्रकार सामने आती है – "रामी की माता के सामने एक समस्या थी। वह सोच रही थी – रामी इतना पढ़ गयी है। चल-ढाल, बात-व्यवहार से वह मुझ अपढ़ की लड़की सी जान ही नहीं पड़ती। मैं इसका विवाह कैसे और कहाँ करूँगी ? फिर वह सोचती नहीं विवाह कोई बात नहीं। मेरी रामी स्कूल की मास्टर बनेगी। और तब रामी मुझे यहाँ मालिन का काम न करने देगी।"[2] इस प्रकार स्त्री जब पढ़ जाती है तब वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का रास्ता खुद ढूंढ़ लेती है।

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग - 2, रूपा गुप्ता (संपा), पृ. सं. - 228

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग - 2, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 324

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानी 'मछुए की बेटी' में पिता के काम में हाथ बंटाती है – "नदी के पार और उस पार से इस पार लाने का चौधरी ने ठेका ले रखा था। चौधरी की अनुपस्थिति में तिन्नी अपने पिता का काम बड़ी योग्यता से करती थी।"[1] इस प्रकार तिन्नी अपने पिताजी की अनुपस्थिति में खुद नाव चलाती थी। तिन्नी के भीतर आर्थिक सम्पन्नता की चेतना इस प्रकार देखा जा सकता है – "इधर अपने पास ही कोई रियासत है न ? वहीं के राजा साहब नदी के उस पार शिकार खेलने जायेंगे। महीना-पंद्रह दिन का काम है मनोहार ! खूब अच्छा रहेगा। खूब पैसे भी मिलेंगे। मैं तुम्हें भी दिया करूँगी। पर इतना वादा करो कि जब तक बापू लौट के आवें तुम रोज मेरे साथ डाँड़ चलाया करोगे।"[2]

जमींदार और उच्च वर्ग को सरकार से सुरक्षा प्राप्त हो जाने के कारण विलासिता और आराम की प्रवृत्ति समाज में विद्यमान थी जिसका नग्न चित्रण परिवर्तन कहानी हुआ है। इसी विलासिता का दूसरा चित्र 'मँझली रानी' कहानी में दिखाई देता है। केवल आर्थिक विषमता के कारण पढ़ी लिखी लड़की का तालुकेदार के विलासी लड़के से विवाह कर दिया जाता है।

अंग्रेजों की आर्थिक नीति के फलस्वरूप स्वदेशी आन्दोलन का जन्म हुआ। भारत की दुर्दशा अंग्रेजों द्वारा किए गए आर्थिक शोषण के द्वारा हुई। आर्थिक दुर्दशा को राजनैतिक दुर्दशा का कारण मानते हुए विदेशी वस्तुओं के परित्याग एवं स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया। यह व्यवहार देश की आर्थिक दशा को सुधारने का एक सर्वमान्य प्रारंभिक उपाय मालूम पड़ता है। स्वदेशी तथा खादी-प्रचार की आर्थिक योजनाओं राजनीति दृष्टि से महत्वपूर्ण था। ऐसा माना जा सकता है कि राष्ट्रीय क्षेत्र में

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग - 2, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 100

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग - 2, संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 101

गांधी जी के आगमन के पूर्व ही स्वदेशी आन्दोलन ब्रिटिश साम्राज्य की आर्थिक नीति पर प्रबल प्रहार था।

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में आर्थिक चेतना के स्वर आंशिक रूप में दिखते हैं। आर्थिक विपन्नता समाज के अधिकांश परिवारों में होते थे इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य भी आर्थिक विपन्नताओं को अधिक मुखर रूप में सामने लाता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान एक सजग और संवेदनशील रचनाकार हैं। एक व्यक्ति और रचनाकार दोनों ही स्तर पर उन्होंने अपने दायित्त्व का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। जिस समय वे रचनारत थीं, वह समय स्वाधीनता आंदोलन का समय था। देश के नेता जनता में गुलामी से लड़ने की भावना का विकास करने के लिए प्रयासरत थे। सुभद्रा कुमारी चौहान भी अपनी रचनाओं के माध्यम से इस बड़े प्रयास में अपना योगदान देती हैं परन्तु वह समाज में मौजूद मानवविरोधी परम्पराओं और रीतियों का भी अपनी लेखनी से प्रतिकार करती हैं। इसलिए उनके लिए सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय चेतना साथ-साथ चलने वाले विचार हैं। उनकी रचनाओं से यह स्पष्ट अभिप्रेत होता है कि सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्ति ही सच्चा राष्ट्रवादी हो सकता है और कोई भी राष्ट्र अपनी आंतरिक कमजोरियों से लड़कर ही मजबूत बन सकता है। इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में समाजविरोधी परम्पराओं का हर संभव प्रतिकार दिखाई पड़ता है। उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना एक दूसरे में संगुम्फित दिखाई पड़ती है।

चतुर्थ अध्याय

चौथा अध्याय

सुभद्रा कुमारी चौहान का आलोचना-कर्म

हिंदी साहित्य के इतिहास में सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम अत्यंत महत्त्वपूर्ण कवयित्री के तौर पर दर्ज है। बाद में उन्हें अपने समय के महत्त्वपूर्ण कहानी-लेखिका के तौर भी स्वीकार किया गया। एक कवयित्री और कहानी-लेखिका के साथ -साथ वह एक महत्त्वपूर्ण आलोचक के रूप में भी दिखाई पड़ती हैं। अपने निबंधों और भाषणों में उन्होंने अपने समय की समस्याओं के साथ-साथ स्त्री लेखन की विशिष्टता और महत्त्व पर भी प्रमुखता से विचार किया है। सुभद्रा कुमारी चौहान के समय पर गौर करने से यह दिखाई पड़ता है कि उस समय के साहित्यकार एक ही साथ कई विधाओं में महत्त्वपूर्ण लेखन कर रहे थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, इतिहास लेखक और निबंधकार के साथ एक कवि भी थे, ऐसा ही अन्य लेखकों के सन्दर्भ में भी देखा जा सकता है। सुभद्रा कुमारी चौहान से पहले और तुरंत बाद के रचनाकारों के सन्दर्भ में बहुत साफ तौर पर ऐसा दिखाई पड़ता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अलावा महादेवी वर्मा, निराला, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द आदि का नाम इस संदर्भ में लिया जा सकता है। एक कवयित्री के तौर पर सुभद्रा कुमारी चौहान की इतनी ख्याति हुई कि उनके आलोचक रूप पर विचार ही नहीं किया गया। आ. रामचंद्र शुक्ल अपने निबंधों के आधार पर एक बड़े आलोचक के रूप में स्थापित होते हैं वैसे ही सुभद्रा कुमारी चौहान के निबंधों और भाषणों पर भी विचार किया जाए तो वह अपने समय की एक महत्त्वपूर्ण आलोचक प्रतीत होती हैं।

4.1 स्त्री लेखन सम्बन्धी विचार :

सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्रियों द्वारा साहित्य - सृजन किए जाने को बहुत महत्त्वपूर्ण मानती हैं । उनका मानना है कि स्त्रियों में भावुकता पुरुषों की अपेक्षा अधिक होती है । स्त्रियाँ जब साहित्य की रचना करेंगी तब साहित्य और निखर कर सामने आएगा । इस सन्दर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान कहती भी हैं, "साहित्य में जिस प्रकार कवि का स्थान ऊँचा है उस प्रकार कवियों में भी मेरा विश्वास है, स्त्री कवियों का स्थान पुरुष कवियों की अपेक्षा ऊँचा रहेगा । कविता प्राय: भाव प्रधान रहती है – और स्त्रियों के समान भावुकता पुरुषों में नहीं मिल सकती ।"[1]

एक आलोचक के पास अपना एक मत होता है और उस मत को प्रमाणित करने के लिए वह तर्क की मदद लेता है । आलोचक के मत से सहमत-असहमत हुआ जा सकता है जैसे यहाँ सुभद्रा कुमारी चौहान के मत से असहमत हुआ जा सकता है पर उनकी आलोचना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता । सुभद्रा कुमारी चौहान का स्पष्ट मानना है कि एक कवि के रूप में स्त्रियाँ पुरुषों से बेहतर कवि साबित हो सकती हैं । इस संदर्भ में वह अपना मत व्यक्त करती हुई कहती हैं कि कविता भावों और भावनाओं का व्यापार है । जिस के भीतर भावों की सघनता अधिक होगी, जिसे भावनाओं की समझ ज्यादा होगी वह बेहतर कवि होगा । ऐसे में उनका मत है कि एक स्त्री का जीवन भावों और भावनाओं के ज्यादा निकट होता है । इसलिए स्त्री कवयित्रियों का स्थान वे पुरुष कवियों की तुलना में ऊँचा मानती हैं । यहाँ यह भी ध्यान रखने की बात है कि अत्यधिक भावुकता काव्य-रचना के लिए अहितकारी भी साबित हो सकता है । स्त्रियों का पुरुषों की तुलना में ज्यादा भावुक होना, उनके श्रेष्ठ कवि होने को

---

[1] सुभद्राकुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 46

प्रमाणित नहीं करता । इसके बावजूद सुभद्रा कुमारी चौहान का प्रकट मत यहाँ विचारणीय प्रतीत होता है ।

सुभद्रा कुमारी चौहान के मत को इस सन्दर्भ में भी देखा जाना चाहिए कि वे स्त्री कवयित्रियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करती हैं । स्वधीनता-संघर्ष के दौर में सुभद्रा कुमारी चौहान ही थीं जो हर महिला को लिखने की ओर प्रेरित करने का प्रयास अपने स्तर से कर रही थीं । सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्वयं बचपन से ही कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था । वह किसी भी विषय पर बचपन में ही तुकबंदी करने में सक्षम हो गईं थीं, आगे चलकर उनकी यही प्रतिभा उन्हें हिंदी की सर्वश्रेष्ठ कवयित्रियों की श्रेणी में स्थापित करता है । इस प्रकार उन्होंने अपने ही विद्यालय में पढ़ने वाली और उनसे एक कक्षा कनिष्ठ और तब सातवीं कक्षा की छात्रा महादेवी वर्मा को कविता लिखते हुए देखा था और उन्हें भरपूर प्रोत्साहित भी किया था ।

सुभद्रा कुमारी चौहान की नज़र में स्त्री की महत्ता उसके हृदय की उच्चता या एक व्यक्ति के तौर पर उसकी श्रेष्ठता से ज्यादा थी । नारी हृदय की उच्चता को सुभद्रा कुमारी चौहान इस प्रकार स्पष्ट करती हैं, "नारी हृदय की तुलना हम वायु मापक यंत्र (barometer) से कर सकते हैं जिसमें छोटे से छोटा परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगता है । स्त्री हृदय की कोमल वृत्तियाँ अत्यधिक सजग और सजीव रहती हैं । उनकी हृदय वीणा का प्रत्येक तार इतना कसा और खिंचा रहता है कि वह वातावरण के सूक्ष्मातिसूक्ष्म आघात से निनादित हो उठता है । शरीर और मनोविज्ञान के पंडितों का कहना है कि स्त्रियों का शरीर, रचना और मन पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक परिष्कृत है ।"[1]

[1] सुभद्राकुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 46

स्त्रियों के ह्रदय की श्रेष्ठता एवं उनकी विशिष्टता को रेखांकित करने के लिए वह वायु - मापक यंत्र का उदहारण देती हैं। गौरतलब है कि एक आलोचक के तौर पर वह अपनी बात को साबित करने के लिए वैज्ञानिकता का सहारा लेती हैं, यह लक्षित करने वाला पक्ष है। यह सच है कि वायु मापक का आविष्कार 1643 ई. में ही हो गया था पर उसकी विशिष्टता के बारे में हिंदी समाज में कितनों को पता था ? उन्हें न सिर्फ वायु - मापक यंत्र की जानकारी थी बल्कि वह उसके कार्य करने की प्राविधि और उसकी विशिष्टता से भी वे परिचित थीं। उनका स्त्री - ह्रदय की तुलना वायु मापक यंत्र से करना अचंभित करता है और उनकी वैज्ञानिक सोच को भी प्रकट करता है। किसी भी रचनाकार का ह्रदय अगर वायु - मापक यंत्र की तरह हो और वह अपने आस-पास के मामूली से मामूली बदलावों को अगर लक्षित कर पाता है तो वह निश्चित रूप से श्रेष्ठ रचनाकार होने की योग्यता रखता है। सुभद्रा कुमारी चौहान को यह योग्यता स्त्रियों में ज्यादा दिखाई देता है और इसलिए वह स्त्री रचनाकारों की श्रेष्ठता के प्रति आश्वस्त हैं। एक आलोचक की यह भी खासियत होती है कि वह अपना एक नजरिया रखता है और यह सुभद्रा कुमारी चौहान में दृष्टिगोचर होता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान अपने मत के समर्थन में शरीर और मानव - मन का अध्ययन करने वाले विद्वानों के मत का भी हवाला देती हैं, जिनके अनुसार स्त्रियों का मन पुरुष की तुलना में ज्यादा परिष्कृत होता है। बहुधा यह स्वीकार किया जाता है कि वह स्त्री ही है जिसके अंदर प्रेम कूट - कूटकर भरा हुआ है, वह इस संसार में हर किसी से प्रेम करना जानती है। एक नारी ह्रदय में सबसे अधिक ममता, दया, करूणा जैसे अच्छे गुण होते हैं, वह संसार को अपने प्रेम से बाँध कर रखती है, उसकी ममता से ही एक बच्चे का भविष्य उज्जवल होता है। इसलिए स्त्रियों को ममतामयी भी कहा जाता है। जिस भी व्यक्ति के अन्दर ममता और दया

का भाव भरा हो वह एक इंसान और रचनाकार के तौर पर बेहतर साबित हो सकता है। सुभद्रा कुमारी चौहान भी उसी नारी हृदय के प्रेम को स्पष्ट करती हुई लिखती हैं, "प्रेम और बलिदान मनुष्य को पशु की श्रेणी के उठाकर देवत्व के पद पर पहुँचाते हैं। पारस वह है जो लोहे को भी सोना बना देता है- और वह हमको मिलेगा विशेष मात्रा में स्त्रियों के अंदर।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान जिस समय रचनारत थीं वह समय स्वाधीनता के भीषण संघर्ष का समय था। त्याग और बलिदान को उस समय सबसे बड़ा मूल्य समझा जाता था। आज भी त्याग और बलिदान जैसे मूल्यों का महत्त्व कम नहीं हुआ है, पर वह समय इस मामले में विशेष था। सुभद्रा कुमारी चौहान इसलिए कहती हैं कि प्रेम और बलिदान इंसान को सामान्य इंसान से विशिष्ट बना देता है। आज भी हम अपने समाज को देखें जहाँ गुलामी से सीधी लड़ाई नहीं है, किसी औपनिवेशिक सत्ता से सीधे तौर पर हमारा संघर्ष नहीं चल रहा है तब भी सबसे ज्यादा प्रेम और त्याग की भावना स्त्रियों में ही दिखाई देती है और वही हैं जो विभिन्न स्तरों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बलिदानी देकर इस समाज का कल्याण कर रही हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान के अनुसार उस समय भी ये भावनाएं सबसे ज्यादा स्त्रियों के अन्दर ही मौजूद थीं। वे परिवार का भी खयाल रख रहीं थीं और देश की आजादी के लिए पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर संघर्षरत भी थीं। स्वयं सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन और उनका संघर्ष इसका सबसे उत्तम उदाहरण है।

स्त्रियों के महत्त्व को बहुधा अनदेखा कर दिया जाता रहा है। उनके सीधे तौर पर संघर्ष में शामिल नहीं होने पर उनके योगदान को महत्त्वपूर्ण नहीं माना जाता। एक सजग स्त्री ही इस तरह की मान्यताओं का प्रत्याख्यान कर सकती है। सुभद्रा कुमारी चौहान यह प्रयास तब कर

---

[1] सुभद्राकुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 46

रहीं थी जब स्त्रियों के मत को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता था। उस समय तो स्त्रियों की भागीदारी को ही उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा था जबकि सच यह है कि सदियों से समाज-निर्माण में स्त्रियों ने बलिदान दिया है। उनकी इस बलिदानी के साथ-साथ उनकी गुलामी का इतिहास भी रहा है, उनके अस्तित्व और अस्मिता का प्रश्न भी रहा है। सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्री की महानता और शक्ति का बखान भी करती हैं और सवाल करती हुई कहती हैं, "स्त्रियों के समान प्रेम और बलिदान किसने किया है। इतिहास इसका साक्षी है, वे दिन और रात प्रत्येक घड़ी पल-पल जीवन भर बलिदान करती हैं – मुस्कुराते हुए। संसार में बड़े से बड़े कर्मयोगी, योद्धा, विद्वान और कवि ने स्त्रियों की स्फूर्तिदायिनी शक्ति को मुक्त कंठ से स्वीकार किया है।"[1]

स्त्रियों के त्याग के महत्त्व को स्वीकार करते हुए वे पुरुषों का विरोध नहीं करतीं। इतिहास में स्त्रियों के योगदान को स्वीकार करते हुए वे बताती हैं कि कई महापुरुषों द्वारा खुले मन से स्त्रियों के योगदान को स्वीकार किया गया है। प्राकारांतर से वह स्त्रियों को खुद का महत्त्व और भूमिका को समझने के लिए आमंत्रित करती हैं। बहुधा स्त्रियाँ खुद को ही कम आँकती हैं और अपनी सामाजिक और साहित्यिक भूमिका को समझ नहीं पातीं। सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य और व्यक्तित्व भी तत्कालीन स्त्रियों के लिए एक उदाहरण की तरह था।

सुभद्रा कुमारी चौहान सतर्क दृष्टि से इतिहास में स्त्रियों की शक्ति की महानता को पुरुषों द्वारा स्वीकार करने को प्रस्तुत करती हैं। वे बताती हैं कि स्त्रियों की प्रेरणा से ही पुरुषों ने भारतीय साहित्य में अविस्मरणीय काम किये हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्रियों की प्रेरक छवि

[1] सुभद्राकुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 46

को स्वीकार करते हुए कहती हैं, "विश्व विजयी नेपोलियन सदा अपने माता का गुणगान करता रहा । अमर ब्रिटिश कवि दांते अपनी प्रेयसी का आभारी है । तुलसीदास की रामभक्ति की प्रेरिका उनकी पत्नी थी । लंका की विजयकामना सीताजी के कारण रामचंद्र जी के मन में हुई थी और वह राधिका का ही निष्काम प्रेम था, जिसने गीता का तत्त्व श्रीकृष्ण को सिखलाया था।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान का स्त्री चिंतन भारतीयता और अपने समाज की धार्मिक-सांस्कृतिक मान्यताओं के भीतर ही निर्मित-विकसित होता है । उस समय जैसा समाज था, उसकी जो मान्यताएं थीं, उनकी अवहेलना करके स्त्रियों की बेहतरी की बात तब सोची भी नहीं जा सकती थी । उस समय का समाज उसे स्वीकार नहीं कर पाता । सुभद्रा कुमारी चौहान यह भी मानती हैं कि स्त्री देवी है उसके अंदर ऐसी शक्तियाँ हैं जो उसे पुरुष से अलग और खास बनाती है, एक औरत जननी के रूप में इस संसार में सर्वाधिक महत्त्व रखती हैं । उनके अनुसार यह पूरा संसार वास्तव में यदि स्वर्ग बना हुआ है तो वह सिर्फ स्त्रियों की वजह से है । यदि स्त्रियाँ न हो तो यह संसार शमशान से कम नहीं होगा, इसे सुभद्रा कुमारी चौहान इस प्रकार स्पष्ट करती हैं, "समस्त मानव जाति स्त्रियों की गोद में पली है और उसकी ऊँगली के सहारे खड़ा होना और चलना सीखा है । पुरुषों ने ही यह घोषित कर रखा है कि स्त्रियाँ वास्तव में देवी हैं, जिन्होंने इस मृत्युलोक को स्वर्ग बना रखा है ।"[2]

4.1.1 समकालीन स्त्री - रचनाशीलता की प्रासंगिकता :

वे तत्कालीन साहित्य लेखन में महादेवी वर्मा को प्रमुख मानती हैं । महादेवी वर्मा उनकी बचपन की सहेली थीं, वे दोनों सहेलियाँ हमेशा एक-दूसरे को प्रोत्साहित करती थीं ।

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2 , संपा. रूपा गुप्ता , पृ. सं. - 46

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं - 46 (नर्मदा' पावस अंक, वर्ष-9 , अंक-2, 2002 में प्रकाशित)

इसलिए उनके इस वक्तव्य में भी उनका प्यार उभर कर सामने आया है, “आजकल गीति काव्य का युग है। इसके प्रवर्तकों में महादेवी वर्मा को प्रमुख स्थान प्राप्त है। महादेवी की आध्यात्मिक प्रेमाभिव्यंजना हमारे वर्तमान साहित्य की एक विशेषता है। यह एक ऐसी विशेषता है जो उने गीतों को अपने माधुर्य और विचार सूक्ष्मता के कारण किसी भी भाषा के साहित्य के लिए गौरव की वस्तु बन सकती है”[1]। आज महदेवी वर्मा के महत्त्व को हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रमुखता से स्वीकार किया जाता है पर सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा उन्हें उनके समय में ही महत्त्वपूर्ण रचनाकार के तौर पर रेखांकित करना उनके आलोचक रूप के महत्त्व को प्रदर्शित करता है। इतना ही नहीं वे महादेवी की कविता के उस दार्शनिक पक्ष को भी व्याख्यायित करने का प्रयास करती हैं जिसकी वजह से महादेवी को अपने समय में साहित्य-पंडितों की कटु आलोचना का शिकार होना पड़ा था। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, मुकुटधर पाण्डेय, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आदि ने रहस्यवाद को आधार बनाकर महादेवी सहित अन्य छायावादी कवियों की कठोर आलोचना की थी और उनके रहस्यवाद को बाहरी प्रभाव मानते हुए, स्वाभाविक नहीं माना था। इस सम्बन्ध में यदि सुभद्रा कुमारी चौहान के मत को महत्त्व मिलता तो इसे संभवतः बेहतर तरीके से समझा जा सकता था। उन साहित्य के पंडितों और तत्कालीन समय में रहस्यवाद आधारित आलोचना को लक्ष्य करते हुए उन्होंने लिखा, “साहित्य के पंडित महादेवी के गीतों में रहस्यवाद देखते हैं। परन्तु वास्तव में वे गीत इतने स्पष्ट हैं कि जितने कि उनमें गुंथे हुए तारे, संध्या, रजनी, इंद्रधनुष, कलिका, पुष्प, प्रभात और चन्द्रमा।”[2]

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 48
[2] सुभद्राकुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 48

सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी जी की कविताओं की प्रशंसक थीं। वे सर्वदा महादेवी जी का उदाहरण पेश करती थीं और उन्हें अनुकरणीय मानती थीं। उनकी प्रशंसा करने के साथ-साथ वह एक रचनाकार के तौर पर महादेवी वर्मा के काव्य की उन विशेषताओं को भी स्पष्ट करती हैं जिस वजह से उन्होंने अपना स्थान हिंदी साहित्य में सुरक्षित कर लिया। जिस समय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिंदी में गीतों के बढ़ते प्रचलन का, विदेशी प्रभाव मानकर विरोध कर रहे थे उस समय सुभद्रा कुमारी चौहान गीतों के महत्त्व को विवेचित कर रही थीं। छायावाद पर विचार करने के क्रम में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, " 'कला कला की पुकार' के कारण योरप में गीत मुक्तकों (लिरिक्स) का ही अधिक चलन देख कर यहाँ भी उसी का जमाना यह बता कर कहा जाने लगा कि अब ऐसी लम्बी कविताएँ पढ़ने की किसी को फुर्सत कहाँ जिनमें कुछ इतिवृत्त भी मिला रहता हो। अब तो विशुद्ध काव्य की सामग्री जुटाकर सामने रख देनी चाहिए जो छोटे-छोटे प्रगीत मुक्तकों में ही संभव है। इस प्रकार काव्य में जीवन को अनेक परिस्थितियों की ओर ले जाने वाले प्रसंगों या आख्यानों की उद्भावना बंद सी हो गई"[1]। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इस टिप्पणी से उनके विचारों को स्पष्टता से समझा जा सकता है। आचार्य शुक्ल गीतों को मात्र कलात्मक अभियक्ति मानते थे और उन्हें जीवन की स्थितियों से विछिन्न मानते थे, जबकि सुभद्रा कुमारी चौहान के अनुसार, "हिंदी भाषा को गीतों द्वारा माँजकर महादेवी ने उसमें अत्यधिक कोमलता और मधुरता उत्पन्न कर दी है। उसी प्रकार महादेवी द्वारा प्रचलित छंद आज हिंदी में अधिकांश कवियों द्वारा अपनाया जा रहा है। गीति काव्य महादेवी के गीतों के अन्दर जैसे अपनी पूर्णता में छलक सा उठा है...।"[2]

---

[1] हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संस्करण 2003, पृ. सं. - 355

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 48-49

एक आलोचक के लिए उसकी ऐतिहासिक चेतना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। इतिहास - विवेक के बिना आलोचनात्मक - विवेक परिपूर्ण नहीं हो सकता। सुभद्रा कुमारी चौहान न सिर्फ़ महादेवी के महत्त्व को स्वीकार करती हैं बल्कि उनके महत्त्व का विश्लेषण हिंदी साहित्य के इतिहास के आईने में भी करती हैं। इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी के गीति-काव्य परम्परा में सूरदास, मीराबाई आदि के बाद महादेवी वर्मा का स्थान मानती हैं। वे कहती हैं, "आदि गीतों में सम्पूर्ण स्त्री हृदय का जो कि प्रेम का प्रतीक है उज्जवल चित्र खिंच गया है। सूर और मीरा के बाद प्रेम की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति, भावों की कोमलता और भाषा की सरलता महादेवी में उसी तीव्रता से संगीतमय हो उठी है।"[1]

4.1.2 समकालीन स्त्री रचनाकारों की पड़ताल :

सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्रियों की उन्नति से प्रसन्न होती थीं। इसलिए वे हर्षपूर्वक विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने वाली महिलाओं का नाम लेती हैं। उनकी मेहनत और सराहनीय कदम को प्रोत्साहित करती हैं। तभी वे इस प्रकार लिखती हैं, "हर्ष का विषय है स्त्रियाँ चित्रकला की ओर भी बढ़ रही हैं। स्वयं महादेवी ने अपने सांध्य गीत में चित्रकला की और भी बढ़ रही हैं। स्वयं महादेवी अपने सांध्यगीत में चित्रकला का प्रशंसनीय आरम्भ किया है। श्रीमती तोरन देवी लली, प्रियंवदा देवी, राजकुमारी चौहान, तारा देवी पांडेय, रामेश्वरी देवी, चकोरी, रामेश्वरी गोयल, राजेश्वरी नलिनी, रत्न कुमारी, हीरा देवी चतुर्वेदी, होमवती, सूर्यदेवी दीक्षित, गोपाल देवी, कमला कुमारी, राज देवी, शकुंतला श्रीवास्तव, शकुंतला देवी खेर,

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 49

विष्णु कुमारी मंजू आदि ने भी हमारे साहित्य की अभिवृद्धि की है और कर रही हैं।"[1] इन नामों पर गौर करें तो ये नाम हमें पहचाने हुए से नहीं लगते। हिंदी साहित्य के इतिहास - ग्रंथों में इन महिला रचनाकारों का जिक्र तक दिखाई नहीं पड़ता। साहित्य की श्रीवृद्धि करने के साथ सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी समकालीन रचनाशीलता को पहचानते हुए अपने व्यापक साहित्यिक और सामाजिक दायित्त्व का निर्वाह करती हैं। सुमन राजे के 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास' लिखे जाने के बहुत वर्ष पहले सुभद्रा कुमारी चौहान उस आधी आबादी के महत्त्व को स्वीकार करती हैं और उन्हें उनके नाम के साथ सामने लाती हैं। यह उनका हिंदी साहित्य के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाना चाहिए।

सुभद्रा कुमारी चौहान एक कुशल नेत्री थीं, साथ ही साथ उनका हृदय इस मायने में भी संवेदनशील था कि एक ओर वे साहित्य लेखन में महिलाओं को आगे आने के लिए आमंत्रण देती हैं तो दूसरी ओर महिला रचनाकारों की अलक्षित मृत्यु पर वे दुःख प्रकट करती हैं। उन स्त्रियों के साहित्यिक योगदान को महत्त्वपूर्ण ढंग से रेखांकित करती हैं। वे दिवंगत लेखिकाओं को नमन करते हुए कहती हैं - "गद्य में भी स्त्रियाँ पिछड़ी नहीं हैं दिनेश नंदिनी चोरड़िया के गद्य गीत हमारे वर्तमान नवीन साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। रामेश्वरी गोयल ने भी गद्य गीत प्रारंभ किये थे परन्तु उनकी मर्म भेदी भावनाएँ उनके आकस्मिक निधन के कारण पूर्णता को प्राप्त नहीं हो सकीं जिसका हमें खेद है। गोयल के समान रामेश्वरी चकोरी की अकाल मृत्यु ने हमें एक प्रतिभा संपन्न कवयित्री से वंचित कर दिया।"[2]

उनके समकालीन जो महिला रचनाकर लिख रही थीं उनको चिह्नित करते हुए कहती हैं कि "उपन्यास और कहानियों के क्षेत्र में भी स्त्रियों ने अपनी लेखनी उठाई है और वे सफल

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 49
[2]सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 49

हुई हैं। उषा देवी मित्रा, शिवरानी देवी, निर्मला मित्रा, सुशीला डागा, होमवती आदि इस क्षेत्र में प्रमुख हैं। इसी प्रकार साहित्य के अन्य क्षेत्रों में भी स्त्रियों ने सफलतापूर्वक पुस्तकें लिखीं हैं।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान अपने इस भाषण में साहित्य एवं अन्य क्षेत्रों में सक्रीय सभी महिलाओं का मनोबल बढ़ाती हैं। वे उनके नाम और उपलब्धियों को इस प्रकार चिह्नित करती हैं - "श्रीमती चंद्रावती लखनपाल, गोपाल देवी, ज्योतिर्मयी ठाकुर आदि की चिकित्सा स्वास्थ्य पाक विज्ञान तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें प्रसिद्ध हैं। श्रीमती शन्नो देवी, सीता देवी आदि देवियाँ प्रशंसनीय ढंग से पत्रों का सम्पादन कर रही हैं। खेद है कि समयाभाव के कारण मैं ऐसी बहुत सी बहनों का नामोल्लेख नहीं कर सकी हूँ, जो कि साहित्य की सेवा में संलग्न हैं। मैं इस कमी के लिए उनसे हृदय से क्षमा माँगती हूँ।"[2] सुभद्रा कुमारी चौहान के इस कथन से यह भी पता चलता है कि कविता-कहानी के अतरिक्त महिलाएँ पत्र-पत्रिका का संपादन कर रही थीं और ज्ञान -अन्वेषण के क्षेत्र में भी सक्रीय थीं। अगर उस समय सुभद्रा कुमारी चौहान की इन बातों पर ध्यान दिया जाता तो हिंदी साहित्य का तत्कालीन इतिहास और समृद्ध नजर आता। उनके रचनाओं के माध्यम से उनके तत्कालीन महिला रचनाकारों की पड़ताल का कार्य आज भी अपेक्षित है। रचनाकार होने के साथ – साथ अपनी पारिवारिक और सामाजिक दायित्त्वों का निर्वहन वे कितनी सफलतापूर्वक कर रही थीं, सुभद्रा कुमारी चौहान के व्याख्यान इस बात के प्रमाण हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी साहित्य की एक ऐसी सिपाहीं थीं जो अंततः हिंदी साहित्य का कल्याण चाहती हैं, हिंदी साहित्य का सम्पूर्ण और सच्चा विकास चाहती हैं।

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 49-50

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 50

उनकी इस कामना को उनके इस वक्तव्य से समझा जा सकता है, “सर्वत्र स्त्रियों में सर्वांगीण जाग्रति के शुभ लक्षण दिखाई दे रहे हैं और वे सरस्वती की आराधना में तत्पर हैं। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हमारी उत्तरोत्तर उन्नति हो तथा हम हिंदी के साहित्य को सम्पूर्ण करने में समर्थ होवें।”[1] उनकी स्पष्ट समझ थी कि महिला रचनाकारों की रचनाओं से ही हिंदी साहित्य सम्पूर्ण हो सकता है, सही प्रकार से विकसित हो सकता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की यह सोच उन्हें अपने समय से आगे खड़ा करती है और उनके आलोचना कर्म पर ठीक तरह से विचार करने के लिए हमें आमंत्रित करती है।

4.1.3 स्त्री लेखन का महत्त्व – निरूपण :

सुभद्रा कुमारी चौहान के एक प्रमुख प्रकाशित निबन्ध का शीर्षक है – ‘अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के बनारस अधिवेशन में महिला साहित्य सम्मेलन की अध्यक्ष पद से दिया गया भाषण (21अक्तूबर, 1939)’[2]

उपर्युक्त शीर्षक निबन्ध में सुभद्रा कुमारी चौहान ने महिलाओं से आग्रह किया कि वे साहित्य-रचना करने की तरफ प्रवृत्त हों। वे महिलाओं की लेखनी को सर्वश्रेष्ठ मानती हैं इसलिए वे महिलाओं से आग्रह करती हैं कि वे अपनी नैसर्गिक भावनाओं को शब्दों में परिवर्तित करें। उनका स्पष्ट मानना था कि महिलाएं अब अपनी लेखनी के माध्यम से संवाद कर सकती हैं। इस सम्बन्ध में उन्होंने बनारस में महिला साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा, “अभी तक स्त्रियों में शिक्षा का अभाव था। इसलिए पुरुषों को ही स्त्रियों की मनोभावनाओं, उनके हृदय के उद्वेगों, उनके प्रेम और विरह,

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 50

[2]सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 47

उनकी आकाँक्षाओं और भय को वाणी देनी पड़ी है। इसमें संदेह नहीं है कि यह कार्य उन्होंने आशातीत सफलता के साथ किया है। किन्तु अब स्त्रियाँ इस योग्य हो चली हैं कि वे अपने हृदय के गीतों को अपने ही शब्दों में गा सकें। अब हमें अपनी मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए पुरुष की लेखनी की अवश्यकता नहीं रह गई है।"[1] महिलाओं के लिए वह शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार करते हुए शिक्षित महिलाओं से रचना-कर्म में प्रवृत्त होने का आग्रह करती हैं। आधुनिक काल से पहले भी मीरा जैसी स्त्री कवयित्री ने अपने हृदय के गीतों को उन्मुक्त भाव से गया था और हिंदी साहित्य के इतिहास में स्त्री उपस्थिति को दर्ज किया था। आधुनिक काल में हृदय की प्रकृत भावनाओं के साथ शिक्षित होना भी ज़रूरी था। यह लिखित साहित्य का समय था, इसलिए भावनाओं की सच्चाई के साथ शिक्षित होना भी आवश्यक था। भारतेंदु युग और द्विवेदी युग में हमें हिंदी साहित्य के अंतर्गत सहज रूप से स्त्रियों की उपस्थिति नहीं दिखाई पड़ती। इस सम्बन्ध में राजेन्द्रबाला घोष की उपस्थिति अपवाद है, जिन्हें हिंदी साहित्य के इतिहास के अंतर्गत बंग महिला के रूप में जाना जाता है। द्विवेदी युग के बाद महिला रचनाकारों की उपस्थिति क्रमशः पहले की तुलना में ज्यादा दिखाई पड़ने लगती है, जिसमें सुभद्रा कुमारी चौहान स्वयं एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वह पुरुष रचनाकारों को खारिज नहीं करतीं बल्कि उस परम्परा का विस्तार करने का आग्रह महिलाओं से करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान का स्पष्ट मानना था कि स्त्रियों की भावनाओं और उनकी वास्तविक अवस्था का चित्रण स्वयं महिलाएं ही बेहतर ढंग से कर सकती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान महिलाओं को किंचित कारणों से पुरुष रचनाकारों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण मानती थीं। उन्होंने अपने भाषण में इस बात को रेखांकित करते हुए कहा था, "मैं मानती हूँ कि कवि में स्त्री पुरुष का भेद नहीं है। कविता का सम्बन्ध हृदय से है जो स्त्री पुरुष के

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 47

भेद से परे है। फिर भी स्त्री के हृदय में विशेषताएं हैं। जिनका अनुभव करने के लिए पुरुषों को विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा।"[1] सुभद्रा कुमारी चौहान की इस मान्यता को आज के स्त्री विमर्श के अंतर्गत मौजूद बहस के सन्दर्भ में देखा जा सकता है। जहाँ एक बहस इस बात की रही है कि स्त्रियाँ ही स्त्रियों के बारे में ज्यादा सच्चाई से लिख सकती हैं। यहाँ यह देखना महत्त्वपूर्ण है कि सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी इस मान्यता में पुरुष रचनाकारों में भेद नहीं करतीं बल्कि वह कवि के रूप में स्त्री-पुरुष भेद को भी स्वीकार नहीं करतीं। कविता को चित्तवृतियों के प्रकाशन से जोड़ कर देखती हैं और इसलिए वह कविता में भावनाओं की सच्चाई को महत्त्व देती हैं न कि कवि के स्त्री या पुरुष होने को, और इसी वजह से वह स्त्रियों की भावनाओं को चित्रित करने के लिए स्त्री रचनाकारों को ज्यादा महत्त्व देती हैं।

इस सन्दर्भ में अपनी बात को स्पष्ट करती हुई वे कहती हैं कि स्त्रियों के चित्त की जिन भावनाओं को चित्रित करने के लिए पुरुषों को विशेष यत्न की आवश्यकता पड़ेगी उसे स्त्री-रचनाकार सहजता से व्यक्त कर सकती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान के अनुसार "स्त्री की स्वभाव सिद्ध कोमलता पुरुषों के लिए यदि अप्राप्य नहीं तो दुष्प्राप्य अवश्य है ठीक वैसे ही जैसे कि पुरुष सुलभ प्रखर भावनाएँ स्त्रियों के लिए दुष्प्राप्य हैं। स्त्रियों के प्रेम और उत्सर्ग की पराकाष्ठा को व्यक्त करने के लिए पुरुष कवि को भी स्त्री की ही वाणी में बोलना पड़ता है।"[2] कवि हृदय होने के लिए स्वभाव सिद्ध कोमलता की आवश्यकता होती है परन्तु यह हिंदी साहित्य के इतिहास से सिद्ध भी है कि प्रेम और उत्सर्ग की पराकाष्ठा को व्यक्त करने के लिए पुरुष कवि को भी स्त्री की ही वाणी में बोलना पड़ा है। इसका सबसे प्रभावी उदहारण कबीर के पद हैं जिनमें वे स्त्री रूप में अपने आराध्य को बालम रूप में स्मरण करते हैं। 'दुल्हिन गावहु

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 47

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 47

मंगलाचार हो', 'बालम आओ हमारे गेह रे' अथवा 'हरि मोर पीव, मैं राम की बहुरिया' आदि जैसे उनके अनेक पद हैं, जिनमें उन्हें स्त्री की वाणी में बोलते हुए देखा जा सकता है। कबीर के प्रेम या साधना के गहन क्षणों में स्त्री हो जाने को स्वीकार करते हुए कबीर-काव्य के प्रमुख आलोचक पुरुषोत्तम अग्रवाल भी लिखते हैं, "कबीर को प्रेमानुभूति में नारी रूप धारण करना पड़ता है-बल्कि कहना चाहिए ऐसा स्वतः हो जाता है"[1]। पुरुषोत्तम अग्रवाल कबीर की इस विशेषता के सन्दर्भ में मिलान कुंदेरा के एक प्रसिद्ध उपन्यास के एक पात्र से इस बात को और स्पष्ट करते हुए लिखते हैं, "मिलान कुंदेरा का उपन्यास 'इम्मोरेटिलिटी' में एक जगह कहता है, "अरागाँ का कथन है, 'स्त्री ही मनुष्य का भविष्य है'- मतलब यह है कि जो दुनिया पुरुष की छवि में रची गई थी, अब स्त्री छवि में रूपांतरित होने को है। दुनिया जितनी तकनीकी, यांत्रिक, ठंडी और धातुवत् होती जाएगी, उस ऊष्मा की जरूरत उतनी ही बढ़ती जाएगी - जो ऊष्मा केवल स्त्री दे सकती है। यदि हम दुनिया को बचाना चाहते हैं, तो हमें स्त्रीत्व अपनाना होगा। स्त्री की अगुवाई स्वीकारनी होगी।"[2]

यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि मिलान कुंदेरा का उक्त उपन्यास 1990 ई. में प्रकाशित हुआ था और अरागाँ सुभद्रा कुमारी चौहान के ही समकालीन थे। जिस बात को मिलान कुंदेरा 1990 ई. और पुरुषोत्तम अग्रवाल 2000 ई. में कह रहे हैं उसे सुभद्रा कुमारी चौहान उनसे बहुत पहले समझ रही थीं और उसे व्यक्त कर रही थीं। इससे भी हम उनके महत्त्व को समझ सकते हैं या समझने का विनीत प्रयास कर सकते हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान के अनुसार स्त्रियों का स्वभाव कोमल होता है वे पुरुष कवियों से भी उसी कोमलता की कामना करती हैं। इसकी उपेक्षा होने पर वे काव्य को सार्थक नहीं

---

[1] विचार का अनंत, पुरुषोत्तम अग्रवाल, पृष्ठ -168

[2] विचार का अनंत, पुरुषोत्तम अग्रवाल, पृष्ठ-172

मानती हैं इसलिए वे अपना विचार प्रकट करते हुए कहती हैं - "यही कारण है कि प्रेम और विरह के गीत गाने में उस राजसी प्रेमिका मीरा से कोई आगे नहीं बढ़ सका है। मीरा के पास शब्दों का बाहुल्य नहीं था, कोमलकांत पदावली नहीं थी किन्तु मीरा के पास मीरा का हृदय था और आत्मिक चरित्र था, जिसकी अमर छाप उसके गीतों पर लगी हुई है।"[1] स्त्रियों को रचना करने के लिए आमंत्रित करने के साथ-साथ वे महिला रचनाकार के महत्त्व और स्त्री लेखन की परम्परा को भी रेखांकित करने का महनीय कार्य करती हैं।

4.2 बाल साहित्य सम्बन्धी विचार :

स्त्रियों की प्रभावगत नैसर्गिक विशेषताओं को रेखांकित करते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान स्पष्ट करती हैं कि अपने प्रेमपूर्ण हृदय के अलावा स्त्रियाँ बाल मन को भी अधिक अच्छे से समझ सकती हैं। उनके अनुसार स्त्री ही बच्चों के हाव - भाव को बिना शब्द के समझ सकती है। इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान महिलाओं के लिए बाल - क्रीड़ा के क्षेत्र में लेखन को बढ़ावा देती हैं और उसे महिलाओं का अधिकार क्षेत्र मानती हैं। वे इसे स्पष्ट करते हुए कहती हैं, "प्रेम के अतिरिक्त एक और क्षेत्र है जिसे स्त्रियों का अधिकार क्षेत्र कहा जा सकता है वह बाल क्रीड़ा का। नन्हें- नन्हें बच्चे स्त्रियों के ही चरणों में रेंगकर चढ़ते हैं उन्हीं के सहारे खड़े होते हैं वे अपनी बोली माताओं से ही सीखते हैं। माताओं और बच्चों का इतना नैसर्गिक और प्रगाढ़ संसर्ग रहता है कि बच्चों के मन का माता ही सबसे अच्छा विश्लेषण कर सकती है। माता अपने बच्चे के मन की बात अपने मन से समझ जाती है, उसे समझने के लिए

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 47

सार्थक शब्दों की आवश्यकता नहीं ।"[1] जिस समय सुभद्रा कुमारी चौहान रचना के क्षेत्र में प्रवृत्त हुई थीं, वह समय महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत रूप से कम स्वच्छंद था। परिवार उस समय एक प्रमुख मूल्य था और स्त्री के महत्त्व को उनकी पारिवारिकता के सन्दर्भ में मूल्यांकित किया जाता था। परिवार संभालना और बच्चों की परवरिश करना उनका दायित्त्व समझा जाता था। सुभद्रा कुमारी चौहान महिलाओं की उस भूमिका को स्वीकार करते हुए उनकी भूमिका का विस्तार करती हैं, उसे अपनी रचनात्मक क्षमता में परिवर्तित करती हैं। ऐसी ही अपेक्षा वे अपने समय की महिलाओं से रखती हैं और उनसे आग्रह करती हैं कि वे बाल-साहित्य रचने की तरफ प्रवृत्त हों।

साहित्य - लेखन में बाल - साहित्य लेखन की ओर महिलाओं को प्रोत्साहित करती हुई कहती हैं कि "अबोध और तुतलाते बालक के पास सार्थक शब्द कहाँ ? परन्तु बच्चे की ऐसी कौन-सी मनोभावना और आवश्यकता है जिसको माता नहीं ताड़ लेती और नहीं समझ लेती। बच्चे सबको प्यारे और सुंदर लगते हैं। परन्तु माता अपने बच्चे के प्यार और सुन्दरता की खूबियों को जितना पहचानती है उतना कोई दूसरा व्यक्ति नहीं पहचान सकता है ? इसलिए मेरी तो धारणा है कि माताएँ यदि शिशु साहित्य पर लिखने लगें तो उससे हमारे साहित्य की सुन्दरता बढ़ जावे ।"[2] सुभद्रा कुमारी चौहान बाल साहित्य और महिला-लेखन के महत्त्व को तब पहचान रही थीं जब इस सन्दर्भ में हिंदी साहित्य में विशेष प्रयास नहीं दिखाई पड़ता। बाल-साहित्य की दृष्टि से हिंदी साहित्य अन्य भारतीय भाषाओं की तरह समृद्ध दिखाई नहीं पड़ता। बाल-साहित्य जिस साहित्य में अपनी मजबूत उपस्थिति रखता है, वहाँ साहित्य का

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 47-48

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 48

संस्कार और संसार बहुत मजबूत होता है। बांग्ला, मलयालम, असमिया, मराठी आदि भाषों का साहित्य इसका उल्लेखनीय उदाहरण हैं।

हिंदी साहित्य में बाल साहित्य प्रारम्भ से ही पुरुष लिखते आए हैं लेकिन सुभद्रा कुमारी चौहान स्वानुभूति की अभिव्यक्ति को महत्त्व देती हुई महिलाओं को बाल साहित्य लिखने हेतु आमंत्रित करती हैं, "निस्संदेह पुरुषों ने बाल साहित्य पर बहुत कुछ लिखा है परन्तु उनके द्वारा रचना को प्रधानता मिली है। जिस दिन स्त्रियाँ इस साहित्य में सृजन करने लग जावेंगी उस दिन अनुभूति को भी वाणी मिलेगी और तभी वह साहित्य सम्पूर्ण हो सकेगा।"[1] सुभद्रा कुमारी चौहान के आलोचक रूप की यह उल्लेखनीय विशेषता है कि वह अपनी स्थापना या आग्रह को तर्क से पुष्ट करती हैं। उनका महिलाओं द्वारा बाल साहित्य लिखे जाने का आग्रह कोरा भावुकतापूर्ण निवेदन नहीं है बल्कि वह विशुद्ध तर्क पर आधारित है। वे हिंदी साहित्य के इतिहास में संभवतः पहली बार इतने तार्किक ढंग से 'रचना की प्रधानता' और 'अनुभूति की वाणी' के प्रश्न को उठाती हैं। इस सम्बन्ध में यह भी ध्यातव्य है कि वे पुरुष रचनाकारों के प्रति कहीं भी कटु नहीं हैं बल्कि कृतज्ञ दिखाई पड़ती हैं। एक उदारमना रचनाकार और आलोचक के रूप में हमें सुभद्रा कुमारी चौहान दिखाई पड़ती हैं। बाल-साहित्य ही नहीं किसी भी साहित्य के लिए अनुभूति की प्रमाणिकता सर्वाधिक जरूरी चीज है। आगे चलकर नई कविता और नई कहानी आन्दोलन में तो यह नवीन साहित्यिक आन्दोलन और रचनाशीलता का आधार ही बन जाता है। स्त्री विमर्श और दलित-विमर्श में भी अनुभूति की प्रमाणिकता को विशेष महत्त्व दिया जाता है। सुभद्रा कुमारी चौहान अनुभूति की प्रमाणिकता को साहित्य की सम्पूर्णता के लिए आवश्यक मानती हैं, दूसरे शब्दों में कहें तो

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, वही, पृ. सं. - 48

कहा जा सकता है कि वह चाहती हैं कि 'मैया मोरी मैं नहीं माखन खाए' के प्रसंग को यशोदा ही अपने शब्दों में व्यक्त करें।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्वयं बाल-साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। उनके साथ उनकी समकालीन लेखिकाओं ने भी इस क्षेत्र में बहुमूल्य रचनात्मक योगदान दिया। इस संदर्भ में उनकी प्रतिक्रिया है, "अभी तक स्त्रियों ने गृहस्थी और गृह को सुंदर बनाया। अब वे समाज, साहित्य और राजनीति में भी पदार्पण कर रही है...।"[1] वे स्वयं इस उक्ति की पर्याय रही हैं। इसलिए वे चाहती थीं कि महिलाएँ गृहस्थ जीवन से बाहर भी अपना योगदान दें। उनकी यह सदिच्छा आज भी विचारणीय है।

4.3 स्वाधीनता की चेतना :

सुभद्रा कुमारी चौहान के प्रकाशित कई निबंधों में स्वाधीनता की चेतना के स्पष्ट दर्शन होते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान एम.एल.ए. रहीं और राष्ट्रीय आंदोलनों में उन्होंने अपने वक्तव्य और साहित्य के माध्यम से लोगों को जगाने का महती प्रयास किया। सुभद्रा कुमारी चौहान के भाषण में महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों में भी स्वाधीनता की चेतना जगाने की ललक थी। उनके भाषणों को उस समय की महत्त्पूर्ण पत्रिका 'कर्मवीर' में प्रकाशित किया गया।

22 सितम्बर 1937 ई. को कांस्टिटयुएन्ट एसेम्बली में एम. एल. ए. के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान ने जो भाषण दिया था वह 'कर्मवीर' पत्रिका में 'फेडरेशन की बेड़ियाँ जेवर नहीं हैं' शीर्षक से अक्टूबर 1937 ई. में छपा था। सुभद्रा कुमारी चौहान विधान - सभा निर्माण समिति द्वारा प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाने पर अपने भाषण में उसका समर्थन करते हुए कहती हैं

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 48

कि “विद्वान् डॉक्टरों ने आनरेबल और आनरेरी डॉक्टरों ने उसके पक्ष में और खिलाफ में भाषण दिए हैं। कानून के बनाने वाले और शासन को चलाने वाले विद्वानों ने अपना इस विषय का ज्ञान हमें समझाने में खर्च किया है। ऐसी हालत में मुझे तो शक होता है कि मैं इस बहस मुबाहसे में किसी प्रकार की सहायता पहुँचा सकूँगी या नहीं। इतिहास की रूपरेखा और शासन विधान के बारे में सदियों का अनुभव निचोड़ कर हमें रास्ता दिखाने के लिए रौशनी तैयार की गई है। हम जल्दी जल्दी में कहीं ठोकर खाकर गिर न पड़ें, उसके लिए सावधान भी किया गया है। परन्तु अभी तक प्रस्ताव के विरुद्ध जितनी बातें कही गई हैं वे बहुत कुछ आतार्किक और काल्पनिक ही जान पड़ती है।”[1] इस प्रकार उन्होंने विधान - सभा निर्माण समिति का प्रस्ताव पर अपना समर्थन दिया और उस पर सतर्कता बरतने की पहल की। यह उनके सजगता और आत्मविश्वास को दिखाता है। वह अपना मत रखती थीं और उसे प्रदर्शित करने का साहस और हूनर भी रखती थीं। तत्कालीन परिवेश में यह एक महिला की उपस्थिति और उसके महत्त्व को प्रदर्शित करता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने उस दौर की स्पष्ट चर्चा करते हुए कहा, “सारा मुल्क और उसकी कौमें कांग्रेस के जरिये अपना आत्मनिर्णय का अधिकार माँग रही हैं जिसके लिए पिछले महायुद्ध के समय बहुत शोरगुल मचाया गया था। स्वर्गीय लोकमान्य तिलक ने हमें सिखलाया है कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसको लेकर रहेंगे। महात्मा गाँधी ने उसी अधिकार के लिए हमें गोलियों की बौछार के बीच हँसते-हँसते बलिदान होना सिखलाया है। हमने अपना ध्येय पूरी आजादी तय किया है और उसको हासिल करने के लिए हमने जैसा कि पिछले सत्रह सालों के राष्ट्रीय युद्ध से जाहिर है- बलिदान हो जाने की अपनी

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 51

उत्कट भावना भी दिखा दी है।"[1] सुभद्रा कुमारी चौहान के इस भाषण से उनकी राष्ट्रीय आन्दोलन ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की समझदारी भी स्पष्ट होती है। महात्मा गाँधी और तिलक के महत्त्व को रेखांकित करते हुए वह पूर्ण स्वराज्य के लक्ष्य को दृढ़ता से हासिल करने का आह्वान भी करती हैं। उस समय पूरी आज़ादी के महत्त्व को समझना और उसके पक्ष में मजबूती से खड़ा होना, उनकी राजनीतिक चिंता की गंभीरता को दिखाता है।

आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने स्वार्थ की चिंता नहीं की। अपना सबकुछ छोड़ कर जेल जाने के लिए तैयार हो गए, लाठियाँ खाईं, गोलियों से नहीं डरे, कुर्की सहे। इतना सब करने पर भी हिंदुस्तान के हाथ कुछ हासिल नहीं हो पाया था। इस सुधार के रास्ते चलते हुए 'गवर्मेन्ट ऑफ इण्डिया एक्ट' ही था जो स्वतंत्रता सेनानियों के पक्ष में था सुभद्रा कुमारी चौहान इस चाल को भलीभांति पहचान रही थीं। इसके अलावा हर चीज ब्रिटिश शासन की सह बढ़ा रही थी। ब्रिटिश सत्ता का पुरजोर विरोध करती हुई सुभद्रा कुमारी चौहान अपने भाषण में कहती हैं – "इस बीच ब्रिटिश सरकार के कारखाने में हमारे लिए फेडरेशन की बेड़ियाँ तैयार की जा रही है और हमारे समझदार सलाहकार और हमारे सावधान सलाहकार हमें यह सलाह देते हैं कि उसे पहन लो, पहनकर एक बार देखो तो सही, कौन जाने एक बार पहनने के बाद वह कोई जेवर ही साबित हो। ऐसे सलाहकारों को हमारा उत्तर यही है कि बस अब बहुत हो चुका। अब हम इस रुपहले फंदे में नहीं फसेंगे। अब हम ऐसा शासन विधान नहीं चाहते जिसमें 'मेड इन इंग्लैंड' की छाप लगी हो।"[2] सुभद्रा कुमारी चौहान एक तरफ तिलक और गाँधी के योगदान को समझते हुए वह अपनी समझदारी को विकसित करने और अपने दायित्त्व का निर्वाह करने की कोशिश कर रही थीं तो दूसरी तरफ़ हिंदी में

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 51

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 52-53

नवजागरण के अग्रदूत भारतेंदु हरिश्चन्द्र के आह्वान 'स्वत्व निज भारत गहै' की पुकार को भी सम्पूर्णता में समझ रही थीं। इसलिए वह इतनी स्पष्टता और निर्भीकता से यह कहती हैं कि अब ब्रिटिश सरकार के शासन - विधान की आवश्यकता नहीं है। उनका स्पष्ट मानना था कि भारत को आजादी इस देश के लोगों की बेहतरी के शर्त पर ही स्वीकार करना चाहिए, तभी देश सम्पूर्ण आजादी के लक्ष्य को प्राप्त कर पायेगा।

सम्पूर्ण आजादी ही इस देश का लक्ष्य होना चाहिए यह उनका स्पष्ट मत था। उस समय देश के कद्दावर नेताओं की भी यही राय थी। वे तत्कालीन शासन व्यवस्था में सुधार नहीं चाहतीं बल्कि उसमें आमूलचूल परिवर्तन चाहती थीं। इसलिए सुधार की नीति से निराश होकर वे कहती हैं – "इस प्रस्ताव का विरोध करने वालों की दलीलों में क्रांति के मुकाबले सुधार की भावना अधिक पाई जाती है। उनको कांस्टिटयुएन्ट एसेम्बली के नतीजे का डर है उनकी तरक्की के रास्ते पर 'खबरदार रहो' 'सावधान रहो' की बड़े-बड़े अक्षरों वाली तख्तियाँ लगी हैं। लेनिन ने अपने एक सोने के महत्त्व सम्बन्धी लेख में सुधार के रास्ते को भूल भुलैया कहा है। आपने उसके अंदर प्रवेश नहीं किया कि फिर आपको बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिलता और न आप अपने निर्दिष्ट स्थान तक ही पहुँच सकते हैं।"[1] सुधार के रास्ते को भ्रम और क्रांति के रास्ते को उचित समझने वाली उनकी दृष्टि लेनिन तक जाती है। इसका आशय यह है कि दुनिया भर में हो रहे समाजवादी बदलाओं को वह आशा की दृष्टि से देख रही थीं उनसे वे परिचित थीं। आजादी के मूल में अंतर्राष्ट्रीय मानवतावाद को समझना और उस हेतु प्रयास कर रहे नेताओं के कार्य और लेखन से परिचित होना, सुभद्रा कुमारी चौहान के विराट व्यक्तित्व का परिचय देता है।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 52

इस सन्दर्भ में 1942 ई. के ‘करो या मरो’ आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर सुभद्रा कुमारी चौहान के इस कथन को देखा जाना चाहिए, “हमें तो हिंदुस्तान में बनाया हुआ हिन्दुस्तानों के द्वारा बनाया हुआ और हिन्दुस्तानियों के हित ही के लिए बनाया गया हो ऐसा शासन विधान चाहिए। सच बात तो यह है कि हिंदुस्तान की आत्मा विदेशी सत्ता के खिलाफ अब क्रांति कर बैठी है। सुधारवादियों की मीठी-मीठी और लुभावनी दलीलों का अब उस पर कोई असर नहीं पड़ता।”[1] एक तरफ वे अब्राहम लिंकन द्वारा प्रतिपादित लोकतंत्र के बुनियादी सिद्धांत को अपने शब्दों में व्यक्त कर रही थीं तो दूसरी तरफ वे सुधार के रास्ते को भटकाने वाले रास्ते के रूप में चिन्हित करती हैं। जनता से अपने ही लोगों की मीठी और लुभावनी बातों में न आने का आह्वान करती हैं। आजादी की लड़ाई की यह वस्तुनिष्ठ समझ उनकी स्वाधीनता चेतना के महत्त्व को उजागर करता है।

4.4 राजनीतिक विचार :

सुभद्रा कुमारी चौहान भारत को आज़ाद एवं खुशहाल देखना चाहती थीं। एक सच्चे स्वंतत्रता सेनानी और साहित्य सेवी के तौर पर वह देश की जनता के बीच प्रेम और सौहार्द्र को मजबूत और विकसित होते देखना चाहती थीं। उस समय स्वाधीनता के संघर्ष के साथ कुछ राजनीतिक संगठन अपने स्वार्थ लाभ के लिए देश की जनता के बीच धर्म के नाम पर भ्रम फैलाने और कटुता बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे। देश के अन्दर बढ़ती संप्रदायिक कटुता की भावना से सुभद्रा कुमारी चौहान बेहद चिंतित थीं। देश और देशवासियों के स्वास्थ्य के लिए वे इसे बहुत खतरनाक मानती थीं। हिन्दू - मुस्लीम जो एकजुट होकर आजादी की

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 53

लड़ाई लड़ रहे थे, अब उन्हें एक दूसरे का दुश्मन बनाने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा था। इस सन्दर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान कहती हैं, "इस प्रस्ताव पर जो संशोधन पेश हुए हैं, उनकी मंशा सिर्फ यही मालूम होती है कि कम तादाद वाली कौमों के हकों, धर्मों और संस्कृति की रक्षा की जावे। परन्तु वे भूल जाते हैं यह तो हमारा घरेलू मामला है। उसे हम आपस में ही समझकर निबटा सकते हैं और निबटा भी लेंगे। हमारे कम तादाद वाले भाई इस बात का विश्वास रखें कि अब देश के राजनैतिक शासन की बागडोर कांग्रेस के हाथ में है। उनके अधिकारों के साथ लापरवाही कभी भी नहीं हो सकती। मैं अपने इन संशोधन पेश करने वाले माननीय भाइयों से निवेदन करती हूँ कि इस समय जबकि आजादी की जंग में हम अपने विरोधियों से लड़ रहे हैं। और इस जंग को जारी रखने को और भी जी-जान से तैयारी कर रहे हैं, ऐसे वक्त वे विजय के बाद मिलने वाले अधिकारों के बँटवारे के तरीकों में ही उलझ न जावें। बल्कि हमारे कंधे से कन्धा मिलाकर इस आजादी की लड़ाई में उतर आएँ और राष्ट्रीय झंडे को ऊँचा करके आगे बढ़े।"[1] वह यह समझ रहीं थी कि सांप्रदायिक सौहार्द्र को बिगाड़ कर आजादी के बाद देश-विभाजन करने के प्रयास से किसका फायदा होने वाला था, इसलिए वह उन संगठनों से सावधान रहने और कांग्रेस पार्टी पर विश्वास बनाए रखने का आह्वान करती हैं। वे समझ रही थीं कि आजादी मिल जाए और उसके बाद अगर देश विभाजित हो जाए अथवा आजादी हासिल करने के बाद दोनीं धर्मों के बीच अगर नफरत फैल जाए तो ऐसी आजादी से किसी को कोई लाभ नहीं होने वाला है। इसलिए वह हिन्दू-मुस्लिम जैसे मुद्दों को दरकिनार कर, एकजुट होकर आजादी की लड़ाई को जारी रखने के लिए लोगों को जागृत करती हैं। अपनी सक्षम राजनीतिक चेतना के कारण वे, वह देख पा रही थीं जो देश में स्वंतत्रता प्राप्ति के बाद घटित हुआ।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग 2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 53

उनकी राजनीतिक चेतना का परिचय उनकी युद्ध विरोधी मंतव्यों से भी मिलता है। विश्व-युद्ध में भारत को शामिल करने का विरोध करती हुई वह कहती हैं, “हिंदुस्तान की जनता की इच्छा के विरुद्ध उसे युद्ध में शामिल कर लिया और उसे युद्ध के कष्टों में घसीटा है। सेंट्रल असेम्बली और सभी असेम्बलियों में ग्रेट ब्रिटेन की इस नीति का विरोध किया गया। मध्यप्रान्तीय असेम्बली में मैंने युद्ध विरोधी प्रस्ताव का समर्थन किया था...प्रथम युद्ध में मित्र राष्ट्रों ने घोषित किया था कि भविष्य में युद्धों को बंद करने के लिए ही वे इस युद्ध में शामिल हुए थे। किन्तु उस युद्ध ने प्रतिहिंसा को जन्म दिया और उसका परिणाम सारे संसार को भोगना पड़ रहा है। हिंसा से हिंसा नहीं मिट सकती।”[1] सुभद्रा कुमारी चौहान की राजनीतिक समझ अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावादी होने की वजह से तीक्ष्ण और स्पष्ट हैं। वे यह याद दिलाती हैं कि प्रथम विश्व-युद्ध में यह कहकर भारत को उसमें शामिल किया गया था कि वह युद्ध, भविष्य में युद्ध न हों इसलिए लड़ा जा रहा है। यह ज्ञात तथ्य है कि उस युद्ध ने उससे भी बड़े युद्ध की पीठिका तैयार कर दी, उससे भी ज्यादा नरसंहार को अंजाम दिया। सुभद्रा कुमारी चौहान भी यह रेखांकित करती हैं कि उससे दुनिया भर में प्रतिहिंसा ही बढ़ी जिसका परिणाम कुछ देशों या सिर्फ़ यूरोप को नहीं बल्कि पूरी दुनिया को भोगना पड़ा। युद्ध का सवाल हो या फिर सांप्रदायिक वैमनष्य का, उनकी स्पष्ट समझ थी कि हिंसा से हिंसा नहीं मिट सकती। सुभद्रा कुमारी चौहान अपने समकालीनों में सर्वाधिक उन्नत राजनीतिक समझ रखने वाले लोगों में से थीं। उनका इस आधार पर भी अभी मूल्यांकन होना शेष है।

इसी सन्दर्भ में जब कुछ इकाइयों द्वारा दूसरे विश्व युद्ध में शामिल होने पर सहमति बन रही थे तब उन्होंने कहा, “माननीय प्रधानमंत्री के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए मैं खड़ी हूँ। ब्रिटिश सरकार की युद्ध नीति का विरोध सन 1937 में सभी असेम्बिलियों ने आजादी को

[1] उद्धृत, डॉ. सावित्री भरतिया, सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, पृ. सं. – 84

बनाने वाली कांसटीट्युएन्ट असेम्बली की माँग की थी। आज माँग दोहराने पर सौदा कहा जा रहा है। उस महासमर में अपनी आहुति देने से पहले हम चाहते हैं कि हम वहाँ स्वाधीन राष्ट्र के सम्मान के साथ लड़ें , पराधीन राष्ट्र की तरह नहीं। अंग्रेजी कहावत है –'चेरिटी बिगीन्स एट होम' –'उदारता अपने घर से ही प्रारम्भ करनी चाहिए' । पोलैंड या किसी अन्य देश की स्वाधीनता के लिए युद्ध करने से पहले हिन्दुस्तान को स्वतंत्र कर देना चाहिए।"[1] उनकी प्रखर राजनीतिक चेतना का यह एक मजबूत उदहारण है। वह कहती हैं कि अगर कुछ इकाइयाँ भारत के युद्ध में शामिल होने के प्रस्ताव का समर्थन करना चाहती हैं तो वे ब्रिटिश सरकार से आग्रह करे कि पहले भारत को आजाद कर दिया जाए। जैसे दूसरे देश स्वतंत्र देश की हैसियत से इस युद्ध में शामिल हो रहे हैं, भारत को भी उसी तरह शामिल होना चाहिए। एक पराधीन देश की तरह नहीं। वे अंग्रेज सरकार द्वारा प्रस्तुत किये जा रहे लुभावने वादों और झांसों को बखूबी समझ रही थीं। वह जानती थीं कि अंग्रेज सरकार भारत को किसी भी कीमत पर आजाद नहीं कर सकती। उन्होंने सीधे तौर पर युद्ध में शामिल होने का विरोध न कर के और प्रभावी ढंग से अपने विरोध को दर्ज किया। यह उनकी राजनीतिक समझ और चेतना का एक उत्कृष्ट प्रमाण है।

4.5 अग्रसर नारी धर्म :

'अग्रसर नारी धर्म' सुभद्रा कुमारी चौहान का दिया हुआ पदबंध है। इसे प्रतिपादित और स्पष्ट करती हुई वह कहती हैं, "आज मुझे अग्रसर नारी धर्म पर कुछ बातें कहनी है। अग्रसर नारी से मतलब है, नारी का जो कि पढ़ी लिखी है और पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर

[1] उद्धृत, सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. – 84

वर्तमान क्रांति में भाग लेती हुई आगे बढ़ रही है |"[1] इस अग्रसर नारी की विशेषता बताते हुए वे कहती हैं, "उसने पर्दे छोड़ दिया है और अब वह लीला और विलास का खिलौना नहीं रह गई |"[2] सुभद्रा कुमारी चौहान इस बात को रेखांकित करती हैं कि शिक्षा अर्जित करने की वजह से अब महिलाएं समझ रहीं हैं कि पुरानी रूढ़ियाँ अब उनके मार्ग की बाधा हैं और वे सिर्फ़ लीला और विलास की चीजें नहीं हैं। यह अग्रसर नारी असल में स्वाधीन चेता स्त्री है, जिसकी एक स्पष्ट सामाजिक और राजनीतिक भूमिका भी है। स्वाधीनता आन्दोलन का एक बड़ा प्रभाव यह था कि इस आन्दोलन की वजह से स्त्री-शिक्षा का व्यापक प्रसार-प्रसार हुआ और महिलाएं अपने घर की चहारदीवारी से निकालकर पुरुषों के साथ स्वतंत्रता –संघर्ष में जोर-शोर से शामिल हुईं। अग्रसर नारी के निर्माण में आज़ादी के आन्दोलन की भूमिका को रेखांकित करती हुई वे कहती हैं, "इस क्रांति के युग में पुरानी रूढ़ियाँ टूटती जा रही हैं कि वे धर्मशास्त्र के द्वारा नियत किए गए हैं। किन्तु अब उनकी छान-बीन होती है और व बुद्धिगम्य होने पर ही मान्य होते हैं"[3] स्वाधीन चेता मनुष्य दूसरों की नज़र से दुनिया महीन देखता, वह अपनी प्रज्ञा का यथासंभव उपयोग करता है। क्रांति या देश की आजादी के उस आन्दोलन ने महिलाओं के इर्द-गिर्द धर्मसम्मत, कथित परम्परासम्मत गढ़ी गई बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर दिया था। महिलाएं घर की चहारदीवारी से बाहर आकर दुनिया देखने लगी थीं, शिक्षा उन्हें चीजों को बुद्धिसम्मत तरीक़े से देखने का दृष्टि दे रहा था और आजादी का महत्तम उद्देश्य उन्हें पुरुषों से किसी भी दृष्टि से कमतर नहीं होने का हौसला प्रदान कर रहा था। इसलिए अग्रसर नारी धर्मशास्त्र द्वारा पूर्वनिर्धारित मान्यताओं की छान-बीन कर रही थीं, उन पर वैज्ञानिक तरीक़े से विचार कर रही थीं और उससे सहमत या असहमत होने का विवेक अर्जित कर रही थीं।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 83
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 83
[3] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 83

सुभद्रा कुमारी चौहान एक उदारमना व्यक्ति थीं। जैसे उनकी समझ थी कि हिंसा से हिंसा को नहीं खत्म किया जा सकता वैसे ही वह यह भी समझती थीं कि विरोध के लिए विरोध करना कभी कारगर नहीं हो सकता। इसलिए वह कहती हैं, “यह बात नहीं कि जो पुराना है, वह बुरा है और नया अच्छा है। परन्तु पुराने में भी खराबियां आ जाती हैं, जिनको दूर करना बहुत जरुरी है”[1] अपनी बात को और मजबूत तरीक़े से रेखांकित करते हुए तार्किक ढंग से अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहती हैं, “पतिव्रत धर्म बहुत पवित्र है और सुंदर है जबकि वह प्रेम के सिंहासन पर विराजमान है। किन्तु वही पतिव्रतधर्म वीभत्स हो जाता है, जब यह कहा जाता है कि –

वृद्ध रोग बस जड हीना
अन्य बधिर कोटी अति दीना
ऐसेहु पतिकर किए अपमाना
नारि पाव जमपुर दुःख नाना”[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान अरण्य काण्ड में वर्णित सीता-अनुसूया संवाद के उदहारण से प्रभावी तरीक़े से अपनी बात को स्पष्ट करती हैं कि सिर्फ़ धर्मशास्त्र में वर्णित है इसलिए उसे मान लेना उचित नहीं है। उस संवाद में अनुसूया सीता को पति धर्म की शिक्षा देते हुए कहती हैं, ‘ वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अँधा, बहरा, क्रोधी,और अत्यंत दीन पति का अपमान करने से स्त्री यमपुर(नर्क) में भांति-भांति के दुःख पाती है ‘। इस कथन और इसके पीछे की राजनीति और कारण को स्पष्ट करती हुई सुभद्रा कुमारी चौहान कहती हैं, “धर्मशास्त्र के रचनेवाले पुरुष

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. -83-84
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 84

थे, उन्होंने नारी को ऐसे शिकंजे में कसा कि उसे साँस लेने की भी जगह नहीं रह गई। वह जमपुर, समाज और आर्थिक अधीनता के कारण सब सहती है। पुरुषों के शासन में रहने की उसे आदत हो गई है। पुरुष का शासन नारी को बुरा नहीं लगता, यदि वह शासन प्रेम का हो"[1] सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन स्वयं इस बात का उदाहरण है। वह एक सम्मानित नागरिक के साथ तत्कालीन अर्थों में एक आदर्श पत्नी और ममतामयी माता थीं। उनके पति उनसे प्रेम करते थे और स्वाधीनता संघर्ष में भागीदारी करने और साहित्य सृजन करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। इसलिए वह कहती हैं कि पति-पत्नी का सम्बन्ध प्रेम पर टीका होना चाहिए न कि धर्म-शास्त्र द्वारा स्थापित मान्यताओं पर। इसलिए वह स्पष्ट करते हुए कहती हैं, मैं पतिव्रत धर्म के खिलाफ नहीं हूँ पर यह वहीं उचित है जहाँ पति-पत्नी के बीच आपस में सच्चा प्रेम हो। किन्तु इसके बिना यह कितना कठोर हो जाता है, जब धर्म को साथ मानने को मजबूर किया जाता है।"[2]

इसके साथ ही वे अग्रसर नारी के सामने मौजूद उस चुनौती को भी रेखांकित करती हैं जिसके अभाव में अग्रसर नारी धर्म के विचार को सच नहीं किया जा सकता। उनके अनुसार "पिंजड़ा खोल देने पर भी पिंजरे का पक्षी उड़ नहीं सकता। वही हालत नारी समाज की है। अधिकार दिए जाने पर भी उसे स्वीकार करने की उसकी मनोवृत्ति नहीं है। यहीं तक नहीं नारियाँ ही उसका विरोध भी करती है"[3] स्त्रियों को इतने लम्बे समय तक धर्म-शास्त्र के अधीन रखा गया है कि उन्हें मिलने वाली आजादी के महत्त्व को वे समझ नहीं पातीं। इसलिए जब महिलाओं के हक़ में तलाक का बिल पास हुआ तो महिलाओं ने ही उसका विरोध किया, इस बात से सुभद्रा कुमारी चौहान बहुत निराश हुई थीं। इसलिए उनका मानना है कि स्त्रियों को

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 84
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 84
[3] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 84

अपने हक़ और अधिकारों के लिए सचेत करने के लिए अग्रसर नारी धर्म को सच्चे अर्थों में चरितार्थ करना अभी शेष है।

निष्कर्ष रूप में यह निवेदित करना चाहती हूँ कि सुभद्रा कुमारी चौहान के आलोचक रूप और उसके महत्त्व पर भी विचार किया जाना चाहिए। सुभद्रा कुमारी चौहान को एक समर्थ कवयित्री के तौर पर हिंदी साहित्य के इतिहास में सम्मानीय स्थान प्राप्त है। कुछ विद्वानों ने उन्हें समर्थ कहानीकार के रूप में भी स्वीकार किया है परन्तु एक आलोचक या विचारक के रूप में उनके महत्त्व पर विचार अभी नहीं किया गया है। महादेवी वर्मा को भी शुरुआत में 'विरह वेदना' की कवयित्री मात्र के रूप में ही पहचान मिली परन्तु समय के साथ उनके वैचारिक साहित्य पर भी विचार किया गया। आज स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में उनके लेखन के महत्त्व को प्रमुखता से स्वीकार किया जाता है। इस सन्दर्भ में महादेवी वर्मा की समकालीन सुभद्रा कुमारी चौहान के वैचारिकी पर गंभीरता से विचार किया जाना अभी अपेक्षित है। सुभद्रा कुमारी चौहान एक समर्थ रचनाकार होने के साथ एक समर्थ विचारक के रूप में भी दिखाई पड़ती हैं। इस अध्याय में उनके इसी पक्ष को विश्लेषित-विवेचित करने का प्रयास किया गया है तथा उनके आलोचना कर्म के महत्त्व को तत्कालीन सन्दर्भों में समझने का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय

पंचम अध्याय

सुभद्रा कुमारी चौहान के बाल साहित्य का स्वरूप

5.1 हिंदी बाल साहित्य का स्वरूप एवं संवेदना :

व्यक्ति के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल बाल्यकाल होता है। बचपन व्यक्ति के भावी जीवन का नींव होता है। बचपन में बच्चे को जैसा संस्कार और परिवेश मिलता है उन्हीं के बीच उसका पूर्ण विकास होता है। बाल मन जिन संस्कारों को ग्रहण करता है वह जीवन के अंत तक उनके साथ बने रहते हैं। ब्लेयर जोन्स एवं सिंपसन के अनुसार 'बाल्यावस्था वह समय है जब व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोण व मूल्यों और आदर्शों का बहुत सीमा तक निर्माण होता है।' वास्तव में बाल मन किसी भी बात को सरलता से ग्रहण करने में सक्षम होता है और यह कार्य साहित्य के माध्यम से संभव हो पाता है। बच्चों के लिए लिखना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं है लेकिन बच्चों को सही दिशा दिखाए बिना किसी प्रकार का बदलाव संभव नहीं है। बाल साहित्य बालक को ध्यान में रख कर लिखा जाने वाला साहित्य होता है। दूसरे शब्दों में 'बाल साहित्य का अभिप्राय बच्चों कर लिए लिखा जाने वाले साहित्य से है।'[1] हिंदी के प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. श्री प्रसाद के अनुसार - बाल साहित्य बच्चों से जुड़ा मानसिक चिंतन है जिसकी अभिव्यक्ति भाषा के विविध विधाओं में होती है।

स्वतंत्रता पूर्व बाल साहित्य पर विचारणीय है कि बाल साहित्य का अविर्भाव कब से माना जाए। हिंदी बाल साहित्य के आरम्भ में महाकवि सूरदास आदि ने बाल लीला के पद लिखे लेकिन ये बाल साहित्य के लिए या इस उद्देश्य से नहीं लिखे गए थे इन पदों में बाल क्रीड़ायें हैं किन्तु ये कृष्ण

[1] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य, डॉ. कामना सिंह, पृ. सं. 09

भक्ति के पद अधिक लगते हैं। इस सम्बन्ध में यह तर्क सामने आता है कि जो पद बच्चों के लिए नहीं लिखी गई वह बाल साहित्य की सीमा रेखा में कैसे आ सकती है ? इन पदों से कोई भी पाठक वर्ग सम्वेदनशील हो सकता है लेकिन इन्हें बाल साहित्य के अंतर्गत नहीं शामिल किया जा सकता है।

इसके बाद जब स्वतन्त्र रूप से बच्चों के लिए लिखा जाने लगा वह आधुनिक काल का भारतेन्दु युग रहा है। इस काल में बच्चों को साहित्य का हिस्सा बनाया गया। उन्हें तत्कालीन समाज की समस्याओं से रूबरू कराया गया। इस सार्थक पहल को भारतेंदु युग में अधिक देखा गया है। बाल साहित्य की पहली और अनिवार्य शर्त यह है कि बच्चों के लिए लिखा जाने वाला साहित्य। इसलिए बाल साहित्य भारतेंदु युग से माना जा सकता है - डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने हिंदी बाल साहित्य का अविर्भाव काल भारतेंदु युग को सिद्ध करते हुए लिखा है कि, "भारतेंदु युग में, सन 1874 में 'बाला बोधनी' पत्रिका का प्रकाशन एक ऐसी ऐतिहासिक घटना है, जो यह प्रमाणित करती है कि बाल वर्ग के लिए भी पृथक साहित्य (स्कूली किताबों के अलावा ज्ञान देने वाला) लिखा जाना आवश्यक समझा गया था।"[1]

हालाँकि बालकों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य को अधिक प्रोत्साहन नहीं दिया जा रहा था लेकिन बाल साहित्य को बढ़ावा देने और बाल रूचिपूर्ण रचना करने वाले बाल साहित्यकारों की भी कमी नहीं थी। आरंभ में बाल साहित्य लेखन की गति मंद रही लेकिन नवजागरण के साथ ही बाल साहित्य को भी एक पृथक विधा के रूप में चिह्नित किया गया।

भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जो हिंदी बाल साहित्य लिखा गया उसे बाल साहित्य का अनमोल पृष्ठभूमि माना जा सकता है लेकिन उसके बाद स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य में विविधता आ गई। कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बाल साहित्य की बाढ़ आ गई। इस संदर्भ में

[1] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य, डॉ. कामना सिंह, पृ. सं. 22

कुछ मत इस प्रकार हैं - "डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के अनुसार - बाल साहित्य के विकास के लिए यह समय बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। नई नई विचारधाराओं ने जन्म लिया और साहित्य के स्वर को धीरे -धीरे बदलने लगी। अब तक बच्चों के लिए जो कुछ भी लिखा गया था, वह अधिकांश प्राचीन मान्यताओं तथा सीमाओं में बंधा हुआ था।"[1] दूसरा अभिमत डॉ. अमरनाथ का है 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बाल साहित्य चरमोत्कर्ष पर है।'[2]

हिंदी साहित्य में बाल साहित्यकारों की एक लम्बी परम्परा रही है। प्राचीन काल से ही पंचतंत्र, हितोपदेश, परी कथाएँ, सिंहासन बत्तीसी, जातक कथाएँ आदि के माध्यम से बच्चों को मनोरंजनपूर्ण तरीके से शिक्षा प्रदान किया जाता रहा है। हिंदी साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में अमीर खुसरो की मुकरियों, पहेलियों जैसे – 'एक थाल मोती से भरा/ सबके सिर पर औंधा धरा' में बच्चों के लिए मनोरंजन की सामग्री मिल जाती हैं। सूरदास, तुलसीदास आदि कवियों ने भी अपनी रचनाओं में बाल्यवस्था की मनोरम वात्सल्य को प्रस्तुत किया है। वस्तुतः सूरदास के काव्य की वात्सल्य प्रेम भावना से ही बाल साहित्य का प्रारम्भिक युग गाढ़ा हुआ, जैसे – 'मैया मैं नहीं माखन खायो' अथवा 'मैया, कबहुँ बढ़ेगी चोटी' आदि पदों से बाल मन की जिज्ञासा प्रकट होती है। सूरदास के साथ साथ अन्य कवि कवयित्रियों ने भी श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए बाल साहित्य को पुष्ट किया है। इसी क्रम में मैथलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, प्रेमचंद, जैनेन्द्र कुमार, रवींद्रनाथ, महादेवी वर्मा आदि की परम्परा में सुभद्रा कुमारी चौहान एक महत्वपूर्ण रचनाकार हैं जिनके साहित्य में बाल मनोविज्ञान को रेखांकित करना आवश्यक है।

[1] स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य, डॉ. कामना सिंह पृ. सं. - 27
[2] वही, पृ. सं. 27

5.1.1 बाल साहित्य की प्रकृति :

बाल साहित्य किसे लिखना चाहिए ?, कैसा लिखा जाना चाहिए ?, किन विषयों पर लिखा जाना चाहिए ? अक्सर ऐसे प्रश्न उठते हैं इस पर विचार करते हुए हरिकृष्ण देवसरे लिखते हैं कि "अबोध और तुतलाते बालक के पास सार्थक शब्द कहाँ ? परन्तु बच्चे की ऐसी कौन-सी मनोभावना और आवश्यकता है जिसको माता नहीं ताड़ लेती और नहीं समझ लेती । बच्चे सबको प्यारे और सुंदर लगते हैं । परन्तु माता अपने बच्चे के प्यार और सुन्दरता की खूबियों को जितना पहचानती है उतना कोई दूसरा व्यक्ति नहीं पहचान सकता है ? इसलिए मेरी तो धारणा है कि माताएँ यदि शिशु साहित्य पर लिखने लगें तो उससे हमारे साहित्य की सुन्दरता बढ़ जावे ।" इस बाल साहित्य के स्वरूप के विषय में डॉ. कामना सिंह लिखती हैं, "बालकों के लिए लिखने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि हम अपने को उनके अनुभवों से गुजारें, उनकी जिज्ञासाओं को जानें, उनके मनोविज्ञान को समझें, उनके मानसिक क्षितिज में प्रवेश करें, उन्हें अपने मांस में आत्मसात करें, कुछ उनसे लें और तब अपने को उन अनुभव-अनुभूतियों से गुजारने के बाद जब हम लिखेंगे, तब वह वास्तविक रूप से उनके लिए होगा, उनका साहित्य होगा ।"[1]

प्रौढ़ साहित्य अर्थात् बड़ों के लिए साहित्य लिखना जितना आसान है उतना ही बाल साहित्य लिखना नहीं है । बच्चों का मनोरंजन कराना, ज्ञानवर्धक बातों से उन्हें प्रेरित करना, नैतिक मूल्य सिखाना, पशु-पक्षी प्रेम आदि बाल साहित्य की मूल प्रकृति माना जा सकता है । समीक्षक बाल साहित्य के बारे मतभेद में पड़े हैं कि आखिर बाल साहित्य की प्रकृति क्या होनी चाहिए ? इस सम्बन्ध में डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने प्रचलित लोककथाओं और लोक प्रसिद्ध आख्यानों के अनुसार हिंदी बाल साहित्य की प्रकृति एवं स्वरूप पर विचार करते हुए लिखते हैं कि "इसी कारण से अलिफ लैला, ग्रीम

[1] स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य, डॉ. कामना सिंह पृ. सं. - 19

बंधुओं की कहानियाँ तथा ई.पू. की कथाएँ प्रचलित रहीं और आज भी वे किसी न किसी रूप में दी जा रहीं हैं। किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही विश्व बाल सहित्य में स्पष्ट रूप से एक बात उभरने लगी थी, कि उसकी रचना के पीछे कोई निश्चित विचार होना चाहिए। विज्ञान के प्रसार, बदलती हुई शासन पद्धतियों और सामाजिक मूल्यों ने बाल साहित्य को एक निश्चित विचारधारा के अनुकूल रचा जाने के साथ-साथ उसे यथार्थ के अधिक निकट लाने के लिए विवश कर दिया।"[1] प्रस्तुत कथन में डॉ. देवसरे ने बाल साहित्य की बदलती हुई प्रकृति पर प्रकाश डाला है।

इसी संदर्भ में डॉ. राजकिशोर सिंह कथन है कि "स्वतन्त्रतापूर्व बाल कहानियाँ इतिहास, पुराण, उपनिषद् आदि से प्रभावित नैतिक मूल्यपरक, उपदेश प्रधान थीं, बोधकथाएँ थीं तो स्वातंत्र्योत्तर काल में अन्धविश्वास विरोधी, समसामयिक जीवन की उथल-पुथल की कहानी बन गई। विज्ञान और लोकहित, राष्ट्रीय चेतना और बाल-मन का परिष्कार करती हुई मानवेतर जगत का भी समाहार कर इस काल में असंख्य कहानियाँ लिखी गई। इसप्रकार आज बाल- कहानी का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है, आधुनिकता-बोध, मनोविज्ञान, संस्कृति, समाज और जीवन की समस्याओं के रूबरू करानेवाली बालमन के अनुरूप अनेक कहानियाँ लिखी जा रही हैं। हिंदी बाल कहानी का एक समग्र अध्ययन इसके व्यापक आयाम और समृद्धि का सूचक है।"[2] इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हिंदी बाल साहित्य ने विकास के विविध चरण तय करते हुए अपने वर्तमान स्वरूप में विद्यमान है।

माताओं का अक्सर अपने बच्चों से अधिक निकटता का सम्बन्ध होता है। हमारे समाज में भी यह माना जाता है कि बच्चों को उनकी माताएँ ही अधिक गहराई से समझती हैं। उनकी अनदेखी अनसुलझी बातों को भी जान लेती हैं। यही बात साहित्य लेखन में भी अपनाया जाए तो बाल साहित्य का फलक अधिक बड़ा हो जायेगा। महिलाओं का लिखा बाल साहित्य अधिक सटीक एवं

[1] समकालीन हिंदी बाल साहित्य, सुचिता सेठ, पृ सं. 86

[2] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य, डॉ. कामना सिंह, पृ. सं. 54

स्वानुभूति पर अधिक पाया गया है है इस संदर्भ में सुभद्रा जी का कथन सटीक मालूम पड़ता है - "प्रेम के अतिरिक्त एक और क्षेत्र है जिसे स्त्रियों का अधिकार क्षेत्र कहा जा सकता है वह बाल क्रीड़ा का। नन्हें- नन्हें बच्चे स्त्रियों के ही चरणों में रेंगकर चढ़ते हैं उन्हीं के सहारे खड़े होते हैं वे अपनी बोली माताओं से ही सीखते हैं। माताओं और बच्चों का इतना नैसर्गिक और प्रगाढ़ संसर्ग रहता है कि बच्चों के मन को माता ही सबसे अच्छा विश्लेषण कर सकती है। माता अपने बच्चे के मन की बात अपने मन से समझ जाती है, उसे समझने के लिए सार्थक शब्दों की आवश्यकता नहीं।"[1] सुभद्रा कुमारी चौहान भी ऐसा ही करती हैं उन्होंने अपने बाल कविताओ एवं कहानियों में ऐसे विषय चुने जो उनके आस पास विद्यमान थे। अपने बच्चों की दिनचर्या को ही उन्होंने कविता का विषय बनाया है।

5.1.2 बाल साहित्य का वर्गीकरण :

बाल साहित्य के पिछले सौ साल को विद्वानों ने वर्गीकृत करने का प्रयास किया है। मोटे तौर पर हिंदी बाल साहित्य के इतिहास को दो वर्गों में बाँटा गया है - स्वतंत्रता से पूर्व का बाल साहित्य और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे भी बाल साहित्य में एक और आधुनिक काल जोड़कर इसी विभाजन को स्वीकार करते हैं। इसीप्रकार हिंदी बाल साहित्य के इतिहास को डॉ. परशुराम शुक्ल ने निम्नांकित पांच भागों में विभाजित किया है – 'आदियुग, भारतेंदु युग, पूर्व स्वतंत्रता युग, उत्तर स्वतंत्रता युग तथा प्रयोगवादी युग।'[2]

[1] स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य, डॉ. कामना सिंह पृ. सं. 47-48
[2] समकालीन हिंदी बाल साहित्य, सुचिता सेठ, पृ. सं. -1

यह वर्गीकरण कई आधार पर किए गए हैं। हिंदी बाल साहित्य का वर्गीकरण विधाओं के आधार पर इसप्रकार किया गया है –1.बाल काव्य , 2. बाल कहानी, 3. बाल उपन्यास, 4. बाल नाटक एवं बाल एकांकी, 5. बाल जीवनी साहित्य, 6. स्फुट बालोपयोगी लेखन।

प्रकाश मनु ने बाल कविताओं का वर्गीकरण करते हुए इसे तीन चरणों में बाँटा है –

1. 'प्रारंभिक युग - (1901-1947ई.)

2. गौरव युग – (1947 -1970 ई.)

3. विकास युग – (1971 से अब तक)'[1]

प्रारंभिक युग को आदि युग भी कहा जाता है। यह स्वतंत्रता-पूर्व काल है। यह वही समय है जिसमें स्वतंत्रता के लिए गुलामी के बन्धनों के विरुद्ध बालकों के व्यक्तित्व निर्माण की कविताएँ लिखी गई। देशभक्ति और उपदेशात्मक कविताओं की भरमार हो गयी। हालाँकि इस युग को कुछ विद्वान और पीछे भारतेंदु युग तक ले जाना चाहते हैं, भले ही उस दौर में बच्चों के लिए कविताएँ कम लिखी गई हों। 1947 से 1970 ई. तक का समय गौरव युग है। बाल कविता इस युग में सर्वोत्तम ऊंचाई तक पहुँचती है। 1971 ई. के बाद अब तक का समय हिंदी बाल कविता का विकास युग कहलाता है। इस अवधि में सबसे अधिक बाल कविताएँ लिखी गई हैं।

बाल कवि श्रीप्रसाद ने बाल कविता के इतिहास को तीन भागों में बाँटा है – "1. आरंभिक युग, 2, विकास युग, 3. उत्थान युग। 1910 से 1950 तक आरंभिक युग, 1951-1970 तक विकास युग और 1971 से अब तक के काल को उन्होंने उत्थान युग की संज्ञा दी है।"[2] इसके अतिरिक्त

[1] हिंदी बाल कविता का इतिहास, प्रकाश मनु, पृ. सं. – 17
[2] स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य , डॉ. कामना सिंह, पृ. सं. - 42

श्रीप्रसाद जी ने बाल कहानियों की विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुए उनके निम्न रूप निर्धारित किए हैं –

“1.ऐतिहासिक कहानियाँ

2. पौराणिक कहानियाँ

3. साहस की कहानियाँ

4. जासूसी कहानियाँ

5. हास्य कहानियाँ

6.पशुपक्षियों की कहानियाँ

7. परी कहानियाँ

8. लोक कथाएँ

9. त्योहारों और व्यक्तियों की कहानियाँ

10. सामन्ती जीवन की कहानियाँ

11. वैज्ञानिक कहानियाँ

12. मुहावरों की कहानियाँ

13. बाल जीवन की कहानियाँ

14. ज्ञान कथायें”[1]

---

[1] समकालीन हिंदी बाल साहित्य, शुचिता सेठ, पृ. सं. – 32 -33

बाल कहानियाँ बालकों के ज्ञान और मनोरंजन के लिए लिखीं जाती हैं। प्रत्येक कहानी बाल कहानी बाल कहानी नहीं हो सकती हैं इसलिए बाल अभिरुचियों को महत्त्व देते हुए एक अन्य विद्वान डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष' ने बाल कहानियों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया है –

"1.उपदेशात्मक कहानियाँ, 2. पशुपक्षियों की कहानियाँ, 3. ऐतिहासिक कहानियाँ, 4. साहसिक कहानियाँ, 5. वैज्ञानिक कहानियाँ, 6. मनोवैज्ञानिक कहानियाँ, 7.मुहावरों की कहानियाँ, 8.गीत कथायें, 9.परी कथायें।"[1]

इसप्रकार समीक्षकों ने बाल साहित्य के वर्गीकरण को अलग- अलग ढंग से निर्धारित किया है।

5.1.3 बाल साहित्य का महत्त्व :

बच्चे सृष्टि की अनमोल रचना हैं। उनका कोमल मन अपने आस पास के परिवेश से प्रभावित होता है। अक्सर एक उक्ति सामने आती है – 'बच्चे देश का भविष्य', बाल साहित्य के आलोक में यही उक्ति गहन चिंतन का विषय है। इसकी आवश्यकता इस रूप में भी है कि बच्चों के हाथ में दिए जाने वाले साहित्य कैसा हो ? बाल साहित्य के माध्यम से नई पीढ़ी को सजग एवं चिन्तनशील का कम बाल साहित्यकार करते हैं। अपनी कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, पहेली, मुहावरे आदि के माध्यम से नई चिंतन दृष्टि विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है।

बाल साहित्यपरक विचार मंथन करते हुए डॉ. मधुपंत लिखते हैं कि "परम्पराएँ विलुप्त हो रही हैं, परिवार टूट रहे हैं, सामाजिक जीवन में कड़वाहट आ रही है, संस्कारों का विघटन हो रहा है यदि

[1] समकालीन हिंदी बाल साहित्य, शुचिता सेठ, पृ. सं. – 32

समग्र रूप से देखें तो सारी स्थिति इतनी शोचनीय है कि वह कौन-सी चीज है जो हम भावी पीढ़ी को देकर जायेंगे ?"[1] इसलिए बाल साहित्यकारों का दायित्व है कि वे अंधविश्वासों, परम्पराओं, पौराणिकता और सामन्ती सोच के मापदंड से थोड़ा हटकर सोचें। साथ ही साथ युगानुरूप साहित्य लिखें।

छोटे बच्चों की जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिए कहानी कहने की परम्परा बहुत प्राचीन है। कहानियों के विषयवस्तु बाल मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। इसलिए बाल कहानीकारों का यह दायित्व बन जाता है कि बाल कहानियों की विषयवस्तु अच्छे संस्कार देने वाली हो। प्रारंभिक काल में कहानी के विषय भूत-प्रेत, अन्धविश्वास, जासूसी आदि प्रचलित थे, ये कहानियाँ बाल मन पर भय की ग्रहण कर लेती थी लेकिन बालकों के मन से भय दूर करने के लिए कहानी कहा जाता था।

दूसरी महत्वपूर्ण विधा बाल कविता है। कविता का सम्बन्ध संवेदना से होता है। बच्चों की संवेदनशीलता बड़ों की अपेक्षा अधिक होती है। इसीलिए वे कविता की ओर सहज ही आकर्षित होते हैं। यही कारण है कि बाल साहित्यकार बच्चों की अभिरुचि को देखते हुए निरंतर कविताएँ लिखते रहते हैं।

राबर्ट लिंद बच्चों के लिए गीतों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं - "काव्य का आनंद, कुछ चुने हुए लोगों के ही अधिकार की बात नहीं है। बल्कि वह तो सबकी संपत्ति है। इसे हम आरंभिक रूप में बच्चों के गीतों में दुहराए जाने वाले शब्दों तथा स्वरों में देख सकते हैं।"[2]

रामकुमार वर्मा ने बाल साहित्य के उद्देश्य व महत्त्व का विवेचन करते हुए लिखा है कि "बाल साहित्य का महत्त्व केवल राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय भी है। इसके द्वारा उन बालकों को दिशा प्राप्त

[1] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य, कामना सिंह, पृ. सं. 17
[2] हिंदी बालसाहित्य : सैद्धांतिक विवेचन, डॉ.हरिकृष्ण देवसरे, पृ.सं. - 237

होगी, जो न केवल हमारे देश के कर्णधार हैं, वरन जिन्हें दूसरे देशों में भारत के प्रतिनिधि के रूप में काम करना है...।"[1]

5.2 बाल साहित्य और सुभद्रा कुमारी चौहान :

बाल साहित्य में सुभद्रा कुमारी चौहान का स्थान महत्वपूर्ण है । वे जिस तरह की बाल कविताएँ लिख रहीं थीं वह आज भी दुर्लभ है । उनका यह योगदान स्वतन्त्रतापूर्व बाल साहित्य के दायरे में अनुपम था । इस संदर्भ में प्रकाश मनु लिखते हैं कि "सुभद्रा कुमारी चौहान (1904-1948) ने बच्चों के लिए कुछ अत्यंत सुकोमल कविताएँ लिखी हैं । इनमें कहीं कहीं उनका मातृत्व जैसे फूट पड़ा है ।"[2]

सन 1932-33 ई. के लगभग सुभद्रा जी का झुकाव बालकों की कविता और कहानियों की तरफ हुआ । सुभद्रा ने कई सारे बाल कविताएँ लिखे हैं, बाल साहित्य पर सुभद्रा कुमारी चौहान की पहली पुस्तक 'सभा का खेल' है किंतु इसमें बहुत से कविताएं नहीं आ पाए हैं । हंस प्रकाशन से 'सभा का खेल' का नया संस्करण तथा 'कदम्ब का पेड़' शीर्षक से दो पुस्तकें प्रकाशित हुए हैं । 'सभा का खेल' संग्रह के अंतर्गत 'अजय की पाठशाला', 'सभा का खेल', 'नटखट विजय', 'मुन्ना का प्यार', 'पतंग', 'बांसुरी वाला', 'कुट्टी' आदि कविताएं संग्रहित हैं । 'कदम्ब का पेड़' संग्रह में 'कोयल', 'रामायण की कथा', 'पानी और धूप', 'खिलौने वाला' और 'कोयल' कविताएं हैं । स्वतन्त्र रूप से 'झाँसी की रानी' कविता को भी बाल साहित्य के अंतर्गत स्वीकार किया जाता है । ये सभी कविताएँ

[1] हिंदी बाल साहित्य एक अध्ययन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे , पृ. सं. -8-9

[2] हिंदी बाल कविता का इतिहास, प्रकाश मनु, पृ.सं. - 43

बहुत रोचक हैं। वर्तमान में ये काव्य संग्रह उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इन कविताओं को अन्य शीर्षक के ग्रन्थों में संकलित-सम्पादित किया गया है।

अमराई, गौरी, रूपा, कैलाशी नानी, राही, हींगवाला, बिआहा, सुभागी, दुराचारी, मंगला, तीन बच्चे और दो सखी सुभद्रा जी की प्रमुख कहानियाँ हैं, जिनमें वात्सल्य प्रेम है। मातृत्व का स्नेह है। बाल मनोविज्ञान के तत्व विद्यमान हैं लेकिन उन्होंने बच्चों के लिए कहानी लिखना शुरू नहीं किया था। अपितु उनकी बाल चेतना उनकी उपरोक्त कहानियों के माध्यम से देखा जा सकता है।

बाल साहित्य के विषयवस्तु में देश प्रेम, प्रकृति प्रेम, चरित्र निर्माण, जीव प्रेम, नैतिक मूल्य, शिक्षा का महत्त्व आदि हैं। इनके आधार पर सुभद्रा कुमारी चौहान के बाल साहित्य के प्रमुख विशेषताओं को इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है -

5.2.1 वात्सल्य प्रेम :

'वात्सल्य एक व्यापक भाव है। यह प्रेम का प्रतिरूप है। प्रेम इस जगत का आधारभूत प्रवृतिमय भाव है। फिर छाए वह मातृप्रेम हो, प्रेम हो, श्रद्धा, दया हो, करुणा हो, सुरक्षा हो पशु-पक्षी पादप प्रेम हो या देश-प्रेम हो।'[1] सुभद्रा जी का वात्सल्य प्रेम व्यापक था। वे स्वयं वात्सल्य की प्रतिरूप थीं। उनके जीवन को चन्दन के पेड़ के समान माना गया है जो अपनी परिधि में सारे को सुशोभित कर गया।

सुभद्रा जी का समग्र साहित्य का केन्द्रीय भाव है प्रेम।वह प्रेम वात्सल्य अप्रेम और दाम्पत्य प्रेम दोनों के रूप में दिखाई देता है। हिंदी बाल कविताओं में सुभद्रा जी का योगदान अनमोल है।

---

[1] स्वातंत्र्य कोकिला : सुभद्रा कुमारी चौहान, संपादक -डॉ. किशोरी लाल व्यास , पृ. सं. - 119

बच्चों के प्रति उनका जो वात्सल्य था वही उनकी अनेक कविताओं में मुखर होता है। सुभद्रा जी के वात्सल्य भाव की परिधि का विस्तार हो जाता है जब उनके बाल साहित्य में पशु-पक्षी, पेड़ पौधे समा जाते हैं। वे स्वयं तेज गर्मी में झुलसाते कुत्तों को पानी पिलाना, उनपर पानी डालना, घर की तुलसी तथा अन्य पेड़ पौधों पर पानी देना, पक्षियों के लिए सकोरे में पानी भरना नहीं भूलती थी, जिससे सभी को भीषण गरमी में पानी मिलता रहे। ममतामयी ह्रदय की सुभद्रा कुमारी चौहान में मातृत्व कूट-कूट कर भरा हुआ था। दमयंती तलवार उनकी मातृत्व के संबंध में कहती हैं- "आधुनिक हिंदी लेखकों में शायद सुभद्रा कुमारी चौहान ही एक हैं जिनकी रचनाओं में मातृत्व साकार हो उठा है और जिनके वात्सल्य की सहज सरल व स्वाभाविक अभिव्यक्ति सहसा सूर की यशोदा की याद दिला देती है।"[1] बच्चों के साथ चहकने वाली और उनपर अपनी ममता लूटाने वाली सुभद्रा जी बच्चों के साथ बच्ची बन जाती थीं, वह बच्चों से बहुत प्यार करती थी इसलिए पहली बेटी के जन्म के पश्चात अपनी कविता में इसप्रकार लिखती हैं -

"बीते हुए बालपन की यह
क्रीड़ापूर्ण वाटिका है
वही मचलना, वही किलकना
हँसती हुई नाटिका है।"[2]

सुभद्रा जी बाल मनोविज्ञान से बहुत अच्छी तरह परिचित थीं। वह जानती थीं कि छोटे बच्चे पर मां का अधिक स्नेह देखकर बड़े बच्चों में ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होती है। बच्चों की इस भावना को वे अपनी कविताओं में इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं –

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. - 93
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1 , संपादक - रूपा गुप्ता, पृ. सं. 77

"मां, मुन्ना को तुम हम सबसे
क्यों ज्यादा करती हो प्यार ?
हमें भेज देतीं पढ़ने को
उसका करतीं सदा दुलार
उसे लिये रहतीं गोदी में
पैरों हमें चलाती हो
हमें अकेला छोड़ उसे तुम
अपने साथ सुलाती हो
उसके रोने पर तुम अपने
काम छोड़ कर आती हो
किन्तु हमारे रोने पर तुम
कितनी डांट लगाती हो
माँ, क्या मुन्ना ही बेटा है
हम क्या नहीं तुम्हारे हैं?
सच कह दो मां उसी तरह क्या
तुम्हें नहीं हम प्यारे हैं ?"[1]

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली,भाग-1 संपा रूपा गुप्ता, पृ. सं. 207

बच्चे मन के सच्चे होते हैं। वे गलती बर्दास्त नहीं करते हैं तथा जल्दी प्रतिरोध करते हैं। वास्तव में हमारे समाज में बच्चों को यही सिखाया जाता है। बच्चे अपने संस्कार के कारण गलतियाँ नहीं करते और कुछ गलत होने पर विरोध करना भी जानते हैं। जिसका नमूना हींगवाला कहानी में देखा जा सकता है - "खान बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए हींग तौलने लगा। इस पर सावित्री के बच्चे बहुत नाराज हुए। सभी बोल उठे – मत लेना माँ, तुम कभी न जाना। जबरदस्ती तौले जा रहा है। जब खान ने हींग तौलकर पुड़िया बनाकर सावित्री के सामने रख दी तब सबसे छोटे बच्चे ने पुड़िया उठाकर खान के पास फेंकते हुए कहा, 'ले जाओ, हमें नहीं लेना है। 'चलो माँ भीतर चलो।' सावित्री ने किसी की बात का उत्तर न दे हींग की पुड़िया उठा ली और पूछा कितने पैसे हुए खान। 'सवा छः आने पैसे अम्माँ, खान ने उत्तर दिया। सावित्री ने पाँच पैसे तोले के भाव से सवा छः आने पैसे लाकर खान को दे दिये। खान सलाम कर चला गया पर सावित्री के बच्चों को माँ की यह बात अच्छी न लगी। वे तीनों बहुत नाराज थे।"[1]

सुभद्रा जी अन्याय से कभी हारती नहीं थी उन्होंने दृढ़ विश्वास और अटूट साहस अपने बच्चों में भी भरा था। उनकी कहानी में भी इसका उदहारण देखा जा सकता है। सुभद्रा जी के हींगवाला कहानी में बच्चों की ईर्ष्या और जलन का चित्रण हुआ है। बच्चे और माँ के इस संवाद में बाल संवेदना प्रकट हुई है " बड़े लड़के ने कहा – माँ तुमने खान को वैसे ही छः आने पैसे दे दिये हैं। हींग की कुछ जरूरत नहीं थी। इसके आगे कुछ कहने का साहस न हुआ पर छोटे के कानों में तो मलाई के बरफ वाले की आवाज गूंज रही थी – 'मलाई का बरफ', 'ठंडा बरफ'...वह माँ से बिगड़कर बोला – दो माँ, छः आने पैसे हमको भी दो। हम बिना लिये न रहेंगे ! लड़की,जिसकी उम्र आठ साल की थी, बड़े गंभीर स्वर में बोली – तुम माँ से पैसा न माँगो। वे तुम्हें न देंगी। उनका बेटा तो वही खान है, हम

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -248

नहीं हैं । सावित्री को बच्चों की इन बातों से हँसी आ रही थी, किन्तु उसने अपनी हँसी दबा कर बनावटी क्रोध में कहा – चलो चलो, बड़ी रातें बनाने लग गये हो, खाना तैयार है खाओ ।"[1]

बच्चे अपने हिस्से की चीजें आसानी से नहीं बांटते हैं । यदि उन्हें बराबर न मिला तब भी वे ईर्ष्या करते हैं और लड़ाई कर लेते हैं – "छोटा बोला – पहले पैसे तो । तुमने खाने को दिये हैं । सावित्री ने कहा -खान ने पैसों के बदले में हींग दी है, तुम क्या दोगे । छोटा – मिट्टी देंगे । सावित्री हँस पड़ी – अच्छा चलो पहिले खाना खाओं फिर मैं रुपया तुड़ाकर तीनों को छः-छः आने दूँगी । खाना खाते खाते हिसाब लगा – एक रुपये में सोलह आने, छः आने रतन लेगा, छः आने मुन्नी लेगी, छोटे के लिए चार ही आने बचेंगे । छोटा बिगड़ पड़ा – कभी नहीं, मैं छः आने लूँगा । और दोनों में मारपीट हो चुकी होती यदि मुन्नी चार आने पैसे स्वयं लेना न स्वीकार कर लेती ।"[2]

सुभद्रा जी कहानियों में बच्चों के लिए माँ के महत्त्व को वर्णित करती हैं । गौरी कहानी में सीतारामजी के दो बच्चे हैं । सीतारामजी की पहली पत्नी का देहांत हो चूका है । वे गौरी को दूसरी शादी के लिए जब देखने आते हैं तब नयी माँ को देखने की ख़ुशी में दोनों बच्चे अत्यंत प्रसन्न हैं - "दोनों बड़े प्रसन्न, हँसमुख, आकर घर में वे इस प्रकार खेलने लगे जैसे इस घर से वे चिरपरिचित हों । कुन्ती एक तरफ बैठी थी । बच्चों के कोलाहल से परिपूर्ण घर उसे क्षण भर के लिए नंदनकानन-सा जान पड़ा ।"[3] बच्चे गौरी को अच्छे लगते हैं वह मन ही मन सोचती है कि यदि बिना किसी प्रकार के सम्बन्ध हुए भी सीताराम जी इन बच्चों को संभालने का भर उसे सौंप दें, तो वह खुशी-खुशी ले ले । बच्चे अबोध होते हैं वे मन की बात छुपा कर नहीं रख पाते हैं । इसलिए वे गौरी के घर में अपने पिता से जिद्द करते हैं कि वे उनकी नयी माँ को दिखाए –"अचानक छोटे बच्चे को जैसे कुछ याद आ गया

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -248

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -248

[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -219

हो। दौड़कर पिता के पास आया। उनके पैरों के बीच खड़ा होकर बोला – बाबू, तुम तो कैते थे कि माँ को दिकाने ले चलते हैं। माँ कआँ है, बतलाओ ? बाबू ने किंचित हंसकर कहा -ये मांजी बैठी हैं, इनसे कहो, यही तुम्हें दिखायेंगी। बालक ने मचलकर कहा – ऊँ हूँ तुमू दिकाओ।"[1]

इस कहानी में बच्चे अपनी नयी माँ को देख कर अपनी तुतलाते हुए उनसे सम्बन्ध जोड़ने की कोशिश करते हैं – "गौरी पिछले बरामदे में चुपचाप खड़ी थी। वह न जाने किस ख्याल में थी। तब तक छोटे बच्चे ने उसका आँचल पकड़कर खींचते हुए कहा – क्या तुम अमारी माँ हो ? गौरी ने देखा हृष्ट पुष्ट सुंदर सा बालक, कितना भोला, कितना निश्छल। उसने बालक को गोद में उठाकर कहा – हाँ। बच्चे ने फिर उसी स्वर में पूछा – अमारे घर चलोगी न ? बाबू तो तुम्हें लेने आये हैं औल हम भी आये हैं। अब तो गौरी उसकी बातों का उत्तर न दे सकी। पूछा – मिठाई खाओगे ? 'हाँ खायेंगे' दोनों ने एक ही साथ एक स्वर से उत्तर दिया।"[2]

माता और पिता दोनों के स्नेह में से यदि बच्चों को चुनना हो तब अधिकांश बच्चे माँ के सानिध्य को चुनते हैं। इस क्रम में बच्चे अक्सर अपने पिता की शिकायत माँ से और माँ की शिकायत अपने पिता से जाकर करते हैं। हम इस मनोवृत्ति को गौरी कहानी के इस अंश से पता लगाया जा सकता है - "बच्चे अब भी उसी को घेरे हुए थे। वे उसे छोड़ना नहीं चाहते थे। बड़ी मुश्किल से सीतारामजी उन्हें बुलाकर कुछ देर तक अपने पास बिठा सके, किन्तु जरा सा मौका पाते ही वे फिर जाकर गौरी के आसपास बैठ गये। पिता इसके विरुद्ध कुछ देर तक अपने पास बिठा सके, किन्तु जरा -सा मौका पाते ही वे फिर जाकर गौरी के आसपास बैठ गये। पिता के विरुद्ध उन्हें कुछ नालिशें भी दायर करनी थीं, जो पिता के पास बैठकर न कर सकते थे। छोटे ने कहा- बाबू हमें कबी खिलौने नहीं ले देते। बड़े ने कहा – मिठाई भी तो कभी नहीं खिलाते। छोटा बोला – ऑल अमें छोड़कर दफतर

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -219

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -219-220

जाते हैं, दिन भर नईं आते, बाबू अच्छे नई हैं। बड़ा बोला - माँ तुम चलो, नहीं तो हम भी यहीं रहेंगे। बच्चों की बातों से सभी को हँसी आ रही थी।"[1]

कहानी के अंत में मातृत्व का भाव गौरी के अंदर इस रूप में समाहित हो गया था - "गौरी की चिंता थी उन बच्चों की। जब सत्याग्रह -संग्राम छिड़ा था, तभी से उसे फिकर थी कि न जाने कब सीतारामजी गिरफ़्तारी हो जायें। और फिर वे बच्चे बेचारे - उन्हें कौन देखेगा।"[2]

सुभद्रा जी माँ की ममता का एक अद्भुत रूप को रूपा शीर्षक कहानी में चित्रित करती हैं। लेखिका जेल के अंदर एक हत्यारिन माँ का चित्रण करती हैं, जिसका नाम रूपा था। वह अपनी बच्ची को लेकर कुएँ में कूद गई थी। यही कारण था कि वह जेल आयी थी। लेखिका इसके पीछे का पूरा सच जानना चाहती थी। वह उससे पूछती है। जब रूपा सच्चाई बतलाती है तब एक माँ की आर्थिक मजबूरी दिखाई देती है – "बहनजी ! मेरी गोपा इसी तरह थी जैसी आपकी ममता है। आपने बम्बई जाकर सैकड़ों रूपये खर्च करके ममता का मुँह ठीक करवा लिया है, पर मेरे पास रुपया कहाँ से आता। गोपा का बाप कहता था -खूब रुपया कमाकर अपनी गोपा को बम्बई ले जाकर आपरेशन कर देंगे, तब सब ठीक हो जाएगा। और इसलिए, खूब रुपया कमाने के लिए वह लड़ाई पर चला गया। तब से उसकी कोई खबर नहीं मिली। इधर मैं अकेली गोपा जरा-सी, जहाँ मेहनत-मजदूरी की जाती वहीं बच्चे और कभी बड़े-बड़े लोग तक गोपा को साफ़ न बोलने पर चिढ़ाया करते। लड़की चिढ़ती, दिन भर रोती और मैं किसका मुँह पकड़ती। बिना मेहनत मजदूरी के काम न चलता और जहाँ जाती वहीं यह बात होती।"[3] रूपा के मातृत्व ह्रदय का दुःख दर्द से भरा था। वह अपनी बेटी का ईलाज नहीं करा सकती थी इसलिए वह उसके कारण को ही खत्म कर देना चाहती थी, इसलिए वह अपना

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -220

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -223

[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -228

अपराध इसप्रकार बतलाती है – "जिस दिन मैं कुएँ में कूदी थी, उसके एक दिन पहले मैं एक जगह मजदूरी के लिए गयी थी। ऊपर मैं कुछ काम कर रही थी और वहीं जीने पर गोपा एक लकड़ी लिए बैठी थी। नीचे मुहल्ले भर के दस-बारह लड़के-लड़कियाँ उसे चिढ़ा रहे थे। वह कभी इसे, कभी उसे मारने दौड़ती, पर वह थे दस-बारह और गोपा अकेली। मैंने देखा। मुझे बड़ा क्रोध आ गया। गोपा को मैंने गोद में उठा लिया और पास ही जो लड़का उसकी चोटी खींच रहा था, उसे हल्के से पीठ पर मार दिया। बस फिर इसी बात को लेकर उन लोगों से कहा - सुनी हो गयी। अब मुझे काम भी न मिलता। पैसों की तंगी होने लगी। इधर बच्चे गोपा को और ज्यादा चिढ़ाकर तंग करने लगे। सोचा गोपा अभी छोटी है, समझती कम है, जब बड़ी होगी तब गोपा को कितना बुरा लगेगा, मेरी गोपा दुःखी हो जाया करेगी और कहीं मैं मर गयी तो...फिर बहिनजी! मेरे मरने के बाद गोपा की जो दुर्दशा होगी उसे सोचकर...और उस दुर्दशा तक गोपा न पहुँच सके, इसलिए ...।"[1]

'तीन बच्चे' शीर्षक कहानी में यह देखा जा सकता है कि बच्चे कैसे दूसरे असहाय बच्चों की मदद कितनी सरलता से कर लेते हैं। वे अपने हिस्से का भोजन भी उदारतापूर्वक देने को तैयार होते हैं। बच्चों में सबसे अधिक संवेदना होती है। जिसे कहानी में इसप्रकार देखा जा सकता है – "दूसरे दिन हम लोग सुबह की चाय पीकर उठने ही वाले थे वे बाल गवैये फिर आ पहुँचे। हमें, कोमल स्वर में सुनाई पड़ा –'सांवरियाँ हमें भूल गयो, सखि, सांवरियाँ'... मैंने अपने बच्चों से कहा – कल तुमने इन्हें खूब पूरियां खिलायी थीं न। अब वे सब फिर आ गये। जैसे उनके लिए यहाँ रोज पूरियाँ धरी हैं ! – धरी तो हैं माँ ! एक साथ ही बच्चों के मुँह से सच निकला और सबके हाथ एक साथ ही पूरी के डब्बे की ओर बढ़े।"[2] बच्चों की सच बोलने की प्रवृत्ति इस उद्धरण से स्पष्ट है।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 228
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 299

बच्चे अक्सर दूसरे बच्चों की सहायता करने के लिए तर्क-वितर्क करते हैं जिसे तीन बच्चे कहानी के अगले भाग में देखा जा सकता है। बच्चों को मदद के लिए आगे बढ़ते देख उन्हें रोकते हुए माँ कहती है – “ठहरो, ठहरो। रोज-रोज इन्हें पूरियाँ खिलाओगे तो दरवाजा ही न छोड़ेंगे। उन्हें चावल या आटा देकर जाने को कह दो। एक बच्चा बोल उठा – बेचारे छोटे-छोटे बच्चे; न जाने उनके माँ भी है या नहीं। वे भला कहाँ पकायेंगे ? दूसरा ताने के स्वर में बोला – इससे अच्छा तो उन्हें कुछ भी न दिया जाय। सबसे छोटा बोला – तुम भी माँ होकर ऐसा क्यों कहती हो माँ। उन बेचारों को भी भूख लगी होगी। मेरे हिस्से की दे दो। लड़की सब में समझदार थी। उसकी दृष्टि यही चाह रही थी कि माँ का इशारा भर मिले और पूरियों का डिब्बा ले जाकर वह पूरियाँ उन बच्चों को खिला दे। मैंने उदासीनता से कहा – पूरियाँ ही दे दो, पर शाम को फिर तुम्हारे लिए नाश्ता बनाना पड़ेगा। ‘माँ, शाम को नाश्ता नहीं करेंगे’, एक स्वर में एक साथ बच्चों ने कहा और हाथ में पूरियाँ लिए हुए दरवाजे की ओर दौड़े।”[1]

बच्चे घर में अपने माता-पिता के अलावा अपने नाना-नानी, दादा-दादी से अधिक प्रेम करते हैं। बच्चों को उनका साहचर्य अच्छा लगता है। कैलाशी नानी का मन बच्चों के बिना नहीं लगता था। वे बहुत उदार थीं। बच्चों के साथ उनकी खुशी थी। उनके वात्सल्यमयी एवं स्नेहिल स्वभाव पर कहानी में इसतरह प्रकाश डाला गया है – “कैलाशी नानी की जंगल में सूखी रोटियाँ नमक या कभी-कभी चटनी के साथ खाने में जितना स्वाद आता था, उतना स्वाद कभी किसी भोजन में नहीं आया। रोटियाँ भी गेहूँ की नहीं; न जाने कितने तरह के नाज मिलाकर बनाई जाती थी। कैलाशी नानी को हर घर से एक ही नाज तो मिलता था; कहीं गेहूँ कहीं जब। ज्वार, मक्का, उड़द, मूंग, गेहूँ, अरहर, सब मिलाकर इकट्ठा कर देतीं और रोज, आवश्यकतानुसार किसी की चक्की से पीस लातीं और दूसरे दिन

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 299

के लिए रोटियाँ सेंक रखतीं। यही उनका प्रतिदिन का आहार था। कभी-कभी गाँव के दूसरे बच्चे नदी में धोती फैलाकर मछली पकड़कर भूनते। उस दिन कैलाशी नानी रोटी भी न खातीं। सत्तू खाकर ही रह जातीं।”[1]

5.2.2 देश-प्रेम :

सुभद्रा कुमारी चौहान की बाल कविताओं की खासियत यह भी है कि वे अपनी अभिव्यक्ति में देशभक्ति जरुर ले आती हैं। उनकी कविताओं में बच्चे भी अक्सर खेल-खेल में महापुरुषों की भांति बनना चाहते हैं। ‘सभा का खेल’ देशभक्त बच्चों का खेल पर आधारित कविता है। इस सभा का खेल में बच्चे गांधी, नेहरू और सरोजिनी आदि के प्रतिरूप हैं। सुभद्रा जी ने बच्चों की राष्ट्रीय भावना को बहुत ही सरस ढंग से कविता में उकेरा है। बच्चों का यह बाल सुलभ निश्चल मन ‘सभा का खेल’ कविता में इसप्रकार द्रष्टव्य है –

“सभा का खेल आज हम,

खेलेंगे जीजी आओ

मैं गाँधी जी, छोटे नेहरू

तुम सरोजनी बन जाओ।

मेरा तो सब काम लँगोटी

गमछे से चल जायेगा

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 243

छोटे भी खद्दर का कुरता

पेटी से ले आयेगा

लेकिन जीजी तुम्हें चाहिए

एक बहुत बढ़िया सारी

वह तुम माँ से ही लेना

आज सभा होगी भारी"[1]

'तीन बच्चे' कहानी में लड़ते हुए बच्चे किसी दूसरे महान हस्ती बन जाते हैं – "मेरे बच्चों में से प्रत्येक ने अपने लिए एक-एक बगीचा लगाया था। बगीचा क्या फूलों की छोटी- छोटी क्यारियाँ थीं। एक दिन सबेरे हमलोगों ने देखा कि उन क्यारियों में फूल खिल आये हैं। बच्चे ही तो ठहरे। हरेक को अपनी-अपनी क्यारी के फूल अधिक सुंदर जान पड़े – और इसी बात पर उन लोगों में लड़ाई छिड़ गयी। हर एक का कहना था कि उस क्यारी के फूल सबसे सुंदर हैं। बात बढ़ते-बढ़ते फूलों से हटके दूसरे क्षेत्र में जा पहुंची। एक हिटलर बना, तो दूसरा मुसोलिन और तीसरा स्टालिन। और मुझे इन तीनों की माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त हो गया।संग्राम में विषैले वाक्यों को प्रयोग होते सुनकर, मुझे चौके का कम छोड़कर, बगीचे की ओर जाना पड़ा।"[2]

रवीन्द्रनाथ टैगोर, शरतचंद्र, प्रेमचंद जैसे बड़े रचनाकारों ने बाल साहित्य का सृजन है। रवीन्द्रनाथ टैगोर की बाल कहानियाँ तो भारत के साथ विदेशों में भी बहुत ख्याति मिली है। उनकी भांति सुभद्रा जी बच्चों के लिए कविता, कहानी लिखती हैं जो उनके चरित्र निर्माण की शिक्षा देने वाली विषयवस्तु आधारित है। कविता के माध्यम से वह बच्चों में तत्कालीन स्वतंत्रता की चेतना

[1] वही, पृ.सं. 213

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 297

पैदा करती है। साथ ही उनमें बचपन से ही स्वाधीनता की चेतना का बीज बो देना चाहती हैं। इन विशेषताओं का चित्रण 'सभा का खेल' शीर्षक बाल कविता में देखा जा सकता है -

"कहा बड़े ने छोटे जब तुम

नेहरू जी बन जाओगे

गाँधी जी बात मानकर

क्या तुम मार न खाओगे।

खेल-खेल में छोटे भैया

होगी झूठ-मूठ की मार।

चोट न आयेगी नेहरू जी

अब तुम हो जाओ तैयार।"[1]

सुभद्रा जी के पति, उनका कहना न मानने पर बच्चों को डांटते हैं। उनकी तीन बच्चे कहानी में यह परिदृश्य स्पष्ट होता है – "मैं सोच रही थी कि निर्णय करने के लिए जूरी क्यों न नियत कर लिए जायें कि इतने में ही बच्चों के काका जी आते दिखायी देते। चीखना-चिल्लाना तो दूर, उन्हें किसी का पंचम स्वर के ऊपर बोलना पसंद नहीं है। बच्चों को लड़ते देखकर बोले – अच्छा या लड़ाई किसलिए है ? यदि तुम लोग लड़े-भिड़े तो मैं तुम्हारी माँ को सत्याग्रह न करने दूँगा। मेरे हिटलर-मुसोलिनी शान्त हो गये। माँ के बिना उन्हें स्कूल जाने तक में कष्ट होता है, माँ के बिना जिनका काम नहीं हो सकता वहीं मेरे बच्चे चाहते थे कि मैं सत्याग्रह करूँ और जेल जाऊँ।"[2]

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं - 213-214

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-2, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 297

इस खेल में सुभद्रा जी बच्चों में भी स्वदेशी भावना का बीज डाल देना चाहती थीं, वे सभी धर्म के मेल और एकता पर बल देती हैं इसलिए वे इस कविता में लिखती हैं –

"हुई सभा प्रारम्भ कहा
गांधी ने चरखा चलवाओ
उठ कर फिर देवी सरोजनी
धीरे से बोलीं बहनो
हिन्दू मुस्लिम मेल बढ़ाओ
सभी शुद्ध खद्दर पहनो।
छोड़ो सभी विदेशी चीजें
लो देशी सुई तागा।"[1]

सुभद्रा जी की 'झाँसी की रानी' शीर्षक कविता बेहद लोकप्रिय है। सुभद्रा जी ने जहाँ 'बुंदेले हरबोलों के मुख' सुनाकर राष्ट्रीयता का अलख जगाया था। यह कविता मार्मिक और बाल-प्रवृति के अनुकूल है। और बाल साहित्य में इसका ऐतिहासिक महत्त्व है। इस संदर्भ में प्रकाश मनु ने लिखा है – "इस कविता में समूची आजादी की लड़ाई का एक अमर बिम्ब समा गया है। बच्चे इसे इतने लम्बे अरसे से गाते और पसंद करते आए हैं कि इसका शुमार बाल कविता में करना कुछ गलत न होगा।"[2] एक लम्बे अरसे से आजादी की लड़ाई को अमर करने वाली इस कविता को पसंद किया जाता है। वीरता और अमर बलिदान की याद दिलाने वाली यह कविता बच्चों के जुबान पर चढ़ी हुई कविता है

[1] वही, पृ. सं. 214
[2] हिंदी बाल कविता का इतिहास, प्रकाश मनु, पृ. सं. - 44

। बच्चे -बच्चे इस कविता को गाते हैं। इस कविता से बच्चे भी अपने देश के इतिहास को जान सकते हैं। देश की स्वाधीनता आंदोलनों में महिलाओं या माताओं की जो भूमिका थी उससे बच्चे वाकिफ होते हैं, कविता इस लिहाज से भी महत्वपूर्ण है। इसलिए यह कविता जब तब बच्चों के मुख से सुनाई दे जाती है –

"चमक उठी सन संतावन में वह तलवार पुरानी थी

बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

दूर फिरंगी को करने की हमने मन में ठानी थी "[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान बाल कविताओं में प्रसंग अनुसार भारतीय राष्ट्रीयता की पौराणिक एवं ऐतिहासिक भूमिका को भी प्रस्तुत करती हैं। इस दृष्टि से 'कदम्ब का पेड़' और 'बांसुरी वाला' कविता उल्लेखनीय है। कदम्ब का पेड़ कविता में मां बेटे के बीच लुका छिपी का खेल चलता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'कदम्ब का पेड़' कविता मनोहर है, इसे पढ़कर बच्चे झूम उठते हैं। यह कविता सुनकर बड़ों को भी अपने बचपन की याद दिलाती है। यमुना नदी हो न हो बचपन पर पेड़ों पर चढ़ने और उस पर बैठ कर यह कविता आज भी जरुर गायी जाती है। माँ और बच्चे के लाड दुलार की यह दुर्लभ तस्वीर खिंचती हुई कविता इसप्रकार है –

"यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ /होता जमुना तीरे

मैं भी इस पर बैठ कन्हैया /बनता धीरे-धीरे

ले देती यदि मुझे बांसुरी/ तुम दो पैसे वाली

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 81

किसी तरह नीची हो जाती /यह कदंब की डाली
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं / चुपके चुपके आता
इस नीची डाली से अम्माँ /ऊँचे पर चढ़ जाता
वहीँ बैठ फिर बड़े मजे से / मैं बाँसुरी बजाता
अम्माँ अम्माँ कह वंशी के / स्वर में तुम्हें बुलाता
सुन मेरी वंशी को माँ तुम / कितनी खुश हो जातीं
मुझे देखने काम छोड़कर/तुम बाहर तक आती
तुमको आती देख बाँसुरी रख / मैं चुप हो जाता
एक बार माँ कह पत्तों में/ धीरे से छिप जाता
तुम हो चकित देखतीं चारों/ ओर न मुझको पातीं।"[1]

स्वतंत्रता-पूर्व की हिंदी बाल कविता को सम्पान बनाने में सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्वपूर्ण योगदान है। बाल मनोविज्ञान की गहरी पकड़ उनकी कविताओं में मिलती है। सरला के घर रामायण कथा में जाने के लिए बेचैन एक बच्चे के मन के ये उदगार स्वाभाविक हैं –

"क्या कहती हो अभी धूप है, अभी बाहर न जाऊँ.
जरा देर को वहाँ बिछौने पर आकर सो जाऊँ।
यह क्या माँ, जब अभी जा रहे थे काकाजी बाहर
तब भी तो थी धूप, गए थे वे भी तो नंगे सिर

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं.- 97

उन्हें नहीं रोका था तुमने, मुझे रोकती जाती

यही तुम्हारी बाल समझ में, कभी न मेरे आती।"[1]

इसी प्रकार उनकी कहानियों में भी बाल मन की चेतना स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

'अमराई' कहानी बच्चों में राष्ट्रीय प्रेम की भावना को जगाती है, सुभद्रा जी उनके मनोभाव को इसप्रकार बतलाती हैं , " छोटे छोटे बच्चे और बच्चियाँ झूले पर झूल रहे थे। उनके सुकुमार हृदयों में भी देश-प्रेम के नन्हें-नन्हें पौधे प्रस्फुटित हो रहे थे। बहादुरी के साथ देश हित के लिए फाँसी पर लटक जाने में वे भी शायद गौरव समझते थे। पहले तो लड़कियाँ कजली गा रही थीं। एकाएक एक छोटा बालक गा उठा – 'झंडा ऊँचा रहे हमारा।' फिर क्या था, सब बच्चे कजली-वजली तो गए भूल और लगे चिल्लाने – झंडा ऊँचा रहे हमारा।"[2]

सुभद्रा जी की अमराई कहानी में छोटे बच्चों में देश को आजाद कराने का भाव था। पराधीन देश में ऐसा भाव बच्चों में समाहित था इसलिए सुभद्रा जी लिखती हैं, "ठाकुर साहब ने घोड़े से उतर कर अमराई में पैर रखा ही था कि उनका सात साल का नाती विजय हाथ में लकड़ी का तलवार लिए हुए आकर सामने खड़ा हो गया। ठाकुर साहब को संबोधन कर बोला – दादा ! देखो मेरे पास भी तलवार है; मैं भी बहादुर बनूँगा। इतने में उसकी बड़ी बहिन कान्ती, जिसकी उमर करीब नौ साल की थी, धानी रंग की साड़ी पहिने आकर ठाकुर साहब से बोली – दादा ! ये विजय लकड़ी की तलवार लेकर बड़े बहादुर बनने चले हैं। मैं तो दादा, स्वराज का काम करुँगी और चर्खी चला-चलाकर देश को आजाद कर दूँगा। फिर दादा बतलाओ, मैं बहादुर बनूँगी कि ये लकड़ी की तलवार वाले ? विजय की तलवार का पहिला वार कान्ती पर हुआ। उसने कान्ती की ओर गुस्से से देखते हुए कहा – देख

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 191

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 122

लेना किसी दिन फाँसी पर न लटक जाऊं तो कहना। लकड़ी की तलवार है तो क्या हुआ, मारा कि नहीं तुम्हें ?"[1]

सुभद्रा जी के पति, उनका कहना न मानने पर बच्चों को डांटते हैं। उनकी तीन बच्चे कहानी में यह परिदृश्य स्पष्ट होता है – "मैं सोच रही थी कि निर्णय करने के लिए जूरी क्यों न नियत कर लिए जायें कि इतने में ही बच्चों के काका जी आते दिखायी देते। चीखना-चिल्लाना तो दूर, उन्हें किसी का पंचम स्वर के ऊपर बोलना पसंद नहीं है। बच्चों को लड़ते देखकर बोले – अच्छा या लड़ाई किसलिए है ? यदि तुम लोग लड़े-भिड़े तो मैं तुम्हारी माँ को सत्याग्रह न करने दूँगा। मेरे हिटलर-मुसोलिनी शान्त हो गये। माँ के बिना उन्हें स्कूल जाने तक में कष्ट होता है, माँ के बिना जिनका काम नहीं हो सकता वहीं मेरे बच्चे चाहते थे कि मैं सत्याग्रह करूँ और जेल जाऊँ।"[2]

राही कहानी में बाल संवेदना का मार्मिक चित्रण किया गया है। माँगरोरी जाति की एक माता जो अपने भूखे बच्चों के लिए चोरी करती है। जिसे पकड़ कर जेल में भर दिया जाता है उसकी मार्मिक चित्रण सुभद्रा जी करती हैं - "अनीता ने एक ठंडी साँस ली। बोली फिर तूने कहा नहीं कि बच्चे भूखे थे, इसलिए चोरी की। संभव है इस बात से मजिस्ट्रेट कम सजा देता। - हम गरीबों की कोई नहीं सुनता, सरकार ! बच्चे आये थे कचहरी में। मैंने सब कुछ कहा, पर किसी ने नहीं सुना। राही ने कहा। - अब तेरे बच्चे किसके पास हैं ? उनका बाप है ? अनीता ने पूछा। राही की आँखों में आँसू आ गये। वह बोली – उनका बाप मर गया, सरकार ! जेल में उसे मारा था और वहीं अस्पताल में वह मर गया। अब बच्चों का कोई नहीं है।"[3] माँ को जेल होने के बाद बच्चों का कोई नहीं होना कहानी की मार्मिकता को उकेरता है। इस संदर्भ में कहानी की पात्र यह प्रश्न करती है कि "विचारक की

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-2, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 123

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-2, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 297

[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-2, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 252 – 253

अदूरदर्शिता के कारण या सरकारी वकील चातुर्यपूर्ण जिरह के कारण छोटे-छोटे बच्चों की माताएँ जेल भेज दी जाती हैं। उनके बच्चे भूखों मरने के लिए छोड़ दिये जाते हैं...।"[1]

तीन बच्चे कहानी में बच्चों की विवशता को चित्रित किया गया है। बच्चों की माँ जेल में बंद है इसलिए वे बच्चे गाना गाकर भीख माँग कर अपना पेट भरते हैं। बिन माँ के बच्चों की दयनीय दशा को इसप्रकार लिखती हैं - "- तुम लोग कहाँ रहती हो ? सोती कहाँ हो ? तुम्हें डर नहीं लगता ? – मैंने पूछा। बड़ी लड़की ने कहा – जेल के पास एक नाला है। हम लोग रात को वहीं पुल के नीचे माँ की बातें करते-करते सो जाते हैं। कभी कभी काली माँ भी आ जाती है पर वह रोज नहीं आती।"[2]

5.2.3 मनोरंजन एवं नैतिक मूल्य :

बच्चों की शैतानियों के साथ उनके खेल पर भी उन्होंने कविताएँ लिखी हैं। बच्चे खेल-खेल में अधिक सीखते हैं। मनोरंजन बचपन का अहम् हिस्सा है। इस संदर्भ में डॉ. हरिकृष्ण देवसरे लिखते हैं –"मनोरंजन बाल साहित्य का प्रमुख गुण है। इसलिए खेल-खेल में कुछ मतलब की बात पल्ले पड़ जाए तो कितना अच्छा है।"[3] इसप्रकार बच्चों में साहस, रोमांच और कौतूहल के भाव जगाने में बाल साहित्य को सक्षम होना चाहिए।

सुभद्रा बाल मनोविज्ञान से अच्छी तरह परिचित थीं, वे जानती थीं कि बच्चे जब दुकान पर कोई चीज देखते हैं तो उसे खरीदने के लिए मचल उठते हैं। बच्चे रोने और चिल्लाने लगते हैं तब कोई भी मां सहन नहीं कर पाती है। बच्चे भी अपनी माँ के प्रेम से परिचित होते हैं इसलिए वे जानबूझ

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-2, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 253
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. -301
[3] बालसाहित्य : मेरा चिंतन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, पृ. सं. - 92

कर ऐसा करते हैं। सुभद्रा जी 'पतंग' कविता में बच्चों के मन की ऐसी ही लालसा को रेखांकित करती हैं। जिसमें बच्चे पतंग खरीदने का आग्रह करते हैं और पतंग के रंगों का नाम लेते हैं –

"लाल लाल हैं, हरे हरे हैं
पीले और चांद तारा
धेले वाला भी पतंग माँ
लगता हमें बहुत प्यारा... ।"[1]

माता अपने बच्चे की मांग को हर संभव पूरा करने का प्रयास करती है। इसी स्वभाविक दृश्य को सुभद्रा जी की 'पतंग' कविता में देखा जा सकता है। स्वयं सुभद्रा जी के बच्चे पतंग देखकर मचल उठते हैं, पतंग खरीदने का आग्रह करते हुए माँ को बच्चे समझाते हैं, माँ के द्वारा पैसे ना देने की बात पर रोएंगे चिल्लायेंगे कहने लगते हैं। पतंग की बात अपनी मां को समझाते हुए कहते हैं –

"तुम तो नहीं समझती हो मां
पतंग और मंझे की बात
घर में बैठी बैठी जाने
क्या करती रहती दिन-रात।"[2]

इसप्रकार बच्चों की छोटी छोटी शिकायतों से उनके मनोविज्ञान का परिचय मिलता है।

गृहस्थी जीवन की छोटी-छोटी बातों का असर बच्चों पर होता है। सभी बच्चे जानते हैं कि माँ का कहना न मानने से डांट मिलती है। काका गलती करने पर डाँटते हैं, इसलिए बच्चे यहाँ काका

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -202
[2] वही, पृ. सं. 202-203

और बादल की समानता बतला रहे हैं। यह स्वाभाविक चित्रण सुभद्रा जी ने 'धूप और पानी' शीर्षक कविता में करती हैं –

"जोर-जोर से गरज रहे हैं,

बादल हैं, किसके काका

किसको डांट रहे हैं, किसने

कहना नहीं सुना माँ का।"[1]

जिस प्रकार बच्चे अपनी माँ से लुकाछिपी का खेल खेलते हैं। अपनी माताओं को परेशान कर खुश हो जाते हैं। इस कविता में बाँसुरी की धुन से बालक अपनी माता के साथ अटखेलियाँ करता है। यह मनोहारी चित्रण 'कदम्ब का पेड़' कविता में इसप्रकार है –

"अम्माँ अम्माँ कह वंशी के स्वर में तुम्हें बुलाता।

सुन मेरी वंशी को माँ तुम कितनी खुश हो जाती

मुझे देखने काम छोडकर तुम बाहर तक आती।

तुमको आती देख बाँसुरी रख मैं चुप हो जाता

एक बार माँ कह पत्तों में धीरे से छिप जाता।

तुम चकित देखतीं चारों ओर न मुखको पातीं।

तब व्याकुल सी हो कदम्ब के नीचे तक आ जाती।

पत्तों का मर मर स्वर सुन जब ऊपर आँख उठाती

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -193

मुझे देख ऊपर डाली पर कितना घबरा जाती।

गुस्सा होकर मुझे डाँटती कहती 'नीचे आ जा'

पर जब मैं न उतरता हँस कर कहतीं मुन्ना राजा।"[1]

'कुट्टी' शीर्षक कहानी में बच्चों की दोस्ती और कुट्टी का वर्णन है। इसके अलावा बच्चे जिद्दी होते हैं, जब मन मुताबिक चीजें न हो तब वे अपने मित्रों से नाराज होकर कुट्टी कर लेते हैं। इसलिए कुट्टी कविता में सुभद्रा जी इस विषय पर लिखती हैं-

"मोहन से तो आज हो गयी है मेरी कुट्टी अम्माँ

अच्छा है शाला जाने से मिली मुझे छुट्टी अम्माँ।"[2]

बच्चों में यह कुट्टी अधिक देर तक नहीं चलती है। बच्चे अपने मनमुटाव जल्द ही समाप्त कर लेते हैं। उनका कोमल ह्रदय क्षमाशील होता है इसका स्पष्ट उदहारण कविता की अगली पंक्तियों में देख सकते हैं –

"यह क्या कुट्टी होने पर भी

वह आ रहा यहाँ मोहन

आते उसको देख विजयसिंह

हुए बहुत खुश मन ही मन

बोले-कुट्टी तो है मोहन

फिर तुम कैसे आये हो

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं.199-200
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 211

फुल देख उसके बस्ते में

पूछा यह क्या लाये हो

चलो दोस्ती कर लें फिर से

दे दो हमको भी कुछ फूल

हमें खिला दो खाना अम्माँ

अब हम जायेंगे स्कूल।"[1]

बच्चे अपने मनोरंजन में दादा-दादी, नाना-नानी का साथ पाकर प्रसन्न रहते हैं। वे प्राचीन परम्परा की तरह आज भी कहानियाँ सुनना पसंद करते हैं। पहेलियाँ बुझाते हैं। अपने बुजुर्गों के साथ समय बिताते हैं। इसी अटूट सम्बन्ध और मनोभाव को सुभद्रा जी कैलाशी नानी शीर्षक कहानी में वर्णित करती हैं – "गाँव के छोटे बच्चों का झुण्ड कैलाशी नानी के नेतृत्व में ढोर चराने निकलता और फिर वहाँ केवल ढोर ही न चराये जाते थे। वहाँ कहानियाँ कही जातीं, पहेलियाँ होती, और कभी-कभी रामलीला भी होती। और रामलीला तभी संभव होती जब राम बनने के लिए मैं और सीता बनने के लिए मेरी छोटी बहिन साथ रहती। मतलब यह कि गाँव में रहकर जितनी बातें संभव थीं वहाँ हमलोग सभी करते। हम सभी भाई-बहिनों को इस ग्रामीण जीवन में बड़ा सुख मिलता। एक भाई बहुत छोटा था। वह तो माँ के ही साथ रहता, किन्तु हम तीन, मैं और मुझमें छोटा भाई जो आठ साल का था और उससे छोटी बहिन जो छः साल की थी, प्रायः रोज कैलाशी नानी के साथ जंगल भाग जाते।"[2]

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 211-212

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 243

5 .2.4 शिक्षा की महत्ता :

एक बालक अपनी माँ की कोख से जन्म लेता है जन्म के बाद उसकी पहली पाठशाला माँ की गोद होती है। माँ से ही वह सीखता है जब बच्चा अपनी माँ की आँचल छोड़ पहली बार पाठशाला जाता है, तब उसका कौतुहल और बढ़ जाता है। वह पहली बार घर से बाहर किसी और के अधीन में रहकर अक्षर ज्ञान सीखता है। इस प्रक्रिया में बच्चों की जो मनोवृत्ति होती है उसे सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'अजय की पाठशाला' कविता में देखा जा सकता है। इस कविता में सुभद्रा जी के बेटे अजय के स्कूल जाने वाले उत्साह का वर्णन सहज ही देखने को मिलता है। इस कविता में सुभद्रा जी के पुत्र अजय चौहान की ही घटना नहीं है बल्कि वह उन सभी लाडले बच्चों की है जो अपनी माँ की गोद छोड़कर पहली बार किसी ऐसी जगह जाते हैं जहाँ उन्हें किसी और के शासन में रहना पड़ता है –

"उस दिन पहले पहल अजय जब
पढ़ने गये पाठशाला
उन्हें गुरु जी ने घर भेजा
पहना फूलों की माला
पूछा गया नाम तब बोले
मुझे बड़े भैया कहते
घर में भी हम नहीं खेलते
सारे दिन पढ़ते रहते।"[1]

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 209

इसप्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान कविता के द्वारा उत्साहवर्धन, संस्कार तथा शिक्षा की महत्ता भी बतलाना चाहती हैं। इस कविता में अजय कोई और नहीं कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के बेटे हैं। इस प्रकार स्वयं कविता में जीवित बिम्ब प्रकट करने में कवयित्री सक्षम हो पायीं हैं। अजय अपनी पाठशाला के बाद अपनी पढाई को लेकर गंभीर है, इस क्रम में वह अन्य दैनिक काम को वह भूल जाता है। वर्तमान में भी छोटे बच्चे इस क्रिया को दोहराते नजर आते हैं। ममतामयी माता सुभद्रा का वात्सल्य इस प्रकार यहाँ प्रकट होता है –

"खाने को नहीं रही सुध
बैठ गए पुस्तक लेकर
बोले- पढ़ता हूँ न छेड़ना
कोई भी बाधा देकर
माँ ने कहा- दूध तो पी लो
बोल उठे -माँ रुक जाओ
वहीँ रहो पढ़ने बैठा हूँ
मेरे पास नहीं आओ
है शाला का काम बहुत सा
माँ उसको कर ले दो
ग म भ लिख-लिख कर अम्माँ

पट्टी को भर लेने दो।"[1]

बच्चे नटखट और कौतूहलपूर्ण होते हैं, बच्चे में पढ़ाई की ओर आरंभ में मन लगाते हैं पर उन्हें अक्षर ज्ञान नहीं होता है। बच्चों का पढ़ाई-लिखाई से पहला साक्षात्कार ऐसा ही होता है, इस सम्बन्ध में सुभद्रा जी अपनी कविता का मनोरम उदाहरण 'नटखट विजय' शीर्षक कविता में प्रस्तुत करती हैं –

"कितना नटखट है मेरा बेटा

क्या लिखता है लेटा लेटा।

अभी नहीं अक्षर पहचाना

ग म भ का भेद न जाना।

फिर पट्टी पर शीश झुकाये

क्या लिखता है ध्यान लगाये।

मैं लिखता हूँ बिटिया रानी

मुझे पिला दो ठंडा पानी।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान 'दो सखियाँ' कहानी में बाल शिक्षा का महत्त्व समझाती हैं। उनका मानना था कि हर तबके के व्यक्ति के लिए शिक्षा जरुरी है, खास कर लड़कियों की शिक्षा अनिवार्य मानती हैं। इसलिए वे बच्चों की शिक्षा को जोर देते हुए बाल सुलभ बातें लिखती हैं – "मालिन रोज-रोज हमारी मुन्नी पढ़ने जाती है और स्कूल में बैठी-बैठी थक जाती है। इधर तुम्हारी रमिया दिन भर घास खोदती है और बगीचे में मजा करती है। अब यह न होगा। रमिया को भी पढ़ने जाना पड़ेगा।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 209-210

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 215

मालकिन का स्वर सुनते ही मालिन का भय जाता रहा। वह बोली – रमिया तो आपकी ही है, बाई साहब, चाहे पढ़ने भेजो चाहे बगीचे में काम कराओ। पर रमिया पढ़ने जाएगी तो मुन्नी रानी का बगीचा न सूख जाएगा ? उसे कौन सींचेगा ? किसी के बोलने से पहिले ही मुन्नी बोल उठी – तो फिर हम भी बगीचा सीचेंगे। रमिया पढ़ने न गयी तो हम भी न जायेंगे, चाहे कुछ भी हो। मालिन ने कहा – पर रमिया के पास पट्टी भी नहीं है, पुस्तकें भी नहीं हैं, कौन देगा मुन्नी रानी ? मुन्नी बोली – पट्टी और पुस्तक का बहाना मत करो मालिन। हम देंगे। पर रमिया पढ़ने नहीं जाती तो हम भी नहीं जाते। यह लो – कहती हुई पट्टी, पुस्तक फेंककर मुन्नी भागी।"[1]

5.2.5 प्रकृति प्रेम :

हमारे समाज में बड़ों को समझाना जितना मुश्किल है उतना ही सरल बच्चों को अच्छी आदतें बतलाना। बच्चों को यदि यह सिखाया जाता है कि पर्यावरण हमारे लिए कितने उपयोगी हैं तो वे इस बात को झट से समझ लेते हैं। बड़ों की तुलना में छोटे बच्चे अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। स्वयं सुभद्रा जी जब 9 वर्ष की थीं तब उनके बड़े भैया ने नीम के पेड़ पर कविता लिखने को कहा था। सुभद्रा ने बड़े मन से नीम के औषधीय गुणों को लिख दिया था। यह कविता बाल मन की कविता है जो इस प्रकार द्रष्टव्य है -

"सब दुखहरन सुखकर परम है नीम: जब देखूं तुझे
तुहि जानकर अति लाभकारी हर्ष होता है मुझे।
जब तक देश में तुम सर्वदा फूलो फरो

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. -323

निज वायु शीतल से पथिक जन का हृदय शीतल करो ।

तु रोगमुक्त अनेक जन को सदा करती रहे

इस भांति से उपकार तू हरेक का करती रहे ।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान का मन बच्चों-सा था । बच्चों जैसा कोमल, निष्पाप मन ही सभी प्राणियों से अगाध प्रेम कर सकता है । उनका यह मन उनके काव्य को भी प्रस्तुत करते हैं । सुभद्रा जी 'कोयल' शीर्षक कविता में बादलों की बात करती हैं । वे कोयल से बादलों को शीतल छाया भेजने को कहती हैं –

"कह दो कोयल रानी

प्यासी धरती देख माँगती हो

क्या मेघों से पानी

अथवा कड़ी धूप में हमको

दुखी देख घबराती हो

शीतल छाया भेजो यह

बादल से कहने जाती हो ।"[2]

बच्चों का सम्बन्ध प्रकृति से जुड़ा होता है । वे सहज ही प्रकृति को अपने जीवन से जोड़ लेते हैं । सुभद्रा जी की कहानियों में उनका प्रकृति प्रेम इसप्रकार समाहित है – " मेरे नन्हें की खाट । जहाँ बादल गरजे, बिजली चमकी और मेरे नन्हें ने पुकारा – अम्माँ बादल तो बहुत जोर से गरजते हैं । मुझे डर

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 64

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ.सं. -189-190

लगता है। माँ! तुम अपना हाथ मेरी खाट पर रख दो, तो मैं सो जाऊँ।"[1] बादलों के गरजने पर बच्चे अक्सर डर जाते हैं, इसलिए वे अपनी माँ को पुकारते हैं – "मेरा नन्हाँ आज इस समय भी वहीं कहीं सोया होगा। बादलों की तड़प से उसकी नींद आज भी खुल गई होगी और वह डरा भी होगा। उसे रात में शायद याद न रही और उसने 'माँ' कहके पुकारा भी होगा।"[2] इसप्रकार माँ का वात्सल्य उमड़ आता है।

5.2.6 पशु-पक्षी एवं अन्य जीव प्रेम :

बच्चों को पशु-पक्षी से प्रेम करना बहुत अच्छा लगता है, इसलिए सुभद्रा जी ने कोयल, कदम्ब का पेड़ जैसी कविताएँ लिखी हैं। वे 'कोयल' शीर्षक कविता में बच्चों को मीठी बोली बोलने की सीख देती हैं। कोयल काली है पर उसकी बोली मीठी है यह मिठास से भरी बोली बच्चे अपनी मां से ही सीखते हैं। मीठी बोली के साथ-साथ सरल शब्दों में सुभद्रा जी कोयल की मनोरम विशेषताओं का वर्णन करते हुए लिखती हैं –

"कोयल कोयल सच बतलाओ
क्या संदेशा लायी हो
बहुत दिनों के बाद आज फिर
इस डाली पर आयी हो

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-2, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 281 -282
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-2, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 282

क्या गाती हो किसे बुलाती हो।"[1]

सुभद्रा जी ने बाल मनोविज्ञान को बखूबी समझा है इसलिए उनकी बाल मनोवृत्तियाँ जैसे - बच्चों का जिद करना, खेलना, मचलना, बहाने बनाना, तुतलाना, तरह-तरह के तर्क प्रस्तुत करना आदि उनकी कविताओं में सुंदर ढंग से व्यक्त हुए हैं। बच्चों की ऐसी मनोवृत्तियों का सुंदर चित्रण सुभद्रा जी की 'मेरा नया बचपन' शीर्षक कविता में इसप्रकार व्याप्त है -

"मैं बचपन को बुला रही थी
बोल उठी बिटिया मेरी
नंदन वन सी फुल उठी वह
छोटी-सी कुटीया मेरी।
'माँ ओ' कहकर बुला रही थी
मिट्टी खाकर आई थी,
कुछ मुंह में, कुछ लिए हाथ में
मुझे खिलाने लाई थी।
पुलक रहे थे अंग, दृगों में
कौतूहल था छलक रहा।
मुँह पर थी आह्लाद-लालिमा
विजय-गर्व था झलक रहा।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. -189-190

मैंने पूछा – यह क्या लाई ?

बोल उठी वह – 'माँ काओ'

फूल फूल मैं उठी खुशी से

मैंने कहा – 'तुम्हीं खाओ'।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने कहानियों में भी बालकों के पशु प्रेम को रेखांकित किया है। गौरी कहानी में उन्होंने परिस्थिति से अनभिज्ञ बच्चों को बिल्ली के पीछे भागते चित्रित किया है – "इसी समय एक बड़ी-सी सफेद बिल्ली आँगन से होते हुई भीतर को भाग गई। बच्चे बिल्ली के पीछे सब कुछ सुनकर, दौड़ते हुए अंदर पहुँच गये। गौरी पिछले बरामदे में चुपचाप खड़ी थी। वह न जाने किस ख़याल में थी। तब तक छोटे बच्चे ने उसका आँचल पकड़कर खींचते हुए कहा – क्या तुम अमारी माँ हो ?"[2]

मंगला कहानी में एक माँ और बेटी के बिछड़ने की मार्मिक घटना को प्रस्तुत किया गया है। उनका यह वात्सल्य प्रेम इसप्रकार देखा जा सकता है जहाँ प्रतीकों के माध्यम से यह दर्शाया गया है – "ठीक उसी तरह जैसे बच्चों के उड़ जाने के बाद पक्षी का घोंसला हो जाता है। चिड़ियाँ बच्चे तो पालती हैं। सर्दी-गर्मी और बरसात हर मौसम में बच्चों के लिए दाना-पानी इकट्ठा करती हैं। तिल-तिलकर अपने को मिटाती और बच्चे को बनाती है। बच्चों की उन्नति में खुश होती हैं, उन्हें उड़ाना सिखाती हैं। परन्तु ज्यों ही डैने मजबूत होते हैं, बच्चे माँ का सहारा छोड़कर घोंसले से कुछ दूर तक अकेले भी उड़ते हैं। इस डाल से उस डाल पर इस पेड़ से उस पेड़ पर। और इसप्रकार एक दिन उड़ते-उड़ते बच्चे उड़ जाते हैं। कहाँ ? कौन बताए ! सूने घोंसले में चिड़ियाँ ! बेचारी चिड़ियाँ, अपने बच्चों

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 75-76

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -2 , संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 219

को ढूंढने के लिए खुद भी किसी ओर उड़ जाती है। रह जाता सूना प्राणहीन घोंसला;उसे बच्चों के साथ-साथ चिड़ियाँ की भी याद आती है और प्रतीक्षा करते करते कभी, किसी हवा के झोंके से समझौता कर, तिनके-तिनके अलग होकर, अलग-अलग दिशा में वह भी अपनी चिड़िया और अपने बच्चे की खोज में उड़ जाता है।न जाने कब से यह क्रम चल रहा है और अनंत काल तक चलता रहेगा।"[1]

उन्होंने अपने खुद के स्वभाव पर भी बाल कविताएँ लिखी है। उनके स्वभाव में भी बच्चों-सा मस्ती और चपलता थी इसलिए ले लिखती हैं – "बार बार आती है मुझको, मधुर याद बचपन तेरी/ गया, ले गया तू जीवन की, सबसे मस्त खुशी मेरी।"[2] यह कविता जैसा है जिस स्थान पर है, आज तक किसी से वैसी कविता नहीं लिखी गई। सुभद्रा कुमारी चौहान की बाल सुलभ रचनाओं की प्रशंसा करते हुए श्री केशव प्रसाद पाठक ने कहा है कि 'बाल स्वभाव के चित्रण में सुभद्रा कुमारी जी को अच्छी सफलता मिली है, यह सत्य है।'[3]

सुभद्रा कुमारी चौहान का वात्सल्य नदी की तरह निर्झर बहता रहा। वह कभी सूख नहीं पाया। वे छोटे छोटे मुर्गी के बच्चों को बचाने के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर गई। इसप्रकार उनका जीवन मात्र मनुष्य से प्रेम करने भर के लिए नहीं था बल्कि प्राणी से प्रेम करने का सन्देश देता है।

5.3 सुभद्रा कुमारी चौहान के बाल साहित्य का कला पक्ष :

5.3.1 भाषा शैली :

सुभद्रा कुमारी चौहान के बाल साहित्य लेखन की भाषा अत्यंत सरल, सीधी और प्रवाहमयी है। उनकी भाषा की सरलता से ही उनके बाल काव्य में राष्ट्रीयता, वात्सल्य प्रेम, नैतिक चेतना,

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-2, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं. – 290
[2] स्वातंत्र्य कोकिला : सुभद्रा कुमारी चौहान, संपादक – डॉ. किशोरी लाल व्यास, पृ. सं. – 122
[3] सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, पृ. सं. – 97

प्रकृति प्रेम आदि भाव प्रकट होते हैं। उनकी बाल कविता की पंक्तियाँ सहज बाल कौतूहल को दर्शाती है।

सुभद्रा जी के बाल साहित्य में बच्चों की तुतलाती भाषा को प्रस्तुत किया गया है। जिनके अंश इसप्रकार हैं –

1- "मैंने पूछा – यह क्या लाई ?

बोल उठी वह – 'माँ काओ'

फूल फूल मैं उठी खुशी से

मैंने कहा – 'तुम्हीं खाओ'।"[1]

2- "छोटे ने कहा- बाबू हमें कबी खिलौने नहीं ले देते। बड़े ने कहा – मिठाई भी तो कभी नहीं खिलाते। छोटा बोला – ऑल अमें छोड़कर दफतर जाते हैं, दिन भर नईं आते, बाबू अच्छे नई हैं।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में प्रयुक्त संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्द निम्नलिखित हैं –

तत्सम शब्दावली : स्वर, हृदय,व्याकुल, प्रवेशिका, पट्टी, मेघ, प्रसाद, द्रौपदी, सखी, हृदय, छाया, मित्र, स्नेह, कृष्ण।

तद्भव शब्द : विनती, बनिया, बिजली, मक्खन, माँ, राखी, रानी आदि।

विदेशज शब्दावली :

अंग्रेजी शब्दावली – पुलिस, पुलिसमैन, जेल, मोटर, स्कूल, सीट, टी सेट,

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 75-76

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-2, संपादक – रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 220

उर्दू शब्दावली – तकरार, शीश, कचहरी

फारसी शब्द – काका

देशज शब्दावली का अधिक प्रयोग नहीं किया गया है, फिर भी कुछ शब्द इसप्रकार के पाए जाते हैं। जैसे - लोटा, थाली आदि।

पर्यायवाची शब्द – कृष्ण – मोहन मुरलीवाले , कन्हैया, वंशीधर, गोवर्धनधारी

इसप्रकार तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज शब्द सुभद्रा जी की रचनाओं में प्रयुक्त हुए हैं।

5.3.2 गीतात्मकता :

सुभद्रा की कविताओं और कहानियों में गीतात्मकता का पुट मिल जाता है। वे गीत संगीत को बड़ों के साहित्य में अभिव्यक्त करती हैं लेकिन बच्चों के साहित्य में भी वे इस गीत शैली को प्रस्तुत करती हैं। 'अमराई' कहानी में छोटे बालकों द्वारा गाया गया गीत का अंश इसप्रकार है - "पहले तो लड़कियाँ कजली गा रही थीं। एकाएक एक छोटा बालक गा उठा – 'झंडा ऊँचा रहे हमारा।' फिर क्या था, सब बच्चे कजली-वजली तो गए भूल और लगे चिल्लाने – झंडा ऊँचा रहे हमारा।"[1]

इसीप्रकार कविता का एक उदहारण दर्शनीय है –

"वह देखो माँ आज खिलौने वाला

फिर से आया है

कई तरह के सुंदर सुंदर

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-2, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ.सं. - 122

नये खिलौने लाया है।"[1]

'अजय की पाठशाला' कविता में माँ और बच्चे के लाड-दुलार का दुर्लभ चित्रण मिलता है, बच्चों के नखरे और शरारतों का अद्भुत संगम इस कविता में है जिसकी गीतात्मकता देखने योग्य है –

"माँ, शाला में बैठा-बैठा

मैं दिन भर थक जाता हूँ

बैठूँगा मैं आज पेड़ पर

पहने फूलों की माला

माँ, मत शाला भेज

इकट्ठा मैंने सब कुछ पढ़ डाला।"[2]

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'यह कदम्ब का पेड़' कविता मनोहर है इसे पढ़कर बच्चे झूम उठते हैं। यह कविता बड़ों को भी अपने बचपन की याद दिलाती है। यमुना नदी हो न हो बचपन में पेड़ों पर चढ़कर और उस पर बैठकर यह कविता जरुर गायी गई है -

"यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ

होता जमुना तीरे

मैं भी उस पर बैठ कन्हैया

बनता धीरे –धीरे।

ले देतीं यदि मुझे बाँसुरी

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 195
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 210

तुम दो पैसे वाली

किसी तरह नीची हो जाती

यह कदम्ब की डाली।

तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं

चुपके चुपके आता

इस नीची डाली से अम्मां

ऊँचे पर चढ़ जाता।

वहीं बैठ फिर बड़े मजे से

मैं बाँसुरी बजाता।"[1]

5.3.3 रस :

रस कविता का अनिवार्य अंग है। आचार्यों ने रस को काव्य का आत्मा माना गया है। 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' – आचार्य विश्वनाथ के अनुसार रस युक्त वाक्य कविता है। राजेन्द्रकुमार शर्मा ने लिखा है कि 'शिशुगीतों और बाल कविताओं में तो रसों का विशेष महत्त्व होता है।'[2] अन्य विद्वानों का भी मत है कि बाल साहित्य में बहुविज्ञता से अधिक रसात्मकता होती है। हास्य, मनोरंजन, वात्सल्य, प्रेम, करुणा आदि स्थायी भाव बाल कविताओं को सफल बनाने में विशेष योगदान देते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान भी अपनी कविताओं में वात्सल्य, हास्य, वीर, करुण आदि रस का बड़ा सुंदर व सटीक उपयोग करती हैं।

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 199

[2] समकालीन हिंदी बाल साहित्य, सुचिता सेठ, पृ. सं. 270

जिन बाल काव्य और बाल कहानियों में माता-पिता एवं बुजुर्गों का संतान के प्रति या बच्चों के प्रति स्नेह भाव प्रदर्शित होता है, अथवा इसका वर्णन किया गया हो उनमें वात्सल्य रस होता है। सुभद्रा जी का बाल काव्य वात्सल्य रस से ओतप्रोत है, कुछ उदहारण इसप्रकार हैं –

"मैंने पूछा – यह क्या लाई ?

बोल उठी वह – 'माँ काओ'

फूल फूल मैं उठी खुशी से

मैंने कहा – 'तुम्हीं खाओ'।"[1]

सुभद्रा जी के बाल काव्य संग्रह से वात्सल्य रस का एक और उदहारण निम्नांकित है –

"मोहन से तो आज हो गयी

है मेरी कुट्टी अम्माँ

अच्छा है शाला जाने से

मिली मुझे छुट्टी अम्माँ।"[2]

वीर रस – जिस बाल काव्य को पढ़कर बच्चों के हृदय व मन में सहस, वीरता, ओज और जोश का भाव संचार होता है। उनमें वीर रस की निष्पत्ति होती है। सुभद्रा जी की कुछ राष्ट्रीय भावना की कविताएँ हैं जिसमें वीर रस विद्यमान है। जैसे - 'खिलौने वाला' शीर्षक कविता में बच्चे राम का अनुसरण करना चाहते हैं। कविता की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

"मैं तलवार खरीदूँगा माँ

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 76
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भाग-1, सम्पा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 211

या मैं लूँगा तीर कमान

जंगल में जा, किसी ताड़का

को मारूँगा राम समान।"[1]

दूसरा उदाहरण इस प्रकार है –

"एक बार भी माँ यदि मुझको

बिजली के घर जाने दो

उसके बच्चों को तलवार

चलाना सिखला आने दो।

खुश होकर तब बिजली देगी

मुझे चमकती सी तलवार

तब माँ कोई कर न सकेगा

अपने ऊपर अत्याचार।

पुलिसमैन अपने काका को

फिर न पकड़ने आयेंगे

देखेंगे तलवार दूर से ही

वे सब डर जायेंगे।"[2]

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं 196

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं 193-194

तीसरा उदाह रण द्रष्टव्य है –

"चीर द्रौपदी का खींचा था

दुशासन ने अभिमानी

इस पर कौरव पांडव ने की

जब लड़ने की तैयारी

बने सारथी अर्जुन के रथ

पर थे गोवर्धनधारी।"[1]

वीर रस का एक सटीक उदाहरण इसप्रकार है। 'सभा का खेल' कविता में बच्चों के मन को बात सुभद्रा जी इस तरह सामने लाती हैं –

"मोहन लल्ली पुलिस बनेंगे

हम भाषण करने वाले।

वे लाठियाँ चलाने वाले

हम घायल मरने वाले

छोटे बोला देखो भैया

मैं तो मार न खाऊंगा

मुझको मारा अगर किसी ने

मैं भी मार लगाऊंगा

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं 205-206

कहा बड़े ने छोटे जब तुम

नेहरू जी बन जाओगे

गाँधी जी बात मान कर

क्या तुम मार न खाओगे।"[1]

हास्य रस – छोटे-छोटे बच्चों के लिए हास्य रस की कविता भरपूर मनोरंजन कराती है। सुभद्रा जी की बहुत सी कविताओं में हास्य छुपा होता है। यह इस रूप में भी होता है कि बच्चों का कौतूहल दूसरों के लिए हास्य का विषय बन जाता है। उदहारण इसप्रकार है –

"माँ के बिना राम इतने दिन

कैसे रह पाए वन में

आपनी माँ की याद न उनको

क्या आती होगी मन में

लो अम्माँ, वन के झगड़े में

चला गया ठेले वाला

अब न बनूँगा राम, उन्होंने

मुझको घाटे में डाला।"[2]

उनकी कहानी में बच्चों के हास्य भाव अधिक मिलते हैं।

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक-रूपा गुप्ता, पृ. सं 213-214
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपा. रूपा गुप्ता, पृ. सं. 197

श्रृंगार रस - कवयित्री सुभद्रा की बाल कविताओं में श्रृंगार रस की अधिकता नहीं है। हालाँकि कुछ पद ऐसे हैं जिनमें श्रृंगार रस निहित है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि सुभद्रा जी के बाल गीतों में शिष्ट श्रृंगार की निष्पत्ति के द्वारा बालकों के मन के प्रेमभाव की कोमल भावनाओं की पुष्टि होती है। जैसे -

"गुड़िया भी है बहुत भली सी
पहिने कानों में बाली
छोटा सा टी सेट है
छोटे छोटे हैं लोटा थाली।"[1]

दूसरा उदाहरण इसप्रकार है -

"गोरा हूँ हर्ज नहीं माँ।
मोर मुकुट वंशी वाला
बन जाऊंगा हाथ लकुटिया
लेकर वह कम्बल काला।"[2]

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान के बाल साहित्य में विभिन्न रस पाये गए हैं। अतः रस निरूपण की दृष्टि से सुभद्रा जी का साहित्य समृद्ध है।

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. 195
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 204

5.3.4 अलंकार:

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले कारकों को अलंकार कहा जाता है। अलंकारवादी आचार्यों के अनुसार काव्य में सहज स्वाभाविक रूप से स्थान पाए हुए अलंकार भाव सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं। अलंकारों के प्रयोग के विषय में राजेन्द्र कुमार शर्मा लिखते हैं – "अलंकार कविता का आभूषण होते हैं। इनका स्वाभाविक एवं सहज प्रयोग कविता की सफलता माना जाता है। एक सफल बाल साहित्यकार बिम्ब उपस्थित करने वाले अलंकारों का प्रयोग करके कविता को आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाता है। बाल साहित्यकार बाल रूचि के अनुसार अलंकार योजना का आश्रय लेता है।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने बाल कविताओं में अलंकारों का सहज स्वाभाविक प्रयोग किया है। इन्होंने काव्य में अलंकारों को जबरदस्ती नहीं डाला है। यह कहा जा सकता है कि बाल कल्पना के विकास के लिए तथा बिम्ब निर्माण के लिए इन्होंने अलंकारों का प्रयोग किया है। यही कारण है कि सुभद्रा जी के बाल साहित्य में अलंकारों की अधिकता नहीं पायी जाती है। अनुप्रास, रूपक, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार आदि सुभद्रा जी के बाल साहित्य में पाए जाते हैं। बाल मनोरंजन के लिए जिन अलंकारों की योजना सुभद्रा जी ने किया है वे इसप्रकार हैं -

पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार – पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार में काव्य की पंक्ति में एक शब्द या एक वाक्यांश बार-बार दुहरा कर काव्य सौन्दर्य उपस्थित किया जाता है। बाल मनोरंजन के लिए पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार की योजना इसप्रकार की गई है –

"काली काली कोयल है

[1] समकालीन हिंदी बाल साहित्य, सुचिता सेठ, पृ. सं. - 274

पर कितनी मीठी बोली है

इसने ही तो कूक कूक

आमों में मिश्री घोली है।

यही आम जो अभी लगे हैं

खट्टे खट्टे, हरे हरे

कोयल कूकेगी हो जायेंगे

पीले, रस भरे भरे।"[1]

उपर्युक्त उदाहरण में काली काली, कूक कूक, खट्टे खट्टे, हरे हरे, भरे भरे में पुनरुक्ति सौन्दर्य उपस्थित है। पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का एक और उदाहरण इस प्रकार है -

"हरा हरा तोता पिजड़े में

गेंद एक पैसे वाली

छोटी सी मोटर गाड़ी है

सर सर सर चलने वाली।"[2]

उपर्युक्त पंक्तियों में हरा हरा, सर सर सर में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार प्रस्तुत किया गया है।

अनुप्रास अलंकार – सुभद्रा जी के बाल काव्य में अनुप्रास की छटा अनुपम है। जैसे –

"छोटा सा टी सेट है

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. 189

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. 195

छोटे छोटे हैं लोटा थाली

छोटे छोटे धनुष बाण हैं

हैं छोटी छोटी तलवार।"[1]

उपमा अलंकार –उपमा अलंकार में बाल कल्पना को सुभद्रा कुमारी चौहान ने समाहित कर बाल काव्य का सौंदर्य बढ़ाया है जो इसप्रकार द्रष्टव्य है –

"यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ

होता जमुना तीरे

मैं भी इस पर बैठ कन्हैया

बनता धीरे-धीरे।"[2]

एक और उदाहरण इसप्रकार है –

"कहा बड़े ने छोटे जब तुम

नेहरू जी बन जाओगे

गाँधी जी की बात मान कर

के तुम मार न खाओगे।"[3]

रूपक अलंकार – सुभद्रा जी के बाल काव्य में रूपक अलंकार को इस रूप में देखा जा सकता है –

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं.-195
[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं.-199
[3] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं.-213-214

(क) “काली काली कोयल है

पर कितनी मीठी बोली है

इसने ही तो कूक कूक

आमों में मिश्री घोली है।”[1]

(ख) “बिजली के आँगन में अम्माँ

चलती है कितनी तलवार

कैसी चमक रही हैं फिर भी

क्यों खाली जाते हैं वार

क्या अब तक तलवार चलाना

माँ वे सीख नहीं पाये।

इसलिए क्या आज सीखने

आसमान पर हैं आये।”[2]

(ग) “जोर-जोर से गरज रहे हैं,

बादल हैं, किसके काका

किसको डांट रहे हैं, किसने

कहना नहीं सुना माँ का।”[1]

---

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. - 189

[2] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग-1, संपादक- रूपा गुप्ता, पृ. सं. 193

निष्कर्ष रूप में यह कहना उचित होगा कि पूरे हिंदी बाल साहित्य के विकास में महिलाओं की भूमिका एक लम्बे समय से सक्रिय भागीदारी रही है। महिला बाल साहित्यकारों में सबसे पहला चर्चित नाम सुभद्रा कुमारी चौहान है। सुभद्रा जी ने सीमित मात्रा में कविता-कहानी का सृजन किया है पर यह योगदान बाल साहित्य के इतिहास में अक्षुण रहेगा। सुभद्रा जी बाल साहित्य के प्रारम्भिक काल में लिख रही थीं।

सुभद्रा कुमारी चौहान देश-प्रेम और राष्ट्रीय भाव बच्चों में भी देखना चाहती थीं। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बच्चों के लिए कविताएँ लिखीं। देखा जाय तो वे बाल कविताओं में स्वानुभूति को ही प्रकट करती हैं। वे अपने ही बच्चों के क्रियाकलापों को प्रस्तुत करती हैं, सुधा, अजय, विजय, मुन्नी आदि को बाल कविता के पात्र के रूप में निरुपित करती हैं। इस प्रकार उन्होंने अपने बच्चों को भी साहित्य के बच्चे बना दिया है।

वे बच्चों के लिए कहानी नहीं लिख सकीं लेकिन उनकी कहानियों में बालकों की मनोवृत्ति के चित्र मिलते हैं। अन्य कहानियों में वात्सल्य भाव कहीं कहीं मिलते हैं। जिन कहानियों में वे बाल मन का चित्रण करती हैं वह बाल साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। परिवेश अनुसार वे बाल विधवा बच्चों की मनोभावनाओं को चित्रित करती हैं। वे स्वयं जिक्र करती हैं कि वे जेल में रहते हुए गरीब बच्चों को अक्सर कहानियाँ सुनाया करती थीं। स्वयं ममतामयी ह्रदय की महिला थी। उनके व्यक्तित्व में वात्सल्य भाव है वे जिसतरह साहित्य में इसका उद्घाटन करते हैं वह कहीं और नहीं देखा जा सकता है। उनका बाल साहित्य बालमन का अद्भुत सामंजस्य है। यह भी स्वीकार करना होगा कि बाल कविताओं एवं कहानियों में सुभद्रा कुमारी चौहान की उपस्थिति अनुपम

[1] सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, भाग -1, संपादक -रूपा गुप्ता, पृ. सं. -193

व अद्भुत है। उनके साहित्य में बाल साहित्य का अंश कम है लेकिन वह महत्वपूर्ण है। उनके लेखन से यह प्रतीत होता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान इस क्षेत्र में भी अपने दायित्व को समझती हैं।

उपसंहार

उपसंहार

शोध की इस प्रक्रिया में निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान ने जैसा जिया, वैसा लिखा। इस बात पर गौर किया जाय तो स्पष्ट होता है कि उनका व्यक्तित्व और उनका साहित्य एक दूसरे के परिपूरक हैं। उनका समय स्वाधीनता आन्दोलन के उभार का समय था। इस आन्दोलन का प्रभाव उनके व्यक्तित्त्व और साहित्य दोनों पर दिखाई पड़ता है। तत्कालीन समय की परिस्थितियों और चुनौतियों से उनकी चेतना का निर्माण होता है, जिसकी रचनात्मक अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में परिलक्षित होती है।

सुभद्रा जी के रचनात्मक सफर की शुरुआत बचपन से ही हो जाती है। बचपन की तुकबंदियों के माध्यम से वह तत्कालीन समाज की समस्याओं को आवाज देने लगी थीं। आगे चलकर उनकी यही प्रतिभा प्रखर कवयित्री के रूप में निखार पाती है। सुभद्रा कुमारी चौहान सिर्फ़ राष्ट्रीय भावनाओं या वीर रस के भावों की कवयित्री नहीं हैं, उनकी कविताओं का फलक विस्तृत है। उनकी कविताओं में बच्चों, स्त्रियों, वंचितों की आवाज के साथ स्वतंत्रता आन्दोलन की सच्ची ताप दिखाई पड़ती है।

एक प्रभावी कवयित्री के साथ सुभद्रा कुमारी चौहान एक सफल कहानी – लेखिका भी हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के भीतर चल रही कई समस्याओं को मार्मिकता से चित्रित करती हैं। अपनी कहानियों में स्त्रियों की स्थिति एवं स्त्री मुक्ति के प्रश्नों को चिह्नित करती हैं एवं तत्कालीन समाज में व्याप्त समस्याओं व कुरीतियों के विरुद्ध आवाज भी उठाती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी शुरूआती कहानियों में स्त्री समस्या जैसे विधवा समस्या, वेश्या समस्या, दहेज की समस्या, बाल विवाह, सती प्रथा आदि समस्याओं को अपनी कहानी का विषय बनाती हैं। कहानियों में वे सुधारवादी रवैया अपनाती हैं। गांधीवाद से प्रभावित होने की वजह से हृदय

परिवर्तन का सहारा लेती हैं और कहानियों के अंत में एक आदर्श को स्थापित करती हुई नजर आती हैं। अपनी कहानियों में वे परम्पराओं को तोड़ती हुई नजर नहीं आतीं बल्कि हैं समस्याओं को रेखांकित करने तक सीमित रह जाती हैं। इसके बावजूद तत्कालीन समय में एक स्त्री रचनाकार के रूप में वह अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करती हैं। एक ऐसे समय और परिवेश में जब स्त्रियों की सामाजिक एवं साहित्यिक उपस्थिति सीमित थी, तब सुभद्रा जी जैसे व्यक्तित्व का उपस्थित होना एक महत्त्वपूर्ण परिघटना है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में मुख्यतः उन्हें राष्ट्रीय भावना की कविताओं और कहानियों की वजह से प्रसिद्धि मिली। यह सत्य है कि उन्होंने राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत कविताओं और कहानियों को गढ़ा है और उसमें सफलता भी पायी है। एक रचनाकार के रूप में उनकी यह विशेषता है कि वे अपने लेखन में सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं की सिर्फ चर्चा नहीं करती हैं बल्कि उन पर प्रश्न चिन्ह लगाती हैं एवं पाठक वर्ग को सोचने पर मजबूर करती हैं। कई कहानियों में वे समस्याओं का समाधान भी कर देती हैं। साहित्य के माध्यम से सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा उठाये गए प्रश्नों को देखें तो वर्तमान में हम कई समस्याओं से निजात पा चुके हैं, जैसे बाल विवाह, सती प्रथा आदि। लेकिन कई समस्याओं से समाज आज भी जूझ रहा है। महिलाओं की प्रमुख समस्याओं में विधवाओं की समस्या, दहेज की समस्या, अन्तर्जातीय विवाह की समस्या, नशा की समस्या आदि समाज में आज भी जड़ फैलाये हुए हैं। उन समस्याओं पर आज हमें पुनः सोचने की जरूरत है।

सुभद्रा कुमारी चौहान के कथा साहित्य में पात्रों पर विचार करें तो उनका संघर्ष सहज ही ध्यानाकर्षित करता है। कई पात्र ऐसे हैं जो अपने संघर्ष से पाठक वर्ग में प्रेरणा का संचार कर जाते हैं। सुभद्रा जी के पात्रों में आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान अवश्य होता है। खास कर उनके स्त्री पात्रों को देखा जाए तो तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार सशक्त नजर आती हैं, वे अपने अधिकारों के

लिए आवाज उठाती हुई दिखती हैं लेकिन अक्सर उनकी आवाज को कुचल दिया जाता था। अंततः उन पात्रों की जीवटता ही सुभद्रा जी के साहित्य को अमर बनाता है।

सुभद्रा जी ने एक साहित्यकार के रूप में अपने समाज का चित्रण प्रस्तुत किया है। पुरातन समाज की सभी भावभूमियों को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। समाज व्यवस्था में निहित सभी सामाजिक समस्याओं के निराकरण अपने तरीके से लिखती रहीं। उन्होंने नारी समस्याओं के विकृत रूप को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। स्त्री जीवन के दुःख, दर्द, संताप, मानसिक एवं शारीरिक अत्याचार, मातृत्व, संवेदना आदि के सजीव चित्रण वे अपने साहित्य में करती हैं। नारी का सम्मान वे हर हाल में चाहती थीं इसलिए उनकी रचनाओं में कई ऐसे पात्र हैं जो विद्रोह करती हैं अपने हक़ के लिए लड़ती हैं। कई बार न्याय नहीं मिल पाने पर स्वयं को सच के लिए कुर्बान कर देती हैं। इससे पता चलता है कि सुभद्रा जी स्त्रियों के हक एवं उनके सम्मानजनक स्थिति के लिए प्रयासरत दिखाई देती हैं। वे उन सभी मुद्दों को साहित्य के माध्यम से प्रकट करती हैं जिससे स्त्री का उत्थान हो।

स्त्री-पुरुष समानता के पक्ष में कई रचनाएँ हैं। जिनमें लेखिका परिवर्तनगामी प्रतीत होती हैं। वे बदलाव की ओर आगे बढ़ती नजर आती हैं। वे स्त्रियों के दोयम दर्जे के जीवन को समाज के लिए कष्टदायक मानती रही। वे स्त्री शिक्षा पर जोर देती रही हैं। शिक्षा से स्त्रियों के जीवन को बदलने का मार्ग वे अपनी रचनाओं के माध्यम से भी करती हैं। इतना ही नहीं महिलाओं को लेखन कार्य करने के लिए भी प्रेरित करती दिखाई देती हैं।

इसी प्रकार बाल साहित्य के माध्यम से वे समाज के सबसे सुंदर पक्ष को उकेरती हैं। बाल्यकाल के सभी पक्षों को समझने और अनुभूतिपरक रचने में सुभद्रा कुमारी चौहान को सफलता हासिल हुई है। बाल क्रीड़ा के चित्रण के माध्यम से वे अपने वात्सल्य को भली भांति प्रस्तुत करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान ने कविताओं में अलग से बाल कविताओं को लिखती हैं,

वे अपने समय की एकलौती महिला हैं जो बाल साहित्य लिखने के लिए अपने समय की महिलाओं से आग्रह करती हुई दिखाई पड़ती हैं।

राष्ट्रीय आन्दोलनों एवं समसामयिक घटनाओं का स्वानुभूतिपरक रचना यदि कोई कर सका है तो वह सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। उन्होंने देश की दुर्दशा को देखा और राष्ट्र की अस्मिता को जगाने का काम किया है। उनका कथा साहित्य समाज की विसंगतियों को रेखांकित करने के साथ ही साथ राष्ट्रीयता को फैलाने का काम करता है। उनकी राष्ट्रीय भावना की कविताओं में राष्ट्र के लिए सब कुछ न्यौछावर कर देने की भावनाएँ विद्यमान हैं। त्याग व बलिदान उनके जीवन और साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने जितना साहित्यिक योगदान दिया है उतना ही समाज सेविका के रूप में वास्तविक धरातल पर भी काम किया है। वे राजनीतिक कार्यकर्त्ता थीं। वे गाँधी जी के विचारों से प्रभावित हुईं और सत्याग्रह, राष्ट्रीय आन्दोलन आदि में सक्रीय भागीदारी की। उन्होंने कांग्रेस के लिए भी काम किया। एक जुझारू कार्यकर्ता बनकर विभिन्न क्षेत्रों में घूम घूमकर, लोगों को स्वतंत्रता की लड़ाई में योगदान देने के लिए जागरूक करती रहीं। इस प्रकार उनकी कविताओं और कहानियों का यथार्थ उनके जीवन की सच्चाई को ही प्रकट करते हैं। इसलिए उनकी रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उन्होंने एक लेखिका और एक समाज सेविका होने की सामाजिक जिम्मेदारी को दायित्वपूर्ण तरीके से निभाया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान एक समर्थ कवयित्री और कहानी-लेखिका होने के साथ समर्थ विचारक भी हैं। एक कवयित्री के तौर पर सुभद्रा कुमारी चौहान की इतनी ख्याति हुई कि उनके आलोचक रूप पर विचार ही नहीं किया गया। महादेवी वर्मा को भी शुरुआत में 'विरह वेदना' की कवयित्री मात्र के रूप में ही पहचान मिली परन्तु समय के साथ उनके वैचारिक साहित्य पर भी विचार किया गया। आज स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में उनके लेखन के महत्त्व को प्रमुखता से स्वीकार किया जाता है। इस सन्दर्भ में महादेवी वर्मा की समकालीन सुभद्रा कुमारी चौहान के वैचारिकी पर गंभीरता से

विचार किया जाना अभी अपेक्षित है। सुभद्रा कुमारी चौहान के निबंधों एवं भाषणों पर विचार करने पर वह अपने समय की एक समर्थ आलोचक के रूप में दिखाई देती हैं। उनके आलोचक –रूप पर अभी विचार नहीं किया गया है। उस सन्दर्भ में किंचित प्रयास इस शोध –प्रबंध के अंतर्गत करने का प्रयास किया गया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा को उनकी ताकत माना जा सकता है। सहज, सरल किन्तु वैचारिकता से पूर्ण भाषा से वे लोगों के दिलों में राज करती हैं। बोलचाल की भाषा एवं सहज सरल वाक्यों के रचनात्मक प्रयोग से वे सहजता से अपने अंतर्मन को अभिव्यक्त कर पायी हैं ।

सुभद्रा कुमारी चौहान की समस्त विशिष्टताओं को रेखांकित करना एक शोधार्थी के रूप में मेरे लिए चुनौती एवं बड़ी उपलब्धि होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ सूची :

1. उन्मादिनी (कहानी संग्रह), सुभद्राकुमारी चौहान, जिज्ञासा प्रकाशन, जबलपुर : 1965
2. झाँसी की रानी (कविता), सुभद्राकुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, चौथा संस्करण :1961
3. मुकुल (काव्य संग्रह), सुभद्राकुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, नौवाँ संस्करण : दिसम्बर 1965
4. बिखरे मोती (कहानी संग्रह), सुभद्राकुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पाँचवाँ संस्करण : जनवरी, 1966
5. सीधे सादे चित्र (कहानी संग्रह), सुभद्राकुमारी चौहान, जिज्ञासा प्रकाशन, जबलपुर, प्रथम संस्करण : सितम्बर, 1983
6. सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली (कविताएँ) भाग-1, संकलन व संपादन रूपा गुप्ता, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2015
7. सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली (भाषण तथा कहानियाँ) भाग-2, संकलन व संपादन रूपा गुप्ता, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2015

सहायक ग्रन्थ सूची :

1. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद : 2007
2. आधुनिक काव्य में नारी मुक्ति, संतोष कुमारी, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013

3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इतिहास-दृष्टि (आधुनिक साहित्य और स्वाधीनता आन्दोलन), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |
4. आलोचना की संस्कृति, परमानंद श्रीवास्तव, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली : 2013
5. आलोचना की सामाजिकता, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण : 2008
6. आलोचना और सृजनशीलता, कृष्णदत्त शर्मा, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युटर्स (प्रा.) लि., नई दिल्ली : 2015
7. उपनिवेश में स्त्री:मुक्ति कामना की दस वार्ताएं, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली : 2004
8. औरत : अस्तित्व और अस्मिता, अरविन्द जैन, राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली : 2009
9. कल्पलता (लेख-महिलाओं की लिखी कहानियाँ), आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस : 2012 वि.
10. क्रांतिकारी आन्दोलन एक दस्तावेज, मन्मथनाथ गुप्त, समय प्रकाशन, दिल्ली : 1998
11. गद्य कुछ और गद्य कविताएँ, (शमशेर – सुभद्रा कुमारी चौहान : एक अध्ययन), सं. रंजना अरगड़े, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लिमिटेड, नयी दिल्ली : 1992
12. जनमनमयी सुभद्राकुमारी चौहान, राजेन्द्र उपाध्याय, परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार, दिल्ली : 2016
13. जलियाँवाला बाग हत्याकांड, रामपाल सिंह, विमला देवी, ग्लोरियस पब्लिशर्स, नयी दिल्ली : 2009
14. 'जलियाँवाला काण्ड का सच', मे. जनरल सूरज भाटिया, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002
15. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृंदावनलाल वर्मा, स्वदेशी प्रेस, झाँसी :1973

16.नागपाश में स्त्री, सं. गीताश्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली : 2010

17.नवजागरण देशी स्वच्छंदवाद और नयी काव्यधारा, कृष्णदत्त पालीवाल, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2007

18.नवजागरण और भारतीय भाषाएँ, सं. शंभुनाथ, 1857, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा : 2008

19.पथ के साथी, महादेवी वर्मा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद : 2013 वि.

20.प्राण-प्रतिष्ठा, शशिकान्त 'मुकुल', अर्चना प्रकाशन, जामबाग हैदराबाद : 1991

21.बालकृष्ण भट्ट और आधुनिक हिंदी आलोचना का आरम्भ, अभिषेक रौशन, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, पहला संस्करण : 2009

22.बाल गंगाधर तिलक, संपादक-हरशरण सिंह, राठौर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स गाजियाबाद दिल्ली : 2015

23.बालसाहित्य मेरा चिंतन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, मेधा बुक्स दिल्ली, द्वितीय संस्करण : 2002

24.बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य, विजयमोहन सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली : 2010

25.बच्चों के मुख से, संपादक-विश्वनाथ, विश्वविजय प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली : 1972

26.भविष्य का स्त्री विमर्श, ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 2015

27.भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, प्रो. बिपिन चंद्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, क.न. पानिकर, सुचेता महाजन, हिंदी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण : 1990

28.भारत में उपनिवेशवाद स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद, शिवानी किंकर चौबे, अनुवादक-मिलिंद भारद्वाज, ग्रन्थ शिल्पी : 2000

29.भारतीय साहित्य की भूमिका, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण : 2017

30.भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास, कृष्णदत्त पालीवाल-(भारतीय राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता, भारतीय काव्य में स्वछंदतावाद), सं. डॉ. नगेंद्र, हिंदी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली : 1989

31.भारतीय साहित्येतिहास में महिला रचनाकारों का योगदान, डॉ. सरोजनी पाण्डेय, ग्रंथम प्रिंटिंग प्रेस, कानपुर : सितम्बर 2002

32.भारतीय विवाह संस्था का इतिहास, विश्वनाथ काशीनाथ राजवाडे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण : 2004

33.भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, रामगोपाल, भारत बुक सेंटर, लखनऊ : 2006

34.भारतीय काव्यशास्त्र, निशा अग्रवाल, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद : 2013

35.भारतीय नवजागरण एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, प्रो. डॉ. सोहन राज तातेड़, डॉ. विद्यासागर सिंह, खंडेलवाल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर : 2018

36.भाषा साहित्य और राष्ट्रीयता, डॉ. कृष्ण कुमार, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम प्रकाशन : 2011

37.भाषा विमर्श, डॉ. कविता रस्तोगी, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ : 2008

38.भाषा स्वरूप और संरचना, हेमचन्द्र पांडे, ग्रंथलोक, दिल्ली : 2017

39.महिला लेखन के सौ वर्ष 20वीं सदी : गद्य साहित्य, संपादक : ममता कालिया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : 2020

40.मिला तेज से तेज (जीवनी), सुधा चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद : 1975

41.मुक्तिबोध रचनावली भाग-5, सम्पा. नेमिचंद्र जैन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली : 1985

42.मेरी आत्मकथा सत्य के प्रयोग, मोहनदास करमचंद गाँधी, दिपांशु बुक्स, दिल्ली : 2016

43.रस सिद्धांत : नये सन्दर्भ, नन्दुलारे बाजपेयी, प्रस्तोता – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद |

44.राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी, गाँधीजी-अनुवादक काशीनाथ त्रिवेदी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, छठा मुद्रण : 2008

45.राष्ट्रीयता की अवधारणा और भारतेंदुयुगीन साहित्य, प्रमोद कुमार, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली : 2014

46.विचार का अनंत, पुरुषोतम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली : 2000

47.वीरांगना झलकारी बाई (नाटक), माता प्रसाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी : 1997

48.वीरांगना झलकारी बाई, मोहनदास नैमिशराय, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2003

49.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल साहित्य, डॉ. कामना सिंह, आलेख प्रकाशन, दिल्ली (प्रथम प्रकाशन) : 2005

50.समकालीन हिंदी बाल साहित्य, शुचिता सेठ, अंकित पब्लिकेशन्स, जयपुर, प्रथम संस्करण : 2011

51.सर्जनात्मक हिंदी साहित्य में महात्मा गाँधी का शील-वैशिष्ट्य, डॉ. सपना शर्मा, विमला बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2010

52.समीक्षा:संदर्भ और दिशायें, डॉ. पद्मसिंह शर्मा, 'कमलेश', किताब महल, इलाहाबाद :1970

53.सुभद्रा कुमारी चौहान, सुधा चौहान, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली :1990

54.सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सावित्री भरतिया, गरिमा प्रकाशन, मुरादाबाद : 2002

55.'सशस्त्र क्रांतिकारियों के दस्तावेज', संपादिका – अमृता कुमारी, जया पब्लिकेशन, दिल्ली : 2011

56.सर्वगुण संपन्न नारी : सुभद्रा कुमारी एवं अन्य कविताएँ, डॉ. कंचन सेठ, हिंदी अकादमी हैदराबाद, प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2016

57.सृजन की नई भूमिका, कृष्णदत्त पालीवाल, ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1997

58.स्त्री : यौनिकता बनाम आध्यात्मिकता, प्रमीला के. पी., राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली : 2010

59.स्त्री लेखन : स्वप्न और संकल्प, रोहिणी अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली : 2011

60.साहित्य संगम, शकुंतला भूसनूरमठ, साहित्य भारती, दक्षिण साहित्य अकादमी, बेंगलूर :1993

61.सौन्दर्यशास्त्र के स्वरूप और डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. चंद्रप्रताप सिंह, शब्द संघर्ष गाजियाबाद : 2011

62.हिन्द स्वराज्य, गांधीजी, अनुवादक-अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी, सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, वाराणसी, आठवाँ संस्करण : जून 2009

63.हिंदी आलोचना का दूसरा पाठ, निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम प्रकाशन : 2012

64.हिंदी आलोचना समकालीन परिदृश्य, कृष्णदत्त पालीवाल, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली : 2014

65.हिंदी आलोचना का पुनःपाठ, कैलाश नाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : 2019

66.हिंदी कथा साहित्य और उसके विकास पर पाठकों की रूचि का प्रभाव, गोपाल राय, ग्रन्थ निकेतन, पटना : 1965

67.हिंदी कहानी का इतिहास,1900-1950, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली : 2011

68.हिंदी नवजागरण और 'सीमन्तनी उपदेश' राठोड़ पुंडलिक, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा : 2012

69.हिंदी बाल कविता का इतिहास, प्रकाश मनु, मेधा बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2003

70.हिंदी भाषा और महावीरप्रसाद द्विवेदी, डॉ. मधु गौतम, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, प्रथम संस्करण : 2020

71.हिंदी विविध व्यवहारों की भाषा, सुवास कुमार, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण : 2007

72.हिंदी समुदाय और राष्ट्रवाद, सुधीर रंजन सिंह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2009

73.हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली :1997

74.हिंदी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद : 2001

75.हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली : 2005

76.हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली : 2006

77.हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : 2006

78.हिंदी साहित्य का इतिहास, संपादक डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, नेशनल पब्लिशिंग हॉउस, नयी दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2011

79.हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (द्वितीय खंड) आधुनिक काल : सन 1857 ई. से अब तक, गणपतिचंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, चौदहवाँ संस्करण : 2015

80.हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद : 2016

81.हिंदी साहित्येतिहास कुछ सन्दर्भ, डॉ. सरोजनी पाण्डेय, ग्रंथम प्रिंटिग प्रेस, कानपुर : सितम्बर 2012

82.1857 महान स्वतंत्रता संग्राम, मौ. फरीश मंसूरी, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली : 2006

83.1857 की क्रांति में दलितों का योगदान, मोहनदास नैमिशराय, श्री नटराज प्रकाशन, नयी दिल्ली : 2009

84.1857 का महासंग्राम वैकल्पिक इतिहास की ओर, संपादक-बद्रीनारायण, रश्मि चौधरी, संजय नाथ, आधार प्रकाशन पंचकूला, हरियाणा : 2010

85.1857 का मुक्ति संग्राम भ्रम, भ्रांतियाँ और सत्य, डॉ. धर्मेन्द्र नाथ, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली : 2012

86.1857 की क्रांति एवं उसके क्रांतिकारी, एस. एल. नागोरी, कान्ता नागोरी, इण्डियन पब्लिशिंग हॉउस, जयपुर : 2015

87.श्रृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद |

88.subhadra kumari chauhan, 'mahila shakti books scattered pearls' (bikhre moti), translators : indira junghare and sheri pargman, chanakya publications, delhi : 1994

पत्र-पत्रिकाएँ (विशेषांक) :

1. 'आलोचना त्रैमासिक', प्रधान संपादक – नामवर सिंह, संपादक- परमानन्द श्रीवास्तव, सहस्राब्दी अंक चौदह, जुलाई-सितम्बर, 2003
2. 'आलोचना त्रैमासिक', प्रधान संपादक – नामवर सिंह, संपादक- अरुण कमल, सहस्राब्दी अंक सैंतीस, अप्रैल-जून, 2010
3. 'उद्भावना', अतिथि संपादक - प्रदीप सक्सेना, संपादक- अजेय कुमार, वर्ष-23, अंक -75, अप्रैल-जून, 2007
4. 'हिंदुस्तानी त्रैमासिक'(जन्मशती एवं पुण्य स्मरण विशेषांक – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, आचार्य चन्द्रबली पांडे, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान एवं श्री नरेश मेहता), प्रधान संपादक - हरिमोहन मालवीय, भाग - 65, अंक - 4, अक्तूबर-दिसम्बर, 2004

शब्दकोश :

1. *छात्रोपयोगी मुहावरा कोश, मृत्युंजय कुमार सिंह, कुनाल प्रकाशन, दिल्ली : 2011*
2. *मुहावरा-लोकोक्ति कोश*(हिंदी-अंग्रेजी), *डॉ. श्रीकांत श्रीवास्तव, धर्मेश कुमार, स्वदेश प्रकाशन, दिल्ली : 2015*
3. *हिंदी साहित्य कोश नामवाची, शब्दावली भाग-2, सम्पादक - धीरेन्द्र वर्मा, व्रजेश्वर वर्मा, रामस्वरूप चतुर्वेदी, रघुवंशज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी : 2006*
4. *ज्ञान शब्द कोश*, सम्पादक - मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, ज्ञानमंडल लिमिटेड, आज भवन, संत कबीर मार्ग, बनारस : 1986

वेब सामग्री :

1. **http://www.deshbandhu.co.in/newsdetail/5097/3/0#.V74GXPl97IV**
2. बाल साहित्य का अर्थ, परिभाषा एवं अवधारणा (scotbuzz.org)
3. स्वतंत्रता की साधक सुभद्राकुमारी चौहान - राजेन्द्र उपाध्याय का आलेख (abhivyakti-hindi.org)
4. सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन परिचय, कृतियाँ/रचनाएँ, हिन्दी साहित्य में स्थान (currentshub.com)
5. सुभद्रा कुमारी चौहान की कवितायेँ । Subhadra Kumari Chauhan Poems (gyanipandit.com)
6. सुभद्रा कुमारी चौहान सम्पूर्ण हिन्दी कहानियाँ (hindi-kavita.com)

7. हमने सुनी कहानी थी: सुभद्रा कुमारी चौहान को श्रद्धांजलि - अजय यादव (sahityashilpi.com)

8. **https://sol.aud.ac.in/course/baal-sahitya**

शोध आलेख

शोध-आलेख

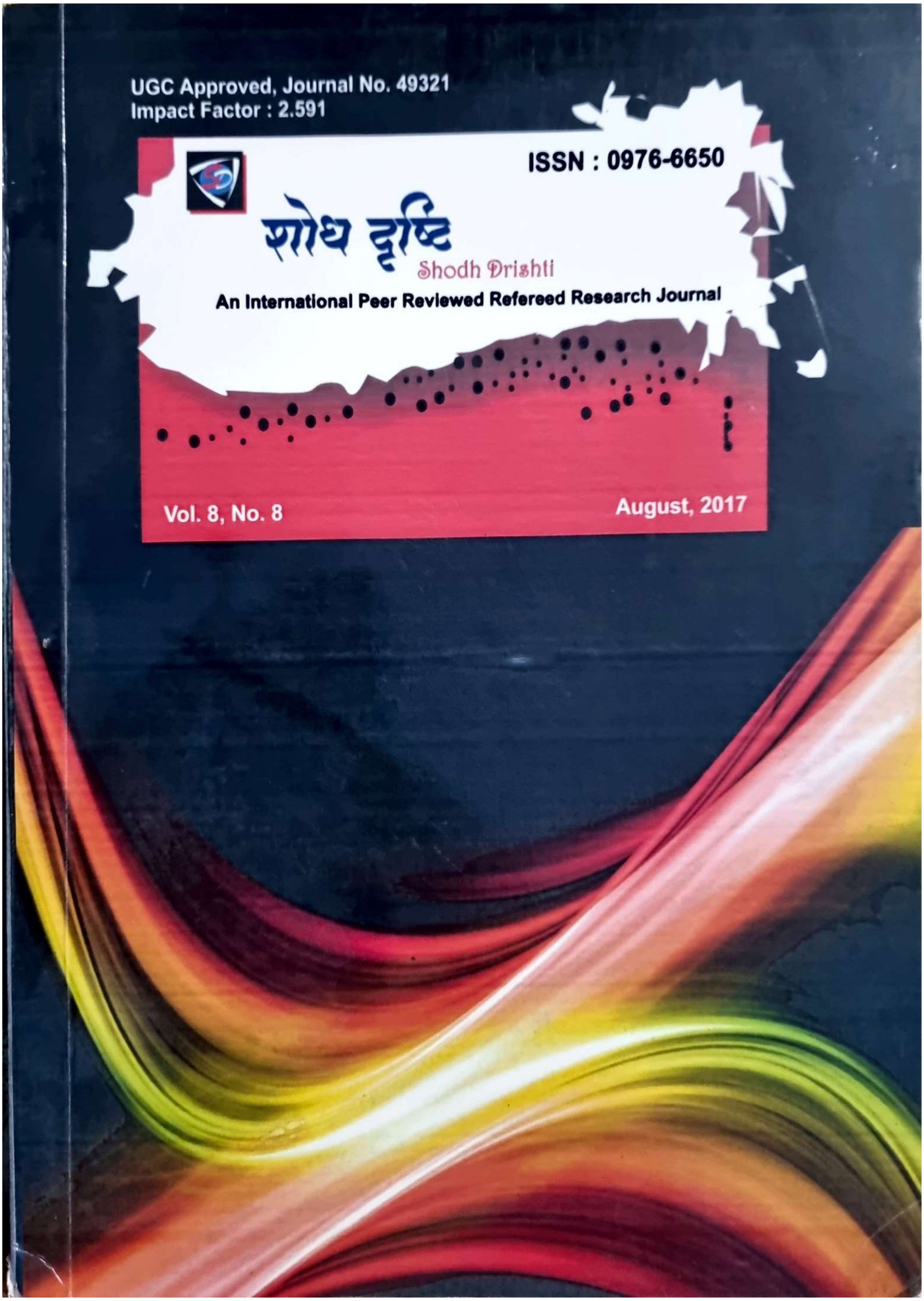

UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 2.591
ISSN : 0976-6650
शोध दृष्टि
Shodh Drishti
An International Peer Reviewed Refereed Research Journal
Vol. 8, No. 8
August, 2017

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 8, No. 8 Year - 8 August, 2017

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Associate Professor of Commerce
and Vice Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
Varanasi

☛	आर्थिक विकास तथा सामाजिक प्रगति **डॉ0 उपेन्द्र प्रसाद सिंह**	273-275
☛	जातक कथाओं में लेखन के संदर्भ **नीरज कुमार मिश्र**	276-278
☛	नामवर सिंह के काव्यालोचन में राजनैतिक और वैश्विक संदर्भ **कैसर बेगम**	279-282
☛	मुक्तिबोध की आलोचना दृष्टि और सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य का पुनर्मूल्यांकन **मधुरा केरकेट्टा**	283-286
☛	हिंदी नवलेखन : दशा और दिशा **परितोश प्रियदर्शी पाठक**	287-288
☛	राधास्वामी मत एक सकारात्मक और नकारात्मक पहलू के रूप में **श्री प्रवीन तंवर**	289-292
☛	सुख प्राप्ति का दर्शन **प्रो0 राजेश कुमार मिश्र**	293-295
☛	इस्लाम से पूर्व भारत एवं मिस्र का आर्थिक एवं व्यवसायिक सम्बन्ध **राम सूरत**	296-298
☛	अब्बासी काल में महिलाओं का संगीत के क्षेत्र में योगदान **सुधाकर शुक्ला**	299-301
☛	भोजपुरी लोक विश्वास एवं मान्यतायें **स्वाती सिंह**	302-304
☛	महात्मा गांधी नरेगा में अनुसूचित जाति के परिवारों की सहभागिता का समाजवैज्ञानिक अध्ययन **सूर्यमणि सिंह**	305-308
☛	चन्द्रकिरण सौनरेक्सा के कहानी संग्रह 'आधा कमरा' की समीक्षा : एक दृष्टि **डॉ0 नीलम यादव**	309-312
☛	काकोरी षड्यंत्र केस एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण **डॉ0 निशी त्रिपाठी**	313-315
☛	'मैला आँचल' और 'बलचनमा' उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन **डॉ0 वीरपाल सिंह**	316-318
☛	महाकवि कल्हण एवं उनकी 'राजतरङ्गिणी' : एक दृष्टि **डॉ0 राजेश कुमार**	319-322
☛	चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का सामाजिक उत्थान **डॉ0 शालिनी मिश्रा**	323-326
☛	جیلانی بانو ڈاکٹر رضوانہ	327-330
☛	कहानी बट बाबा और बाबा बटेसरनाथ का तुलनात्मक अध्ययन **डॉ0 कामिनी त्रिपाठी**	331-333

Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 8, No. 8, August, 2017 ISSN : 0976-6650

मुक्तिबोध की आलोचना दृष्टि और सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य का पुनर्मूल्यांकन

मधुरा केरकेट्टा*

हिंदी साहित्य एवं आलोचना के क्षेत्र में मुक्तिबोध एक महत्वपूर्ण नाम हैं। एक सफल कवि होने के साथ वे एक सफल आलोचक भी हैं। मुक्तिबोध हिंदी साहित्य के उन चुनिन्दा साहित्यकारों में से हैं जिन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर गंभीरता से विचार करने का प्रयास किया है। इस सन्दर्भ में उन्होंने न सिर्फ अपने आलोचकीय दायित्व का निर्वाह किया है बल्कि हिंदी की प्रगतिशील आलोचना से सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता पर गंभीरता से विचार करने का आग्रह भी किया है। मुक्तिबोध ने सुभद्रा कुमारी चौहान को 'जनसाधारण मानवीयता' का कवि कहा है। उनके लिए सुभद्रा कुमारी चौहान 'चमत्कारवर्जित मौलिक कविताओं' की रचना करने वाली कवयित्री हैं। इस संदर्भ में मुक्तिबोध लिखते हैं, "उनके चमत्कार-वर्जित काव्य में वह मौलिकता उत्पन्न हुई, वह रस-ग्राहिणी और रस-प्रदायिनी शक्ति उत्पन्न हुई, जिसके द्वारा उनके साहित्य के माध्यम से युग का, और युग के माध्यम से उनके साहित्य का, अध्ययन सफलतापूर्वक किया जा सकता है।"[1]

मुक्तिबोध के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य संसार युग को समझने का एक प्रभावी माध्यम है। मुक्तिबोध के अनुसार सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य का चमत्कारों से रहित एवं मौलिकता से पूर्ण होना एक तरफ उनको अपने युगीन यथार्थ से जोड़ता है तो दूसरी तरफ उन्हें अपने समकालीनों से अन्यतम बनाता है। इसी कारण सहज ही उनकी कविताओं में आम जन को रस प्रदान करने की शक्ति उत्पन्न हुई। इसलिए मुक्तिबोध का मानना है कि सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य संसार और उनके युग के बीच एक पारस्परिक तत्कालीन सम्बन्ध है। इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के माध्यम से तत्कालीन युग की विशेषताओं को जाना जा सकता है और उस युग की विशेषताओं के आधार पर उनके साहित्य का अध्ययन भी किया जा सकता है। यह किसी भी बड़े साहित्यकार की सफलता मानी जाती है कि उसका साहित्य उसके युग का प्रतिनिधित्व करता हो। इस दृष्टि से मुक्तिबोध सुभद्रा कुमारी चौहान को एक सफल साहित्यकार मानते हैं।

यह तो ज्ञात है कि सुभद्रा कुमारी चौहान छायावादी काव्य आन्दोलन के सामानांतर काव्य रचना कर रही थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान और छायावादी कविता की तुलना करते हुए मुक्तिबोध लिखते हैं, "सुभद्राजी के साहित्य तथा छायावादी साहित्य की तुलना करने पर छायावादी व्यक्तित्व तथा एक दूसरे प्रकार के व्यक्तित्व के बिम्ब हमारी आँखों में तैरने लगते हैं। छायावादी व्यक्तित्व एक विशेष प्रकार की भाव-सघनता लेकर हमारे सामने उपस्थित हुआ। उसका साधारण मनोलोक असाधारण रूप से अन्तर्मुख तथा सर्व-साधारण से बहुत दूर जा पड़ा।"[2]

मुक्तिबोध के अनुसार छायावादी काव्य अपनी असाधारण अंतर्मुखता के कारण सामान्य जन की भावनाओं एवं आकांक्षाओं को सहज एवं प्रकृत रूप में स्वर नहीं दे पाया। आम जन के जीवन की तरफ जाने की जगह छायावादी काव्य ज्यादा मानसिक ही होता चला गया। "इसके विरुद्ध, सुभद्राजी के काव्य-विषय के मूल तत्व, अपने प्रकृत रूप में, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन से लिये गये, जिसके द्वारा उनका रूप-निर्माण हुआ था। सुभद्राजी इस पारिवारिक-सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन-परिधि से अधिक परिचित, निकट और उसके प्रति अधिक ईमानदार रहीं। छायावादियों के कुछ निजी गिने-चुने काव्य-विषय थे जो कि एक विशेष अर्थ में उनकी सीमा भी निर्धारित कर देते थे। वह कवियों का बंदीगृह भी हो गया था।"[3]

अर्थात् सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ छायावादी कवियों द्वारा निर्धारित क्षेत्र का अतिक्रमण कर साधारण जनता में आजादी की भावना का संचार कर रही थीं। उनकी कविताएँ विषयों के चुनाव एवं

---

* शोधार्थी, एल.एच.–2, रूम नं0 134, नार्थ कैंपस, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना

उसकी सहज प्रस्तुति के कारण साधारण जन की राष्ट्रीय भावनाओं का विकास करने में सफल हो रही थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान के लिए आम जन के पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन विशेष महत्त्व रखते हैं । यहीं से उनकी कविता उपजती थी और अंततः उन्हीं के बीच पल्लवित होते हुए प्रसिद्ध होती थी।

छायावादी कवियों की आत्मवादी प्रवृत्ति ने उनकी कविताओं को बिल्कुल साधारण समझे जाने वाले लोगों की आशा-आकाँक्षाओं से एकीकृत नहीं होने दिया। इस संदर्भ में मुक्तिबोध लिखते हैं, "छायावादी कवि, पारिवारिक-सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन से आक्रान्त होते हुए भी, उसे अपना न सके-उसके अंदर छिपे हुए मानव-सम्बन्धों को वे काव्य-विषय न बना सके। अपने आत्मवादी भूमिका के कारण वे शिक्षित समुदाय की प्रवृत्तियों को अवश्य संतुष्ट करते रहे और आधुनिक हिंदी-काव्य की प्रधान धारा के रूप में हमने उनको पाया। किन्तु इससे सुभद्राजी के साहित्य का महत्त्व कुछ कम नहीं होता, वरन वह अधिक हो जाता है, क्योंकि उसके द्वारा आधुनिक हिंदी काव्य-साहित्य की एकांगिकता के कम होने के साथ-ही-साथ एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति होती है।"[4]

मुक्तिबोध का मानना है कि छायावादी कवि भी अपनी तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित थे परन्तु अपनी आत्मवादी प्रवृत्ति के कारण उसे आत्मसात नहीं कर पाये। इसी कारण सामान्य जन की भावनाओं को वे स्वर प्रदान नहीं कर पाए। मुक्तिबोध का मानना है कि छायावादी काव्य सिर्फ शिक्षित वर्गों तक ही सीमित रहा। वहीं दूसरी तरफ सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य इस एकांगिकता को तोड़ने का कार्य करता है। उनकी कविताएँ कविता के फलक को विस्तृत बनाती हैं। सामान्य जन उनकी पारिवारिक सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितियों को अपनी कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान के इस योगदान को मुक्तिबोध अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानते हैं। उनके अनुसार तत्कालीन युग के साहित्य के एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति सुभद्रा कुमारी चौहान के कविताओं के माध्यम से सम्पन्न होता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता पर विचार करते हुए ज्यादातर इतिहास लेखक एवं आलोचक उनकी पारिवारिक स्थिति को महत्त्व प्रदान करते हैं। मुक्तिबोध भी इस मत को स्वीकार करते हुए लिखते हैं, "सुभद्रा जी के काव्य को हम उनकी पारिवारिकता से अलग नहीं कर सकते। इस पारिवारिकता ने ही उनके काव्य में एक विशेष प्रकार की ऋजुता और समीपता का गुण उत्पन्न किया, उसे अधिक मूर्त्तता प्रदान की।"[5]

मुक्तिबोध के अनुसार उनकी कविताओं में समीपता का गुण उनकी पारिवारिकता से ही आया है। मुक्तिबोध यह भी मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान का जो अपने परिवार से लगाव था, उनके अंदर जो परिवार को लेकर एक कर्तव्यनिष्ठा थी, उसी कारण उनकी कविताएँ अधिक मूर्त्त रूप प्राप्त कर सकीं। इसलिए आम पाठक एवं जनता उनकी कविताओं को ठीक से समझ भी पाते थे और उससे नजदीकी भी महसूस करते थे। इसलिए मुक्तिबोध लिखते हैं, "आधुनिक हिंदी काव्य-साहित्य की एकरसता में सुभद्रा जी की झंकार एक नवीन दृश्य उपस्थित करती है। उनकी कविता से सहज मैत्री का बोध, सामीप्य का भाव, उत्पन्न होता है।"[6]

सुभद्रा कुमारी चौहान के संदर्भ में मुक्तिबोध पारिवारिक भावनाओं को ही राष्ट्रीय भावनाओं का स्रोत बताते हैं। वे लिखते हैं, "सुभद्रा जी की पारिवारिक भावनाएँ कर्त्तव्याभिमुख हैं। 'परिवार' शब्द यहाँ नागरिकशास्त्र के 'कुटुम्ब' का पर्यायवाची नहीं है। जो अपना-सा हो जाय, वही अपने परिवार का व्यक्ति। परिवार के व्यक्ति के प्रति अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए वे उनके द्वारा उसकी विवेक-चेतना को सुषुप्त नहीं करतीं, वरन उसे जाग्रत करके एक आदर्श की ओर उन्मुख कर देती हैं। यह आदर्श सामाजिक-राष्ट्रीय है।"[7] मुक्तिबोध इस संदर्भ में स्पष्ट कहते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान का 'परिवार' नागरिकशास्त्र के कुटुम्ब के पर्याय नहीं है। परिवार किसे कहा जाता है या कैसा होना चाहिए, इस पक्ष तक ही सीमित नहीं है बल्कि परायों को भी परिवार का अहसास दिलाने को ज्यादा महत्व देता है। जो

अपनों सा हो जाए, वह परिवार का हिस्सा होता है। यह परिभाषा नागरिकशास्त्र की नहीं हो सकती। मुक्तिबोध इससे भी ज्यादा इससे प्रभावित हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान पारिवारिक भावना को उत्पन्न करके उसे परिवार विशेष तक सीमित नहीं रखतीं बल्कि उसे राष्ट्रीय भावनाओं की ओर उन्मुख कर देती हैं। जब पूरा देश ही एक परिवार लगने लगेगा, तब सभी एक ही परिवार के हो जायेंगे तब एक-दूसरे के दुःख को दूर करने के लिए साथ लड़ेंगे। इस तरह वह पारिवारिक भावना को जागृत करके उसे राष्ट्रीय प्रश्न से जोड़ देती थीं। मुक्तिबोध इसे ही 'आदर्श सामाजिक राष्ट्रीय' कहते हैं। एक ऐसा आदर्श जो राष्ट्रीय हो और वह हर समाज की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता हो। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविताओं से इस आदर्श सामाजिक राष्ट्रीयता का विकास भलीभांति किया।

सुभद्रा कुमारी चौहान जब लिख रहीं थी तब बहुत सारे अन्य कवि भी राष्ट्रीय भावनाओं एवं आजादी की जरुरत को अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकट कर रहे थे। क्रांतिकारी और विप्लवी गीतों एवं कविताओं की रचना कर रहे थे। ऐसे में सुभद्रा कुमारी चौहान के विशेष महत्त्व को स्पष्ट करते हुए मुक्तिबोध लिखते हैं, "उनका राष्ट्रीय काव्य मात्र प्रलयवादी वृथा-भावुकता पर आश्रित नहीं है। वह जीवन के प्रधान कर्त्तव्य की अभिव्यक्ति के रूप में हमारे सामने आता है। वह कर्त्तव्य की अभिव्यक्ति भावुकता से भरी हुई है। उस कर्त्तव्य को जीवन के संदर्भों से हटाकर अमूर्त्त रूप में नहीं रखा गया बल्कि उसे वास्तविक स्थितियों में मिलाकर प्रत्यक्ष कर दिया गया है।"[8]

मुक्तिबोध मानते हैं राष्ट्रीय कविताएँ या विप्लवी कविताएँ कई बार शोर ज्यादा करती हैं। कोरी भावनाओं से भरी इन कविताओं में क्रांति की हुँकार ज्यादा सुनाई देती है परन्तु इनका प्रभाव अत्यंत सीमित होता है। इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी राष्ट्रीय भावनाओं की कविताओं में जीवन के प्रधान कर्त्तव्य के रूप में देश प्रेम को स्थापित करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार देशप्रेम या क्रांति जीवन से अलग नहीं है बल्कि हमारे जीवन का प्रधान कर्त्तव्य है। इस प्रधान कर्त्तव्य की अभिव्यक्ति भावनाओं से भरी हुई है। अर्थात् कर्त्तव्य करने की भावना, जीवन प्रसंगों से जुड़ी हुई है। हमारे जीवन की भावनाएँ हमारे जीवन प्रसंग की मूर्त्तता एवं प्रत्यक्षता से सम्बंधित होती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान इसे अमूर्त या अप्रत्यक्ष बनाने का प्रयास नहीं करतीं बल्कि इसी सहज रूप में उसे कविता में भी स्वीकार करती हैं। यही स्वाभाविकता जीवन में कर्त्तव्य की भावुकता को तय करता है। जिससे व्यक्ति एवं समाज की राष्ट्रीय भावना का सीधा संबंध होता है। इसलिए ऐसे राष्ट्रीय भावनाओं की कविताएँ कोरी भावनाओं पर आधारित हो ही नहीं सकतीं।

मुक्तिबोध सुभद्रा कुमारी चौहान को जन साधारण मानवीयता का कवि मानते हैं। उन्होंने लिखा है, "सुभद्रा जी के राष्ट्रीय काव्य का सबसे बड़ा गुण है उनकी जन-साधारण मानवीयता। यही गुण उनके राष्ट्रीय काव्य को विशेषता प्रदान करता है।"[9] इसी संदर्भ में वे आगे लिखते हैं, "अन्य राष्ट्रीय कवियों ने उन देशभक्तिपूर्ण भाव-क्षणों की जीवन-प्रसंगों की वास्तविक भूमिका से विच्छिन्न कर, उन्हें एक आत्मसम्पूर्ण रूप देने का प्रयास किया। सुभद्राजी के राष्ट्रीय काव्य में जीवन का जो उष्मापूर्ण सम्पर्क है, उसके द्वारा ही यह 'मानवीयता' उत्पन्न हुई।"[10]

मुक्तिबोध के अनुसार अन्य राष्ट्रीय कवियों ने राष्ट्रीय भावना को आत्मसम्मानपूर्ण स्थान प्रदान तो किया पर उसका सम्बन्ध आम जन-जीवन से विच्छिन्न था। राष्ट्रीय भावना को एक गुरुत्वपूर्ण स्थान दिया। लोगों को यह पता चला कि राष्ट्रीयता क्या है, पर इसका विकास करने की प्रक्रिया में स्वयं को शामिल नहीं पा रहे थे। दूसरी तरफ सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्रीय भावना को आम जन के जीवन प्रसंगों से जोड़ने का प्रयास किया। इस प्रक्रिया में लोगों को, परिवार को, समाज को शामिल किया। उनकी कविताओं में आया 'जीवन का उष्मापूर्ण संपर्क' इन्हीं वजहों से है और इसी कारण उनकी कविताओं में प्रकट हुई राष्ट्रीय भावना, जन साधारण की मानवीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती है। मुक्तिबोध के अनुसार ऐसी राष्ट्रीयता के विकास से समाज को कोई लाभ नहीं हो सकता जिसमें मानवीयता का गुण शामिल न हो। राष्ट्रीयता और मानवीयता के बीच एक पारस्परिक संबंध है, दोनों का

सहज एवं ठोस विकास इसी संबंध पर निर्भर करता है। इस संदर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान एक सफल कवयित्री के रूप में दिखाई देती हैं जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से ऐसी राष्ट्रीयता का विकास करने का प्रयास किया है जो मानवियता को महत्त्व देती है।

मुक्तिबोध इस बात से थोड़े असंतुष्ट नजर आते हैं कि प्रगतिशील आलोचना ने सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं को विशेष महत्त्व के योग्य नहीं माना। इस संदर्भ में वे लिखते हैं "प्रगतिशील आलोचकों तथा लेखकों के लिए सुभद्रा जी के काव्य में नवीन सामग्री है, आत्मसात करने के लिए। विशेषकर उनकी काव्य-शैली में जीवन-प्रसंगों की भूमिका तथा कुछ कविताओं के नाटकीय तत्त्व के साहित्यिक महत्त्व का आकलन आवश्यक है। साथ ही सर्वप्रधान वस्तु है, जीवन के वास्तविक धरातल पर बाह्य स्थिति-परिस्थितियों से मानसिक संवेदनात्मक प्रतिक्रिया, और उसको काव्योचित महत्त्व-प्रदान का कार्य, जो हिंदी के बहुत थोड़े कवियों ने किया है। प्रगतिशीलता की दृष्टि से इसका महत्त्व जितना अनुभव किया जा रहा है,उससे कहीं बहुत अधिक है।"[11]

अधिकांश प्रगतिशील आलोचकों ने सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं को रस्मी राष्ट्रीय भावनाओं की कविताएँ के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए विशेष रूप से सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर विचार नहीं किया गया। मुक्तिबोध मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में प्रगतिशील आलोचकों के सीखने के लिए बहुत सी चीजें हैं। जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण यह सीखना है कि जीवन के वास्तविक धरातल पर हमारी मानसिक संवेदनाओं के निर्माण प्रक्रिया पर, बाह्य स्थितियों एवं परिस्थितियों का प्रभाव किस रूप में पड़ता है ? इस प्रक्रिया को समझ कर ही कविता के निर्माण में मानसिक एवं संवेदनात्मक प्रतिक्रियाओं के महत्त्व को समझा जा सकता है। मुक्तिबोध के अनुसार इस पूरी प्रक्रिया को काव्य रूप में परिवर्तित करने का प्रयास सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में दिखाई पड़ता है। प्रगतिशीलता की दृष्टि से मुक्तिबोध इसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसलिए वह सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर गंभीर रूप से विचार करने का प्रस्ताव रखते हैं। राष्ट्रीयता के बने-बनाये पैमाने से मुक्त होकर प्रगतिशील आलोचना दृष्टि से सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर विचार करने का आग्रह करते हैं। भौतिक परिस्थिति एवं मानसिक प्रतिक्रिया के गंभीर अन्तर्सम्बंध को इतने सहज रूप में कविता में परिवर्तित होते देख मुक्तिबोध को सुखद आश्चर्य होता है। इस संदर्भ में मुक्तिबोध आग्रह एवं उम्मीद से पूर्ण होकर लिखते हैं, "आशा है, हिंदी के लेखक तथा आलोचक सुभद्राजी की अनलंकृति में सुंदर काव्य कैसे उत्पन्न हो सका, इसका अध्ययन करेंगे।"[12]

संदर्भ :

[1] मुक्तिबोध, सं. नेमिचंद्र जैन, मुक्तिबोध रचनावली भाग-5, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-1985, पृ. सं. 385
[2] वही, पृ. सं. 386
[3] वही, पृ. सं. 387
[4] वही, पृ. सं. 387
[5] वही, पृ. सं. 388
[6] वही, पृ. सं. 389
[7] वही, पृ. सं. 390-391
[8] वही, पृ. सं. 393
[9] वही, पृ. सं. 395
[10] वही, पृ. सं. 395
[11] वही, पृ. सं. 397
[12] वही, पृ. सं. 397

∴

शोध-आलेख

यूजीसी द्वारा स्वीकृत राष्ट्रीय हिंदी मासिक शोध पत्रिका ISSN 2277-2553
● मूल्य : 20 रुपये ● वर्ष : 13 ● अंक: 12
अक्टूबर, 2017
सम्यक भारत
मन को साफ कौन करेगा?
झाड़ू की नहीं कलम की राजनीति
झाड़ू संभाल के
स्वच्छ भारत बनेगा एक दिन

RNI N0. DELHIN/2004/12808 ISSN 2277 - 2553

दलित विमर्श एवं राष्ट्र निर्माण हेतु समर्पित...

सम्यक भारत

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष : 13 अंक : 12 माह : अक्टूबर, 2017

इस अंक में ...

संपादकीय

मन को साफ कौन करेगा?	06–06
दलित और हरिजन शब्दों पर पाबंदी क्यों ?	07–07

गतिविधियाँ

विश्व स्तर के शिक्षा केन्द्र की ओर उठे कदम	16–19
हमारा संविधान भी बौद्ध दर्शन के आदर्शों पर आधारित	20–21
निजी भूमि पर मकान बनाने के लिए मिलेगी सहायता	33–34
स्वच्छ भारत अभियान : स्वच्छता ही सेवा	37–38

आलेख

क्या संविधान से बड़ा आधार है – डॉ. चन्द्रपाल	31–32
	15–17
राष्ट्रीय बौद्ध धम्म संसद में पारित प्रस्ताव	48–49
संविधान समीक्षा के बहाने – तेजपाल सिंह तेज	60–62

स्वच्छ भारत- समृद्ध भारत विषय पर विशेष साक्षात्कार

सफाई कर्मी को भी सैन्य की भांति सम्मान मिले –**जाला**	08–10
नोटबंदी की भांति मैला पृथा उन्मूलन हेतु –**बेजवाडा विल्सन**	11–12
सफाई कार्य को मिले तकनीकी मान्यता – **के पी सिंह**	22–23
हमें झाडू की नहीं कलम की राजनीति . –**प्रो. अजमेर सिंह काजल**	28–30

शोध आलेख

1. सुभद्रा कुमारी चौहान के रचनाकर्म ... मूल्यांकन –**मधुरा केरकेट्टा**	40–42
2. रीतिकालीन कवि आचार्यों के काव्य प्रयोजन.... –**कुलदीप कुमार**	43–45
3. आजादी की लड़ाई में दलितों का योगदान : **डॉ. संगीता रावत**	46–47
4. दलित आत्मकथा 'मेरी पत्नी और भेड़िया ...... –**प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर**	50–53
5. हिंदी दलित आत्मकथाओं में दलित स्त्री और.... –**प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर**	54–59
6. स्वच्छ भारत साझा उत्तरदायित्व मिशन एक –**प्रो. सत्य प्रकाश**	64–65
7. साम्प्रदायिकता वाया हिंदी कथा साहित्य –**अमरेन्द्र कुमार**	66–69
8. साहित्य और मूल्यबोध -प्रो.सुरेश चन्द्रा	70–74

प्रबंध संपादक : डॉ. चन्द्रपाल
पूर्व आईएएस, सचिव भारत सरकार

प्रकाशक एवं सम्पादक
मंजू मौर्य

शोध लेख समीक्षा समिति
प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन(दि.वि.)
प्रो. शत्रुघ्न कुमार, इग्नू
प्रो. रामचन्द्र (जेएनयू)
डॉ. रामविनोद रे (के के वि)

साहित्य सम्पादक
सज्जन कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय

वरिष्ठ सहायक संपादक
डी.पी. भारती, प्रो. धनीराम, डॉ. एस एल सागर, सूरजभान कटारिया, लालचंद सिंह, एस.के.श्रीवास्तव आबिद हुसैन, धीरज आर्या

फोटो संपादक
अनुपम आनंद

प्रादेशिक ब्यूरो
मुकेश सबाना (दिल्ली)
कृलदीप कृष्ण (हिमाचल प्रदेश)
शैलेन्द्र भारती (ब्यूरो चीफ, बरेली मंडल)
बी.एम.जिराला (गुजरात)
डॉ. रवि रंजन (बिहार)

जनपद ब्यूरो
बसंत कुमार (इटावा), **नरेन्द्र मदोरिया** (उज्जैन)
सुनील कुमार (आगरा), **गुरुदीप सिंह** (नैनीताल)

प्रतिनिधि मण्डल
● **दिल्ली : रईस सागर** ● **कोलकाता** : इन्द्रदेव दास ● लखनऊ : **राकेश हंस** ● **बदायूं** : डॉ. पीयूष शर्मा ● **इटावा : अमरपाल सिंह** ● **मेरठः** डॉ. पूनम देवी ● **शाहजहापुरः** महावीर सिंह ● **कानपुरः** रवीन्द्र कुमार ● **ऊधम सिंह नगर** : सुनील श्रीवास्तव ● **वाराणसीः** के.के. पांडेय ● **जालंधर** : एम.एल.महे

कार्यालय
विज्ञापन एवं सम्पादकीय
सम्यक भवन
सी 1/98 रोहिणी सैक्टर-5, नई दिल्ली-85
मोबाईल : **9958590511टेलीफैक्स 011-27051250**
email:samyakbharat@rediffmail.com

(इस **पत्रिका में प्रकाशित लेखकों** की राय से सम्पादक या प्रकाशक **का सहमत होना आवश्यक** नहीं है, **किन्तु** प्रकाशित लेखों पर यदि **किसी को कोई** आपत्ति **हो** तो **अपनी** प्रतिक्रिया भेज सकते हैं **सभी संबंधित पदाधिकारी अवैतनिक हैं**।)

प्रकाशक, **मुद्रक एवं स्वामी मंजू मौर्य के** लिए 'आर्या ऑफसैट **प्रैस**', 308/3 एफ, **शहजादाबाग**, दयाबस्ती, दिल्ली-35' **से** मुद्रित **एवं सम्यक भवन**, सी 1/98 रोहिणी सैक्टर-5, नई दिल्ली-85 **से प्रकाशित**
- मंजू मौर्य, सम्पादक एवं प्रकाशक

किसी भी विवाद की स्थिति में दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगा।

सुभद्रा कुमारी चौहान के रचनाकर्म का आलोचनात्मक मूल्यांकन

❑ मधुरा केरकेट्टा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य पर विचार करने के लिए हिंदी साहित्य के इतिहास एवं आलोचना में उनकी उपस्थिति पर विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान का रचनाकाल, हिंदी साहित्य के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण कालखण्ड है। हिंदी कविता एक तरफ द्विवेदी युगीन इतिवृतात्मकता से मुक्ति की राहें तलाश रही थी, तो दूसरी तरफ ब्रजभाषा काव्य की माधुर्यता को पाने की कोशिश जारी थी। काव्य रूप और काव्य–विषय दोनों ही स्तरों पर संघर्ष, इस काल में दिखाई देता है। द्विवेदी युग और छायावादी युग का द्वंद्व भी हिंदी कविता एवं कवियों को अपने तरीके से प्रभावित कर रहा था।

इसी प्रकार गद्य लेखन के क्षेत्र में भी हिंदी–कथा साहित्य प्रारंभिक अवस्था को पार कर चुका था। गद्य साहित्य विषय एवं विधा के स्तर पर प्रौढ़ता की तरफ बढ़ता दिखाई पड़ता है। प्रेमचंद, जैनेन्द्र, महादेवी वर्मा जैसे रचनाकार गद्य लेखन के भिन्न–भिन्न विधाओं में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज कर रहे थे। तात्पर्य यह है कि सुभद्रा कुमारी चौहान का रचनाकार इन सारी स्थितियों से प्रभावित हो रहा था। एक सजग रचनाकार के ऊपर अपने समय का प्रभाव अवश्य परिलक्षित होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान का लेखन भी अपने देशकाल और वातावरण से मुक्त नहीं है बल्कि अत्यंत सार्थक तरीके से देशकाल व वातावरण से युक्त दिखाई पड़ता है।

साहित्यिक परिदृश्य के साथ–साथ सुभद्रा कुमारी चौहान का सामाजिक परिदृश्य भी चुनौतीपूर्ण था। एक तरफ अंग्रेजों की गुलामी थी, तो दूसरी तरफ विभेदों से भरा हुआ उनके आस–पास का समाज था। तत्कालीन रचनाकारों के लिए इन दोनों ही चुनौतियों का सामना करना आवश्यक था। इसके अभाव में वह साहित्य–कर्म को सामाजिक–कर्म के साथ नहीं जोड़ सकते थे। सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में प्रकट हुआ स्वतंत्रता और स्वाभिमान की चेतना इसी समझ का परिणाम मालूम पड़ता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सुभद्रा कुमारी चौहान के कवि व्यक्तित्व पर विचार किया है। उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान को छायावाद के समानांतर चलने वाली 'स्वच्छंद धारा' का कवि स्वीकार किया है। इस स्वच्छंद धारा को उन्होंने काव्य खण्ड के तृतीय–उत्थान के अंतर्गत रखा है। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है – "तृतीयोत्थान की प्रवृत्तियों के इस संक्षिप्त विवरण से ब्रजभाषा काव्यपरम्परा के अतिरिक्त इस समय चलने वाली खड़ी बोली की तीन मुख्य धाराएँ स्पष्ट हुई होंगी–द्विवेदीकाल की क्रमशः विस्तृत और परिष्कृतहोती हुई धारा, छायावाद कही जानेवाली धारा, तथा स्वाभाविक स्वच्छंदता को लेकर चलती हुई धारा जिसके अंतर्गत राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन की लालसा व्यक्त करने वाली शाखा भी हम ले सकते हैं।"[1] इसी 'स्वाभाविक स्वच्छंदता को लेकर चलती हुई धारा' के अंतर्गत उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य–कर्म को स्वीकार किया है। यद्यपि उन्होंने इस काव्य–धारा, और इसके अंतर्गत आने वाले कवियों पर गहनता एवं विस्तार से विचार न कर पाने के कारण को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "ये धाराएँ वर्तमानकाल में चल रही हैं और अभी इतिहास की सामग्री नहीं बनी हैं। इसलिए इनके भीतर की कुछ कृतियों और कुछ कवियों का थोड़ा सा विवरण देकर ही हम संतोष करेंगे।"[2]

छायावाद के साथ–साथ 'स्वच्छंद धारा' भी रामचंद्र शुक्ल के लिए इतिहास की सामग्री नहीं था। इसके बावजूद 'स्वच्छंद धारा' पर के प्रति उनकी सकारात्मक सोच दिखाई पड़ती है। जैसा कि ज्ञात है आचार्य रामचंद्र शुक्ल छायावाद को मुख्यतः अभिव्यंजना–कौशल से जोड़कर देखते थे। छायावाद के प्रति उनमें विशेष कोई उत्साह नहीं दिखाई पड़ता। 'हिंदी का छायावाद उन्हें योरोपीय और बांग्ला कवियों के आध्यात्मिक प्रतीकवाद से प्रभावित प्रतीत होता था।'[3] इसी के समकक्ष चलने वाला 'स्वच्छंद धारा को वे विशेष उत्साह से देख रहे थे। यद्यपि इतिहास लेखन की सीमा के बावजूद उन्होंने लिखा है, "सर्वश्री सियारामशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, ठाकुर गुरुभक्त सिंह, उदयशंकर भट्ट इत्यादि कई कवि विस्तृत अर्थभूमि पर स्वाभाविक स्वच्छंदता का मर्मपथ ग्रहण करके चल रहे हैं।"[4] सुभद्रा कुमारी चौहान को भी वे इसी काव्य–धारा के अंतर्गत स्वीकार करते हैं। छायावाद को जहाँ वे अभिव्यंजना के चमत्कार तथा बांग्ला एवं अंग्रेजी कविता के अनुकरण मात्र से जोड़कर देखते हैं, वहीं इस धारा के कवियों की विशेषता बताते हुए लिखते हैं, "वे न तो केवल नवीनता के प्रदर्शन के लिए पुराने छंदों का तिरस्कार करते हैं, न उन्हीं में एकबारगी बंधकर चलते हैं। वे प्रसंग के अनुकूल परंपरागत पुराने छंदों का व्यवहार और नए ढंग के छंदों तथा चरण व्यवस्थाओं का विधान भी करते हैं। व्यंजक, चित्रविन्यास, लाक्षणिक वक्रता और मूर्तिमत्ता, सरस पदावली आदि का भी सहारा लेते हैं, पर इन्हीं बातों को सबकुछ नहीं समझते। एक छोटे से घेरे में इनके प्रदर्शन मात्र से वे संतुष्ट नहीं दिखाई देते हैं। उनकी कल्पना इस व्यक्त जगत और जीवन की अनंतवीथियों में हृदय को साथ

लेकर विचरने के लिए आकुल दिखाई देती है।"[5] विषय, भाषा, शैली, सभी स्तरों पर वे इस धारा के कवियों के प्रति आशावान हैं। छायावाद से स्वच्छंद होने एवं स्वच्छंदता को अपने कविताओं में विशेष महत्त्व देने के कारण ही, रामचंद्र शुक्ल ने इन्हें 'स्वच्छंद धारा'का कवि माना है। उन्होंने लिखा है, "छायावादी कवियों के अतिरिक्त वर्तमानकाल में और भी कवि हैं जिनमें से कुछ ने यत्रतत्र ही रहस्यात्मक भाव व्यक्त किए हैं। उनकी अधिक रचनाएँ छायावाद के अंतर्गत नहीं आतीं। उन सबकी अपनी अलग–अलग विशेषता हैं। इस कारण उनको एक ही वर्ग में नहीं रखा जा सकता। सुबीते के लिए ऐसे कवियों की समष्टि रूप से 'स्वच्छंद धारा' प्रवाहित होती है। इन कवियों में पं. माखनलाल चतुर्वेदी,(एक भारतीय आत्मा)श्री सियारामशरण गुप्त, पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान, श्री हरिवंशराय 'बच्चन', श्री रामधारी सिंह 'दिनकर', ठाकुर गुरुभक्त सिंह और पं. उदयशंकर भट्ट।"[6]

रामचंद्र शुक्ल ने सुभद्रा कुमारी चौहान के 'त्रिधारा' और 'मुकुल' कविता–संग्रह प्रकाशित होने की सूचना भर दी है। उनपर अलग से विचार नहीं किया है। इसके बावजूद उन्होंने इस धारा के कवियों की विशेषताओं पर जो विचार किया है उसे हम सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में देख सकते हैं। रामचंद्र शुक्ल का इतिहास ग्रन्थ का लेखन इसी धारा और इन्हीं कवियों की चर्चा के साथ समाप्त होता है। इससे भी हम इनके महत्त्व को समझ सकते हैं

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के साथ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाम हिंदी साहित्य के इतिहास में सम्मान के साथ लिया जाता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सुभद्रा कुमारी चौहान को इतिहास में एक प्रमुख महिला कहानी लेखिका के रूप में वर्णित किया है। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है, "कहानियों के क्षेत्र में कई प्रभावशाली महिला लेखिकाओं ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सुभद्राकुमारी चौहान, शिवरानी देवी, कमला देवी चौधरी और होमवती देवी ऐसी महिलाएँ हैं। इनकी कहानियों में भारतीय परिवार की समस्याएँ सामने आई हैं। यथार्थ घरेलू चित्र प्रस्तुत करने में महिलाएँ पुरुष लेखकों से अधिक सफल हुई हैं।"[7]

छायावाद के समकालीन महिला कहानी–लेखिकाओं में अन्य के साथ उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान को भी विशेष महत्त्व के साथ उद्धृत किया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि हिंदी में कहानी विधा को आगे बढ़ाने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। वह भी ऐसे समय में जब हिंदी में कहानी लेखन अभी अपना आकार ग्रहण ही कर रहा था। कहानी लेखन की प्रारंभिक अवस्था में इन लेखिकाओं के योगदान को वे बेहद महत्त्वपूर्ण मानते हैं। हजारी प्रसाद के अनुसार लेखिकाओं की कहानियों ने भारतीय परिवार की आंतरिक समस्याओं को सामने लाने का कार्य किया। एक ऐसे

समय में जब प्रेमचंद जैसे कहानीकार राष्ट्रीय, राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं को प्रमुखता से अपनी कहानियों में प्रस्तुत कर रहे थे तब सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे कहानी लेखिकाएँ भारतीय परिवार की आंतरिक समस्याओं एवं चुनौतियों को सामने ला रही थीं। किसी भी समाज की नींव परिवार पर टिकी होती है। जिस समाज में परिवार की इकाई जितनी मजबूत होगी, वह समाज भी उतना ही प्रभावशाली होता है। इसके लिए सिर्फ परिवार की इकाई का गुणगान जरुरी नहीं होता बल्कि उसकी समस्याओं को भी समझना आवश्यक होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे लेखिकाओं ने इस जिम्मेदारी का निर्वाह सफलतापूर्वक किया। पारिवारिक अंतर्द्वंदों को कहानी का विषय बनाया उसे भारतीय समाज की चिन्ताधारा के केंद्र में लाने का प्रयास किया। हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि महिला होने के कारण इन लेखिकाओं ने अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वाह यथार्थपरक ढंग से किया है। इसे वे इनकी सबसे बड़ी देन मानते हैं। परिवार को सबसे नजदीक से देखने एवं निर्मित करने में महिलाओं की भूमिका सबसे ज्यादा होती है। इसलिए वह घरेलू समस्याओं को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ढंग से अपनी कहानियों में वर्णित कर पाई हैं। निश्चित रूप से उनका यह योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों का विस्तार से विश्लेषण 'महिलाओं की लिखी कहानियाँ' नामक अपने लेख में किया है। इस लेख में वह सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों को विश्लेषित करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने लिखा है, "सुभद्रा जी की कहानियों में से अधिकांश जैसा कि ऊपर कहा गया है, बहुओं को विशेषकर शिक्षित बहुओं के दुःखपूर्ण जीवन को लेकर लिखी गयी हैं। निःसंदेह वे इसकी अधिकारिणी हैं। उन्होंने किताबी ज्ञान के आधार पर या सुनी–सुनायी बातों को आश्रय करके कहानियाँ नहीं लिखीं वरन अपने अनुभवों को ही कहानियों में रूपान्तरित किया है। निस्सन्देह उनके स्त्री–चरित्रों का चित्रण अत्यंत मार्मिक और स्वाभाविक हुआ है फिर भी जो बात अत्यंत स्पष्ट है वह यह है कि उनकी कहानियों में समाज–व्यवस्था के प्रति एक नकारात्मक घृणा ही व्यक्त होती है।"[8]

हजारी प्रसाद द्विवेदी यह मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान ने एक समर्थ कहानी लेखिका की तरह परिवार की शिक्षित बहुओं की समस्याओं को अपनी कहानियों में व्यक्त किया है। इसका कारण बताते हुए यह कहते हैं कि उनकी कहानी सुनी–सुनायी बातों की जगह उनके अनुभव पर आधारित था। किताबी ज्ञान या सुनी सुनाई हुई बातों पर आधारित कहानियाँ अक्सर उपदेशों में बदल जाती हैं। इससे कहानियों की मौलिकता भी नष्ट हो जाती है। वस्तुतः वह पाठकों पर प्रभाव भी नहीं छोड़ पातीं। इसके विपरीत निजी अनुभव को कहानियों में रूपांतरित करने की कला विशेष श्रम एवं प्रतिभा की मांग करती है। ऐसी कहानियाँ मौलिक भी

प्रतीत होती हैं और पाठकों को प्रभावित भी करती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान को हजारी प्रसाद द्विवेदी एक मौलिक एवं प्रभावशाली कहानी लेखिका मानते हैं। इसके साथ ही वह यह भी स्पष्ट करते हैं कि उनके अत्यंत मार्मिक एवं स्वाभाविक पात्र समाज–व्यवस्था के प्रति एक नकारात्मक घृणा को ही प्रकट करते हैं। जिसे किसी कहानी लिखने वाले की असफलता ही कहा जा सकता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानियों में इस समस्या को स्पष्ट करते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं, "पाठक यह तो सोचता रहता है कि समाज युवतियों के प्रति कितना निर्दय और कठोर है पर उनके चरित्र में ऐसी भीतरी शक्ति या विद्रोह–भावना नहीं पायी जाती जो समाज की इस निर्दयतापूर्ण व्यवस्था को अस्वीकार कर सके। उनकी पाठक–पाठिकाएँ इस कुचक्र से छूटने का कोई रास्ता नहीं पातीं। इन कहानियों में शायद ही कहीं चरित्र की वह मानसिक दृढ़ता मिलती हो जो स्वेच्छा–पूर्वक समाज की बलि–वेदी पर बलि होने का प्रतिवाद करे। इसके विरुद्ध उनके चरित्र अत्यंत निरुपाय–से होकर समाज की वह्नि–शिखा में अपने को होम करके चुपके से दुनिया की आँखों से ओझल हो जाते हैं। स्पष्ट ही यह दोष है।"[9]

सुभद्रा कुमारी चौहान जितनी मार्मिकता एवं स्वाभाविकता से स्त्री पात्रों की सर्जना करती हैं, वह अन्य कहानीकारों के यहाँ दुर्लभ दिखाई पड़ता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी उनके इस महत्त्व को स्पष्ट करते हुए उनके इस पात्रों की निरुपायता को उनकी कहानियों का एक बड़ा दोष मानते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह मानना है कि सिर्फ समस्याओं को मार्मिकता से प्रस्तुत करना ही किसी कहानी लिखने वाले का कार्य नहीं होता। उनके अनुसार कहानी लिखने वाले का एक महत्त्वपूर्ण कार्य अपने पात्रों के संघर्ष–तत्व को भी सामने लाना है। सुभद्रा कुमारी चौहान के पात्र निर्दय व्यवस्था का प्रतिवाद नहीं करते बल्कि सबकुछ जानते समझते हुए भी अपने आपको उसी समाज के लिए होम करते हुए दिखाई पड़ते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों के पात्रों की इस मानसिक दुर्बलता को हजारी प्रसाद द्विवेदी उनकी कहानियों की एक बड़ी कमी के रूप में देखते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानियों के इस दोष को उद्घाटित करते हुए यह भी स्वीकार करते हैं कि तत्कालीन समाज में सचमुच की स्थिति भी ऐसी ही थी। इस संदर्भ में वे लिखते हैं, "परन्तु इस अवस्था के साथ जब सचमुच की परिस्थिति की तुलना करते हैं तो स्वीकार करना पड़ता है कई अधिकांश घटनाएँ ऐसी ही हो रही हैं। सुभद्रा जी की कहानियों में जो बात सबसे अधिक आकर्षक जान पड़ती है वह है उनकी सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि। पात्रों के अन्तःस्थल में वे बड़ी आसानी से पहुँच जाती हैं। सुभद्रा जी के पात्रों की सहज बुद्धि विहार की अपेक्षा निष्क्रियता की ओर अधिक झुकी हुई है।"[10]

हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि उनकी कहानियों के पात्रों की निरुपायता उस समय के परिस्थिति की देन है। इसलिए हजारी प्रसाद द्विवेदी सुभद्रा कुमारी चौहान की सहानुभूति दृष्टि की प्रशंसा करते हैं। किसी कहानीकार का प्रथम उद्देश्य अपने पात्रों के अन्तःस्थल में प्रवेश करना होता है। तभी वह स्वाभाविक पात्रों को उठाने में सफल हो सकता है। स्वाभाविक पात्रों के निर्माण के बिना कोई भी कहानी सफल कहानी नहीं बन सकती। इसलिए हजारी प्रसाद द्विवेदी सुभद्रा कुमारी चौहान को उस सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि की प्रशंसा करते हैं जिससे वे सहज ही अपने पात्रों के मर्म को छू लेती हैं। इसी कारण वे मार्मिक और स्वाभाविक पात्रों की सर्जना कर पाती हैं जो उनकी कहानियों को यथार्थपरक बनाता है। इसके साथ ही हजारी प्रसाद द्विवेदी सुभद्रा कुमारी चौहान के पात्रों की नकारात्मकता को भी उद्घाटित करते हैं। वे मानते हैं कि उनके पात्र संघर्ष करने की जगह पलायन करने को ज्यादा महत्त्व देते हैं। संघर्ष एवं जुझारूपन का अभाव उनके पात्रों को निष्क्रिय और नियतिवादी बनाता प्रतीत होता है। इसे परिस्थितिजन्य मानते हुए भी हजारी प्रसाद द्विवेदी, इस समस्या को कहानी लेखिका की एक बड़ी समस्या के रूप में स्वीकार करते हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी यह विश्वास करते हैं भारतीय समाज व्यवस्था जो ज्यादातर पुरुषों द्वारा नियंत्रित होती है, उसमें स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। अपनी इस बात को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं, "...इस बात में कोई संदेह नहीं कि स्त्री का हृदय अधिकांशतः नेगेटिव या नकारात्मक है। जहाँ स्त्री–शिक्षा का अभाव है, पुरुष और स्त्री की दुनिया अलग–अलग है, वहाँ तो निश्चित रूप से स्त्री में नकारात्मक चरित्र की प्रधानता होती है। और समाज स्त्री के लिए जिन भूषण रूप आदर्शों का विधान करता है उनमें एकांतनिष्ठा, व्रीड़ा, आत्मगोपन और विनय–शीलता आदि नकारात्मक गुणों की प्रधानता होती है। इस दृष्टि से सुभद्रा जी की कहानियों में भारतीय स्त्री का सच्चा चित्रण हुआ है। वे भारतीय स्त्रीत्व की सच्ची प्रतिनिधि बन सकी हैं।"[11]

हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों के नकारात्मक स्त्री पात्र तत्कालीन समाज की परिस्थितियों की देन हैं। जो समाज यथार्थ में स्त्री–पुरुष को दो अलग–अलग महत्त्व देता है, स्त्रियों को पुरुषों के बरक्स कम महत्त्व देता है, उस समाज पर आधारित कहानियों में भी तो वैसे ही पात्रों की उपस्थिति होगी। पुरुष सत्तात्मक समाज स्त्रियों से विशेष गुणों की अपेक्षा करता है। इसमें उनका मितभाषी, सहनशील, विनयशील होना ही अपेक्षित होता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार समाज में स्त्रियों के लिए जब नकारात्मक गुणों की अपेक्षा की जाती है तो उस समाज पर आधारित कहानियों में जुझारू एवं संघर्ष करती महिलाएँ को सृजित करना भी मुश्किल है। इस दृष्टि से सुभद्रा कुमारी चौहान एक समर्थ कहानी लेखिका हैं जिन्होंने स्त्रियों का यथार्थपरक एवं मार्मिक चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

<u>संदर्भ :–</u>

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास,वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण –2015,पृ. सं. 524
2. वही, पृ. सं. 524, 3. वही, पृ. सं. 518
4. वही, पृ. सं. 523
5. वही, पृ. सं. 523–524
6. वही, पृ. सं. 569–570
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य रू उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण –2006, पृ. सं. 254
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कल्पलता(महिलाओं की लिखी कहानियाँ), ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस, संस्करण –2012 संवत् , पृ. सं. 76
9. वही, पृ. सं. 76–77
10. वही , पृ. सं. 77
11. वही, पृ. सं. 77

***

शोध प्रपत्र

शोध-प्रपत्र -1

प्रतिष्ठित संस्थान
INSTITUTION OF EMINENCE

हैदराबाद विश्वविद्यालय
University of Hyderabad

आज़ादी का अमृत महोत्सव

CSDS
centre for the study of developing societies

Certificate

Department of Hindi, University of Hyderabad and CSDS, New Delhi

under the aegis of their collaborative IoE project organised an international conference on

PROSCRIBED HINDI-URDU PRINT AND COLONIAL HISTORIOGRAPHY

15, 16, 17 NOVEMBER 2021

This is to certifiy that Prof./ Dr./ Mr./ Ms. ......मधुरा केरकेट्टा...... chaired a session/participated/presented a paper on: ......'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और हिंदी प्रतिबंधित साहित्य.'......

PROF. GAJENDRA PATHAK
Principal investigator & Head
Department of Hindi, University of Hyderabad

अध्यक्ष, हिंदी विभाग
Head, Department of Hindi
हैदराबाद विश्वविद्यालय
University of Hyderabad
हैदराबाद / Hyderabad-500 046.

DR. RAVIKANT
Co-principal investigator
Associate Professor, CSDS, New Delhi

शोध-प्रपत्र -2

ओ३म्

माता कृष्णावंती महाविद्यालय, पदमपुर
गीना देवी शोध संस्थान, भिवानी (हरियाणा)
इण्डो-यूरोपियन लिटरेरी डिस्कोर्स (यूक्रेन)
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी 25 दिसम्बर, 2021

वैश्विक पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन-वैदिक समाधान

क्रमाँक : GEPCCVS/25/12/2021/403

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/श्रीमती/प्रो./डॉ. मधुरा केरकेट्टा हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने एक दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में विषय विशेषज्ञ/सत्राध्यक्ष/मुख्य वक्ता/पत्र प्रस्तोता/प्रतिभागी/सत्र संचालक/शोधार्थी/सदस्य आयोजक मण्डल के रूप में "सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में पर्यावरणीय चेतना।" विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया/व्याख्यान दिया/कार्य किया।

निदेशक	सह-आयोजक	सह-आयोजक	आयोजक
डॉ. विनोद कुमार	राकेश शंकर भारती	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट	डॉ. हनुमान प्रसाद
प्राचार्य	अध्यक्ष	सचिव	प्राचार्य
सरस्वती कन्या पी.जी. महाविद्यालय, बीझबायला	इण्डो यूरोपियन लिटरेरी डिस्कोर्स, यूक्रेन	गीना देवी शोध संस्थान, भिवानी	माता कृष्णावंती महाविद्यालय, पदमपुर

AS PER THE UNIVERSITY POLICY, ANTI-PLAGIARISM SCREENING IS NOT REQUIRED FOR THE REGIONAL LANGUAGES

Librarian
Indira Gandhi Memorial Library
UNIVERSITY OF HYDERABAD
Central University P.O.
HYDERABAD-500 046.